नेत्रवसुव्योमशरमित-(५०८२)-कलिवर्षस्य वेदवेदाङ्गोपाङ्गस्मृतिपुराणादिशास्त्रवशंवदस्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बनिर्णीत-
वैदिकतिथिपर्वादि-समलङ्कृतं स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बजनविरचितं लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषानुसारि

वैदिक-तिथिपत्रम्

(वैदिक पात्रो)

२०७४

सौम्यं युगम् (९)
परिवत्सरः (२)
चान्द्रः कीलकः संवत्सरः (४२)
महाकल्पसंवत् १५,५५,२१,९७,२९,४९,०८२
कल्पसंवत् १,९७,२९,४९,०८२
वैवस्वतमन्वन्तरसंवत् १२,०५,३३,०८२
अष्टाविंशतितममहायुगसंवत् ३८,९३,०८२
युधिष्ठिरसंवत् (भारतयुद्धसंवत्) ५११८
कलिसंवत् ५०८२
वैदिकतिथिपत्रप्रवृत्त्यब्दाः ७

प्रकाशकम्
स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बम्
काष्ठमण्डपजनपदस्थम्
svadhyaya@hotmail.com



कृष्णसारस् तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः।
स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस् त्वतः परः॥-मनु. २।२३

बार्हस्पत्यः साधारणः (४४) संवत्सरः
विरोधकृत् (४५) संवत्सरश्च
विक्रमसंवत् २०७३-२०७४
शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३८-१९३९
मैथिलसंवत् १४२४-१४२५ (साल)
नेपालसंवत् ११३७-११३८
एलेसंवत् (किरातसंवत्) ५०७७
सोनमसंवत् (तामाङसंवत्) २८५३
लक्ष्मणसेनसंवत् ९०७-९०८
बङ्गसंवत् १४२३-१४२४
हिजरिसंवत् १४३८-१४३९
क्रैस्तसंवत् २०१६-२०१७

मू. ७०।-

आँफ्नो शास्त्र चिन्ने, तेसको प्रामाणिकता बुज्ने र अनुसरण गर्ने वैदिक सनातन वर्णाश्रमधर्मको मूल मार्ग तथा वेदाङ्गज्योतिष र वैदिक तिथिपत्र

वैदिक–सनातन–वर्णाश्रमधर्ममा ब्राह्मणको उपनयन (व्रतबन्ध) नगरि नहुने अत्यन्तै महत्त्वपूर्ण संस्कार हो। उपनयन भनेको वेद–वेदाङ्ग पढ्न शिष्य गुरुकाँहाँ जाने वा वेद–वेदाङ्ग पडाउन गुरुले शिष्य लिने कर्म भनेको हो। तसर्थ **उपनयन वेद–वेदाङ्ग पढ्न–पडाउन गरिने कर्म हो।** वेद–वेदाङ्ग पढ्ने तिनैले बताएको धर्मको र मोक्षसाधनाको मार्गको अनुसरण गर्नका लागि हो। एसरि वेद–वेदाङ्ग हाम्रा धर्म–मोक्षसाधनाको बाटो देखाउने मुख्य शास्त्र रछन् भन्ने चिनिञ्छ, तिनै धर्ममा र मोक्षमा परम प्रमाण रछन् भन्ने र तिनैले देखाएको धर्मको र मोक्षसाधनाको मार्गको नै ब्राह्मणले अनुसरण गर्नपर्ने रछ भन्ने कुरा पनि प्रष्ट हुञ्छ। वेदमा **आँफ्नो शाखाको वेद नै मुख्य हो।** वेदाङ्ग **शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दस्सूत्र र ज्योतिष** हुन्। कल्पमा आँफ्ना श्रौतसूत्र र गृह्यसूत्र तथा तिनका परिशिष्ट पर्छन्। ज्योतिषमा **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ लिइञ्छ। यो कुरा स्मृति–पुराणादि वेदानुसारि र वेदानुकूल ग्रन्थबाट तथा ब्राह्मणहरुको नित्यस्वाध्यायाध्ययनको (ब्रह्मयज्ञको) परम्पराबाट पनि स्पष्ट रूपमा बुजिञ्छ। एस विषयमा स्वाद्ध्यायशालाको **"ब्रह्मयज्ञपद्धति"** भन्ने ग्रन्थमा (२०५९), **"वैदिक धर्म मूल रूपमा"** भन्ने ग्रन्थका द्वितीय संस्करणमा (२०६२) र रत्नपुस्तक भण्डारले प्रकाशित गरेका हाम्रा **"सन्ध्योपासनपद्धति"**का (२०६५) भूमिकामा ब्रह्मयज्ञपद्धतिका प्रकरणमा पनि सप्रमाण विस्तृतै प्रतिपादन गरिएको छ। एस स्थितिमा यज्ञ तथा विवाह–व्रतबन्धादि–संस्कार–कर्म–समेत सबै श्रौत–स्मार्त धर्मकर्मका कालका निरूपणका लागि **वैदिक–सनातन–वर्णाश्रम–धर्मका अनुयायि सम्पूर्ण हिन्दुहरुका निम्ति** लगधमुनिप्रोक्त **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ नै परम प्रामाणिक ग्रन्थ हो भन्ने कुरा स्पष्ट हुञ्छ। एसको प्रामाणिकता नबुज्नु अज्ञानान्धकारमा डुब्नु र एसको प्रामाणिकता नमान्नु पाखण्डता अँगाल्नु वा वेद–वेदाङ्ग प्रति चार्वाकादिले भैँ नै विद्रोह गर्नु हो। तसर्थ वैदिक–सनातन–वर्णाश्रमधर्मका ब्राह्मणले र तेस्ता ब्राह्मणलाइ गुरुपुरोहित मान्ने अरु सबैले पञ्चसंवत्सरमयम् इत्यादि वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थको प्रामाणिकता मान्नैपर्छ र अनुसरण गर्नैपर्छ। एसै वस्तुस्थितिलाइ अँगालेर एस **वैदिकतिथिपत्रको** रचना, प्रकाशन र प्रचारण गर्ने काम गरिएको हो।

एस तिथिपत्रको प्रयोग गर्न वैदिक–सनातन–वर्णाश्रम–धर्मानुयायि सबैमा अनुरोध गरिञ्छ। साथै आफ्ना जन्मतिथि इत्यादि तिथिहरु वैदिक कालगणनापद्धति अनुसार कुन मासको कुन पक्षको कुन तिथिमा पर्छन् भन्ने जान्न परामर्श आवश्यक परेमा सम्पर्क राख्न समेत अनुरोध गरिञ्छ।

स्वाद्ध्यायशाला–वासिष्ठ–गुरुकुल–आश्रम

ब्रह्मपुरी, बुडानिलकण्ठमार्गसंलग्न–शिवमन्दिरमार्ग, हात्तिगौँडा, बुडानिलकण्ठनगरपालिका–७, काठमाण्डु, नेपाल,

दूरस्वन (फोन) ९८१८८६१२७७, ९८४३१६२०५३, ९८०८६४१२१७, ९८४१९६८२६२

प्रस्तुत वैदिक तिथिपत्रका विशेषता

- श्रौत–स्मार्त वैदिक कर्मका कालको ज्ञानका निम्ति आवश्यक मूल वैदिक सिद्धान्त–अनुसारका **सौरचान्द्र तिथि–नक्षत्र, महिना, ऋतु अयन** इत्यादिको गणना भएको
- **मूल वैदिक सिद्धान्तअनुसारको समयशुद्धि र विवाह, चूडाकरण, व्रतबन्ध, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश इत्यादिको पुण्याह (साइत) तथा वैदिक सङ्कल्पको उदाहरण** इत्यादि भएको
- आगामि वर्षको उत्तरायणको संक्षिप्त पात्रो पनि समाविष्ट भएको
- चल्तिकाग्रहस्थितिसारणी, प्रथमलग्नसारणी, दशमलग्नसारणी, अवकहडकचक्र इत्यादि पनि समाविष्ट भएको
- नेपालबाहेक अन्यत्रका पनि **मूल वैदिक परम्पराका हिन्दु**हरुका निम्ति पनि उपयोगि
- **वेद** र **वेदाङ्गज्योतिष**का आधारमा बनेको पात्रोको अभाव हटाउँदै आधुनिक कालमा पहिलो पटक **आर्यतपोभूमि हिमवत्खण्डस्थ नेपालबाट निस्कन थालेको**

एकमात्र वैदिक पात्रो

वैदिकतिथिपत्रम्

सप्तमोऽङ्कः (७)

पथिकृत्

शिवराज आचार्यः कौण्डिन्न्यायनः

आचार्यः, एम्.ए., विद्यावारिधिः, वाचस्पतिः (डि.लिट्.)

९८४३-१६२०५३, ९८१८-८६९२७७

व्यवस्थापकः

आमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

शुक्लयजुर्वेदाचार्यः, विद्यावारिधिः, ९८४९-०९१४६७

रचयिता सम्पादकश्च

प्रमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

धर्ममीमांसाचार्यः, एम्.ए., ९८४१-९६८२६२

सहयोगी

सुमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

ब्रह्ममीमांसाचार्यः (शाङ्करवेदान्ताचार्यः), ९८४३-०३५३९७

स्वाद्ध्यायशाला, काष्ठमण्डपजनपदः, नेपालदेशः,

वैद्युतसन्देशः svadhyaya@hotmail.com

सुसङ्गमकगणनासहयोगी

रघुनाथः उपाध्यायः ढुङ्गेलः

प्रचारणसंयोजकाः

कृष्णराजः वाग्लेः, व्यासनगरपालिका, तनहुँ, ०६५-५६०३०३

कृष्णप्रसादः दुवाडीः आत्रेयः, वैदिक प्रज्ञाप्रतिष्ठान, रत्ननगर–१३ जयमङ्गला, चितवन, ९८४५-१६०२४२, ०५६-५६०९४०

केशवः दाहालः, धरान, ०२१-४२५४९१, ९८४२-४५६५९६।

हिन्दी भूमिका

वैदिकतिथिपत्रस्य संस्कृतभूमिका

हिन्दी भूमिका

(क) तिथिपत्र देखने से पूर्व ज्ञातव्य विषय

प्रस्तुत तिथिपत्र में प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर प्रथम पङ्क्ति में **वैदिक वर्ष, अयन, ऋतु, महीना** और **पक्ष** बडे अक्षरों में दिए गए हैं। **अन्य मत के वर्ष, महीना इत्यादि** दूसरी पङ्क्ति में छोटे अक्षरों में दिए गए हैं।

वैदिक **तिथि** और आथर्वणज्योतिषोक्त **करण** सुरु के स्तम्भों में दिए गए हैं। तदनन्तर **लौकिक तिथि, वैदिक नक्षत्र, लौकिक नक्षत्र** क्रमशः दिए गए हैं। **वार, निरयण सौर महीने के दिन (गते)** और **तारीख** अन्त के स्तम्भ में क्रमशः दिए गए हैं।

वैदिक चान्द्र संवत्सर वर्षभर एक ही रहता है। **बार्हस्पत्य संवत्सर** गणितानुसार बीच में ही परिवर्तित होता है। अतः उसी के अनुसार इन संवत्सरों का उल्लेख किया गया है।

अयनचलन के कारण पौराणि पर्वों का समय भी आगे आ गया है। कतिपय पौराणिक त्योहारों का समय १ महीने पूर्व और कतिपय पौराणिक त्योहारों का समय २ महीने पूर्व हो सकता है। इसको निश्चित करना और सुधारना भी आवश्यक है। किन्तु अभी इस तिथिपत्र में उसमें सुधार और परिवर्तन नहीं किया गया है। किन्तु पौराणिक पर्व त्योहार **वैदिक तिथि** के दिन ही दिए गए हैं, लौकिक तिथि में नहीं।

विवाह-व्रतबन्धादि के दिन (पुण्याह, मुहूर्त) वैदिक-सिद्धान्तअनुसार पारस्करगृह्यसूत्र के विधान के आधार में दिए गए हैं।

इस वैदिक तिथिपत्रका गणित नेपाल के प्रामाणिकसमय के अनुसार किया गया है। भारत के लिए १५ मिनट सयमका अन्तर होगा। सूर्योदय और सूर्यास्तकाल तो प्रत्येक नगर में देशान्तर के अनुसार भिन्नभिन्न होते हैं।

प्रस्तुत तिथिपत्र देखने के समय इन विषयों में विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

(ख) शास्त्रपरिचय

भारतवर्ष में सम्पूर्ण विद्याओं का मूल वेद माना जाता है। वेद में अन्तर्निहित बीजों को ही लेकर मुनियों ने विभिन्न विद्याओं का प्रणयन और विकास किया है। उन विद्याओं में भी वेद की अत्यन्त निकट विद्याएँ छः हैं। उनको वेदाङ्ग कहते हैं। वे हैं— शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दश्शास्त्र और ज्योतिष।

ज्योतिष में श्रौत और गृह्य कर्मों में अपेक्षित काल का निरूपण होता है। ज्योतियों की अर्थात् ज्योतीरूप सूर्य-चन्द्र-नक्षत्रों की गति-स्थितियों के आधार में काल का निरूपण करने वाला शास्त्र होने से इसको ज्योतिष कहा गया है। सभी वेदाङ्गशास्त्र वेद में प्राप्त तथ्यों को ही सङ्गृहीत तथा पल्लवित और विकसित करके मुनियों से विरचित माने जाते हैं।

उक्त स्थिति में वर्तमान काल में बहुप्रचारित ज्योतिष ग्रन्थों में और उनमें प्रतिपादित कालगणनासिद्धान्त में वेदवेदाङ्गों में आकाङ्क्षित विषयों का अभाव, अनाकाङ्क्षित विषयों का प्रतिपादन और वेदप्रतिकूल रूप में वर्षादि का निरूपण भी वेदाङ्गज्योतिष के सिद्धान्त में और प्रचलित ज्योतिष के सिद्धान्त में बहुत बडा अन्तर है।

(ग) वैदिक कालगणना के कुछ महत्त्वपूर्ण विषय

(१) वैदिक पञ्चवर्षात्मक युग

वेद में पञ्चसंवत्सरात्मक युग का प्रयोग है। अग्निचयन से युक्त सोमयाग में पाँच आहवनीयधिष्ण्यचितियों का चयन होने पर विधान के अनुसार गार्हपत्य अग्नि से अग्नि को ले जाकर आहवनीयचिति में यथास्थान रखकर विधानानुसार कर्म करके **"संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि"** इत्यादि मन्त्र से उपस्थान करने का विधान है। इस मन्त्र का पाठ वेदमन्त्रसंहिताओं में हैं। इसी लिए लौगाक्षिस्मृति में[1] पञ्चसंवत्सरात्मक युग का चराचरजगद्रूपता बताई गई है। इसी लिए लगधमुनि से विरचित **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थ में पञ्चसंवत्सरात्मक युग का प्रतिपादन किया गया है। महाभारत में (१।१२४।२२, २।११।३८) कौटलीय

---

१. **पञ्चसंवत्सरमयं जगदेतच् चराचरम्।**
ते पञ्च संवत्सराश् चाऽपि त इमे परिकीर्तिताः।—पृ.३७७।

अर्थशास्त्र में (२।२०) और सुश्रुतसंहिता में (सूत्रस्थान ६।७) भी पाँच संवत्सरों का युग बताया गया है। किन्तु सूर्यसिद्धान्त में अथवा आर्यपद्धति के ज्योतिष के मूल ग्रन्थ आर्यभटीय में अथवा ब्राह्मपद्धति के ज्योतिष के मूल ग्रन्थ ब्राह्मस्फुट-सिद्धान्त में भी इस पञ्चवर्षात्मक वैदिक युग का प्रतिपादन नहीं है।

(२) नववर्षारम्भ तपोमास (आर्तव माघ महीने) में

लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष में तपश्शुक्लप्रतिपदा में अर्थात् वेदाङ्गज्योतिष के अनुकूल परिभाषा के आर्तव माघ महीने की शुक्लप्रतिपदा में वर्ष का आरम्भ बताया गया है। यह माघ वर्तमान काल में प्रचलित मकर, कुम्भ, मीन मेष इत्यादि राशियों से परिभाषित माघ नहीं है[२]। यह तो शिशिर ऋतु से सम्बद्ध है। इस विषय में वेदाङ्गज्योतिष के प्राचीन व्याख्याकार सोमाकर ने वेदों में वसन्त-ग्रीष्म इत्यादि ऋतुओं का उल्लेख तो ब्राह्मण-क्षत्रियादि वर्णों के अग्न्याधान–अग्निष्टोमसोमयाग इत्यादि कृत्यों के प्रयोग के अभिप्राय से किया गया है, काल की गणना तो प्रकृतिसम्मत शिशिरादि वर्षारम्भ से ही होती है, ऐसा कहा है। दिव्यकालमान की दृष्टि से देखने पर भी मानुष वर्ष में सूर्यका उदगयन का (उत्तरायणका) काल देवों का दिन माना जाता है।

इस स्थिति में मूल वैदिक परम्परा में ऋतु–मासादि–गणना के आधारभूत प्रकृतिसम्मत वर्ष का आरम्भ तपश्शुक्ल-प्रतिपदा में (वेदाङ्गज्योतिषानुसारी माघ–शुक्लप्रतिपदा में) माने जाने की बात अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है।

आर्यभटीय में ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त में और सिद्धान्तशिरोमणि में और प्रचलित नवीन सूर्यसिद्धान्त में कैसे चैत्रशुक्लप्रतिपदा में अथवा मेषमास के आदि में वर्ष का आरम्भ बताया गया। यह वैदिकों के लिए ग्राह्य बात नहीं है। इस तिथिपत्र में तपोमास में ही वैदिक नववर्ष माना गया है।

(३) संवत्सर–परिवत्सरादि पाँच वर्षों का वैदिक युग

मार्कण्डेयस्मृति में संवत्सर–परिवत्सरादि वर्षों में तिल–यवादि के दान से बडा पुण्य मिलने की बात बताई गई है (स्मृतिसन्दर्भ, षष्ठ भाग पृ.१३४)। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में - ३।३१७,३) हेमाद्रि के चतुर्वर्गचिन्तामणि में (दानखण्ड पृ. ८९०) माधवाचार्य के कालमाधव में संवत्सरप्रकरण में भी इस दान का प्रतिपादन किया है। अतः वैदिक कृत्यविशेषों के लिए वर्तमान वैदिक चान्द्रसंवत्सरादि का ज्ञान की आवश्यकता स्पष्ट होती है। किन्तु प्रचलित ज्योतिषग्रन्थों में संवत्सर–परिवत्सरादि वर्तमान वत्सर को जानने के लिए कोई करणसूत्र नहीं मिलता है। वराहमिहिर की बृहत्संहिता के बृहस्पतिचाराध्याय में प्रतिपादित प्रभवादि संवत्सर तो (पद्य २०, पद्य २४) बार्हस्पत्य प्रभवादि संवत्सरों को जानने का करणसूत्र है चान्द्र प्रभवादि को अथवा चान्द्र संवत्सर–परिवत्सरादि को जानने का करणसूत्र नहीं। इस तिथिपत्र में चान्द्र संवत्सर-परिवत्सरादि और चान्द्र प्रभव–विभवादि वर्ष दिए गए हैं।

(४) सौरचान्द्र वर्ष

वैदिक परम्परा में मुख्य वर्ष चान्द्र ही है। यह बात लगध मुनि ने भी अपने वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ में **"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषशुक्लसमापिनः"** (श्लोक ५) इत्यादि श्लोक से पञ्चवर्षात्मक वैदिक युग का **माघशुक्ल में प्रारम्भ और**

---

२. भारतसम्प्रशासन (भारतसरकार) से नियुक्त पञ्चाङ्गसुधारसमिति के सदस्यसचिव रहे हुए निर्मलचन्द्र लाहिडी ने भी इस विषय में ध्यान न देकर अपने एफिमेरिज में वैदिक अथवा वेदाङ्गज्योतिषोक्त माघ मास को आधुनिक राशिपरिभाषित माघ मास मान कर इसी राशिपरिभाषित माघ मास की शुक्लप्रतिपदा से वैदिक अथवा वेदाङ्गज्योतिषोक्त नववर्ष का आरम्भ मानने की परम्परा चलाई है। उदाहरण के लिए Lahiri's Indian Ephemeris of Planets¬ Positions for 2004 के पृष्ठसङ्ख्या ११ के वेदाङ्गज्योतिषानुसारि कहकर दिया गया नववर्षसम्बद्ध उल्लेख को देखें। किन्तु यह बात यथार्थ नहीं है। मूल वैदिक वाङ्मय के प्राचीन ग्रन्थों में मकर, कुम्भ, मीन, मेष इत्यादि राशि का उल्लेख ही न होने से राशि-परिभाषित महीनों का उन में उल्लेख होने की बात नहीं मानी जा सकती है। वेदाङ्गज्योतिषोक्त माघमास तो वास्तविक दिनमान के अथवा शङ्कुच्छाया के निरीक्षण से निश्चित होने वाले दृक्सिद्ध सौर उत्तरायणबिन्दु से नियन्त्रित होने वाला माघमास है। इस मास का राशि से अथवा नक्षत्र से नियन्त्रण नहीं होता है।

पौषकृष्ण में समाप्ति बताकर स्पष्ट किया है। वेद, स्मृति, पुराण इत्यादि ग्रन्थों में भी धार्मिक कृत्यों में लिए वर्ष चान्द्र ही होने की बात स्पष्ट है। वेदों में वर्ष के तेरहवें महीने का उल्लेख अनेक स्थलों में होने से भी वर्ष का चान्द्रवर्षत्व अवगत होता है। बारह चान्द्र मासों के दोदो पक्षों को लेकर चौबीस पक्षों का संवत्सर माने जाने की बात से भी वर्ष का चान्द्रत्व स्पष्ट होता है। तथापि वर्तमान काल में प्रचलित सूर्यसिद्धान्त में चान्द्रवर्ष की उपेक्षा करके[३] बार्हस्पत्य संवत्सर का और मेषादि राशि के आधार में मेषमासादि बारह महीनों से एक वर्ष निष्पन्न होने की बात ही प्रमुख रूप में बताई गई है। इस तिथिपत्र में चान्द्र वर्षको मुख्य माना गया है।

(५) सौरचान्द्र अयन

मुख्य वैदिक परम्परा की कालगणना में युग, संवत्सर, अयन ऋतु, मास, पक्ष, तिथि सब ही मुख्य रूप में चान्द्र और सूर्यगतिसापेक्ष भी होने से गौण रूप में सौर भी हैं। अत एव इन सब को सौर–चान्द्र माना जाता है। लगधमुनि ने भी अयन के अन्त में ही अधिमास योजित करने की व्यवस्था का प्रतिपादन करके अयनों में भी सौरचान्द्रत्व स्थापित किया ही है–

द्व्यूनं द्विषष्टिभागेन दिनं सौराच्च पार्वणम्।
यत्कृतावुपजायेते मध्येऽन्ते चाऽधिमासकौ।।–श्लोक ३७।

पुराणादि ग्रन्थों में दी गई अयन–परिभाषा से भी वैदिक परम्परा में अयन भी चान्द्र अथवा सौरचान्द्र ही लिए जाने की बात स्पष्ट होती है। पुराणों में छः चान्द्रमासों से ही एक अयन होने की बात बताई गई है। उक्त शास्त्रीय वस्तुस्थिति में अयन को भास्करादि के कथन का आधार लेकर केवल सौर मानने की हेमाद्रि–माधव–कमलाकरादि धर्मशास्त्रनिबन्धकारों की बात उचित नहीं है। इस तिथिपत्र में धर्मकार्यार्थ अयन को भी सौर सापेक्ष चान्द्र माना गया है।

(६) चान्द्र ऋतु

वैदिक धार्मिक कृत्यों में ऋतुज्ञान की आवश्यकता होती है। शिशिर ऋतु में अग्निका आधान सभी वर्णों के लिए उचित होने की बात और वसन्त में ब्राह्मण के लिए, ग्रीष्म में क्षत्रिय के लिए, शरद् में वैश्य के लिए अग्नि का आधान उचित होने की बात भी काठकसंहिता में (८।१) देखी जाती है। श्रौतसूत्रों में भी उस प्रकार के उल्लेख मिलते हैं। बौधायनगृह्यसूत्र में वसन्त ऋतु में ब्राह्मण बटु का, ग्रीष्म ऋतु में क्षत्रिय बटु का, शरद् ऋतु में वैश्य बटुका और वर्षा ऋतु में रथकार बटुका उपनयन (व्रतबन्ध वा जनेऊ) करने का विधान है। ऋतुसापेक्ष विधान के परिपालन के लिए ऋतुओं का परिचय और गणनाप्रकार आवश्यक होता है।

वेदाङ्गज्योतिष में ऋतुगणना का मुख्य आधार स्पष्ट किया गया है। उससे वर्ष के सबसे छोटे दिन में (सब से न्यून दिनमान वाले दिन में) पडने वाली तिथिको देखकर उसके २४ दिन तक आगे या ५–६ दिन तक पीछे की शुक्लप्रतिपदा से तपोमास का आरम्भ मानना चाहिए। विविध ग्रन्थों में वैदिक धर्मकृत्य के ऋतुओं को चान्द्र बताया है। यह बात हेमाद्रि से चतुर्वर्गचिन्तामणि के परिशेष खण्ड के कालनिर्णय नाम के भाग में (पृ.१४) उद्धृत भास्करमिश्र के अधोलिखित वचन से अवगत होती है–

श्रौतस्मार्तक्रियाः सर्वाः कुर्याच् चान्द्रमसर्तुषु।
तदभावे तु सौरर्तुष्विति ज्योतिर्विदां मतम्॥

उक्त स्थिति में ऋतु को केवल सौर मानने की अर्वाचीन ज्योतिषियों की धारणा भौतिक ऋतुपरक होने से वैदिक धार्मिक ऋतुसिद्धान्तका अनुकूल नहीं है। आधुनिक तिथिपत्रों के (पञ्चाङ्गों के) रचयिता ऋतुओं को केवल सौर रूप में ही ले रहे हैं, यह उचित नहीं है। इस **वैदिक तिथिपत्रम्** में ऋतुओं को सौरचान्द्र माना गया है।

(७) चान्द्रमासों की प्रधानता

मूल वैदिक परम्परा में मुख्यतया मास चान्द्र ही लिए गए हैं। वेद के मन्त्रसंहिताओं में उल्लिखित तपः, तपस्य, मधु, माधव इत्यादि मास चान्द्र ही हैं। वेदों में अर्धमासों के (पक्षों के) नैरन्तर्य से मासों का उल्लेख किए जाने से भी वैदिक मास

---

३. **द्विराशिनाथा ऋतवस् ततोऽपि शिशिरादयः।**
मेषादयो द्वादशैते मासास् तैरेव वत्सरः।–मानाध्याय, श्लोक १०।

मुख्यतया चान्द्र होने की बात अवगत होती हैं[४]। अंहसस्पति मास (अधिकमास वा मलमास) से साहचर्य देखे जाने से भी मधु, माधव इत्यादि शब्दों का चान्द्रमासवाचकत्व स्पष्ट होता है[५]।

विवाह में भी चान्द्र मास को ही लेने की बात गृह्यसूत्रों में विवाहकाल बताने वाले वचनों में आपूर्यमाण पक्ष का अथवा पूर्वपक्ष का अथवा शुद्ध पक्ष का अथवा शुक्ल पक्ष का उल्लेख देखे जाने से अवगत होती हैं[६]।

इस वैदिक शास्त्रीय वस्तुस्थिति में सौर मास को विवाहादि में मान्य मानने की अर्वाचीन धारणा गृह्यसूत्रसम्मत नहीं है। वराहमिहिर ने भी विवाहपटल में[७] विवाह में चान्द्र मास ही ग्राह्य होने की बात सूचित की है। इस स्थिति में विवाह आदि में सौर मास को ग्राह्य मानना उचित नहीं है।

(८) चान्द्रमास की अमावास्यान्तता

मूल वैदिक परम्परा में चान्द्रमास शुक्लपक्षादि कृष्णपक्षान्त है। यह बात लगध मुनि के **"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्णसमापिनः"** (श्लोक ५) इस वचन से ही स्पष्ट होती है। वेदों में और वेदाङ्गों में शुक्लपक्ष को पूर्वपक्ष और कृष्णपक्ष को अपरपक्ष कहा गया है।

उपयुक्त प्रकार की शास्त्रीय वस्तुस्थिति होने पर भी मूल वैदिक परम्परा को छोडकर भारतवर्ष के उत्तरभाग के तिथिपत्रकारों ने (पञ्चाङ्गकारों ने) चान्द्रमास को कृष्णादि शुक्लान्त माना है, यह उचित नहीं दीखता। उन्होंने चैत्रकृष्णपक्ष को पूर्ववर्ष में रखकर मास के मध्य से चैत्रशुक्ल प्रतिपदा में वत्सरारम्भ कैसे माना यह भी उचित नहीं दीखता।

(९) अयन के अन्त में ही अधिमास मानने की वैदिक व्यवस्था

वेदों में अधिमास के उल्लेख मिलते हैं। श्रौतसूत्रों में (बौधायन. ७।१६, आपस्तम्ब.८।२०।८, कात्यायन. ९।१३।१८) भी उक्त मास के उल्लेख मिलते हैं। ऋग्वेदसंहिता में ही[८] अधिकमास का उल्लेख किया गया है। ऋग्वेदियों के ऐतरेयिब्राह्मण में अधिक मास को निन्द्य काल बताने वाला[९] उल्लेख पाया जाता है।

चान्द्र और सौर ऋतुओं के बीच में कभी भी एक महीने के काल से अधिक दूरी न हो इस लिए चान्द्र अधिकमास की व्यवस्था आवश्यक होने से भी अधिकमास की परिभाषा आवश्यक होती है। अधिकमास (मलमास) की परिभाषा बताने वाला उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थ लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ है। उसके सैंतीसवें श्लोक में अधिकमास के उत्पत्ति की व्यवस्था अथवा व्याख्या की गई है—

द्व्यूनं द्विषष्टिभागेन दिनं सौराच्च पार्वणम्।
यत्कृतावुपजायेते मध्येन्ते चाधिमासकौ॥

यह अधिमास की व्यवस्था महाभारत में विराटपर्व में (चित्रशालासंस्करण ५२।१–३, सातवलेकारसंस्करण ४७।१–३)।

---

४. **अर्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा।**
—मा.वा.शु.य.वे.२२।२८, तैत्तिरीय सं. ७।१।१५।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरा विधृताः।
—शतपथब्राह्मण १४।६।८।९।

अधर्मासा मासा ऋतवः संवत्सर ओषधीः पचन्ति।
—तैत्तिरीयसं. ५।७।२।५ द्र. ५।७।२।६, ७।५।२५।१।

अर्धमासास् त्वा मासेभ्यः परिददतु।—सामवेद-मन्त्रब्राह्मण १।५।१५।

५. **उपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वोपयामगृहीतोऽस्यंहसस्पतये त्वा।**
—७।३०, शतपथ ४।३।१।१३-२०।

तपस्याय स्वाहाऽहसस्पतये स्वाहा।—शु.य.वे.सं. २२।३१।

तपस्याय स्वाहा संसर्पोऽस्यंहस्पत्याय स्वाहा।—मै.सं.३।१२।१३।

तपश् च तपस्यश् चोपयामगृहीतोऽसि संसर्पोऽस्यंहस्पत्याय त्वा।
—तै.सं.१।४।१४।१, द्र. ६।५।३।४।

६. **उदगयन आपूर्यमाणपक्षे कल्याणे नक्षत्रे चौडकर्मोपनयन-गोदान-विवाहाः।**— १।४।१।

७. **चैत्रं प्रोभ्य पराशरः कथयते दुर्भाग्यदं योषिताम्,**
आषाढादि चतुष्टये न शुभदं कैश्चित् प्रदिष्टं द्विजैः।
श्रेष्ठं पक्षमुशन्ति शुक्लमसितस्याद्यं त्रिभागं तथा,
रिक्तां प्रोभ्य तिथिं तथा त्वयनयोः सन्धिं च शेषाः शुभाः॥
—पद्य १६,१७।

८. **वेदमासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते।**—१।२५।८।

९. **तं त्रयोदशान् मासादक्रीणँस् तस्मात् त्रयोदशो मासो नाऽनुविद्यते न वै सोमविक्रप्यनुविद्यते पापो हि सोमविक्रयी।**—३।१[१।१२]।

और विक्रमपूर्व तीसरी शताब्दी के माने गए ग्रन्थ कौटलीय अर्थशास्त्र में बताई गई है।

ऐसी वेदाङ्गज्योतिष की व्यवस्था होने पर भी हेमाद्रि-प्रभृति अर्वाचीन धर्मशास्त्रनिबन्धकारों ने अधिकमास की वेदाङ्ग-ज्योतिषोक्त और कौटलीयार्थशास्त्र में प्रतिपादित परिभाषा को न लेकर लघुहारीत, ब्रह्मसिद्धान्त, नन्दिपुराण, ज्योतिःशास्त्र, काठक-गृह्यपरिशिष्ट, जाबालि, बार्हस्पत्यज्योतिषग्रन्थ इत्यादि का नाम लेकर अधिकमास और क्षयमास की परिभाषा बताई है। जीमूत-वाहन, हेमाद्रि, माधव, कमलाकरभट्ट इत्यादि धर्मशास्त्रनिबन्धियों ने अर्वाचीन वचन को प्रमाण के रूप में लेकर अधिकमास का निरूपण किया है। उक्त प्रकार की स्थिति भरवर्षीय ज्योतिषियों में और धर्मशास्त्रनिबन्धियों में कैसे आई यह एक बडा ही ज्वलन्त प्रश्न है। इस तिथिपत्र में वेदाङ्गज्योतिष की परिभाषा के अनुसार अयन के अन्त में ही अधिकमास माना गया है।

(१०) क्षयमास कैसे स्वीकारा गया?

क्षयमास का उल्लेख अर्वाचीन ज्योतिषग्रन्थों में पाया जाता है। उनमें तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रचे गए भास्कर के सिद्धान्तशिरोमणि में[१०] एक वचन मिलता है। भास्कर ने वासना में अपने उक्त वचन की व्याख्या में भी[११] एक विलक्षण उल्लेख किया है। उक्त उल्लेख से भास्कर के समय में भी क्षयमास लोक में ही नहीं ज्योतिषियों भी अप्रसिद्ध होने की बात झलकती है। इससे अर्वाचीन ज्योतिषियों में पाई जाने वाली सूर्यराशि-सङ्क्रान्ति में आधृत अधिक-मास और क्षयमास की धारणा बिलकूल अर्वाचीन अवगत होती है। वेदाङ्गज्योतिष में और अन्य प्राचीन ज्योतिषग्रन्थों में भी क्षयमास का उल्लेख नहीं मिलता है।

उक्त स्थिति में अपौरुषेय वेद के वाक्यों के अथवा वेदमूलक वाक्यों को ही धर्म में प्रमाण मानने वाली और अनादि अनपभ्रष्ट परम्परा को ही धर्म के रूप में ग्रहण करने वाली वैदिक परम्परा में ऐसे अवेदमूलक सादि क्षयमास की धारणा कैसै धर्म में मान्य हुई यह भी एक बहूत बडा ज्वलन्त प्रश्न है। इस तिथिपत्र में क्षयमास के सिद्धान्तको नहीं माना गया है।

(११) अहोरात्रात्मक अखण्ड तिथि (वैदिक तिथि)

मूल वैदिक वाङ्मय में तिथि शब्द का प्रयोग दुर्लभ है। जहाँ तिथि शब्द का प्रयोग उचित दिखाई देता है वहाँ पर अहः शब्द का अथवा अहोरात्र शब्द का प्रयोग मिलता है। जैसे **"अहोरात्रेभ्यः स्वाहाऽर्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा"** (माध्यन्दीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेद २२।२८) इत्यादि स्थलों में अहोरात्र शब्द अर्धमास से सम्बद्ध दिखाई देने से तिथिवाचक अवगत होता है। ऐसे प्रयोग अनेक हैं[१२]। श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, स्मृति, महाभारत इत्यादि ग्रन्थों में तिथि शब्द के स्थान में अहोरात्रशब्द, अहश्शब्द, दिवसशब्द, दिनशब्द इत्यादि का प्रयोग पाये जाने से[१३] वैदिक परम्परा में सामान्यतया तिथि

---

१०. **असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्याद्**
द्विसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।

११. **यस्मिन् शशिमासेऽर्कसङ्क्रान्तिर् नाऽस्ति सोऽधिमास इति प्रसिद्धम्। तथा यत्र मासे सङ्क्रान्तिद्वयं भवति स क्षयमासो ज्ञेयः।**

१२. **पूर्वपक्षाश् चितयोऽपरपक्षाः पुरीषमहोरात्राणीष्टकाः।**—तैत्तिरीयसं ५।७।६।६, तै.ब्रा. ३।१०।४।१-२, तै. आरण्यक ४।१९।१),
चन्द्रमा वा अकामयताऽहोरात्रानर्धमासान् मासानृतून् संवत्सरमाप्त्वा चन्द्रमसः सायुज्यं सलोकतामाप्नुयाम्।—तै.ब्रा.३।१।६।१।
एत उ वाव लोका यदहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरः।—मा.वा.शु.य.वे. शतपथ ब्राह्मण १०।२।६।७।

१३. **यदहर् मासः पूर्यते तदहरिष्टिं समाप्य।**—आश्वलायनश्रौतसूत्र १२।४।१०। द्र.-बौधायनश्रौतसूत्र ५।१।
यदहः पूर्णश् चन्द्रमाः स्यात् तां पौर्णासीमुपवसेत्।—भारतद्वाजश्रौत १।१।६। द्र.-आस्तम्बश्रौत २४।२।२१)।
शुद्धपक्षस्य पुण्याहे पर्वणि वा।—काठकगृह्यसूत्र ३१।२, ४३।४ द्र. ३७।२, द्र. आपस्तम्बधर्म २।७।१।१-७।
एकान्तरेऽहनि मासे च।—वेदाङ्गज्योतिष श्लो. ११।
युक्षु कुर्वन् दिनर्क्षेषु।—मनुस्मृति ३।२७७।
माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाऽह्ने प्रथमेऽहनि।—मनुस्मृति ४।९६।
समा-मास-तदर्धाऽहर्-नाम-जात्यादि चिह्नितम्।—याज्ञवल्क्यस्मृति २।६, २।८५।
कृष्णस्य पक्षस्य चतुर्दशाहे।—महाभारत ११।२१।१३।
अद्यैव नक्षत्रमहश् च पुण्यम्।—महाभारत १४।६४।१४।

अहोरात्रात्मक माने जाने की बात स्पष्ट होती है। लोकव्यवहार में भी वैदिक शास्त्रों के अनुकूल रूप में तिथियों को अहोरात्रात्मक ही मनने की परम्परा रही हुई बात कायस्थों के तिथिपत्रों से अवगत होती है। वेदाङ्ज्योतिष में लगधमुनि से भी तिथियों को अहोरात्रात्मक रूप में ही लिया गया है (श्लोक ९, ११)।

उक्त प्रकार की शास्त्रीय स्थिति में ब्रह्मगुप्तादि से प्रतिपादित स्फुट (स्पष्ट) तिथि का सिद्धान्त क्यों और कैसे वैदिक परम्परा के ज्योतिषियों से और धर्मशास्त्रियों से अपनाया गया यह भी एक बडा प्रश्न है। इस **वैदिकतिथिपत्रम्** में अहोरात्रात्मक तिथि को **वैदिक तिथि** और सिद्धान्तज्योतिष की परिभाषाअनुसार की स्फुट तिथि को **लौकिक तिथि** कहा गया है। लौकिकतिथिका समाप्तिकाल को दृक् गणना के आधार पर दरसाया गया है । यहाँ वैदिक नक्षत्रचक्र कृत्तिका की प्रथम तारा से चन्द्रमा के योग से प्रारम्भ होनेवाला माना गया है। इसी प्रकार लौकिक नक्षत्र का समाप्तिकाल भी दृक् पद्धति से दिखाया गया है।

(१२) वैदिक नक्षत्रक्रम

नक्षत्रों के नाम वैदिक संहिताओं में और ब्राह्मणग्रन्थ में भी कृत्तिकादि ही रहा हुआ अवगत होता है। ऐसी स्थिति में वर्तमान काल में ज्योतिषियों में प्रचलित अश्विन्यादि क्रम कैसे प्रचलन में आया और कैसे वैदिक ज्योतिषियों को और धर्मशास्त्रियों को मान्य हुआ यह भी एक प्रश्न है।

(१३) वेदाङ्गज्योतिष में बताई गई नक्षत्र नामकरण की रीति

वैदिक धर्मकृत्यों में सुब्रह्मण्याह्वानादि में यजमानादिका नाम का उच्चारण आवश्यक होता है। उसके लिए नक्षत्रनाम रखने की आवश्यकता होती है। वैदिक परम्परा को ध्यान में रखकर ही लगध मुनि ने वेदाङ्गज्योतिष के **"अग्निः प्रजापतिः सोमः"** इत्यादि श्लोकों (३२।३५) में नक्षत्र की देवताओं के नामों से यज्ञ में प्रयोग के लिए यजमान का नाम रखने की बात कही है। इस वेदाङ्गज्योतिष की अनुकूल नक्षत्रनाम की व्यवस्था आयुर्वेद के अति प्राचीन ग्रन्थ चरकसंहिता में दी गई है। वृद्ध वाग्भट के अष्टाङ्गहृदय में भी वैसी ही व्यवस्था है। यह व्यवस्था अर्वाचीन कालतक मान्य रहकर चली आ रही अवगत होती है।

वीरमित्रोदयकार, संस्कारकौस्तुभकार, संस्काररत्नमालाकार, संस्कारभास्करकार, धर्मसिन्धुकार, संस्कारप्रदीपकार इत्यादि अर्वाचीन विद्वानों ने तो अ–व–क–ह–ड–चक्रानुसारी नक्षत्रनामों का भी उल्लेख किया है। निर्णयसिन्धुकार ने तो अवकहडचक्रानुसारि नाम ही रखनेकी बात की है। इससे अर्वाचीन काल में अवकहडचक्रानुसारी नक्षत्रनाम रखने की प्रथा प्रबल होती हुई प्रतीत होती है। वैदिक संस्कार से सम्बन्ध रखनेवाले नाम के विषय में भी ऐसी स्थिति कैसे आई यह भी एक बहुत बडा ही ज्वलन्त प्रश्न है। हमने वेदाङ्गज्योतिषानुसार नक्षत्रनाम रखने की रीति इस **वैदिकतिथिपत्र** में दिखाई है। अन्य पञ्चाङ्गकार भी इसका समावेश अपनेअपने पञ्चाङ्गों में करके इस वैदिक रीतिका पुनर्जागरण में योगदान दें।

(घ) वेदाङ्गज्योतिष

(१) वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ की महत्ता

वेदाङ्गज्योतिष में वर्णित पञ्चवर्षात्मक युग का वेदों में उल्लेख है। वेदाङ्गज्योतिष में प्रतिपादित सूर्य के उदगयन दक्षिणायन की चर्चा वेदों में प्राप्त है। मैत्रायणीय ब्राह्मणोपनिषद् में[१४] और बौधायनश्रौतसूत्र में भी वेदाङ्गज्योतिष के अयन-निरूपण का आधारभूत[१५] वचन प्राप्त होते हैं। इतिहास के विभिन्न काल के अन्य ग्रन्थों में भी लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्ग-ज्योतिष ग्रन्थ का उल्लेख पाया जाता है। छठी शताब्दी के वराहमिहिर के बृहत्संहिता में वेदाङ्गज्योतिष की ओर सङ्केत

---

१४. **सूर्यो योनिः कालस्य, तस्यैतद् रूपं यन् निमेषादिकालात् सम्भृतं द्वादशात्मकं वत्सरम्। एतस्याऽऽग्नेयमधमर्धं वारुणम् , मघाद्यं श्रविष्ठार्धं माग्नेयं क्रमेणोत्क्रमेण सार्पाद्यं श्रविष्ठार्धान्तं सौम्यम्।**— मैत्रायणीयोपनिषद् ६।१४।

१५. **षाण्मास्य एष पशुबन्ध उक्तो भवति, अथाऽप्युदाहरन्ति षद्सुषद्सु मासेष्वाहिताग्निना पशुना यष्टव्यं भवति, उभे काष्ठे अंभियजेत माघमासे धनिष्ठाभिरुत्तरेणैति भानुमान्। अर्धाश्लेषस्य श्रावणस्य दक्षिणेनोपनिवर्तते॥ इत्येते काष्ठे भवतः, तदन्ततोऽनीजानस्य संवत्सरो नाऽतीयात्।**—२६।२९।

है[१६]। ग्यारहवीं शताब्दी के भट्टोत्पल ने बारहवीं शताब्दी के उवट ने, हरदत्त ने भी काशिका की व्याख्या पदमञ्जरी में वेदाङ्गज्योतिष के विषय का सङ्केत किया है। जीमूतवाहन, सूर्यदेव, विष्णुचित्त ने विष्णुपुराण की व्याख्या में लगधाचार्य का नाम ही लेकर वेदाङ्गज्योतिष का श्लोक लिखा है।

कालमाधवकार माधव, सायण, मित्रमिश्र इत्यादि ने भी वेदाङ्गज्योतिष का उल्लेख किया है। संस्कारभास्करकार ऋषिभट्ट[१७], संस्काररत्नमालाकार गोपीनाथभट्ट, धर्मसिन्धुकार काशीनाथोपाध्याय इत्यादि ने भी नामकरण के प्रकरण में "चू चे चो ला अश्विनी" इत्यादि की व्यवस्था को श्रौतग्रन्थों का असम्मत बताकर वेदाङ्गज्योतिषोक्त नक्षत्रनामकरण रीति दिखाई है।

सोमाकर की प्राचीन व्याख्या भी लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष की महनीयता को और अनुसरणीयता को अच्छी तरह ही प्रकाशित करती है। इसका सम्पादन करके १९६४ संवत् में सुधाकर द्विवेदी ने काशी में प्रकाशित करवाया था। हमने भी इस का पुनः सम्पादन करके कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान के साथ २०६२ संवत् में (२००५ में) मुद्रित करवाया है।

उक्त विवरण से अनादि काल से वेदाङ्गज्योतिष में प्रतिपादित विषय वैदिक आर्य परम्परा में मान्य रहे हुए अवगत होते हैं। इस स्थिति में वे विषय अर्वाचीन काल में कैसे पीछे पड गए। वैदिक परम्परा के ज्योतिषियों ने और धर्मशास्त्रियों ने उन विषयों को और **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ के विषयों को कैसे भुला दिया, यह भी एक प्रश्न है। **हमने वेदाङ्गज्योतिष की व्याख्या करके उसके अनुसार इस तिथिपत्र को निष्पादित करके प्रकाशित किया है। और यथाशक्ति प्रचारित भी कर रहे हैं। अन्य पञ्चाङ्गकार भी वेदाङ्गज्योतिष-पद्धति के युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, अधिकमास, तिथि, नक्षत्र और करण को अपने-अपने पञ्चाङ्गों में समावेश करके पञ्चाङ्ग प्रकाशित करेङ्गे तो यह वेद, वेदाङ्ग और वैदिकसनातनवर्णाश्रमधर्म के लिए बहुत बडा काम होगा। एतदर्थ सहयोग करने के लिए हम सदा तत्पर हैं।**

(२) वेदाङ्ज्योतिष ग्रन्थ का परिष्कार और व्याख्यान

वेदाङ्गज्योतिष में कालगणना के आधारभूत पञ्चवर्षात्मक युग की कालनिरूपण की पद्धति निदर्शन के रूप में दिखाई गई है। उस युग में शुक्लप्रतिपदा के आरम्भ का और सौर उत्तरायण के आरम्भ का क्षण एक ही था। शुक्लप्रतिपदा के आरम्भ के काल में और सौर उत्तरायण के आरम्भ के काल में कोई अन्तर नहीं था। वेदाङ्गज्योतिष के कालगणना के आरम्भ के इस पञ्चवर्षात्मक आदर्शयुग को **आदियुग** कहा गया है। ऐसे युग में युग के मध्य में और अन्त में अधिकमास हाते हैं। सभी पञ्चवर्षात्मक युगों में ऐसी स्थिति नहीं हो सकती है। इस लिए लगधमुनि ने स्पष्ट रूप में कहा है कि इस ग्रन्थ में दिखाया गया गणित **दिक्-प्रदर्शनात्मक** है, और युग की वस्तुस्थिति को देखकर इसी प्रकार का गणित अन्य पञ्चवर्षात्मक युगों के लिए भी कल्पित किया जाना चाहिए। उनका वाक्य है **"इत्युपायसमुद्देशो भूयोऽप्येवं प्रकल्पयेत्"** (श्लो. ४२)। इस स्थिति में वैदिक ज्योतिषियों को और धर्मशास्त्रियों का लगध मुनि के मूल निर्देशों को लेकर उसमें आवश्यक परिष्कार करके श्रौत-स्मार्त-धर्म कृत्य के लिए युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, पर्वकाल, नक्षत्र, अधिमास इत्यादि की गणना की व्यवस्था करनी चाहिए। जैसे पाणिनीय व्याकरण में सूत्रों में पाई जाने वाली न्यूनताओं को वार्त्तिकों से और भाष्य से पूर्ण करके पाणिनीय व्याकरण को व्यवहार में लाया गया वैसे ही लगधमुनि के वेदाङ्गज्योतिष में भी पूरण और व्याख्यान तथा स्पष्टीकरण करके उस ग्रन्थ को व्यवहार में लाना चाहिए था। इस प्रकार परिष्कार और व्याख्या करने लिए वेद–वेदाङ्गों के विद्वानों का, वैदिक ज्योतिषियों का और धर्मशास्त्रियों का ध्यान क्यों नहीं गया? उनसे इस पक्ष में प्रयत्न क्यों नहीं हुआ? यह भी एक बहुत ही बडा प्रश्न है।

---

१६. **आश्लेषार्धाद् दक्षिणमुत्तरमयनं रवेर् धनिष्ठाद्यम्।**
नूनं कदाचिदासीद् येनोक्तं पूर्वशास्त्रेषु॥—३।१।

१७. **नाक्षत्रनामानि तु चूचेचोलाऽश्विनी प्रोक्तेत्यादिज्योतिर्ग्रन्थोक्ताऽवकहडाचक्रानुसारेणाऽश्विन्यादिचतुश्चरणेषु चूडामणिश् चेदीशश् चोलेशो लक्ष्मण इत्यादिकानि कुर्वन्ति। कातीयानां कृत्तिकोत्पन्नस्याऽग्निशर्मेति नक्षत्रदेवतासम्बद्धं नाक्षत्रं नाम कुर्यात्।**
—संस्कारभास्कर नामकरण–प्रकरण पत्र १२३, १२४।

इस लौकिक और शास्त्रीय वस्तुस्थिति में भारत के स्वतन्त्र होने पर सम्पूर्ण भारत के लिए एक सर्वस्वीकार्य पञ्चाङ्ग बनाने की पद्धति प्रस्तुत करने के लिए १९५२ क्रैस्ताब्द में भारत–सम्प्रशासन (सरकार) से बडे वैज्ञानिक मेघानाद साहा की अध्यक्षता में बडे ज्योतिषी निर्मलचन्द्र लाहिडी (एन्.सी.लाहिरी) के सदस्यसचिवत्व में नाना प्रदेश के अन्य छः विज्ञों को सम्मिलित करके एक समिति बनाई गई। उसके निर्देशों के अनुसार १९५७ क्रैस्ताब्द से (२०१४ संवत् से) भारतीय सम्प्रशासन (सरकार) से अनेक भारतीय भाषाओं में और आङ्लभाषा में **राष्ट्रिय पञ्चाङ्ग** नाम से पञ्चाङ्ग प्रकाशित किए जा रहे हैं।

पञ्चाङ्ग–सुधार समिति (**Calendar Reform Committee**) के उन निर्देशों को और प्रकाशित पञ्चाङ्गों के नमूनों को देखने से विदित होता है कि उक्त समिति का लगध-मुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष में समुचित रूप में ध्यान नहीं गया है। यद्यपि वेदाङ्गज्योतिष को समझने के लिए वेबेर, थीबो, जनार्दन बालाजी मोडक, शङ्कर बालकृष्ण दीक्षित, लाला छेटेलाल बार्हस्पत्य, सुधाकर दिवेदी, बालगङ्गाधर तिलक, शामशास्त्री इत्यादि के प्रयास पूर्ण रूप में सफल नहीं हुए थे, तथापि पञ्चाङ्ग सुधार समिति को उसका गौरव अच्छी तरह समझकर और वह ग्रन्थ किसी सम्प्रदाय विशेष से और प्रान्त-विशेष से विशेष रूप से असम्बद्ध और पूरे भारतवर्ष से सम्बद्ध होने से यह ग्रन्थ और उसकी व्यवस्था सभी भारतवर्षीय लोगों को स्वीकार्य होने की बात का अच्छी तरह आकलन करके उस ग्रन्थ के मुख्य बातों में विशेष ध्यान देना ही चाहिए था।

उक्त वस्तुस्थिति का विचार करने पर भारतवर्ष के बडे खगोल वैज्ञानिकों का और भारतीय राष्ट्रिय सम्प्रशासन के नेताओं का भी मूल वैदिक परम्परा के गौरव में और उसकी रक्षा में समुचित ध्यान क्यों नहीं गया और तदनुसार पर्याप्त अध्ययन और प्रयास क्यों नहीं हो सका यह भी एक बहुत ही बडा प्रश्न खडा होता है।

(ङ) उपसंहार

हमारी शास्त्रव्यवस्था का मूल वेद का अध्ययन और अध्यापन है। वेद के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपनयन की और ब्रह्मयज्ञ की (स्वाध्यायाध्ययन की) शास्त्रीय व्यवस्था है। इन व्यवस्थाओं का निर्वहण मुख्य रूप में ब्राह्मणों में निर्भर होता है। वेदविद्या का अपनी रक्षा के लिए ब्राह्मण के समीप में आना वेद में (संहितोपनिषद्ब्राह्मण, तृतीय खण्ड), निरुक्त में (२।१।४) और वासिष्ठधर्मसूत्र में (२।८) भी वर्णित है। इससे वेद विद्या के और वैदिक व्यवस्था के संरक्षण में ब्राह्मणों का विशेष उत्तरदायित्व अवगत होता है। तथापि क्षत्रिय–वैश्यादि की समझदारी और सहायता के विना ब्राह्मणों से उक्त उत्तरदायित्व का वहन अच्छी तरह से नहीं हो सकता है।

आज से प्रायः ५००० वर्षों से पहले कलियुग का प्रारम्भ होने के समय से ही अर्थकामपरायण चार्वाकों की क्रमशः वृद्धि होने से, जैनों के और बौद्धों के उदय से, फारस के कुरुष के सिकन्दर के आक्रमण से और शक, पह्लव, कुषाण, हूण, अरब इत्यादि के आक्रमणों से भारतवर्ष की वर्णाश्रमव्यवस्था में अव्यवस्था की सी स्थिति आ गई थी। भारतवर्ष में अङ्ग्रेजों के शासन के काल में (१८३०–२००४ वै.) भी वर्णाश्रमधर्म को और उसके शास्त्रों को और भी शिथिल करने की भरपूर चेष्टा करने की बात अवगत होती है। इन सब कारणों से वैदिक सनातन वर्णाश्रमधर्म में और आर्ष वेद-वेदाङ्गाऽध्ययन में बहुत शिथिलता आई हुई प्रतीत होती है।

वेदवेदाङ्गों का सन्तुलित अध्ययन की परम्परा बहुत समय से शिथिल रही हुई प्रतीत होती है। अत एव मूल वैदिक धारा के भारतवर्षीय ब्राह्मणों से वेदाङ्गज्योतिष के और स्मृति के प्रतिकूल बातों का भी सम्यक् आकलन नहीं हो सका।

यह सब वेदवेदाङ्गों की अच्छी तरह अध्ययन नहीं करने का और नित्य ब्रह्मयज्ञ का सम्यक् सम्पादन नहीं करने का ही परिणाम है। इस लिए नित्य ब्रह्मयज्ञ में अध्येतव्य ग्रन्थों का विवरण भी देकर **ब्रह्मयज्ञपद्धति** को वाराणसी के चौखम्बा-विद्याभवन से प्रकाशित कराके उसको प्रचारण का प्रयास किया गया है। साथ में ही वेदाङ्गज्योतिष का भी विस्तृत भूमिका के साथ में **कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान** का भी प्रणयन और उसको भी वाराणसीस्थ चौखम्बाविद्याभवन से ही २००५ में प्रकाशित कराया गया है। वेदाङ्गज्योषशास्त्र के विषय में उससे प्रामाणिक और यथार्थ जानकारी मिल सकती है। "**भारतवर्षीय**

ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष" ग्रन्थ भी चौखम्बा विद्याभवन से ही २००८ में प्रकाशित है।

इन सब बातों का विचार करके भारतवर्षीय द्विजातियों को अपनी मूल परम्परा को अच्छी तरह पहचान करके उनका अध्ययन तथा दृढता से संरक्षण और अनुसरण भी करना चाहिए। पञ्चाङ्गकारों को इन वेदाङ्गज्योतिषानुसारी विषयों को अपने अपने पञ्चाङ्गों में समावेश करना चाहिए। तथा वैदिक यज्ञ-विवाह-व्रतबन्धादि कृत्यों में इसी वैदिक पद्धतिका आधार लेना चाहिए सङ्कल्प में भी इसी अनुसार कालका उल्लेख करना चाहिए।

सभी वैदिकसनातनवर्णाश्रमधर्मानुयायी सज्जन वेदाङ्गज्योतिष के और तदनुसारी वैदिक कालगणनापद्धति के प्रचार-प्रसार में सहायता करें॥

लोक में प्रचलित निरयणसौरमास

मकरमास-माघ, कुम्भमास-फागुन, मीनमास-चइत, मेषमास-वैशाख, वृषमास-जेठ, मिथुनमास-असार, कर्कटमास-साउन, सिंहमास-भदौ, कन्यामास-असोज, तुलामास-कात्तिक, वृश्चिकमास-मङ्सिर, धनुर्मास-पुस।

स्वाद्ध्यायशाला, काठमाण्डु, नेपाल।

☎ ९८४३१६२०५३

Email : svadhyaya@hotmail.com

वैदिकतिथिपत्रस्य संस्कृतभूमिका

इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः

(क) तिथिपत्रविलोकनात् पूर्वं ज्ञातव्या विषयाः

प्रस्तुते तिथिपत्रे प्रतिपृष्ठं शिरोभागे प्रथमपङ्क्तौ **वैदिकं वर्षम्, अयनम्, ऋतुः, मासः, पक्षश्चेति विषयाः** स्थूलाक्षरैर् लिखिताः सन्ति। **अन्यमतस्य वर्षम्, मासः इत्यादिविषयाः** द्वितीयपङ्क्तौ सूक्ष्माक्षरैर्लिखिताः।

वैदिकी **तिथिः** आथर्वणज्योतिषोक्तं **करणं** च आरम्भस्य स्तम्भयोर्दत्ते। तदनन्तरं लौकिकी तिथिः, वैदिकं नक्षत्रं लौकिकं नक्षत्रं च क्रमशः दत्तानि। **वारः, निरयण-सौर-मासस्य दिनम् (गते) तारिकं** च अन्तस्य स्तम्भेषु क्रमशो दत्तानि।

वैदिकश्चान्द्रः संवत्सरः पूर्णे वर्षे एक एव भवति। **बार्हस्पत्यः संवत्सरो** गणितानुसारं मध्ये एव परिवर्तितो भवति।

अयनचलनकारणात् पौराण-पर्वसमयः पूर्वमागतः। कतिपय-पौराणपर्वणां समयः १ मासपूर्वम् कतिपयपौराणपर्वणां समयः मासद्वयपूर्वं वाऽपि भवितुं शक्नोति। प्रमाणानुसारम् एतस्य निश्चयः तदनुसारं परिवतर्तनं चाऽऽवश्यकम्। किन्तु इदानीम् अस्मिन् तिथिपत्रे तथा परिवर्तनं न कृतम्। केवलं पौराणिकपर्वाण्यपि **वैदिकतिथौ एव दत्तानि**, न तु लौकिकतिथौ।

विवाह-व्रतबन्धादिपुण्याहानां समावेशः वैदिकसिद्धान्तानुसारं पारस्करगृह्यसूत्र-विधानानुसारं कृतः।

अस्य वैदिकतिथिपत्रस्य गणितं नेपालस्य प्रामाणिकसमयानुसारं कृतमस्ति। भारतस्य कृते १५ निमेषक(मिनट)मितसयमस्य अन्तरं भवति। सूर्योदयकालः सूर्यास्तमयकालश्चैवाऽपि देशान्तरानुसारं भिद्येते।

प्रस्तुतस्य तिथिपत्रस्य विलोकने एते विषया विशेषेण स्मरणीयाः।

(ख) धर्मः

यो ह्यवगतः सन् स्ववृत्तितयेष्यते स पुरुषार्थः। स च द्विविधः साध्यरूपः साधनरूपश् च। तत्र कामः मोक्षश् च साध्यरूपौ पुरुषार्थौ। **"यतोऽभ्युदयनिश्श्रेयससिद्धिः स धर्मः"** इति कणादो धर्मतटस्थलक्षणमाह वैशेषिकसूत्रे (१।१।२)। जैमिनिः खलु धर्मस्वरूपलक्षणमाह धर्ममीमांसासूत्रे **"चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः"** (१।१।२) इति। **"श्रुतिस्मृतिविहितो धर्मः"** इति धर्मलक्षणं वासिष्ठधर्मसूत्रे (१।४) प्रोक्तम्।

तत्र पुरुषार्थेषु धर्मस्य प्राथम्यमिति लोकेऽपि **"धर्मार्थकाममोक्षाः"** इति प्रसिद्धिरस्ति। भारतवर्षीय-ज्ञानविज्ञान-विश्वकोषरूपे महाभारते खलु वेदव्यासः कृष्णो द्वैपायनो मुनिरपि **"ऊर्ध्वबाहुर् विरौम्येष न च कश्चिच् छृणोति मे। धर्मादर्थश् च कामश् च स किमर्थं न सेव्यते।।"** (१८।५।६२) इति रोरूयते। तत्र

धर्मान् न केवलं मोक्षः, किन्तु लोकैषणाप्रधानानामीप्सिततमौ अर्थकामौ अपि धर्मादेव सिद्ध्यत इति मुनेरभिप्रायोऽवगम्यते।

(ग) धर्मज्ञानं च प्राधान्येन वेदादेव भवति, वेद-स्वरूपादीनां यथार्थज्ञानं च मुख्यतया वेदाङ्गशास्त्रेभ्य एव भवति

धर्मज्ञानं चाऽस्मादृशानां वेदादेव भवति। वेद-स्वरूप-प्रयोगार्थ-रहस्य-सम्यग्ज्ञानमपि अस्मद्विधानां शिक्षादिभिः षड्भिरङ्गैस् तदनुकूलया गुरुशिष्यपरम्परया यथाविधि वेदस्याऽध्ययनेन चैव भवति। तथाहि आचार्ययास्कोऽपि **"साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस् तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः, उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमङ् ग्रन्थं समाम्नासिषुर् वेदञ् च वेदाङ्गानि च"** (निरुक्ते १।६।४) इति वदन्नभिप्रैति।

(घ) धर्मरक्षणं वेदरक्षणं च ब्राह्मणैर् मुख्यतया कर्तव्यम्

धर्मरक्षणं ब्राह्मणैर् विशेषतः कर्तव्यमिति **"चतुष्पात् सकलो धर्मो ब्राह्मणस्य विधीयते। पादावकृष्टो राजन्ये तथा धर्मो विधीयते। धर्मो वैश्ये च शूद्रे च पादःपादो विहीयते। विद्यादेवंविधेनैषां गुरुलाघवनिश्चयम्"** इति महाभारतवचनाद् (१२।३५।३२,३३) अपि अवगम्यते। वेदविद्यासंरक्षणं च ब्राह्मणैर् विशेषतः कर्तव्यमिति **"विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष् टेऽहमस्मि"** इति श्रुतिवचनाद् (संहितोपनिषद्ब्राह्मणे, तृतीये खण्डे; शाट्यायनीयोपनिषदि, निरुक्ते २।१।४, वासिष्ठधर्मसूत्रे च २।८) अपि ज्ञायते।

उक्तसिद्धान्तानुसारं वेदविद्याधर्मसंरक्षणप्रयासे प्रवर्तमाने स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बजनैः कृतस्य वेदाङ्गज्योतिषाध्ययनस्य विवरणं फलं चाऽत्र सम्पूर्णभूमण्डलस्थानां वेदवेदाङ्गार्थानु-शीलनपराणां विज्ञजनानामग्रे वेदाङ्गज्योतिषकौण्डिन्न्यायन-व्याख्यानरूपेण प्रस्तुता (चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी, सन् २००५)। इदानीं **वैदिकतिथिपत्र**रूपेण प्रस्तूयते।

(ङ) लगधमुनिप्रोक्तस्य "पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य ज्योतिषग्रन्थस्य वेदाङ्गत्वम्

"शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषम्" इति मुण्डकोपनिषदि (१।१।५) गणितेषु षट्सु वेदाङ्गेषु शिक्षाविषये कोऽपि भ्रमो बहोः कालात् पूर्वत एव प्रवृत्तोऽवगम्यते। तथाऽपि शैशिरीयऋग्वेदप्रातिशाख्यादयः प्रातिशाख्यग्रन्था एव तत्तद्वेद-शाखासम्बद्धा **वेदाङ्गशिक्षाग्रन्था** इत्यवगम्यते। एतस्मिन् विषये-ऽस्माभिः कौण्डिन्न्यायनशिक्षायाः प्रस्ताविकायां विस्तरेण प्रति-पादितमस्ति। तत् तत्रैव द्रष्टव्यम्। **कल्पग्रन्थास्** तु तत्तद्वेद-शाखाविशेषसम्बद्धाः श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्ररूपा ग्रन्थाः प्रसिद्धा एव। **व्याकरण**ग्रन्थास्तु पाणिनितः प्राचीनैः शाकटायनादिभिराचार्यैः कृता अपीदानीं तेऽनुपलभ्यमाना इति पाणिनीयव्याकरणाष्टाध्याय्येवेदानीं व्याकरणरूपवेदाङ्गग्रन्थत्वेन स्वीक्रियते शिष्टपरम्परया। मुनिना पतञ्जलिना पाणिनीय-व्याकरण-भाष्य-प्रथमाह्निके पाणिनीय-व्याकरणस्याध्येतव्यतायाः प्रतिपादने **"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयः"** इत्यागमवचनं प्रमाणरूपेण प्रस्तुत्य पाणिनीयव्याकरणस्याऽध्येतव्यतायाः प्रतिपादितत्वात् तत्र भवता पाणिनीयव्याकरणग्रन्थस्य वेदाङ्गग्रन्थत्वं प्रतिपादितमेव। **वेदाङ्गनिरुक्तग्रन्थो**ऽपीदानीं निघण्टुपञ्चाध्यायीव्याख्यानरूपो यास्कप्रणीतः प्रसिद्ध एव। **वेदाङ्गच्छन्दश्शास्त्रग्रन्थश्** च पिङ्गलकृतः पिङ्गलच्छन्दःसूत्रनाम्ना प्रसिद्ध एव। **वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थविषये** त्विदानीं प्रायेणाऽबोधो भ्रम एव वाऽपि लोके प्रचरन् दृश्यते। इदानीं प्रायः सर्वे ज्यौतिषिकाः पण्डिताश् च प्रचलितं सूर्यसिद्धान्तग्रन्थं सिद्धान्तशिरोमणिग्रन्थमेव वाऽपि मुख्यं वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थं मन्यमाना विलोक्यन्ते। तस्माद् वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थस्य विषये विचारः प्रस्तूयतेऽधस्तात्।

यद्यपि प्रचलिते सूर्यसिद्धान्तग्रन्थे **"अल्पावशिष्टे तु कलौ मयो नाम महासुरः। रहस्यं परमं पुण्यं जिज्ञासुर् ज्ञानमुत्तमम्।। वेदाङ्गमग्र्यमखिलं ज्योतिषां गतिकारणम्। आराधयन् विवस्वन्तं तपस् तेपे सुदुस्तरम्"** (१।२,३) इत्यादिना सन्दर्भेण तस्य ग्रन्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थत्वं प्रतिपादितम्, सिद्धान्तशिरोमणिग्रन्थे च तस्य ग्रन्थस्य ब्राह्मणैरध्ययनीयतायाः प्रतिपादने **"वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्योतिषं *मुख्यता चाऽङ्गमध्येऽस्य* तेनोच्यते। संयुतोपीतरैः**

कर्णनासादिभिश् चक्षुषाऽङ्गेन हीनो न किञ्चित्करः।। तस्माद् ***द्विजैरध्ययनीयमेतत्*** **पुण्यं रहस्यं परमं च तत्त्वम्। यो ज्यौतिषं वेत्ति नरः स सम्यग् धर्मार्थकामाल्ँ लभते यशश् च"** (१।१।११,१२) इत्युक्त्वा तस्य ग्रन्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थत्वं प्रतिपादितम्, तथाऽपि सूर्यसिद्धान्त-सिद्धान्तशिरोमण्यादयो ग्रन्था मुख्या वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्था न सन्ति। इदानीं मुख्यो वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस् तु लगधमुनिप्रोक्तः **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इति प्रारब्धो ग्रन्थ एवास्ति।

"पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य ग्रन्थस्य वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थत्वं मुख्यतया नित्यब्रह्मयज्ञकारिणां स्वाध्यायाध्ययनपरायणानां वैदिकानां परम्परातोऽवगम्यते। सा च परम्परा शङ्करबालकृष्ण-दीक्षितादिलेखेभ्योऽपि ज्ञायते। तथाहि शङ्करबालकृष्णः कथयति– **"भारतस्य सर्वेषु प्रान्तेषु ब्राह्मणानां (वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य पाठः) समानोऽस्ति। वैदिका एतं ग्रन्थं साक्षाद् वेदान् न्यूनं न मन्यन्ते। तान् प्रति यदि भवद्भिः पठ्यमाने वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थे अयं पाठोऽशुद्धोऽस्ति, तत्स्थाने एतं शुद्धं पाठं कुर्वन्तु भवन्तः इत्युच्येत, तदा ते एतं प्रस्तावं स्वीकर्तुं कदाऽपि तत्परा न भविष्यन्ति"** इति[१८]। तथैव धूलिपालकुलजः अर्कसोमयाजी आन्ध्रदेशजो वैदिको ज्यौतिषिकश् च **"वेदाङ्गज्यौतिषमिति कश् चिद् ग्रन्थो वर्तते महात्मना लगधेन प्रवर्तित इति प्रतिपादितः। यद्यपि याजुषमार्चं चेति वेदाङ्गज्यौतिषं द्विविधं प्रसिद्धं लोके। यथा वेदस् तथैवेदमद्यापि कण्ठे वर्तति बहूनां वेदपण्डितानाम्"**[१९] इति प्रतिपादयति। इदानीं प्रचरत्सु आह्निक-कृत्यसङ्ग्रहेषु च ब्रह्मयज्ञरूप-स्वाध्यायाध्ययनप्रकरणे षण्णां वेदाङ्गानां मध्ये ज्योतिषरूपस्य वेदाङ्गस्य **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इति प्रतीकः सङ्गृहीतो दृश्यते। १९३७तमे वैक्रमाब्दे षट्चत्वारिंशद्वर्ष-वयस्केन वैद्य-नारायणशर्मणा नागोजिभट्टकृतमाह्निकम्, आचार-मयूखम्, धर्मप्रवृत्तिम्, हलायुधकृतं ब्राह्मणसर्वस्वम्, आचारार्कं च विलोक्य तेभ्योऽन्येभ्यश् च सम्बद्धेभ्यः स्वशाखाश्रुतिसूत्रादि-ग्रन्थेभ्यः सारं सङ्गृह्य रचितत्वेनोक्तायाम्, १९५२तमे वैक्रमेऽब्दे परिष्कृतं रूपं दत्त्वा चतुर्थावृत्तौ मुद्रितायाम्, १९८०तमे वैक्रमेऽब्दे तु नवमावृत्तौ मुद्रितायां **शुक्लयजुर्वेदीय-माध्यन्दिनवाजसनेयिनाम् आह्निकसूत्रावलौ** दिनचतुर्थभागकृत्यरूपेषु मध्याह्नकृत्येषु प्रदर्शिते ब्रह्मयज्ञप्रयोगेऽपि **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्येव वेदाङ्ग-ज्योतिषप्रतीकः प्रदर्शितो दृश्यते (पृ.१७७)। सुधाकरद्विवेदेनाऽपि १९६४तमे वैक्रमेऽब्दे वाराणस्यां मेडिकल्हाल्मुद्रायन्त्रालये मुद्रितस्य **"याजुषज्यौतिषम् आर्चज्यौतिषं च"** इत्युक्तस्य ग्रन्थस्य भूमिकायाम् **"षडङ्गपाठः पुण्यपुञ्जोत्पादक इति समवगम्याऽधीयते लोका इदं वेदचक्षूरूपं याजुषमार्चं च ज्यौतिषमपि"** इत्युक्तमस्ति। एतावता च **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादेर् ग्रन्थस्य परम्पराप्राप्तरूपेण वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थत्वं सर्वैरास्तिकैर् जनैः स्वीक्रियत इति सुस्पष्टं भवति।

"पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य नित्ये ब्रह्मयज्ञेऽध्ययनीयत्वम्, उपाकर्मणि उत्सर्जनकर्मणि च कर्तव्ये स्वाध्यायप्रवचने प्रवचनीयत्वम्, अलङ्घनीयत्वम्, पुराणादिभ्यो विशिष्टत्वम्, मान्यतरत्वम्, सर्वथाऽलङ्घनीयत्वं च कालीघट्टनगरे मनसुखरायमोरमहाशयेन मुद्रापितस्य स्मृति-सन्दर्भस्य २०१३तमे वैक्रमेऽब्दे मुद्रिते षष्ठे भागे सङ्गृहीतायां लौगाक्षिस्मृतावुक्तम्। तथाहि–

> ***पञ्चसंवत्सरमिति ज्योतिःसूत्रं*** **च तद् वदेत्।**
> **मयरेत्यादिकं सूत्रं छन्दोविचितिमध्यगम्।।**
> **अथातो जैमिनेः सूत्रमथातो व्यासभाषितम्।**–इति (पृ.२९९),
> **शास्त्रस्य तत्परं भूयः** ***पञ्चादिग्रन्थकस्य च*** **॥ तस्मादेतानि**
> **सर्वाणि ह्यलङ्घ्यान्येव सर्वदा॥**–इति (पृ.२७५-२७६) च।

"पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य नित्ये ब्रह्मयज्ञे स्वाध्यायाध्ययनरूपेऽध्ययनीयत्वं देवीभागवतेऽपि (११।२०।४-१०) उक्तम्।

शिवपुराणस्य कैलाससंहितायाः (१२।८८-९२) वचनेनाऽपि **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादिकस्य ग्रन्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थरूपेण नित्यस्वाध्यायाध्ययनेऽप्यध्ययनीयत्वं सूचितमवगम्यते।

एतावता च **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादिको ग्रन्थ एवेदानीं वेदाङ्गज्योतिषशास्त्रस्य मुख्यो ग्रन्थ इति स्वीकर्तव्यमिति सुस्पष्टं भवति।

---

१८. भारतीय ज्योतिष, अनु.शिवनाथ भारखण्डी, हिन्दी समिति, लखनऊ, १९७५ क्रै., पृ.९३।

१९. ज्योतिर्विज्ञानम्, अर्कसोमयाजिना श्रीधूलिपालेन विरचितम्, वाराणसेय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, १९६४ क्रै., पृ.५।

(च) वैदिकानां कृते धर्ममोक्षविषये वेद-वेदाङ्गादीनामेव मुख्यतया प्रामाण्यम्

भारतवर्षीयस्य चातुर्वर्ण्यस्य कृते धर्मे मोक्षे च मुख्यं प्रमाणं वेद एव। वेद इति च मुख्यतया मन्त्रसंहिता-ब्राह्मणग्रन्थयोर् ग्रहणं भवति। आरण्यकानि उपनिषदश् च प्रायेण ब्राह्मणग्रन्थेष्वन्तर्भवन्तीति मन्त्र-ब्राह्मणयोर् ग्रहणेनैव तेषामपि ग्रहणं भवति। एतस्मिन् विषये **"मन्त्रब्राह्मणयोर् वेदशब्दः"** इति कौषीतकिगृह्यसूत्रे (३।१२।२३), **"मन्त्रब्राह्मणयोर् वेदनामधेयम्"** इति आपस्तम्बश्रौतसूत्रे (२४।१।३१), सत्याषाढश्रौतसूत्रे (१।१।७), कात्यायनप्रतिज्ञासूत्रे (१।२) च, **"मन्त्रब्राह्मणं वेद इत्याचक्षते"** इति बौधायनगृह्यसूत्रे (२।६।२), **"मन्त्राश्च ब्राह्मणं च वेदः"** इति शबरस्वामिकृते जैमिनीयधर्ममीमांसासूत्रभाष्ये (२।१।३३), **"आम्नायः पुनर् मन्त्राश् च ब्राह्मणानि च"** इति कौशिकसूत्रे (१।३) दृश्यते इति चाऽत्र स्मरणीयम्। कुमारिलभट्टमहोदयेन च **"यद् वा प्रयोगशास्त्रत्वमङ्गानामभिधीयते। वेदत्वं वा षडङ्गेऽपि वेदत्वस्मृतिरस्ति हि।। 'मन्त्रब्राह्मणयोर् वेद इति नामधेयम्, षडङ्गमेके' इत्यङ्गान्यपि वेदशब्दवाच्यानि स्मर्यन्ते"** इत्यपि तन्त्रवार्तिके (१।३।११, पृ.१५६) प्रोक्तमित्यप्यत्र स्मरणीयम्।

एवं च वेदानां महास्मृतिरूपाणां वेदाङ्गानां च धर्मे मोक्षे च मुख्यं प्रामाण्यमवगन्तव्यम्। अन्येषां परिशिष्टा-ऽनुस्मृति-पुराणोपपुराणादीनां तु वेदवेदाङ्गोपोद्बलकानामेव सतां धर्मे मोक्षे च प्रामाण्यं भवति।

तत्राऽनादेरपौरुषेयस्य वेदस्य गुरुशिष्यपरम्परयाऽविच्छेदेन धारणेन वेदादिशास्त्रयथार्थस्वरूपरक्षायै तदर्थाधिगमनेन धर्ममोक्षसाधनाय चैव द्विजातीनामुपनयनं क्रियते। अत एवोपनयनपूर्वकमुपाकर्मपूर्वकं च विधिनाऽधीतानां हि शास्त्राणां धर्मे मोक्षे च मुख्यं प्रामाण्यम्। अन्येषां ग्रन्थानां तु तथाऽधीतशास्त्रविहितोक्तसूचितानुवादेन, तथाधीतशास्त्राकाङ्क्षापूरणेन, तथाऽधीतशास्त्रानुकूलार्थसमर्पणेन, तथाऽधीतशास्त्राऽविरोध्यर्थप्रतिपादनेन चैव वेदादीनामुपबृंहणेनैव प्रामाण्यं धर्ममीमांसाशास्त्रेण शिष्टैश्च स्वीक्रियमाणमवगम्यते। एष एव वैदिकानां मुख्यः शास्त्रप्रामाण्यसिद्धान्तः। अत एव च अधीति-बोधा-ऽऽचरण-प्रचारणक्रमो वेदवादिभिर्निर्धारितः।

अध्ययनविधौ हि **"वेदं समाप्य स्नायात्, ब्रह्मचर्यं वाऽष्टाचत्वारिंशकम्, द्वादशेऽप्येके, गुरुणाऽनुज्ञातः, विधिर् विधेयस् तर्कश्च वेदः, षडङ्गमेके, न कल्पमात्रे, कामन् तु याज्ञिकस्य"** इत्यादिके पारस्करगृह्यसूत्रे (२।६।१, ५-८) अन्यत्र च दृष्टे वेदाङ्गानामप्यध्ययनस्य विधानात् वेदाङ्गेषु ज्योतिषस्याऽप्यध्ययनीयत्वाद् विध्यनुसारमधीतस्य **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादिकस्य ज्योतिषग्रन्थस्यैव अग्न्याधान-दर्शपूर्णमासयाग-चातुर्मास्ययाग-निरूढपशुबन्धयागा-ऽग्निष्टोम-सोमयागादीनां श्रौतकर्मणाम् अन्नप्राशन-चूडाकरणोपनयन-विवाहादीनां गृह्यकर्मणां च कृते युग-वर्षा-ऽयन-ऋतु-मासा-ऽधिमास-पक्ष-तिथिरूपाणां कालानां निरूपणे परमं प्रामाण्यं स्वीकर्तव्यमेव। एतस्य ग्रन्थस्यैतादृशस्य प्रामाण्यस्याऽस्वीकरणं तु नास्तिक्यं जैन-बौद्धतुल्यतया वैदिकपरम्परायां विद्रोहस्याऽप्रामाण्यस्य चोद्भावनमेवेति निश्चीयते। मेषादिराशि–भौमादिग्रहचार–सूर्यचन्द्रोपराग–ग्रहदशानिरूपण-जन्मपत्रीनिर्माणादिषु तु वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थाविरोधेन सूर्यसिद्धान्तादयोऽपि ग्राह्याः स्युः। एतस्य विषयस्य सम्यगाकलने दृश्यमानं पुराणानामाधुनिकानां च गुरु-पुरोहितपण्डितादीनामसामर्थ्यं तु शोच्यमेवाऽस्ति। वैधस्य वेद-वेदाङ्गाध्ययनस्याऽतीव विरलत्वेन लोकेऽश्रूयमाणत्वात्, मुख्यस्य ब्रह्मयज्ञस्याऽपि लुप्तप्रायत्वात्, मुख्यस्य ब्रह्मयज्ञ-स्वरूपस्याऽज्ञानात्, ब्रह्मयज्ञेऽध्येतव्यानां ग्रन्थानां परिचयस्या-ऽभावात्, ब्रह्मयज्ञस्याऽकरणात्, पाश्चात्त्यप्रवर्तितसंस्कृतशिक्षा-प्रणाल्या अनुसरणात्, आर्षवेदवेदाङ्गशिक्षाप्रणाल्या विलोपनाच् च आधुनिका निकटभूतकालस्थाश् च लोके ख्यातिं गता महान्तो विद्वांसश् चाऽपि तादृशे शोच्यभावे प्राप्ता अवगम्यन्ते। एतादृशी स्थितिश् च कलेः प्रारम्भात् प्रभृत्येव शनैःशनैर् वर्धमाना, भारत-वर्षे मुसलबाणानां शासनस्य प्रारम्भात् प्रभृति तु भृशं वृद्धा, निकटभूतकाले प्रारब्धात् पाश्चात्त्यशिक्षासंस्कृतीनामत्यधिकात् प्रचारात् प्रभृति तु चरमोत्कर्षं प्राप्ता प्रतीयते। तथापि ब्रह्ममीमांसासूत्रस्य "शाङ्करभाष्यम्" इति प्रथिते शारीरकमीमांसाभाष्ये शङ्करेणोल्लिखितं **"न हि पूर्वजो मूढ आसीदित्यात्मनाऽपि मूढेन भवितव्यमिति किञ्चिदस्ति प्रमाणम्"** इति वाक्यं च (२।१।११) स्मृत्वाऽधुनातनैर् विवेकशीलैर् जनैर् व्यवहरणीयमिति प्रतिभाति।

(छ) लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थरचनाकालविचारः

अनादिवैदिककालगणनापद्धतिमनुसृत्य मुनिना लगधेन वेदाङ्गज्योतिषं रचितम्। लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ-रचनाकालस्य विषये सुधाकरद्विवेदमहाशयेन **"याजुषज्यौतिषं सोमाकर-सुधाकरभाष्यसहितम् आर्चज्यौतिषं च सुधाकरभाष्येण तल्लघुविवरणेन च सहितम्"** इत्युक्तस्य वाराणस्यां मेडिकल्-हल्नाम्नि मुद्रायन्त्रालये १९६४तमे वैक्रमाब्दे मुद्रितस्य ग्रन्थस्य भूमिकायां **"अस्य रचना च भारतात् पूर्वं मन्मते"** इत्युक्तम्।

शङ्करबालकृष्णदीक्षितश् च **"क्रैस्तवर्षारम्भात् पूर्वं १४१० तमे वर्षे धनिष्ठाया भोगः ९ राशय इति (गणिताद्) आगच्छति, अतः सिद्धं यत् तस्मिन् वर्षे धनिष्ठाया आरम्भे उत्तरायणारम्भोऽभूदिति। एवं च वेदाङ्गज्योतिषस्याऽयमेव समयो निश्चितो भवति"** इति ब्रवीति स्मेति लखनऊनगरस्थया हिन्दीसमित्या १९७५तमे क्रैस्ताब्दे प्रकाशितात् शिवनाथ-झारखण्डिनाऽनूदिताद् भारतीयज्योतिष-नामकाद् ग्रन्थाद् (पृ.१२२) ज्ञायते।

वेदाङ्गज्योतिषस्य दीपिकाख्याया व्याख्यायाः कर्ता शामशास्त्री तु दीपिकायाः प्रारम्भे लगधप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिष-रचनाकालविषये—

वेदाङ्गज्योतिषं लोके यज्ञकालार्थसिद्धये। प्रणीतं शककालात् प्राग् वत्सराणां सहस्रके। इति ब्रवीति।

एवं चोपलभ्यमानेषु ज्योतिषग्रन्थेषु लगधप्रोक्तो वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थ एव प्राचीनतम इति सर्वे स्वीकुर्वन्त्येवेति ज्ञायते।

(ज) वेदाङ्गज्योतिषस्य कौण्डिन्न्यायन-व्याख्यानस्य वैशिष्ट्यम्

वेद-वेदाङ्ग-वेदोपाङ्ग-स्मृति-पुराण-धर्मशास्त्रनिबन्ध-ग्रन्थानां यथाशक्ति सम्यगध्ययनं कृत्वाऽस्माभिर्वेदाङ्गज्योतिषस्य कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानं प्रस्तुतम्। अस्माभिर् लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थतात्पर्यार्थमादाय तत्र प्रतिपादितानां सिद्धान्तानां यथेदानीमपि श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्याऽपेक्षित-युग-वर्षाऽयनर्तु-मास-पक्ष-तिथि-निरूपणे प्रयोगः कर्तुं शक्यते तथा व्याख्यानं कृतमस्ति। एतादृशं व्याख्यानं शङ्करबालकृष्णदीक्षित-सुधाकरद्विवेदि-बालगङ्गाधरतिलक-शामशास्त्र्यादिषु केनाऽपि पूर्वमकृतं ज्ञेयम्। इदानीमपि सूर्यस्योदगयनारम्भस्य तिथौ नक्षत्रे च सम्यङ् निरीक्षणेन निर्धारिते लगधमुनिप्रोक्तकालगणना-पद्धत्यनुसारं युग-वर्षा-ऽयनर्तु-मास-पक्ष-तिथि-पर्व-नक्षत्रादीनां गणना श्रौतस्मार्तधर्मकृत्येषूपयोगाय कर्तुं शक्येति अस्माभिस्तत्र प्रतिपादितम्। आधुनिक-खगोलवित्-कृतान् वास्तविकस्य सूर्योदगयनस्य कालान्, सूर्यचन्द्रयुतिकालाँश् चाऽऽदायाऽपि लगधमुनिप्रोक्तज्योतिषग्रन्थतात्पर्यार्थभूतस्य कालगणना-सिद्धान्तस्य श्रौतस्मार्तधर्मकृत्येषूपयोगाय प्रयोगः कर्तुं शक्य इति चाऽस्माभिस्तस्मिन् व्याख्याने प्रतिपादितमस्ति। तदर्थं लगधमुनि-प्रणीतग्रन्थतात्पर्यं चाऽस्माभिस्तत्र स्पष्टीकृतं श्रुतिस्मृतिपुराण-वचनैर् दृढतया समर्थितं चाऽस्ति। लगधमुनिप्रोक्तो ग्रन्थ आदियुगस्यैव वर्षाऽयनर्तुमासपक्षतिथिपर्वनक्षत्राणां गणितं मुख्य-तया प्रतिपादयति, अन्येषां युगानां गणितं तु उदगयनारम्भतिथि-नक्षत्राणां सम्यङ् निरीक्षणं कृत्वा कार्यमिति च प्रतिपादयतीति चास्माभिः स्पष्टतया प्रतिपादितमस्ति। एतत् तत्त्वमबुद्ध्वाऽन्यैः कृतस्य लगधमुनिग्रन्थे दोषारोपणस्य निराकरणं चाऽस्माभिः कृतमस्ति। सोमाकरेणाऽपि लगधमुनिप्रोक्तकालगणनापद्धतेः सर्वेषु कालेषु सामान्यतया प्रयोक्तुं शक्यता सम्यक् स्पष्टीकृता नास्ति। सर्वेषां श्लोकानामर्थाश् च सोमाकरेण स्पष्टतया प्रतिपादिता न सन्ति। अस्माकं व्याख्याने तु लगधमुनिप्रोक्त-कालगणनापद्धतेः समुचिते परिष्कारे कृते तस्याः सामान्यतया सर्वेषु कालेषु प्रयोक्तुं शक्यता सम्यक् प्रतिपादिता अस्ति। वेदाङ्गज्योतिषस्य प्रायः सर्वेषां श्लोकानामर्था अपि अस्माभिः स्पष्टतया प्रतिपादिताः सन्ति। एवं च लगधमुनिप्रोक्तस्य वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थस्य संस्कृतभाषायां समुचितं श्रुतिस्मृतिपुराणादि-वचनपरिपुष्टं सोदाहरणं सम्पूर्णं स्पष्टं च कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान-मैदम्प्राथम्येनाऽस्माभिः प्रस्तुतमवगन्तव्यम्। अन्यानि उच्चा-वचानि वैशिष्ट्यानि व्याख्याने एव सुधीभिर् द्रष्टव्यानि। तथापि कानि चन प्रमुखाणि वैशिष्ट्यानि सूत्ररूपेणाऽध उपस्थाप्यन्ते—

१. श्रौतस्मार्त-धर्मकृत्यकाल-निरूपणार्थं लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषसिद्धान्तस्य समुचितं परिष्कारं कृत्वाऽधुनाऽप्यनुसरणीयत्वस्य प्रदर्शनम्।

२. लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थतात्पर्यस्य श्रुति-स्मृति-पुराणवचनैः स्पष्टीकरणं समर्थनं च।

३. लगधमुनिप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थसारांशस्य सर्वेषु कालेषु प्रयोज्यतायाः प्रदर्शनम्।

४. प्रायः सर्वेषां पद्यानां स्पष्टतयाऽर्थस्य प्रतिपादनम्।

५. श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यार्थकायनर्तुमासादि-निरूपणाऽऽधारभूतस्य प्रकृतिसम्मतस्य वैदिकानां वर्षस्य शिशिरर्तावारम्भस्य समर्थकस्य सोमाकरभाष्यस्य दृढतया समर्थनम्।

६. चान्द्राणां प्रभवादीनां षष्टेः संवत्सराणामेव वैदिक-संवत्सरपरिवत्सरादिभिः सह समन्वयस्य प्रतिपादनम्, वराहमिहिरादिभिः प्रतिपादितस्य बार्हस्पत्यानां षष्टेः संवत्सराणां वैदिकसंवत्सर-परिवत्सरादिभिः सह संयोजनस्य खण्डनं च।

७. कलिवर्षसङ्ख्यामादाय संवत्सरपरिवत्सरादीनां चान्द्राणां प्रभवादीनां च ज्ञानस्योपायस्योहापोहपूर्वकं स्पष्टीकरणम्।

८. आदियुगशब्दस्य बार्हस्पत्य-सुधारकाद्युक्तमर्थं निराकृत्य सोमाकरोक्तस्याऽर्थस्य समर्थनम्।

९. वैदिक-नववर्षारम्भदिनस्य स्पष्टीकरणम्, माघफाल्गुना-दीनां तपस्तपस्याद्यभिन्नत्वस्य, ऋतुबद्धत्वस्य, नक्षत्र-बद्धत्वस्याऽभावस्य च प्रतिपादनम्।

१०. सप्तमे श्लोके उदगयनस्य मुख्यताया उदगयनारम्भ-नक्षत्रस्योपलक्षणतायाश् च प्रतिपादनेन लगधप्रोक्त-वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य वैदिककालगणनोपायप्रदर्शकतया सदोपयोज्यत्वस्य प्रतिपादनम्।

११. एकादशे श्लोके उत्तरार्धस्य पूर्वव्याख्यातृभिरव्याख्यातस्य परम्परागतं पाठमेवादाय सम्यग् व्याख्यानम्।

१२. पूर्वव्याख्यातृभिरन्यथा व्याख्यातस्य द्वादशस्य श्लोकस्य श्रुतिस्मृतिपुराणधर्मशास्त्रसम्मतस्याऽर्थस्य प्रतिपादनम्।

१३. आदियुगस्य सावनदिनानाम् १२४ पर्वान्तानां विस्तृताया व्याख्यासहितायाः सारण्या उपस्थापनम्।

१४. नेपालदेशे सुरक्षितानां शिलालेखानां ग्रन्थानामन्येषां च लेख्यानां चाऽपि साहाय्येन वेदाङ्गज्योतिषोक्ताया अधिमासव्यवस्थाया युक्तियुक्ताया व्यावहारिक्याश् च व्याख्याया उपस्थापनेनाऽन्यैरप्रकाशितस्य वस्तुगतस्य तथ्यस्य प्रकाशनम्, वेदाङ्गज्योतिषोक्ताधिमासपद्धतेः सर्वेषु कालेषूपयोज्यतायाः साधनं च।

१५. श्रौतस्मार्तधर्मकृत्याधिकारिणां द्विजातीनां नाक्षत्रनामकरणे लगधप्रोक्तव्यवस्थाया एवाऽनुसरणीयतायाः प्रतिपादनम्।

१६. हस्तलेखानां युक्तीनां च साहाय्येन मूलग्रन्थस्य कतिपयानां शुद्धतरपाठानां च समावेशनम् (द्रष्टव्याः श्लोकाः ११, १३, १४, १६, २६, २७, ३१, ३७, ३८, ४२)।

१७. लगधस्योल्लेखेन युतस्य त्रिचत्वारिंशस्य श्लोकस्य हस्तलिखितपुस्तकपाठसाहाय्येन च यजुर्वेदिनां वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थे पठितत्वस्य साधनम्।

१८. यजुर्वेदिनां वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य हस्तलेखयोश् छायाप्रतिलिप्योरपि समावेशनम्।

१९. आदियुगस्य पञ्चानामेव वर्षाणां संवत्सरपञ्जीनां तिथिपञ्जीनां वाऽप्युपस्थापनम्।

२०. यजुर्वेदिनां वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य शब्दानामकाराद्यनु-क्रमणिकायाश् च समावेशनम्।

२१. विस्तृतायाः वेदाङ्गज्योतिषसम्बद्धविषयाणां प्रतिपादिकायाः संस्कृतभूमिकाया योजनम्।

२२. लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषप्रतिकूलांशे आर्यभटीय-ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त-सूर्यसिद्धान्तादीनां श्रौतस्मार्त-धर्मकृत्यकालनिर्णयेऽप्रमाणत्वस्य स्पष्टीकरणम्। इति।

(भ) श्रौतस्मार्तधर्मकृत्यायावलम्बनीया प्रस्तुते वैदिक-तिथिपत्रे आश्रिता वैदिककालगणनाव्यवस्था

अत्र लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थानुसारं श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यायाऽवलम्बनीयाया वैदिककालगणनाव्यवस्थायाः सारांशः सङ्क्षेपेणोपस्थाप्यते।

वेद-मन्त्रसंहिता-ब्राह्मण-श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्रेषु समुल्लिखि-तानाम्, श्रौतयज्ञविशेषस्वरूपज्ञानायाऽऽवश्यकानाम् (द्र.- लौगाक्षि-स्मृतौ, स्मृतिसन्दर्भे षष्ठे भागे, पृ.३७७), मार्कण्डेयस्मृतौ (स्मृतिसन्दर्भे षष्ठे भागे, पृ.१३४) विष्णुधर्मोत्तरपुराणे (३।१२०।२, ३।१५३।१-९, ३।३१७।२,३), हेमाद्रेर् दानखण्डे (पृ.८९०), कालमाधवे संवत्सर-निर्णयप्रकरणे (पृ.३५) च निर्दिष्टस्य तस्मिंस्तस्मिन् वत्सरविशेषे कार्यस्य कृत्यविशेषस्य कृते परमावश्यकानां च संवत्सर-परि-

वत्सरादीनां पञ्चानां वैदिकानां वत्सराणाम्, पञ्चवर्षात्मकस्य वैदिकस्य युगस्य च प्रतिपादनेन रहिताः मगब्राह्मणत्वाद् मुख्य-वैदिकपरम्पराबाह्यत्वेन सम्भावितानाम् आर्यभट-वराहमिहिर-ब्रह्मगुप्त-नव्यसूर्यसिद्धान्तकारादीनाम् आर्यभटीय–बृहत्संहिता–ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त–नव्यसूर्यसिद्धान्तादयो ज्योतिषग्रन्थाः, तदनुयायिनां लल्ल-श्रीपति-भास्कर-कमलाकरादीनां ज्योतिषग्रन्थाश्च वैदिकैर् द्विजवरैर् नित्यपञ्चमहायज्ञान्तर्गते ब्रह्मयज्ञेऽपि पठ्यमानेन **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादिकेन लगधमुनिप्रोक्तमूलवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थेन विरुद्धत्वाद् अर्वाक्कालिकत्वाच्चाऽनादिपरम्परासिद्ध-श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यकालानां वत्सराऽयनर्तुमासाऽधिमासपक्ष-तिथीनां निर्णये प्रमाणत्वं नैव भजन्ते इति **"या वेदबाह्याः स्मृतयः"** (१२।९५,९६) इत्यादिना प्रतिपादिताद् मनुस्मृतिसिद्धान्तादवगम्यते। आर्यभटीयादिग्रन्थाः श्रौतधर्मकृत्यानपेक्षित-मेषादिराशि-भौमादिग्रहचार-सूर्यचन्द्रग्रहणादिविचारे तु मूलवेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थाऽविरोधेन उपयोक्तव्या अपि स्युः। तस्मात् श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यार्थं कालव्यवस्थाऽधोवर्णितरूपा स्वीकार्या—

(१) वर्षारम्भः

सर्वप्रथमं वैदिक-नववत्सरारम्भदिनं निर्णेयम्। तच्च शङ्कुच्छायादिवेद्यस्य दृक्सिद्धस्य सौरस्योत्तरायणस्याऽऽरम्भस्य दिनात् (सायनमकरसङ्क्रान्तिदिनात्) प्रायेण पूर्वम्, अधिमास-युते वर्षे तु कदाचित् परमपि आसन्नं शुक्लप्रतिपद्दिनं ज्ञेयम्। एतच्च लगधमुनेः याजुषवेदाङ्गज्योतिषस्य **"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्णसमापिनः"** (श्लो.५), **"उपजायेते मध्ये चाऽन्तेऽधिमासकौ"** (श्लो.३७) इत्यादिभ्यो वचनेभ्य एवार्थात् सिद्धतया ज्ञातं भवति। एतदेव **"माघमासे धनिष्ठाभिरुत्तरेणैति भानुमान्। अर्धाश्लेषस्य श्रावणस्य दक्षिणेनोपनिवर्तते"** (२६।२९) इति बौधायनश्रौत-सूत्रवचनस्याऽप्यनुकूलं वर्तते।

(२) वर्षनिर्णयः

उक्तविधायां शुक्लप्रतिपदि प्रवृत्तो वैदिकवत्सरः संवत्सर-परिवत्सरादिषु पञ्चसु वत्सरेषु कतमो वत्सर इति च विष्णुधर्मोत्तरपुराणस्य **"पञ्चभक्ते तु यच्छेषम्"** (१।८२।५३) इत्यादिकस्य वचनस्य, वराहमिहिरकृत-पञ्चसिद्धान्तिकायाः **"द्व्यूनं शकेन्द्रकालम्"** इत्यादिकस्य वचनस्य च समन्वयेन निर्णेयम्। तदनुसारं चेदानीं वर्तमानः एतस्य (२०१६ क्रैस्तवर्षस्य) नवम्बरमासस्य त्रिंशे दिवसे स्थितायाः शुक्लप्रतिपदः प्रभृति प्रवृत्तो वैदिको वत्सरः वैदिकपञ्चाब्दकयुगद्वादशकचक्रस्य नवमस्य सौम्यस्य युगस्य द्वितीयः परिवत्सराख्यो वत्सरोऽस्तीति ज्ञेयम्। एतस्या एव प्रतिपदः कलियुगाब्दानाम् ५०८२तमोऽब्दश्च प्रवृत्त इति च बोध्यम्।

उक्तप्रकारेण निर्णीतो वैदिको वत्सरो मुख्यतया चान्द्रोऽस्तीति वेदे (मा.वा.शु.य.वे.म.सं.७।३०, २२।३१, तै.कृ.य.वे.सं.१।४।१४।१, ६।५।३।४) त्रयोदशानां मासानामुल्लेखाद् ज्ञायते। कालमाधवे संवत्सरनिर्णयप्रकरणे **"अथ चान्द्रस्याऽवान्तरभेदा उच्यन्ते"** इत्युक्त्वा संवत्सर-परिवत्सरादीनां पञ्चानां वैदिकवत्सराणामुल्लिखितत्वात्, कालमाधवे (उपोद्घाते, श्लो.१३) कोषकल्पतरौ च (पृ.५१) **"चान्द्राणां प्रभवादीनाम्"** इत्यादिकस्य वचनस्य दर्शनाच्च तद् बोद्धुं शक्यते। एतेषां वैदिकानां पञ्चानां वर्षाणां द्वादशभिश् चक्रैर् वैष्णवयुगादिनाम-कैश् चान्द्राः प्रभवादयः षष्टिः संवत्सरा भवन्तीति च हेमाद्रिकृतश्राद्धकल्पविवरणात् (पृ.११५२-११५३) स्फुटतयाऽवगम्यते। प्रभवादयश्चान्द्राः षष्टिः संवत्सरा निर्णयसिन्धौ धर्मसिन्धौ च प्रतिपादिता एव सन्ति। एतर्हि पञ्चाङ्गपत्रकेषु लिख्यमाना वत्सरास्तु बार्हस्पत्याः सन्ति, न चान्द्राः। चान्द्र-बार्हस्पत्य-वत्सराणां समाननामकत्वेऽपि गणिते प्रारम्भे च स्पष्टो भेदोऽस्ति। संवत्सर-परिवत्सरादीनि वैदिकवत्सरनामानि चान्द्रप्रभवादिषु समन्वितानि भवन्ति, न बार्हस्पत्यप्रभवादिष्विति सम्यग् बोद्धव्यम्, वराहमिहिरादिप्रचारिते भ्रमे नैव पतितव्यम्। एतर्हि वस्तुतो साधारणनामको बार्हस्पत्यो वत्सरोऽस्ति; चान्द्रो वत्सरस्तु उक्तायाः शुक्लप्रतिपदः प्रभृति कीलकनामकः प्रवृत्तोऽस्ति। श्रौत-स्मार्तकर्मादौ सङ्कल्पे चान्द्रा एव वत्सराः स्मर्तव्या न तु बार्हस्पत्या इति च निर्णयसिन्धौ अब्दनिर्णयप्रकरणे स्थितात् **"स्मरेत् सर्वत्र कर्मादौ चान्द्रं संवत्सरं सदा। नाऽन्यं यस्माद् वत्सरादौ प्रवृत्तिस् तस्य कीर्तिता।"** इत्यार्षिषेणवचनात्, धर्म-सिन्धोः प्रारम्भे स्थितात् **"कर्मादौ सङ्कल्पे चान्द्रवत्सर एव स्मर्तव्यो नाऽन्यः"** इति निर्विकल्पात् निर्णयाच्च ज्ञायते। मूल-वैदिकपरम्परानुकूलोऽयमेव पक्षो वैदिकैः सदा सर्वत्र चाऽऽश्रयणीयो न तु **"जैवो वा नर्मदोत्तरे"** इत्युक्तः क्वाचित्क आनुकल्पिकः पक्षः, **"प्रथमत्यागे मानाभावात्"** इति न्यायात्। तस्माद् धर्मकृत्यार्थ-पञ्चाङ्गपत्रकेषु प्रथमकल्पतया चान्द्राणामेव संवत्सराणामुल्लेखस्य व्यवस्था वैदिकैर् विद्वद्भिः कार्या। अस्मिन् **वैदिकतिथिपत्रे** तथैव कृतमस्ति।

(३) सौरचान्द्रायनव्यवस्था

अर्वाचीनाऽवैदिकज्योतिषग्रन्थप्रभावाभिभूततया यद्यपि कालमाधवकारेण अयननिरूपणप्रकरणे **"के चित्तु चान्द्रमानेनाऽयनद्वयमभ्युपगच्छन्ति"** इति चान्द्रमयनमुपेक्षणीयतयोक्तम्, तथापि पुराणादिषु च **"त्रिभिर् ऋतुभिरयनम्"** इति चान्द्रैस् त्रिभिर् ऋतुभिरयनस्य निष्पत्तेः प्रतिपादितत्वाद् वैदिकानामृतूनां च चान्द्रत्वात्, सुश्रुतसंहितायामपि **"चन्द्रादित्ययोः कालविभागकरत्वाद् अयने द्वे भवतः"** (१।६।७) इति चन्द्रस्याऽपि अयनविभागहेतुत्वेनोल्लिखितत्वाच् च श्रौतस्मार्तधर्मकृत्येषु अयनमपि सूर्यायनसापेक्षमपि चान्द्रर्तुत्रयात्मकं चान्द्रमेव ग्राह्यमित्यवगम्यते। तत्र चान्द्रमुदगयनमपि उक्तविधशुक्लप्रतिपदात एव प्रवर्तते। अत एव वैदिकेषु धर्मकृत्यार्थकपञ्चाङ्गपत्रकेषु मुख्यतया तादृशमेव चान्द्रमयनं लेख्यम्।

(४) ऋतूनां चान्द्रत्वम्

वेदोक्ता ऋतवश्चान्द्रा एवेति वेदोक्तमधुमाधवादिमासानां चान्द्रत्वाद्, **"मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू"** इत्यादिकाद् वेदवचनाच् चैव स्पष्टं भवति। एवं च चान्द्रः शिशिर ऋतुरपि उक्तविधशुक्लप्रतिपदात एव प्रवर्तते। ततो यथायथं क्रमेण वसन्तादयः प्रवर्तन्ते। एवं च सति **"श्रौतस्मार्तक्रियाः सर्वाः कुर्याच् चान्द्रमसर्तुषु। तदभावे तु सौरर्तुष्विति ज्योतिर्विदां मतम्"** इति निर्णयसिन्ध्वादिधृतवचनाच्च अपरिहार्यं बलवन् निमित्तं विना प्रथमकल्पं त्यक्त्वाऽनुकल्पं प्रत्यनुधावने **"प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते"** (मनुस्मृतौ ११।३०) इत्यादिकाद् मन्वादिवचनाद् ज्ञायमानाद् धर्मकृत्यफललोपस्य प्रसङ्गात् श्रौतस्मार्तक्रियासु प्रथमकल्पतया चान्द्र एव ऋतुर् ग्राह्यः, न तु वेदाङ्गज्योतिषनिन्दकब्रह्मगुप्तानुसरणपरभास्करादीनां **"वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्"** इत्यादिकैर् वचनैर् वञ्चितैर् वैदिकैः सौर ऋतुः स्वीकर्तव्यः। तस्मात् श्रौतस्मार्त-धर्मकृत्यार्थकपञ्चाङ्गपत्रकेषु मुख्यतया चान्द्र एव ऋतुर् लेख्यः। अस्मिन् **वैदिकतिथिपत्रे** तथैव कृतम्।

नवीनसूर्यसिद्धान्तस्य **"भानोर् मकरसङ्क्रान्तेः"** इत्यादिना (मानाध्याये श्लो.९-१०) वचनेन प्रतिपादिता मेषमासादयः शुद्धाः सौरा मासास्तु मुख्ये वैदिकवाङ्मये मेषादिराशीनामुल्लेखस्यैवाऽभावात् सर्वथा अवैदिका ज्ञेयाः। वेदोक्ता मधुमाधवादयो मासास्तु चान्द्रा एवेति वेदे मधुमाधवादिभिः सहैव अंहसस्पतेः संसर्पस्य वाऽपि त्रयोदशस्य मासस्योल्लेखात् (मा.वा.शु.य.वे.म.सं. ७।३०, २२।३१, तै.कृ.य.वे.सं.१।४।१४।१) स्फुटतया बुध्यते। लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्य **"माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्णसमापिनः"** इति वचनाच् च वैदिकाश्चान्द्रा मासाः अमान्ताः (शुक्लादयः कृष्णान्ताः) सन्तीति स्पष्टतया ज्ञायते। चैत्रशुक्लप्रतिपदि वत्सरारम्भस्य प्रसिद्धिः अधिमासस्य शुक्लादित्वस्य स्थितिश्च वैदिकचान्द्रमासानां शुक्लादिकृष्णान्तत्वं सूचयत एव। एवं च चान्द्रस् तपोमासः (माघः) उक्तविधशुक्लप्रतिपदात एव प्रवर्तते। ततो यथायथं तपस्यादयः (फाल्गुनादयः) मासाः क्रमेण प्रवर्तन्ते। तस्माद् धर्मकृत्यार्थकपञ्चाङ्गपत्रकेषु सार्वत्रिकास् त्रैविद्यसम्मता अमान्ताश् चान्द्रास् तपोमासादयो (माघमासादयो) मासा एव प्राधान्येन लेख्याः, न तु क्वाचित्काः पूर्णान्ताश्चैत्रादयो मासाः। तत्र पूर्णान्ता मासास्तु गौणत्वेनैवोल्लेखितुमुचिता भवन्ति। अस्मिन् **वैदिकतिथिपत्रे** तथैव कृतम्। प्रथमपङ्क्तौ स्थूलाक्षरैर् वैदिका अमान्ता मासा लिखिताः द्वितीयपङ्क्तौ गौणा मासा लिखिताः।

(५) अधिकमासः

अयनविषुवविज्ञेयशीतोष्णवर्षहेतु-वास्तविकसौरर्तुभिः सह चान्द्राणामृतूनां दूरविप्रकर्षं परिहृत्य सामञ्जस्यस्य स्थापने च मूलवेदाङ्गज्योतिषोक्तायाः कौटलीयार्थशास्त्रानुसृताया हिमवत्खण्डेतिहासप्रसिद्धायाश् चाऽयनान्ताधिमासव्यवस्थाया एव समर्थतरत्वाच्च वेदाङ्गज्योतिषानुसारी अयनान्तमात्रवर्ती अधिमास एव श्रौतस्मार्तकृत्यार्थकपञ्चाङ्गपत्रकेषु प्रधानतयाऽवलम्बनीयः। अन्योऽधिमासस्तु तत्र गौणतयैव सूचयितुमुचितः। अस्मिन् **वैदिकतिथिपत्रे** तथैव कृतम्।

(६) अहोरात्रात्मिकाः तिथयः

ब्रह्मगुप्तादिप्रचारितः स्फुटतिथिपक्षोऽवैदिकोऽस्तीतिसम्यग् बुद्ध्वा वेदाङ्गयाजुषज्योतिषाऽऽथर्वणज्योतिषाऽनुसारिणो वेदोल्लिखिताऽनुमति-राका-सिनीवाली-कुहू-व्यवस्थानुकूलाश् चाखण्डतिथयः श्रौतस्मार्तधर्मार्थपञ्चाङ्गपत्रकेषु मुख्यतया लेख्याः। तत्र पूर्णमासेष्टिदिनं दर्शेष्टिदिनं च तिथि-मास-व्यवस्थास्पष्टत्वार्थमप्यवश्यं लेख्यम्।

यवन-शक-हूण-कुषाणादीनामनुकूलैर् मगब्राह्मणैः तदनुसारिभिरन्यैश्च कृतानां ज्योतिषग्रन्थानां प्रभावेणाऽभिभवाल् लगध-

मुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषोक्तमुख्यवैदिककालगणनाव्यवस्थामुपेक्ष्य वेदवेदाङ्गवाङ्मयमनादृत्य धर्मकामैर् द्विजवरैर् नास्तिकत्वं नैवाऽनुमोदनीयम्।

(५०६७तमस्य कलियुगाब्दस्य तपःशुक्लप्रतिपदि (२०५८।८।३० वै.=२००१-१२-१५क्रै. इत्यङ्कनीये दिने) प्रकाशिता विद्वज्जनेषु प्रचारिता चेयं व्यवस्थाऽत्र समावेशिता बोध्या।)

(ञ) उपसंहारः

उक्तविधायां वस्तुस्थितौ सत्यां च वेदानां वेदाङ्गानां च प्रामाण्यं रक्षितुकामैः शिष्टैर् द्विजोत्तमैरस्माकं प्रयासे विचारः कर्तव्यः। वेदाङ्गानां प्रामाण्यस्य रक्षणं विना वेदानां प्रामाण्यस्य रक्षणं दुश्शकमिति वैदिकशिरोमणिभूत आचार्यः कुमारिलभट्ट आह स्म। तथाहि—

परत्राऽविनयं कुर्वन् पितृभ्यां वार्यते सुतः।
तयोरेवाऽविनीतस्य को भवेद् विनिवारकः।।
तथा बहिरसम्बद्धं वदन् वेदेन वार्यते।
साऽङ्गेन तं पुनर् निघ्नन् केनाऽन्येन निवार्यते।।
क्रुद्धो यो नाम यं हन्ति स तस्याऽङ्गानि कृन्तति।
कृत्ताङ्गस्य ततस् तस्य विनाशः कियता भवेत्॥
तेन त्रयीं द्विषन् पूर्वं वेदाङ्गान्येव लुम्पति।
ततस् तेनैव मार्गेण मूलान्यन्यस्य कृन्तति॥ इति।

—तन्त्रवार्तिके (१।३।२७, आनन्दाश्रमसंस्करणे, १९७०, पृ. २२४)।

वेदाङ्गज्योतिषप्रामाण्यदृढीकरणाय च वैदिकैः सार्थस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्याऽध्ययनाऽध्यापनपरम्परा पुनरुज्जीवनीया। वेद-धर्मशास्त्र-ज्योतिषाध्ययनाध्यापनप्रक्रियायां "पञ्चसंवत्सरमयम्" इत्यादिकस्य वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थस्याऽध्ययनमध्यापनं च प्रचारणीयम्। पञ्चाङ्गपत्रककारैरपि वैदिकसंवत्सराद्यारम्भदिनम्, वैदिकोदगयन-दक्षिणायनारम्भदिने, वैदिकशिशिरर्त्वादिकर्त्वारम्भदिनानि, वैदिकतपस्तपस्यादिमासारम्भदिनानि, वैदिकपूर्णमासेष्टिदर्शेष्टिदिनानि, वैदिकाधिमासप्रारम्भदिनं च स्वस्वपञ्चाङ्गपत्रकेषु वेदाङ्गज्योतिषानुसारं समावेशनीयानि।

अस्माकं वेदाङ्गज्योतिषव्याख्यानस्य तदनुसारिण एतस्य वैदिकतिथिपत्रस्य च निर्मत्सरैः सद्भिर् वेद-वेदाङ्गोपाङ्गकुशलैः शास्त्ररसिकैर् वैदिक-सनातन-वर्णाश्रम-धर्मानुयायिभिर् विद्वद्भिः सम्यक् परीक्ष्याऽऽकलनं कार्यम्, अत्राऽस्माकं विवेचने गणिते वाऽपि काऽपि त्रुटिर् दृश्यते तर्हि परया कृपयाऽस्मदीया मतिः शास्त्रयुक्तिप्रदर्शनेन परिशोधनीया चेति शम्।

"आगमप्रवणश् चाऽहं नाऽपवाद्यः स्खलन्नपि।
न हि सद्वर्त्मना गच्छन् स्खलितेष्वप्यपोद्यते॥"

वेदवेदाङ्गोपाङ्गस्मृतिपुराणादिशास्त्रवशंवदः
शिवराज आचार्यः कौण्डिन्न्यायनः
स्वाद्ध्यायशाला, ब्रह्मपुरी, बुढानीलकण्ठनगरपालिका–७
काष्ठमण्डपजनपदः, नेपालदेशः।

कलिसंवत् ५०८१ ऊर्जशुक्लपञ्चमी, (२०७३।५।२१ वैक्रमाब्द=२०१६।९।६ क्रै.),

☎ ९८४३१६२०५३ Email : svadhyaya@hotmail.com

भारतवर्षीय-नगर-समयान्तर-सारणी (-,+मिनट)

प्रस्तुत वैदिक-तिथपत्र की सूर्योदयादि-गणना नेपाल के काठमाण्डु नगर के समयानुसार की गई है। भारत के विभिन्न नगरों से काठमाण्डु नगर के समय का अन्तर मिनट में इस प्रकार है—

स्थाननाम	अन्तर	स्थाननाम	अन्तर
अमृतसर	–४०	नागपुर	–२३
आगरा	–२७	पुणे	–४४
इन्दोर	–३६	बीकानेर	–४६
उज्जैन	–३६	भोपाल	–३०
कोलकाता	+१५	मुम्बई	–४८
गोरखपुर	–१३	मैसूर	–३३
जगन्नाथ पुरी	+४	मुलतान	–५३
जयपुर	–३६	लखनऊ	-१५
त्रिवेन्द्रम्	-३१	लाहोर	-३८
दार्जिलिङ	+१२	वाराणसी	–७
दिल्ली	-३१	श्रीनगर काश्मीर	-३९
द्वारका	-६५	हरिद्वार	-२७
		हैदराबाद	-२५

वैदिकतिथिपत्रम्

सप्तमोऽङ्कः (७)

पथिकृत्

शिवराज आचार्यः कौण्डिन्न्यायनः

आचार्यः, एम्.ए., विद्यावारिधिः, वाचस्पतिः (डि.लिट्.)

९८४३-१६२०५३, ९८१८-८६९२७७

व्यवस्थापकः

आमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

शुक्लयजुर्वेदाचार्यः, विद्यावारिधिः, ९८४९-०९१४६७

रचयिता सम्पादकश्च

प्रमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

धर्ममीमांसाचार्यः, एम्.ए., ९८४१-९६८२६२

सहयोगी

सुमोदवर्धनः कौण्डिन्न्यायनः

ब्रह्ममीमांसाचार्यः (शाङ्करवेदान्ताचार्यः), ९८४३-०३५३९७

स्वाद्ध्यायशाला, काष्ठमण्डपजनपदः, नेपालदेशः,

वैद्युतसन्देशः svadhyaya@hotmail.com

सुसङ्गमकगणनासहयोगी

रघुनाथः उपाध्यायः ढुङ्गेलः

प्रचारणसंयोजकाः

कृष्णराजः वाग्लेः, व्यासनगरपालिका, तनहुँ, ०६५-५६०३०३

कृष्णप्रसादः दुवाडीः आत्रेयः, वैदिक प्रज्ञाप्रतिष्ठान, रत्ननगर–१३ जयमङ्गला, चितवन, ९८४५-१६०२४२, ०५६-५६०९४०

केशवः दाहालः, धरान, ०२१-४२५४९१, ९८४२-४५६५९६।

विषयानुक्रमणिका

१. वैदिकतिथिपत्रभूमिका

मन्त्रपादपदसन्धिविधिज्ञो धातुनामवचनप्रकृतिज्ञः। ईदृशो भवति यज्ञविधिज्ञः मासपक्षतिथिचन्द्रगतिज्ञः॥–परिशिष्टवचनम्।

(क) पात्रो हेर्न भन्दा पैला जान्न पर्ने विषय

प्रस्तुत तिथिपत्रमा प्रत्येक पृष्ठका शिरमा पैलो पङ्क्तिमा **वैदिक वर्ष, अयन, ॠतु, मैना** र **पक्ष** ठुला अक्षरमा दिइएका छन् भने **अन्य मतका वर्ष, मैना इत्यादि** दोस्रो पङ्क्तिमा साना अक्षरमा दिइएका छन्। वैदिक **तिथि** र **करण** अगाडिका स्तम्भमा दिइएका छन्। **वार, गते** र **तारिख** अन्तका स्तम्भमा क्रमशः दिइएका छन्। **वैदिक चान्द्र संवत्सर** वर्षभर एउटै रहन्छ भने **बार्हस्पत्य संवत्सर** गणितानुसार बिचमा नै फेरिन्छ, तेसैले तेसै अनुसार इ संवत्सरहरुको उल्लेख गरिएको छ। पौराणिक चाडपर्व पनि वैदिक मास नमिले पनि **वैदिक तिथि** परेका दिन दिइएको छ। **विवाह-व्रतबन्धादिका दिन (साइत) वैदिकसिद्धान्तअनुसार गृह्यसूत्रका विधानका आधारमा दिइएका छन्।** प्रस्तुत पात्रो हेर्दा एस विषयमा विशेष ध्यान दिन आवश्यक छ। एसै भूमिकाको **"प्रस्तुत तिथिपत्रको परिचय"** भन्ने प्रकरणमा उल्लेख गरिएका वैदिक तिथिपत्रका विशेषताहरुमा पनि ध्यान दिन अनुरोध छ।

(ख) नेपालिभाषाको लेखनका विषयमा बुज्न पर्ने कुरा

एस वैदिक-तिथिपत्रको नेपालि भाषाको लेखन शासकले लादेको कथित नेपालि व्याकरणको अधीनमा छैन। यास्क, पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, वररुचि, भर्तृहरि इत्यादि भारतवर्षीय महान् भाषाशास्त्रि वैयाकरणहरुले अँगालेका शाश्वत व्याकरणसिद्धान्तको अनुसरण गर्ने स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बका 'नेपाली वर्णोच्चारणशिक्षा' (साझाप्रकाशन, २०३१), 'जिम्दो नेपालि भासा' (पैलो खण्ड, २०३०; दोस्रो खण्ड, २०३७) इत्यादि ग्रन्थहरुमा र **अन्य** लेखहरुमा प्रतिपादित भाषाव्याकरणसिद्धान्तको अनुकूल रूपमा मध्यममार्ग लिएर एस तिथिपत्रमा नेपालि भाषाको लेखन प्रयुक्त गरिएको छ। उक्त अन्य लेखहरुको विवरण **'वैदिक धर्म मूल रूपमा'** भन्ने ग्रन्थमा (द्वि.सं. २०६२, पृ.७९९–८००) उपलब्ध छ।

(ग) पञ्चाङ्ग कि तिथिपत्र

धर्मकर्मका लागि हेरिने पात्रालाइ आजभोलि लोकमा पञ्चाङ्ग भन्ने गरिएको छ। किन्तु पञ्चाङ्ग भन्ने कुरा प्राचीन वा वैदिक हैन। तिथि, करण, नक्षत्र, योग र वार इ पाँच थोकलाइ पञ्चाङ्गमा लिएर पछिपछि लोकमा पञ्चाङ्ग भन्ने गरिएको हो। तिनमा **तिथि** र **नक्षत्र वेदमा पनि उल्लखित मूल कुरा** हुन्। करण तिथिको नै आदा भाग भएकाले त्यो तिथिले नै गतार्थ हुञ्छ। **योग** अर्वाचीन कालको कुरा हो। भारतमा पसेर शासक हुन पुगेका शक-कुषाणादिहरुसित आएका इरानि मग ब्राह्मणका वंशधर ज्योतिषि आर्यभट-वराहमिहिर इत्यादिका अनुयायि कलिसंवत्का सैँतिसौँ शतकतिरका (विक्रमसंवत्का सातौँ शतकतिरका) लल्लका 'शिष्यधी-वृद्धिद' भन्ने ग्रन्थमा सर्वप्रथम योगको प्रतिपादन भएको कुरा ज्योतिषको इतिहास लेख्ने शङ्कर बालकृष्ण दीक्षितले लेखेका छन् (पृ. ५२०)। **वार** भन्ने कुरा पनि मूल वैदिक वाङ्मयमा छैन। वार भन्ने कुरा अरबदेशतिरबाट भारतवर्षमा आएको हो भन्ने कुरा सबै इतिहासलेखकले मानेका छन्। योग-वारहरुको भरतनाट्यशास्त्रसम्मका पछिकै ग्रन्थमा पनि कालविशेषोल्लेखयुक्त प्रकरणमा पनि उल्लेख पाँइदैन। तसर्थ पञ्चाङ्ग भन्ने कुरा प्राचीन वा वैदिक हैन। वैदिकधर्ममा अनादि कालदेखि चलेका परम्पराका कुरा मात्र मान्य हुञ्छन्। तसर्थ पञ्चाङ्ग भन्ने कुरा वैदिक धर्ममा मान्य वा ग्राह्य हैन। तसर्थ एस प्रकाशनलाइ पञ्चाङ्ग नभनेर **तिथिपत्र** भनिएको हो। एसलाइ **संवत्सरपञ्जी** पनि भन्न सकिञ्छ।

(घ) वैदिक धर्मकर्मका लागि वैदिक कालगणनाज्ञानको आवश्यकता

स्नान-सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म गर्दा र अरु नैमित्तिक, काम्य र निष्काम कर्म गर्दा पनि सङ्कल्प गर्ने र तेसमा संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र इत्यादिको उल्लेख गर्ने शास्त्रीय विधान र परम्परा छ। **"वसन्ते ब्राह्मणमुपनयीत, ग्रीष्मे राजन्यम्, शरदि वैश्यम्", "शिशिरे वा सर्वान्", "उदगयने आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्", "उदगयने आपूर्यमाणपक्षे कल्याणे नक्षत्रे चौलकर्मोपनयन-गोदान-विवाहाः", "तस्माद् ब्राह्मणो वसन्त आदधीत"** (मा.वा. शतपथब्राह्मण २१।३।५), **"कृत्तिकास्वग्नी आदधीत"** (मा.वा.शत. २१।२१) **"वसन्तेवसन्ते ज्योतिषा यजेत"** इत्यादि श्रौत-स्मार्त विधानहरु छन्। तिनका र तेस्तै अरु श्रौत-स्मार्त कर्मका लागि पनि वैदिक कालगणना-पद्धतिको ज्ञान आवश्यक हुञ्छ। वैदिक द्विजातिले स्नान, सन्ध्योपासन इत्यादिका र जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्रतबन्ध, विवाह, श्राद्ध इत्यादिका सङ्कल्पहरुमा **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिष-अनुसारका पद्धतिले निश्चित हुने संवत्सर-अयन-ऋतु-मास-पक्ष-तिथिहरुको नै उल्लेख गर्न पर्छ र गृह्यसूत्रअनुसार गरिने व्रतबन्ध, विवाह, श्राद्ध इत्यादिका कालको तथा श्रौतसूत्रअनुसार गरिने अग्न्याधान, दर्शपौर्णमास, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध, सोमयाग इत्यादिका कालको पनि तेसै पद्धतिले नै निर्णय गर्न पर्छ। वैदिक द्विजातिले अन्य विषयमा पनि उक्त कालगणनापद्धति नै अँगाल्न समुचित हुञ्छ।

लगधमुनिले वेदअनुसार वेदाङ्गज्योतिषमा बताएका वैदिक संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, अधिकमास इत्यादि नेपालका शासकीय पञ्चाङ्गनिर्णायकसमितिबाट स्वीकृत अवैदिक सूर्य-सिद्धान्तादिमूलक चल्तिका पात्रामा लेखिएका संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, अधिकमास इत्यादिभन्दा फरक छन्। वैदिक संवत्सर-परिवत्सरादिसित टम्म मिलेर चल्ने प्रभव-विभवादि षष्टिसंवत्सर **चान्द्र** हुन् भने चल्तिका पात्राका प्रभव-विभवादि षष्टिसंवत्सर **बार्हस्पत्य** हुन्। **वैदिक धर्मकृत्यका सङ्कल्पमा कालको उल्लेख गर्दा चान्द्रसंवत्सरको नै उल्लेख गर्ने (बार्हस्पत्य संवत्सरको उल्लेख नगर्ने) व्यवस्था छ। यो कुरा धर्मसिन्धुका प्रारम्भमा नै स्पष्ट रूपमा लेखिएकै पनि छ।** वेदाङ्ग-ज्योतिषअनुसार र वास्तविकतामा पनि दक्षिणायन लागिसक्ता पनि चल्तिका पात्रामा उत्तरायण नै मानिएको हुञ्छ, उत्तरायण लागिसक्ता पनि दक्षिणायन नै मानिएको हुञ्च; ग्रीष्म ऋतु लागिसक्ता पनि वसन्त ऋतु नै मानिएको हुञ्छ। लगधप्रोक्त वैदिक चान्द्र मैनाहरु अमान्त हुन् भने चल्तिका अरु पात्रामा लेखिएका चान्द्र मैनाहरु पूर्णिमान्त छन्। श्रौतस्मार्त धर्मकर्मका लागि अमान्त मास नै ग्राह्य हुन्, पूर्णिमान्त चान्द्र मास त शासकादिका लौकिक व्यवहार इत्यादिका लागि हुन्। तसर्थ वैदिक चान्द्रमासमा र चल्तिका पात्राका चान्द्रमासमा धेरै नै फरक पर्नजाञ्छ। प्रायः शुक्लपक्षमा दुइ मास र कृष्णपक्षमा एक मास फरक पर्नजाञ्च। **तपोमास**को (वैदिक आर्तव माघमासको) शुक्लपक्ष लागिसक्ता पनि नेपालका शासकीय पञ्चाङ्ग-निर्णायक-समितिले स्वीकृत गरेका चल्तिका पात्रामा कैले मार्गशीर्षशुक्लपक्ष भन्ने र कैले पौष-शुक्लपक्ष भन्ने पनि लेखिएको हुञ्छ। एसरि मासमा (मैनामा) धेरै नै फरक पर्न जाञ्छ। वैदिक अधिकमास चल्तिका पात्राका अधिक-मासभन्दा अत्यन्तै फरक छन्। वैदिक अधिकमास (मलमास) दृक्सिद्ध सौर अयनका अन्तमा शुचिमासमा (वैदिक आर्तव आषाढमा) वा सहस्यमासमा (वैदिक आर्तव पौषमा) मात्र पर्छ। अरु मैनामा पर्दैन। यो कुरा नेपालको लिच्छविकालदेखिको एक हजार वर्षको इतिहासबाट पनि सम-र्थित छ। वैदिक अधिकमास वेदाङ्गज्योतिषको **"घर्मवृद्धिरपां प्रस्थः क्षपाह्रास उदग्गतौ। दक्षिणेतौ विपर्यासः षण्मुहूर्त्ययनेन तु"** (श्लो.८) एस वचनबाट र **"यदुत्तरस्यायनतो गतं स्यात्"** इत्यादि (श्लो.४०) वचनबाट समेत सिद्ध हुने दृक्सिद्ध (प्रत्यक्ष देखिने) सौर अयनका आधारमा निश्चित हुञ्छ। बडिमा पछिका पाँच-छदिनसम्म जोडिएका एक दृक्सिद्ध सौर अयनमा (उत्तरा-यणमा वा दक्षिणायनमा) सातओटा अमावास्या (अम्सि) परेमा सातौं अमावास्यामा (अम्सिमा) पूर्ण हुने चान्द्रमास अधिकमास (मलमास) मानिञ्छ। वेदवेदाङ्गमा नभएका र विदेशि शक-शासकहरुसित आएका इरानि मग-ब्राह्मणहरुले पश्चिमतिरबाट ल्याइ संस्कृत भाषाद्वारा प्रस्तुत गरि भारतवर्षमा विदेशि शकशासकहरुका संरक्षणमा र व्यवहारका दबाबमा प्रचारित गरेका मेष, वृष इत्यादि राशिका आधारमा भास्करकृत सिद्धान्तशिरोमणि इत्यादि ग्रन्थमा गरिएका **सौर-सङ्क्रान्ति नपरेको शुक्लपक्षप्रतिपदादेखि कृष्णपक्षअमावास्यासम्मको चान्द्रमास अधिकमास**

(मलमास) हुन्छ भन्ने विदेशिमूलका विचारका आधारमा चलेका **"असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्"** (सिद्धान्तशिरोमणि, ग्रहगणिताध्याय, मध्यमाधिकार, अधिमासादिनिर्णयप्रकरण,पद्य ६) इत्यादि अर्वाचीन परिभाषा वैदिकसनातन-वर्णाश्रमधर्ममा मान्य हुँदैनन्। वैदिक धर्ममा अनादि अनपभ्रष्ट परम्पराबाट आएका कुरा मात्र मान्य हुन्छन्। **वैदिक कालगणनामा क्षयमास त हुँदैहुँदैन।** वैदिक कालगणनासिद्धान्तअनुसार क्षयमास मान्न पर्ने कुनै आवश्यकता पर्दैन। तसर्थ वैदिक श्रौत-स्मार्त धर्मकर्मका लागि वेदोक्त कालको निरूपण गर्न र सङ्कल्पमा कालको उल्लेख गर्न पनि मूल वैदिक कालगणनासिद्धान्तअनुसारका तिथिपत्रको आवश्यकता पर्छ। माथिको प्रतिपादनबाट वैदिक श्रौत-स्मार्त धर्मकर्मका लागि वेदोक्त कालको निरूपण गर्न र सङ्कल्पमा कालको उल्लेख गर्न वैदिक शास्त्रव्यवस्था नबुजेकाहरुबाट मूलतः फलादेशका निम्ति मेषादिराशिपद्धतिमा आधृत रहेर बनाइएका पात्रा प्रमाण नहुने कुरा स्पष्ट हुन्छ। प्रस्तुत तिथिपत्रको अवलोकनबाट पनि पाठक-हरु वैदिक कालगणनासिद्धान्तअनुसारका वर्ष-अयन-ऋतु इत्यादिमा र चल्तिका पात्राका वर्ष-अयन-ऋतु इत्यादिमा पर्ने फरक बुज्न सक्नुहुन्छ। श्रौत-स्मार्त यज्ञ-संस्कारादिका लागि आवश्यक कालको निरूपण गर्ने ज्योतिषिहरु प्रशंसनीय भए पनि फलादेशपरायण ब्राह्मण ज्योतिषि प्रशंसनीय नहुने कुरा बताउने धेरै शास्त्रवचन पाँइन्छन्। **"आह्वायका देवलका नाक्षत्रा ग्रामयाजकाः। एते ब्राह्मणचाण्डाला महापथिकपञ्चमाः"** (महाभारत, शान्तिपर्व ७६।६) इत्यादि ति वचनहरु **वेदाङ्ग-ज्योतिषका** कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानमा (पृ.४२६–४२७) र **भारतवर्षीय ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष** भन्ने हाम्रा ग्रन्थमा (पृ.२३६–२३७ टिप्पणीहरु) उल्लिखित छन्। एस विषयमा **"स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बको स्वधर्म सन्देश (८) : वैदिक धर्मकर्मका लागि वैदिक कालगणनापद्धति नै अँगाल्न पर्छ [यज्ञ तथा विवाह-व्रतबन्धादिसंस्कार-कर्म-समेत सबै श्रौत-स्मार्त धर्मकर्म लगधमुनिप्रोक्त मूल वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थमा प्रतिपादित वैदिक कालगणनापद्धति अँगालेर मूलशास्त्रोक्त कालमा नै गर्न पर्छ] (५०७५,२०६७)"** भन्ने पुस्तिकामा विशेष प्रकाश पारिएको छ (पृ.१३–१७)। वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थको प्रतिकूल रूपका अवैदिक र इरानि मगब्राह्मणले भारतवर्षमा ल्याएका फलादेशपरक ज्योतिषका मेषादिराशिपद्धतिमा आधृत भै फलादेशका निम्ति बनाइएका पात्रा श्रौत-स्मार्त धर्मकृत्यका कालका निरूपणमा प्रमाण हुँदैनन्। नेपालमा अत्यधिक मात्रामा रहेका माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लजुर्वेद-शाखाध्यायि ब्राह्मण-हरुका र तिनका शिष्ययजमानहरुका विवाह-व्रतबन्धादि कृत्य यथासम्भव पारस्करगृह्यसूत्रका विधानअनुसार नै हुन पर्ने र पारस्करगृह्यसूत्रमा **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्"** (१।४।५) भन्ने वचन रहेको हुनाले विवाह वेदाङ्गज्योतिषादि वैदिक ग्रन्थअनुसारको उत्तरायणमा मात्र हुन पर्नेमा दक्षिणायनमा निरयण वृश्चिकमाससमा (मुङ्सिरमा) र वेदाङ्ग-ज्योतिषादि वैदिक ग्रन्थअनुसार दक्षिणायन लागिसकेपछि निरयण मिथुनमाससमा (असारमा) पनि विवाहलग्न दिने, शुक्लपक्षमा नै विवाह हुन पर्नेमा कृष्णपक्षमा पनि विवाहलग्न दिने तथा पारस्करगृह्यसूत्रमा **"अथैनां सूर्यमुदीक्षयति तच् चक्षुरिति"** (१।८।७) भन्ने वचन भएकाले विवाह-कर्मका बिचमा नै वधूलाइ सूर्यदर्शन गराउन पर्ने हुँदा दिनमा नै विवाह हुन पर्नेमा रातमा पनि विवाहलग्न दिने पात्राहरु श्रौतस्मार्तकर्मका कालका निरूपणका लागि र तिनका सङ्कल्पमा कालको उल्लेख गर्नका लागि पनि वैदिकसनातन-वर्णाश्रम-धर्मिहरुका लागि अनुसरणीय हुँदैनन्।

वैदिक धर्मका र मोक्षका विषयमा उपनयनपूर्वक वैध रूपमा अध्ययन गरिने वेद-वेदाङ्गग्रन्थहरु नै मूल रूपमा प्रमाण मानिन्छन्। **पञ्चसंवत्सरमयम्** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ तेसरि पडिने परमप्रामाणिक वेदाङ्गग्रन्थ हो। तसर्थ इरानि मग ब्राह्मणले भारतवर्षमा ल्याएका अवैदिक विदेशि ज्योतिषलाइ अँगाल्ने र लगधमुनिप्रोक्त **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थका प्रतिकूल निर्णय पनि दिने **आर्यभटीय, ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, खण्डखाद्यक, भास्वती, सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि, ग्रहलाघव, मकरन्द-सारणी, सिद्धान्तसारणी, ज्योतिर्विदाभरण, मुहूर्तमार्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि, पूर्वकालामृत, उत्तरकालामृत, मुहूर्त-गणपति** इत्यादि ग्रन्थ श्रौत-स्मार्त-धर्मकर्मका लागि गरिने संवत्सर-अयन-ऋतु-मास-अधिकमास-पक्ष-तिथिहरुका गणनामा प्रमाण हुँदैनन्। एस विषयमा स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बले वाराणसीको चौखम्बाविद्याभवनबाट प्रकाशित गराएको (२०६२) **वेदाङ्गज्योतिषको कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानका** भूमिकामा संस्कृतमा विस्तृत रूपमा र सङ्क्षिप्त रूपमा हिन्दिमा पनि स्पष्टीकरण गरिएको छ। साथै तिहिँबाट प्रकाशित

(२०६५) **भारतवर्षीय ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष** भन्ने हाम्रा अन्य ग्रन्थमा पनि हिन्दि भाषामा एस विषयमा धेरै नै लेखिएको छ। वेद-वेदाङ्ग शास्त्रमा र तिनमा प्रतिपादित धर्ममा आस्था भएका विज्ञजनहरुले एस विषयमा राम्ररि ध्यान दिनु र कुनै विमति वा शङ्का भएमा खुला रूपमा लिखित छलफल गर्नु आवश्यक हुन आएको छ। **एस सम्बन्धमा सबै शङ्काहरुको समाधान गर्न र प्रश्नहरुको उत्तर दिन स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब सदा तत्पर छ।** एस परिस्थितिमा वैदिक तिथिपत्रको (पात्राको) विशेष खाँचो परेको हो। तसर्थ दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गको पनि सहायता लिएर वेदाङ्गज्योतिषमा बताइएको मूल वैदिक कालगणनासिद्धान्तअनुसार श्रौत-स्मार्त-धर्मकर्मका लागि संवत्सर-अयन-ऋतु-मास-अधिमासादिको निर्णय गरि प्रस्तुत तिथिपत्र निष्पन्न गरि जनसमक्ष राख्ने काम भएको छ। वर्तमान कालमा लोकले विशेष खोज्ने लोकमा सारै चल्तिमा रहेका केइ विषय पनि अनुबन्धमा सङ्गृहीत गरिएका छन्।

(ङ) वैदिक कालगणनापद्धतिको सङ्क्षिप्त परिचय

कालगणनाको मूल वैदिक पद्धति ऐले लोकमा चल्तिमा रहेको आर्यभट-वराहमिहिर इत्यादिका पुर्खा इरानि मगब्राह्मणहरुले इरानतिरबाट ल्याएर फैलाएको पद्धतिभन्दा फरक छ। वैदिककालगणनापद्धतिको सङ्क्षिप्त वर्णन याँहाँ उपस्थापित गरिञ्छ। कालको सबैभन्दा सानो परिमाणलाइ **त्रुटि** भञ्छन्। दुइ त्रुटिको एक **लव,** दुइ लवको एक **निमेष,** पन्द्र निमेषको एक **इदानि** वा **काष्ठा,** पन्द्र इदानिको एक **एतर्हि,** पन्द्र एतर्हिको एक **क्षिप्र,** पन्द्र क्षिप्रको एक **मुहूर्त** (४८ मिनेट) हुञ्छ। एक मुहूर्तमा बिस **कला र कलाको दश भागको एक भाग** रहेका मानिञ्छन्। तेस्तै एक मुहूर्तमा दुइ **दण्ड (नाडी, घटिका [घडि])** मानिञ्छन्। एक घटिकालाइ साठि पलामा विभक्त गर्ने कुरा आधुनिक ज्योतिषिहरुमा प्रसिद्ध छ। तिस मुहूर्तको एक **अहोरात्र (दिनरात)** हुञ्छ। अहोरात्रको प्रारम्भ वैदिकपरम्परामा सूर्योदयबाट हुञ्छ। सामान्यतया पन्द्र अहोरात्रको एक **पक्ष** हुञ्छ। वैदिक-परम्परामा मूल रूपमा शुक्लप्रतिपदाबाट पैलो पक्षको र कृष्णप्रतिपदाबाट दोस्रो पक्षको प्रारम्भ हुञ्छ। दुइ पक्षहरुको एक **चान्द्र मास** (मैना) हुञ्छ। **अधिकमास** पर्दा चार पक्षको एक चान्द्र मास (चान्द्र मैना) मान्ने मत पनि देखिञ्छ। एस्तो अधिकमास वेदाङ्गज्योतिषानुसार ग्रीष्मऋतुका अन्त्यमा र हेमन्तऋतुका अन्त्यमा सौर अयनका अन्तमा मात्र मानिञ्छ; वेदाङ्ग-ज्योतिषानुसार **क्षयमास त हुँदै**हुँदैन। दुइ चान्द्र मासहरुको एक **चान्द्र ऋतु** हुञ्छ। मूल वैदिक-परम्परामा ऋतुको प्रारम्भ पनि शुक्लप्रतिपदाबाटै हुञ्छ। अधिकमासले गर्दा **सौर वर्षको** र **चान्द्र वर्षको** तालमेल मिल्ने हुँदा प्रमुख वार्षिक तिथिपर्वहरु सामान्यतया उइ सौर ऋतुमा पर्ने हुञ्छन्। एसबाट चान्द्र ऋतु कुनै वर्षमा सौर ऋतुका दृष्टिले २५–३० दिनसम्म पनि अगि सर्ने भए पनि त्योभन्दा धेरै अगि सर्दैन। तिन चान्द्र ऋतुहरुको एक **चान्द्र अयन** हुञ्छ। चान्द्र उदगयनको (उत्तरायणको) गणनाको प्रारम्भ सूर्य उत्तरतिर अभिमुख हुन थालेको दिनको नजिकैको पूर्ववर्ति वा वैदिक अधिकमास परेका वर्षमा कैलेकैँ ५-६ दिनसम्म पछि पनि हुन सक्ने नजिकैको शुक्लप्रतिपदाबाट गरिञ्छ। तेसै शुक्लप्रतिपदाबाट वैदिक चान्द्र **शिशिर** ऋतुको चान्द्र **तपोमास**को (वैदिक आर्तव माघ-मासको) र वैदिक सौर-चान्द्र **नववर्ष**को पनि प्रारम्भ हुञ्छ। दुइ सौर-चान्द्र अयनहरुको एक **सौर-चान्द्र वर्ष** हुञ्छ। पाँच सौर-चान्द्र वर्षहरुको एक **सौर-चान्द्र युग** हुञ्छ। सामान्यतया एक चान्द्र युगमा सौर आर्तव वर्ष पनि पाँच नै हुञ्छन्। यो वैदिक मूल कालगणनापद्धति हो। एस पद्धतिको प्रयोग वेदाङ्गज्योतिष, पाणिनीय व्याकरणाष्टाध्यायी, सुश्रुतसंहिता, महाभारत, कौटलीय अर्थ-शास्त्र इत्यादि प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थमा पाँइञ्छ। उक्त प्रकारका पाँचवर्षे बार युगहरु मिलाएर **युगसङ्घ** हुञ्छ। तेस्ता युगसङ्घका आधारमा पनि अगि-अगि कालगणना गर्ने गरिएको पाँइञ्छ। आर्यभटले आँफ्नो वय (उमेर) बताउँदा तेस्तै युगसङ्घलाइ प्रयोगमा ल्याएको बुजिञ्छ। एस युग-सङ्घलाइ लिएर प्रभवादि षष्टि (साठि) चान्द्र संवत्सरहरु पनि मानिएका छन्। **बार्हस्पत्य** षष्टि संवत्सरको र **चान्द्र** षष्टिसंवत्सरको गणित फरक छ। बार्हस्पत्य संवत्सर संवत्सर-परिवत्सरादि-सित टम्म मिल्दैनन्। तिनको आरम्भ सँधैँ वैदिक संवत्सरादिसँग हुँदैन। चान्द्र संवत्सर वैदिक संवत्सर-परिवत्सरादिसित टम्म मिल्छन्। चान्द्र षष्टिसंवत्सर वैदिक पञ्चवर्षात्मक युगको नै आर्को रूप हो। श्रौत-स्मार्त धर्म-कर्मका सङ्कल्पमा चान्द्र संवत्सरको नै उल्लेख गर्नपर्ने वैदिक परम्पराको व्यवस्था धर्मसिन्धुका प्रारम्भमा नै पनि स्पष्ट रूपमा दिय्येको छ।

स्मृति-पुराणहरुमा तेसै वैदिक कालगणनापद्धतिको विस्तार गरि **युग, चतुर्युगी, मन्वन्तर, कल्प, महाकल्प** इत्यादि कालहरुको वर्णन गरिएको छ। मूल आधार भने उक्त वैदिककालगणनापद्धतिलाइ नै बनाइएको देखिञ्छ। तथापि केइ भेद पनि हुन गएको पाँइञ्छ। प्रक्षेपका आशङ्काले घेरिएका कुनै एकाध पुराणमा चैत्रशुक्लप्रतिपदामा वर्षारम्भ बताइएको पाँइञ्छ। आकरग्रन्थको राम्रो अवलोकन-परीक्षण-विवेचन नगरि लेख्ने धारेश्वर-लक्ष्मीधर-जीमूतवाहन-चण्डेश्वर-हेमाद्रि-माधव-कमलाकरभट्टहरुले पनि कथित पुराणवचन देखाइ तेस्तो कुरा लेखेका छन्। इरानतिरबाट भारतवर्षतिर पसेर शासन गर्ने शक-कुषाणादि विजेता शासकहरुसित इरानतिरबाट आएका मग ब्राह्मणहरूले ल्याएका अवैदिक ज्योतिषको प्रचार गर्ने **आर्यभटीय, ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, खण्डखाद्यक, भास्वती, सूर्यसिद्धान्त इत्यादि** अर्वाचीन सिद्धान्तज्योतिषग्रन्थमा पनि तेइ कुरा देखिञ्छ। किन्तु ति ग्रन्थमा पनि अयनारम्भ माघमा नै मानिने वा शुभकर्मका लागि उत्तरायण माघदेखि नै प्रवृत्त भएको मानिने कुरा देखिञ्छ। एसरि अयनारम्भ माघबाट र वर्षारम्भ चैत्रबाट मान्ने एस पद्धतिका गणनामा आन्तरिक सङ्गति नै गडबडिएको देखिञ्छ। एसबाट **दुइ अयनहरुको एक वर्ष हुञ्छ** भन्ने स्मृति-पुराणादि-प्रतिपादित परिभाषामा पनि असामञ्जस्य आउँछ। मानुष (मानिसको) उत्तरायणलाइ देवताको दिन मान्ने तथा मानुष दक्षिणायनलाइ देवताको रात मान्ने र तेसैका आधारमा मानुष वर्षलाइ देवताको अहोरात्र मानि दिव्य वर्षको गणना गर्ने, अनि दिव्य वर्षहरुकै आधारमा युग, चतर्युगी, मन्वन्तर, कल्प, महाकल्प इत्यादिको गणना गर्ने मनुस्मृति इत्यादि ग्रन्थमा प्रतिपादित कालगणनापद्धतिमा पनि उक्त असामञ्जस्यबाट गडबडि पैदा हुञ्छ।

विदेशि शक-कुषाणादि विजेता शासकहरुसित आएका तिनैका मग ब्राह्मण ज्योतिषिहरुका प्रभावमा परि मूल वैदिक-धर्मशास्त्र-परम्पराका आधारमा चलिआएका वेदाङ्गज्योतिषका पद्धतिलाइ त्यागि बाइरिया ज्योतिषपद्धति अँगाल्नाले र मूल वैदिकपरम्पराका प्रमुख धर्मशास्त्रीय व्यवस्थामा भने परिवर्तन गर्न नसकिएकाले एस्तो असामञ्जस्यको स्थिति पर्न आएको बुजिञ्छ। एस्ता विषयमा भारतवर्षका अर्वाचीन कालका वेद-वेदाङ्ग-वेदोपाङ्ग-स्मृति-पुराणादिका विद्वान्हरुको ध्यान नजानु सारै शोचनीय कुरा देखिञ्छ। एस विषयमा स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बबाट केइ काम भएको छ। २०४५ संवत्मा प्रकाशित **वैदिक धर्म मूल रूपमा** (प्रथम संस्करण) भन्ने ग्रन्थमा वेदाङ्गज्योतिषको विशेषतातिर पाठकहरुको ध्यान आकृष्ट गरिएको थियो (पृ.१५–१७)। २०५२ संवत्मा प्रकाशित **वैदिकमन्त्रसङ्ग्रह**का परिशिष्टमा (पृ.१३७) वैदिक कालगणनापद्धतिको सारांश श्लोकहरुमा दिइएको थियो। २०५३।१।१ मितिका कान्तिपुर दैनिक पत्रिकामा **"नववर्षारम्भ : केही विचारणीय कुरा"** भन्ने लेख प्रकाशित गराइ एस विषयको चर्चा चलाइएको थियो। तेसपछि एस विषयमा धेरै लेख-निबन्ध पुस्तक-पुस्तिकाहरु प्रकाशित गर्ने र प्रवचन, छलफल, प्रदर्शनी इत्यादि गर्ने गरि चर्चा चलाइँदै आइएको छ। ति लेखको सूची **"स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बको स्वधर्मसन्देश (८) : वैदिक धर्म-कर्मका निम्ति वैदिक कालगणनापद्धति नै अँगाल्न पर्छ"** भन्ने पुस्तिकाका अन्तमा दिय्येको छ (द्र.– एसै वैदिकतिथिपत्रको परिशिष्टभाग)। **वेदाङ्गज्योतिष**को विस्तृत भूमिकासहित संस्कृत कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान र हिन्दि व्याख्या वाराणसीका चौखम्बाविद्याभवनबाट २०६२ संवत्मा (२००५ क्रैस्ताब्दमा) प्रकाशित भैसकेको छ। एसै सम्बन्धमा **भारतवर्षीय ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष** भन्ने हाम्रो ग्रन्थ पनि वाराणसीको चौखम्बाविद्याभवनबाटै २०६५ संवत्मा (२००८ क्रै.) प्रकाशित गराय्येको छ।

(च) वेदाङ्गज्योतिष र वैदिक कालगणनासिद्धान्त

वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ— वेदाङ्गज्योतिष भन्ने ग्रन्थ वैदिकहरुमा प्रसिद्ध रहिआएको ग्रन्थ हो। यो ग्रन्थ वैदिकहरुबाट वैध नित्यस्वाध्यायाध्ययनमा पढिँदैआएको ग्रन्थ हो। एसको वेदसित घनिष्ठ सम्बन्ध छ। एसमा प्रतिपादित विषय वेद-स्मृति-पुराणहरुमा उल्लिखित छन्। एस ग्रन्थको प्राचीन कालदेखि अर्वाचीन कालसम्मका ग्रन्थकारहरुले उल्लेख गरेका छन्। **लौगाक्षिस्मृति**मा **'पञ्चसंवत्सरमयम्'** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थलाइ नित्य ब्रह्मयज्ञमा अध्ययन गर्नपर्ने, उपाकर्ममा र उत्सर्जनकर्ममा गर्न पर्ने स्वाध्यायप्रवचनमा प्रवचन गर्न पर्ने, **अलङ्घनीय** ग्रन्थमा गनिएको छ (स्मृतिसन्दर्भ, षष्ठ भाग, २०१३ वै., पृ.२७५-२७६)। **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थको नित्य ब्रह्मयज्ञमा (स्वाध्यायाध्ययनमा) अध्ययनीयत्व **देवीभागवत**मा (११।२०।४-१०) र **शिव-**

पुराणको कैलाससंहितामा (१२।८८-९२) पनि भनिएको छ। आह्निकसूत्रावलिमा पनि वेदाङ्ग-ज्योतिषको प्रतीक **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** नै दिइएकै छ। एस ग्रन्थको प्रामाणिकताका विषयमा **वेदाङ्गज्योतिषको कौण्डिन्न्यायनव्याख्यान**का (२०६२वै.) भूमिकामा पर्याप्त प्रकाश पारिएको छ।

अतः वैदिक ब्राह्मणले र तदनुयायि हिन्दुहरुले लगधमुनिप्रोक्त **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थको उपेक्षा गर्नु वा एसलाइ मान्यता नदिनु अज्ञानको वा नास्तिकताको लक्षण हो। ब्राह्मणले वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थलाइ नअँगाल्दा तिनले अज्ञानका रहमा डुबुल्कि मारेको वा चार्वाक-जैन-बौद्धादिलेभैँ नै वेद-वेदाङ्ग प्रति विद्रोह गरेको वा पाखण्डता अँगालेको प्रमाणित हुञ्छ।

वेदाङ्गज्योतिषको काल— ज्योतिषशास्त्रका सिद्धान्तहरुका बीज वेदका मन्त्रसंहिता-हरुमा र ब्राह्मणग्रन्थमा पनि पाइञ्छन्। वेद-षडङ्गहरुको निर्देश माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्ल-यजुर्वेद-शतपथब्राह्मणमा **"अङ्गजिद्ब्राह्मणेषु"** एस शब्दद्वारा (११।४।३।२०) गरिएको छ। षड्विंशब्राह्मणमा (५।७।२) पनि वेदाङ्गहरुको उल्लेख पाइञ्छ। गोपथब्राह्मणमा **"षडङ्गविदस् तत् तथाऽधीमहे"** (१।१।२७) एस वाक्यमा वेदका छ अङ्गहरुको उल्लेख छ। मुण्डकोपनिषद्मा वेदाङ्गहरुको क्रमबद्ध उल्लेख छ (१।१।४–५)। वेदाङ्गज्योतिषमा अनादि वैदिक कालगणना-पद्धतिको प्रतिपादन गरिएको हुञ्छ। एसै अनादि वैदिक परम्पराक्रममा वर्तमान कालमा उपलब्ध लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थको रचना भएको हो। एसको रचनाकालका विषयमा सुधाकर द्विवेदिले वेदाङ्गज्योतिषव्याख्याको भूमिकामा **"अस्य रचना च भारतात् पूर्वं मन्मते"** भनेका छन् (मेडिकल्हल्-मुद्रणालय, वाराणसी, १९६४ वै.) । शङ्करबालकृष्णदीक्षितले **"क्रैस्तवर्षारम्भ-भन्दा पैला १४१०औं वर्षमा (गणितबाट) धनिष्ठाको भोग ९ राशि आउँछ, अतः तेस वर्ष धनिष्ठाको आरम्भमा उत्तरायणारम्भ थियो भन्ने सिद्ध हुञ्छ। एसरि वेदाङ्गज्योतिषको एइ समय निश्चित हुञ्छ"** भनेका छन् (भारतीय ज्योतिष [मराठि संस्करण १९५३ वै.], हिन्दिसंस्करण, २०३२ वै., अनुवादक शिवनाथ झारखण्डी, पृ.१२२)। वेदाङ्गज्योतिषका आर्का व्याख्याता शामशास्त्रिले दीपिकानामक संस्कृतव्याख्याको प्रारम्भमा लगधमुनिप्रोक्तवेदाङ्गज्योतिषग्रन्थको रचना शकान्त-संवत्को प्रारम्भ हुनुभन्दा एक हजार वर्ष पहिले भएको हो भनेका छन्—**'वेदाङ्गज्योतिषं लोके यज्ञकालार्थसिद्धये। प्रणीतं शककालात् प्राग् वत्सराणां सहस्रके॥'** (मैसुरु, १९३६ क्रै.)।

लगधमुनिको देश— लगधमुनिको देश कश्मीर थियो भन्ने अनुमान शङ्करबालकृष्ण-दीक्षितले गरेका छन्। छोटेलाल-बार्हस्पत्यले लगधमुनिको देश बर्बरदेश मान्छन् भनी 'हिन्दुत्व'-नामक ग्रन्थमा रामदासगौडले भनेका छन्। **"घर्मवृद्धिरपां प्रस्थः"** इत्यादि श्लोकमा (श्लो.८) र **"यदुत्तरस्याऽयनतः"** इत्यादि श्लोकमा (श्लो.४०) प्रतिपादित दिनमानव्यवस्थाको (दिनमान न्यूनतम १२ मुहूर्त र अधिकतम १८ मुहूर्त हुञ्छ भन्ने कुराको) आधार लिएर ति देशको सम्भावना गरिएको बुजिञ्छ। तर दिनमानका विषयमा 'गोनर्दीय' भनेर प्रसिद्ध पतञ्जलिमुनिले पनि **"षण् मुहूर्ताश् चराचराः, ते कदाचिदहर् गच्छन्ति, कदाचिद् रात्रिम्"** (पाणिनीयव्या.भाष्य ३।१।२८) भनेर वेदाङ्गज्योतिषमा भनेकै कुरा भनेकाले दिनमानको प्रतिपादनका आधारमा देशको निश्चय नहुने बुजिञ्छ। अतः लगधमुनि एसै देशका थिए भनेर निश्चित रूपमा भन्न कठिन छ।

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बमा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द र ज्योतिष इ छओटै वेदाङ्गले युक्त वेदको अध्ययन गर्ने क्रममा गरिएका लगधमुनिप्रोक्त मूल वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थका, अन्य स्मृति-पुराणादिशास्त्रका र नेपालको इतिहासका अध्ययनबाट निस्केका वैदिक कालगणनासिद्धान्त-सम्बन्धि केइ निष्कर्ष तल प्रस्तुत छन्—

१. युगनिर्णय— वैदिक परम्परामा पाँचपाँच वर्षका युग मानिएका छन्। तिनलाइ बारबार युगहरुको समूहमा समूहीकृत गरेर ति समूहहरुलाइ **युगसङ्घ** भन्ने परम्परा पनि छ। ति १२ युग इ हुन्— **(१) वैष्णव, (२) बार्हस्पत्य, (३) ऐन्द्र, (४) आग्नेय, (५) त्वाष्ट्र, (६) आहिर्बुध्न्य, (७) पित्र्य, (८) वैश्वदेव, (९) सौम्य, (१०) ऐन्द्राग्न, (११) आश्विन** र **(१२) भाग्य**। इ युग-हरुको श्राद्धका सङ्कल्पमा उल्लेख गर्ने कुरा हेमाद्रिका चतुर्वर्गचिन्तामणिका परिशेषखण्डका श्राद्धकल्पमा (पृ. ११५२) पनि छ। चल्तिका पात्राले गतकलिवर्ष भन्ने गरेका महाभारतयुद्धाब्दका सङ्ख्यामा महाभारतयुद्धपछि ३६ वर्षमा कृष्णको स्वर्गारोहण भएपछि कलियुग लागेको मानिएकाले ३६ घटाइ आएको सङ्ख्यालाइ वर्तमान कलिवर्षसङ्ख्या मानि तेसैलाइ साठिले भाग लिइ शेषलाइ पाँचले भाग लिएर इ युगको निर्णय गर्न पर्छ। युगको आरम्भ तपःशुक्लप्रतिपदामा

(वैदिक आर्तव माघशुक्लप्रतिपदामा) हुने र युगको समाप्ति सहस्यकृष्णमा (वैदिक आर्तव पौषकृष्णमा) हुने कुरा वेदाङ्गज्योतिषमा उल्लिखित छ। जस्तै—**माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्ण-समापिनः। युगस्य पञ्चवर्षस्य कालज्ञानं प्रचक्षते॥** (५ श्लो.)।

उक्त नियमअनुसार २०७२ वैक्रमाब्दको वृश्चिकमासका (मुङ्सिरका) २६ गते परेको तपःशुक्लप्रतिपदादेखि नवौँ **सौम्य युग** लागेको छ। २०७७ वैक्रमाब्दका वृश्चिकमासका (मुङ्सिरका) ३० गते पर्ने तपःशुक्लप्रतिपदादेखि दसौँ **ऐन्द्राग्न युग** लाग्छ।

२. वर्षनिर्णय र संवत्सरनिर्णय— श्रौतस्मार्तधर्मकृत्यका लागि युग-वर्ष-अयन-ऋतु-मास-हरुको गणनाको प्रारम्भ सूर्यको दृक्सिद्ध उत्तरायणाऽऽरम्भभन्दा अगाडिको वा सँगैको वा ५–६ दिनसम्म परको आसन्न शुक्ल-प्रतिपदाबाट हुन्छ। सूर्यको उत्तरायणारम्भको दिन (अर्थात् पात्रामा लेखिएका सबैभन्दा थोरै दिनमान भएका दिनहरुका माजाको दिन) जुन शुक्लप्रतिपदादेखि अमा-वास्यासम्मको चान्द्रमासका प्रारम्भका २४ दिनभित्र पर्छ त्यो चान्द्रमास वैदिक **तपोमास** वा **वैदिक आर्तव माघमास** हुन्छ। पच्चिसौँ-छब्बिसौँ इत्यादि दिनमा त्यो दिन परे तेस्तो चान्द्रमास **वैदिक अधिकमास (मलमास)** हुन्छ र तेस अधिकमासपछि आउने शुक्लप्रतिपदामा लाग्ने चान्द्रमास वैदिक तपोमास वा वैदिक आर्तव माघमास हुन्छ। सजिलोका लागि भन्न पर्दा चल्तिका पात्रामा **"मकरे सायनार्कः (सायनमकरे सूर्यः)"** भन्ने लेखिएका दिनमा अमान्त (अमावास्यामा पूर्ण हुने, शुक्लादि कृष्णान्त) चान्द्रमासको कृष्णनवमीसम्मको कुनै तिथि भए तेसै चान्द्रमासको शुक्लप्रति-पदामा वैदिक नववर्षको आरम्भ हुन्छ, कृष्णदशमी वा तेसपछिको तिथि भए आउँदो अमावास्यामा पूर्ण हुने मास वैदिक अधिकमास मानिन्छ र तेसपछिको शुक्लप्रतिपदामा वैदिक नववर्षको आरम्भ हुन्छ भन्न सकिन्छ। **२०७३ संवत्मा वृश्चिकमासका (मुङ्सिरका) १५ गते वैदिक नववर्षारम्भ परेको छ।** वैदिक युगका पाँच चान्द्र वर्षहरु **(१) संवत्सर, (२) परिवत्सर, (३) इदावत्सर, (४) इद्वत्सर र (५) वत्सर** हुन्। उपर्युक्त प्रकारले युगनिर्णय गर्दा शेषबाट संवत्सर-परिवत्सरादिको ज्ञान हुन्छ। २०७३।८।१५ मितिमा प्रारम्भ हुने वर्ष परिवत्सर हो। एस दिनबाटै ५०८२औँ कलिवर्ष पनि लाग्ने हो। चान्द्र संवत्सरहरु वैदिक पञ्चवर्षात्मकयुगसमूहमूलक हुन्। चान्द्र प्रभवादि संवत्सर ६० छन्। नामहरु उनै भएपनि चान्द्रसंवत्सरहरुको र बार्हस्पत्यसंवत्सरहरुको गणित फरक छ। वर्तमान कलिवर्षसङ्ख्यालाइ साठिले भाग गर्दा शेष १ भए चान्द्र संवत्सर प्रभव हुन्छ, २ भए विभव हुन्छ। एसै गरि अरु पनि जान्न पर्छ। २०७३।८।१५ मितिमा प्रारम्भ हुने चान्द्र संवत्सर बयालिसौँ **कीलक** संवत्सर हो। वैदिक द्विजातिले श्रौत-स्मार्त-धर्मकृत्यका सङ्कल्पमा चान्द्र संवत्सरको नै उल्लेख गर्ने हो, बार्हस्पत्य संवत्सरको त फलित-ज्योतिषिहरुले वर्षफल बताउन उपयोग गर्ने हो। **यो कुरा हेमाद्रिका लेखबाट पनि बुजिन्छ। धर्मकृत्यका सङ्कल्पमा चान्द्र संवत्सरको नै उल्लेख गर्ने हो भन्ने वैदिक परम्पराको कुरा धर्मसिन्धुका प्रारम्भमा नै पनि छ।**

३. अयननिर्णय— मूल वैदिक परम्परामा श्रौतस्मार्त धर्मकृत्यमा अयनमा पनि **सौरअयन-सापेक्ष चान्द्र अयन** नै लिइन्छ, शुद्ध सौर अयन लिइँदैन। वैदिक वर्षारम्भका दिनमा (**तपश्शुक्ल-प्रतिपदामा, वैदिक आर्तव माघ-शुक्लप्रतिपदामा**) नै वैदिक सौर-चान्द्र उदगयनको र **वैदिक नभश्शुक्ल-प्रतिपदामा (वैदिक आर्तव श्रावण-शुक्लप्रतिपदामा)** वैदिक सौर-चान्द्र दक्षिणायनको आरम्भ हुन्छ।

४. ऋतुनिर्णय— श्रौत-स्मार्त धर्मकृत्यमा ऋतु पनि मुख्य रूपमा चान्द्र नै लिइन्छ। यो कुरा निर्णयसिन्धु-धर्मसिन्धुमै पनि प्रारम्भमै छ। वैदिक नववर्षारम्भका दिनमा नै वैदिक चान्द्र **शिशिर** ऋतुको प्रारम्भ हुन्छ। अनि क्रमशः दुइदुइ चान्द्र मैनाका शुक्लप्रतिपदाहरुमा वैदिक **वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त** ऋतुहरु क्रमैले आउँछन्। मलमास पर्दा मलमासलाइ गएका दुइ मैनामा मिलाएर तिन मैनाहरुको एक ऋतु मानिन्छ। एस सम्बन्धमा वाराणसीको सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयको अनुसन्धानपत्रिका सारस्वती सुषमामा (५१वर्ष, १–४ अङ्क, २०५३ वै.) प्रकाशित **"जैमिनीयधर्ममीमांसाशास्त्रनिर्णीतानां वैदिककृत्यकालानां चान्द्रमाननियतत्वम्"** भन्ने प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायनको निबन्ध (लेख) पनि द्रष्टव्य छ।

५. मासनिर्णय— वैदिक नववर्षारम्भका दिनमा नै **तपोमास**को (चल्तिका पात्राको हैन, **वैदिक आर्तव माघमास**को) पनि प्रारम्भ हुन्छ। अनि क्रमैले शुक्लप्रतिपदाहरुमा वैदिक **तपस्य-मास** (वैदिक आर्तव फाल्गुनमास), **मधुमास** (वैदिक आर्तव चैत्रमास), **माधवमास** (वैदिक आर्तव वैशाखमास), **शुक्रमास** (वैदिक आर्तव ज्येष्ठमास), **शुचिमास** (वैदिक आर्तव आषाढमास), **नभो-**

मास (वैदिक आर्तव श्रावणमास), **नभस्यमास** (वैदिक आर्तव भाद्रपदमास), **इषमास** (वैदिक आर्तव आश्विनमास), **ऊर्जमास** (वैदिक आर्तव कार्तिकमास), **सहोमास** (वैदिक आर्तव मार्गमास), **सहस्यमास** (वैदिक आर्तव पौषमास) आउँछन्। वैदिक मूल चान्द्रमास शुक्लपक्षको प्रतिपदाबाट अर्थात् दर्शश्राद्ध हुने दिनको भोलिपल्टबाट प्रारम्भ भै अमावास्यामा पुरा हुञ्छ। अमान्त चान्द्र मास मान्ने वैदिक परम्परा काठमाण्डु-उपत्यकाका नेवारि परम्परामा ऐले पनि सुरक्षित पाँइञ्छ। वेदमन्त्रसंहितामा उल्लिखित मुख्य वैदिक चान्द्रमासहरुका नाम **तपः, तपस्य** इत्यादि हुन्। वैदिक कालगणनासिद्धान्तमा तपस्-तपस्यादि शब्दले जुनजुन काललाइ बुजाउँछन् माघ-फाल्गुन इत्यादि शब्द पनि तेसैतेसै काललाइ बुजाउन रूढ मानिञ्छन्। सूर्यको एक राशिबाट आर्का राशिमा सरेदेखि गनिने अवैदिक सौरमासका नाम त **मकरमास, कुम्भमास, मीनमास, मेषमास, वृषमास, मिथुनमास, कर्कटमास, सिंहमास, कन्यामास, तुलामास, वृश्चिकमास, धनुर्मास** हुन्। ति अवैदिक मासलाइ माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख इत्यादि भन्नु अवैदिक वा अशास्त्रीय कुरा हो।

६. अधिकमासनिर्णय— कृष्णपक्षमा नवमी पनि नागेर दशमी-एकादशीहरुमा सूर्य दृक्-सिद्ध आर्को अयनमा जाञ्छन् भने त्यो अमान्त चान्द्रमास अधिकमास (मलमास) हुञ्छ। वैदिक चान्द्र उदगयनका (उत्तरायणका) वा दक्षिणायनका अन्तमा अयनको सातौँ अमान्त चान्द्रमासका रूपमा **वैदिक अधिकमास** पर्छ। उदगयनका अन्तमा परेको अधिकमास **द्वितीय शुचिमास (द्वितीय आषाढमास)** भनिञ्छ र दक्षिणायनका अन्तमा परेको अधिकमास **द्वितीय सहस्यमास (द्वितीय पौषमास)** भनिञ्छ। द्वितीय शुचिमास (द्वितीय आषाढ) ग्रीष्मऋतुअन्तर्गत हुञ्छ र द्वितीय सहस्य-मास (द्वितीय पौष) हेमन्त-ऋतुअन्तर्गत हुञ्छ। अधिकमासलाई सप्तम ऋतु मान्ने पनि पक्ष छ। नेपालका इतिहासमा लिच्छविकालका र मल्लकालका पूर्वभागमा पनि वैदिक कालगणनापद्धति-को प्रभाव रहेको पाइञ्छ। तेस वेलाका अभिलेखहरुमा प्रथम आषाढको र द्वितीय आषाढको तथा प्रथम पौषको र द्वितीय पौषको उल्लेख पाँइञ्छ, अरु मैनामा अधिकमास परेको उल्लेखै पाइँदैन।

७. क्षयमासविचार— वैदिककालगणनासिद्धान्तअनुसार **क्षयमास हुँदैन**। वैदिक अयन-र-नक्षत्रपद्धतिमा आधृत कालगणनामा क्षयमास मान्ने आवश्यकता र औचित्य पनि हुँदैन।

८. पक्षनिर्णय— वैदिक परम्परामा अगिल्लै दिनमा कृष्णपक्षको समाप्ति हुनाले वा तेसै दिनमा पिण्डपितृयज्ञकालरूप अपराह्णको प्रारम्भ हुनुभन्दा अगि नै दृक्सिद्ध गणितबाट कृष्णपक्षको समाप्ति हुनाले दर्शेष्टि परेको दिनबाट शुक्लपक्षको र पूर्णमासेष्टि परेको दिनबाट कृष्णपक्षको प्रारम्भ हुञ्छ। **वैदिक चान्द्रमासमा पैलेइ शुक्लपक्ष अनि कृष्णपक्ष आउँछ।** चल्तिका पात्राका चान्द्र मासमाझैँ पैलेइ कृष्णपक्ष र अनि शुक्लपक्ष आँउँदैन।

९. तिथिनिर्णय— वैदिक तिथि अहोरात्रात्मक हुञ्छ। दर्शेष्टिका दिन शुक्लप्रतिपदा र पूर्णमासेष्टिका दिन कृष्णप्रतिपदा मानिञ्छ। प्रतिपदाको भोलिपल्ट द्वितीया, द्वितीयाको भोलिपल्ट तृतीया हुञ्छ। एसरि टुट्‌बड् नभै तिथि आउँछन्। एउटा दर्शश्राद्धदिनदेखि गन्दा ३१औँ दिनमा आर्को दर्शश्राद्धदिन परे कुनै पनि तिथि टुट्‌तैन। एउटा दर्शश्राद्धदिनदेखि गन्दा ३०औँ दिनमा दृक्सिद्ध पक्षसमाप्तिकालका विचारबाट आर्को दर्शश्राद्धदिन परेमा भने शुक्लपक्षको कुनै पनि तिथि टुट्‌बड् नमानिइकन शुक्लपक्षका तिथि सरासर नै आएका मानिञ्छन् तापनि कृष्णपक्षका अरु तिथि सरासर आएर चतुर्दशी तिथि भने टुटेको मानिञ्छ र तेसै दिनलाइ अमावास्या मानि तेसै दिन अपराह्णमा पिण्डपितृयज्ञ गरिञ्छ। **आर्यभट-वराहमिहिरादिका पुर्खा इरानि मगब्राह्मण-हरुले ल्याएको सबै तिथिमा घडिपलाको गणित हुने र जुन पक्षको जुन तिथि पनि टुट्‌न-बड्‌न सक्ने *भौतिक तिथिगणनापद्धति* श्रौत-स्मार्त धर्मकर्ममा काम लाग्दैन।** आधुनिक अनुसन्धानबाट भौतिक तिथिमा अझ बडि घटबढ हुने तथ्य अगाडि आएको छ र त्यो पनि धर्मकर्ममा भने काम लाग्दैन। **सर्खारि पञ्चाङ्गनिर्णायकसमितिले स्वीकृत गरेका पञ्चाङ्गहरुका सूर्यसिद्धान्तानुसारि भनिएका तिथि-नक्षत्रका घडिपला आधुनिक दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गका तिथि-नक्षत्रका घडि-पलासित मेल नखाएका** देखिञ्छन्। अतः **ति वैदिकसिद्धान्तअनुसारका पनि नभएका र भौतिक वैज्ञानिक दृष्टिले पनि यथार्थ नदेखिएका** कुरामा **सबै श्रद्धालु वैदिकजनको विवेकपूर्ण ध्यान जान उचित छ। प्रस्तुत वैदिकतिथिपत्रमा दृक्सिद्धगणनाअनुसारको तिथिनक्षत्रादिको समाप्तिकाल दिइएको छ।**

विशेष— उक्त सबै निर्णयहरु **वेदमन्त्रसंहिता**, **ब्राह्मणग्रन्थ** र लगधप्रोक्त मूल **वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थ** तथा तिनका अनुकूल अन्य **स्मृति-पुराणवचन**हरुका आधारमा गरिएका हुन्।

(छ) प्रस्तुत वैदिक-तिथिपत्रको परिचय

यो तिथिपत्र मात्र मूल वैदिक कालगणनापद्धतिअनुसारको हुनाले वैदिक हो, ऐले प्रचलनमा रहेका नेपाल-भारतका अरु तिथिपत्र (पञ्चाङ्ग) सबै नै वैदिक कालगणनापद्धति-अनुसारका नभएकाले वैदिक हैनन्।

एस वैदिक-तिथिपत्रका मुख्यभागका पृष्ठहरुमा शिरका **पैला पङ्क्तिमा** एस पत्रको नाम, **कलिसंवत्**, द्वादशयुगात्मक युगसङ्घभित्रको वर्तमान **युग**को नाम, कोष्ठभित्र कलियुगमा चलिरहेको युगसङ्घको सङ्ख्या र तेसभित्रको चलिरहेको पञ्चवर्षात्मक युगको सङ्ख्या, तेस युगको **वर्तमान वैदिक वर्ष**को नाम, कोष्ठमा तेसको सङ्ख्या, कोष्ठभित्र चान्द्र ६० वर्षमध्येको **वर्तमान चान्द्रसंवत्सर**को नाम र सङ्ख्या, वर्तमान **अयन** (उदगयन वा दक्षिणायन), **ऋतु**, **मास** र **पक्ष** क्रमशः उल्लिखित गरिएका छन्। प्रस्तुत पक्ष लाग्नुभन्दा अगि बितेको **गतकलिसावनाऽहर्गण** पनि टिप्पणीमा दिइएको छ।

तिथिपत्रका मुख्यभागका पृष्ठहरुमा शिरका **दोस्रा पङ्क्तिमा** विक्रमसंवत्, शकान्तसंवत् (शकसंवत्), बार्हस्पत्य संवत्सरको नाम-कोष्ठमा बार्हस्पत्य षष्टिसंवत्सरमध्ये वर्तमान बार्हस्पत्य-संवत्सरको सङ्ख्या, सम्बद्ध पक्षमा परेको वर्तमान कालमा अवैदिक कालगणना अँगाल्ने अरु-हरुले मान्ने गरेका गते गनिने सौर-मासको संस्कृतनाम, कोष्ठभित्र तेस मासका नेपालिका वर्तमान लोकव्यवहारमा प्रचलित नेपालि नाम, तेस पृष्ठमा उल्लिखित पक्षमा परेको मेष-वृषादि राशिलाइ लिएर अर्वाचीन कालमा परिभाषित गरिएको पूर्णिमान्त चान्द्र मैनाका पक्षका नाम, कोष्ठमा नेपाल-संवत् र विशेषतः काठमाण्डु उपत्यकाका नेवारि परम्परामा आइरहेको कृष्णान्त चान्द्रमासका पक्ष-विशेषको नेवारि नाम र तेसको संस्कृत अनुवाद तथा आर्को कोष्ठभित्र अङ्रेजि मैनाको नाम र वर्ष (क्रैस्ताब्द) क्रमैले दिइएका छन्। इ दोस्रा पङ्क्तिका उल्लेख वैदिक तिथिपत्रका संवत् अयन, ऋतु, मास तथा पक्ष चल्तिको अवैदिक पञ्चाङ्गमा कुन संवत्, अयन, ऋतु, मास तथा पक्ष मानिएका छन् भनि सूचित गर्न र दुइथरि पात्राको तुलनात्मक ज्ञान दिन गरिएको हो। वैदिक मूल परम्पराका अनुयायिले एस उल्लेखको उपेक्षा गरिदिने हो।

तिथिपत्रका मुख्य भागका पृष्ठहरुमा पृष्ठका देउरेपट्टिका पैलो ठाडो पङ्क्तिमा वैदिक कालगणनापद्धति-अनुसारका श्रौत-स्मार्त धर्मकर्ममा अँगालिने प्रतिपदादि **तिथि**हरु दिय्येका छन्। दोस्रो ठाडो पङ्क्तिमा तेसतेस दिनका सूर्योदयदेखि सूर्यास्तसम्म रहने करणहरु दिय्येका छन्। तेसतेस दिनका सूर्यास्तदेखि आर्को सूर्योदय नभइञ्जेल रातभर रहने करण दिनको करणभन्दा पछिल्लो करण हुञ्छ भन्ने जान्न पर्छ। शुक्लपक्षका रातका करणहरूका नाम र कृष्णपक्षका रातका करणहरूका नाम करणचक्रमा दिय्येका छन्। करणको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिको ठाडो पङ्क्तिमा श्रौत-स्मार्त धर्मकर्ममा नअँगालिने **अर्वाचीन सिद्धान्तज्योतिषको परिभाषा**अनुसारका **दृक्सिद्ध गणनाका** लौकिक तिथिहरु दिय्येका छन्। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा ति-ति लौकिक तिथिको समाप्ति हुने काल तेस दिनको घण्टा मिनेटमा दिय्येको छ, त्याँहाँ २४ भन्दा माथिका अङ्क भए तेस दिनको रातका १२ बजेपछिको १ घण्टाको समयलाइ २५ घण्टा दुइ घण्टाको समयलाइ २६ घण्टा इत्यादि भनिएको भन्ने जान्न पर्छ। लौकिक तिथिका घण्टा-मिनेटको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिल्लो ठाडो पङ्क्तिमा वैदिक-कालगणनापद्धतिअनुसारका **नक्षत्र**हरु दिय्येका छन्। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा उल्लिखित **वैदिक नक्षत्रकालको समाप्तिको मुहूर्त र कला** दिय्येको छ; मुहूर्तको २० भागको १ भागजतिलाइ कला भन्दछन् (वेदाङ्गज्योतिष, श्लो. ३८), कलाको २० भागको १ भागलाइ काष्ठा भनिने बुजिञ्छ (द्र.– वेदाङ्गज्योतिष, श्लो.३८,३९)। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा **वैदिक नक्षत्रको समाप्तिकालको घण्टा-मिनेट** दिय्येको छ। तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा लौकिक नक्षत्र र तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा उल्लिखित लौकिक नक्षत्रको समाप्तिकालको **दृक्सिद्ध गणनाअनुसार** घण्टा-मिनेट दिय्येको छ। **याँहाँ वैदिक नक्षत्रक्षेत्रको प्रारम्भ कृत्तिकाको चन्द्रमासित पैलेइ संयोग हुने तारासित चन्द्रमाको संयोगलाइ लिएर मानिएको छ। बेङ्कटेश बापूजी केतकरको 'नक्षत्रविज्ञान' भन्ने ग्रन्थमा दिय्येका नक्षत्रविशेषक्षेत्रहरुलाइ वर्तमान कालका लौकिक ज्योतिषिले मान्ने लौकिकनक्षत्रक्षेत्र मानि तेससित वैदिकनक्षत्रक्षेत्रमा पर्न जाने फरकलाइ लिएर वैदिक नक्षत्रकालविशेषको निर्धारण गरिएको छ।** तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा विष्कम्भादि स्थिर २७ योगहरु दिय्येका छन्, तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा तेसतेस योगको समाप्तिकाल घण्टामिनेटमा दिय्येको छ। विष्कम्भादि २७ स्थिर योगहरु— **विष्कम्भः,**

प्रीतिः, आयुष्मान्, सौभाग्यः, शोभनः, अतिगण्डः, सुकर्मा, धृतिः, शूलम्, गण्डः, वृद्धिः, ध्रुवः, व्याघातः, हर्षणः, वज्रम्, सिद्धिः, व्यतीपातः, वरीयान्, परिघः, शिवः, सिद्धिः, साध्यः, शुभः, शुक्लः, ब्रह्मा, ऐन्द्रः, वैधृतिः इ हुन्। इनका स्वामिहरुको क्रमशः उल्लेख नारदसंहिता भन्ने ग्रन्थमा (सप्तम अध्याय, श्लो. १,२) पाँइन्छ; जगन्मोहनका योगफलाध्यायमा (तिसौं अध्यायमा) पनि इनको प्रतिपादन छ। तेसपछिका मुहूर्तगणपति इत्यादि ग्रन्थमा पनि इनको उल्लेख छ। इनको धर्मकर्मका सङ्कल्पमा उल्लेख गर्ने कुरा पण्डित हरिनाथ प्याकुर्‍यालका सङ्कल्परत्नावलिमा (प्र.सं. पृ. १०, १९; द्वि. सं. पृ. ८, १६) पनि छ। विष्कम्भादि योगको घण्टा-मिनेटको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिको ठाडो पङ्क्तिमा वारविशेषका र नक्षत्रविशेषका योगले हुने कार्यविशेषमा विशेष विचार गरिने आनन्दादि २८ चर योगहरु दिय्येका छन्। तिनको उल्लिखित लौकिक नक्षत्रको समाप्तिकालमा समाप्ति मान्ने गरिन्छ भन्ने जान्न पर्छ। आनन्दादि योग— **आनन्दः, कालदण्डः, धूम्रः (धूम्राक्षः), धाता (प्रजापतिः), सौम्यः, ध्वाङ्क्षः, केतुः (ध्वजः), श्रीवत्सः, वज्रम्, मुद्गरः, छत्रम्, मित्रम्, मानसम्, पद्मम्, लुम्बः, उत्पातः, मृत्युः, काणः, सिद्धिः, अर्थः, शुभः, मुसलम्, गदः, मातङ्गः, राक्षसः (रक्षः), चरः, स्थिरः, वर्धमानः** इ २८ हुन्। इनको उल्लेख नारदसंहिता भन्ने ग्रन्थमा (दशम अध्याय, श्लो. ८–१०), मुहूर्तचिन्तामणिका शुभाशुभ-प्रकरणमा (श्लो. २३,२४) र तेसपछिका अरु ज्योतिषग्रन्थमा पनि पाँइन्छ। इनको धर्मकर्मका सङ्कल्पमा उल्लेख गर्ने परम्परा छैन। **इ विष्कम्भादि २७ स्थिर योग र आनन्दादि २८ चरयोग अर्वाचीन ज्योतिष ग्रन्थका हुन्, मूल वैदिक वाङ्मयमा छैनन्। तसर्थ श्रौत-स्मार्त धर्म-कर्मको कालको निर्णय गर्दा इनको विचार आवश्यक छैन, इच्छा लाग्नेले विचार गर्न सक्छन्, इच्छा नलाग्नेले विचार नगरे पनि हुन्छ। श्रौत-स्मार्त धर्म-कर्मका सङ्कल्पमा पनि इनको उल्लेख आवश्यक छैन।** आनन्दादियोगको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिको ठाडो पङ्क्तिमा तेस दिन चन्द्रमा रहने लौकिक नक्षत्रअनुसारका वेदमा नभएका मेष-वृष इत्यादि राशिहरु दिइय्येका छन्; कुनै दिनमा ति राशिविशेषको उल्लेख नगरिकन घण्टामिनेटको उल्लेख गरिएको छ भने तेस दिन तेति घण्टा-मिनेटसम्म माथिल्लो कोष्ठमा उल्लिखित राशिमा चन्द्रमा रहन्छन्, तेति घण्टा-मिनेटपछि तल्लो कोष्ठमा उल्लिखित राशिमा जान्छन् भन्ने बुज्न पर्छ। चन्द्रमाको राशिको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिको ठाडो पङ्क्तिमा तेसतेस दिनका दिनमानका घण्टा-मिनेटहरु, तेसपछिका ठाडो पङ्क्तिमा तेसतेस दिनका सूर्योदयका घण्टा-मिनेटहरु र तेसपछिको ठाडो पङ्क्तिमा सूर्यास्तका घण्टा-मिनेटहरु दिय्येका छन्। सूर्यास्तका घण्टा-मिनेट दिइएको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिको ठाडो पङ्क्तिमा **वैदिक आर्तव (सायन) सौर वर्षको सावनाऽहर्गण** दिय्येको छ। वैदिक सौर-चान्द्र नववर्ष लागिसक्ता पनि अगिल्लो दृक्सिद्ध आर्तव (सायन) वैदिक सौर वर्ष बितिसकेको छैन भने तेसैको अहर्गण दिएर त्यो बितिसकेपछि **नवीन दृक्सिद्ध आर्तव (सायन) वैदिक सौर वर्षको अहर्गण** दिय्येको छ। अहर्गणको ठाडो पङ्क्तिभन्दा पछिको ठाडो पङ्क्तिमा वैदिक मूल ग्रन्थमा नभएका तर आजभोलि लोकमा अत्यन्त प्रसिद्ध वारहरु दिय्येका छन्। तेसपछिका ठाडो पङ्क्तिमा वेदमा नभएका अर्वाचीन सूर्यसिद्धान्तअनुसारका राशिमूलक परिभाषाका गत १९६० संवत्देखि राणाशासक चन्द्रसम्सेरका आदेशले शासकीय व्यवहारमा अनिवार्य गरिएका **मेषमास-वृषमास इत्यादि (वैशाख-जेठ इत्यादि)** सौरमासका गतेहरु दिय्येका छन्। तेसपछिका ठाडा पङ्क्तिमा क्रिश्चियन (इसाइ) वर्षका जनबरि-फरबरि इत्यादि मैनाका **परराष्ट्र-व्यवहारमा उपयोगि** तारिखहरु दिय्येका छन्। तेसपछिका खण्डमा तेसतेस दिनका मुख्य श्रौत स्मार्त पौराण इत्यादि व्रतपर्वहरु उल्लिखित छन्। सम्बद्ध तिथिका पङ्क्तिमा व्रतपर्वादिको सबै विवरण नअटाएमा बाँकि विवरण बुट्टा चिह्न दिएर खालि भएका आर्का पङ्क्तिमा दिय्येको छ। त्याँहाँ पनि नअटाएमा फेरि आर्को चिह्न दिएर आर्को ठाममा विवरण दिइएको छ। **वास्तवमा पौराण व्रत-पर्वहरु पनि मेष-वृषादिराशि-पद्धतिमा आधृत नवीन परिभाषाका चान्द्रमासहरुमा नमनाइ वैदिक मूल शास्त्रअनुसारका वैदिक चान्द्र तपोमासाद्यभिन्न वैदिक आर्तव चान्द्र माघमासादिमा नै मनाउनु समुचित हो तापनि वैदिक-तिथिपत्रको एस सङ्क्रमणकालमा ऐलेलाइ पौराण व्रतपर्वहरु नवीन परिभाषाका चान्द्रमासमा लेखिएका छन्। एसमा विशेष विचार र आवश्यक परिवर्तन पछि हुनेछ।** तिथिपत्रका मुख्य भागका पृष्ठहरुमा तल्लो भागमा गतकलिसावनाऽहर्गणपछि **सूर्यको नक्षत्रप्रवेशको वैदिकसिद्धान्तानुसारि काल मुहूर्तमा र कलामा दिय्येको छ।** कोष्ठकमा सो काल घण्टा-मिनेटमा पनि दिय्येको छ। अवशिष्ट स्थानमा केइ ज्ञातव्य विषयसित सम्बद्ध वचनहरु सङ्गृहीत छन्। एस तिथिपत्रका प्रयोक्ता-हरुबाट प्राप्त विचारअनुसार ग्रहस्थितिसारणी र ग्रहकुण्डली पनि इनै पृष्ठहरुमा राखिएका छन्।

श्रौति वैदिक भन्नाले श्रौत अग्निको आधान गरेका द्विजहरु बुजिञ्छन्। **स्मार्त वैदिक** भन्नाले गृह्य अग्निको आधान गरेका द्विज बुजिञ्छन्। **उपवसथ**=इष्टिको अगिल्लो दिन, व्रतग्रहण गर्ने दिन, **पूर्णमासेष्टि**=श्रौत अग्निको आधान गरेका द्विजले पूर्णिमाका र प्रतिपदाका सन्धिमा गर्ने इष्टि, **दर्शेष्टि**=श्रौत अग्निको आधान गरेका द्विजले अमावास्याका र प्रतिपदाका सन्धिमा गर्ने इष्टि, **वैश्वदेवपर्व**=श्रौत अग्निको आधान गरेका द्विजले गर्ने चातुर्मास्ययज्ञका चार पर्वमध्येको पैलो पर्व, **वरुणप्रघास**=चातुर्मास्ययज्ञका चार पर्वमध्येको दोस्रो पर्व, **साकमेध**=चातुर्मास्ययज्ञका चार पर्वमध्येको तेस्रो पर्व, **शुनासीरीय**=चातुर्मास्ययज्ञका चार पर्वमध्येको चौथो पर्व, **निरूढपशुबन्ध**=श्रौत अग्निको आधान गरेका चातुर्मास्य याग गरिसकेका समर्थ व्यक्तिले गर्ने स्वतन्त्र पशुयाग। इ र एस्ता वैदिक कर्मको वेदमन्त्रसंहिता-ब्राह्मणग्रन्थ-श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्र-परिशिष्टका आधारमा दिइएको परिचय स्वाद्ध्यायशालाका **वैदिक धर्म मूल रूपमा** (प्र.सं. २०४५, द्वि.सं. २०६२) भन्ने, **वैदिक हिन्दु धर्म-संस्कृति** (२०६५)भन्ने र **कतिपयवैदिकयज्ञपरिचयः** (२०६७) भन्ने पुस्तकहरुमा पाँउन सकिञ्छ। इ ग्रन्थमा दिइएको प्रामाणिक परिचयको अध्ययनबाट श्रौत-स्मार्तयज्ञका विषयमा अरुले दिएका विवरणमा रहेका गडबडिका सम्बन्धमा पनि विवेक गर्न सकिञ्छ।

एस तिथिपत्रमा लोकमा प्रचलित व्यवहारका लागि लोकले खोजि गर्ने कतिपय आवश्यक मुख्य कुराहरु **अनुबन्ध**मा जोडिएका छन्।

(ज) प्रस्तुत वैदिक तिथिपत्रको प्रकाशनको आवश्यकता

भारतवर्षमा धेरै अघिदेखि हुँदै आएका विदेशि-विधर्मिहरुका आक्रमणले र शासन-स्थापनले गर्दा आर्षशिक्षा झन्झन् शिथिल हुँदै गएको देखिञ्छ। नेपालमा २०११ संवत्देखि नै नेपालि शासकहरु नै परम्परागत रूपमा चल्दै आएको वेद-वेदाङ्गादि संस्कृतशिक्षा हटाइ विधर्मि विदेशि शिक्षा-संस्कृतिको अन्धाधुन्द प्रचारप्रसार गर्न अग्रसर हुँदै गएकाले, पाश्चात्त्यहरुलाइ रिजाइ भिख मागेर वा रिन काडेर ल्याएको भनि चारो छरि जनताका आँखामा छारो हालि शासनाधिकारमा अडिन बल गर्ने वा शासनाधिकारमा पुग्न वा अडिन प्रयास गर्ने नेपालि शासकहरुले दार्शनिक रूपमा सबल गम्भीर तत्त्वदर्शनमा र शाश्वत प्राकृत स्वभावमा आधृत वैदिक सनातन वर्णाश्रम-धर्मलाइ शिथिल बनाइ क्रिश्चियनमत चलाउन चाहाने पश्चिमाहरुले दिएका दुर्बुद्धिमा लागि शास्त्रधर्मसंस्कृतिका ठाममा लोकधर्मरूपको कथित नेपालि संस्कृति विकसित गर्ने प्रयास गर्नाले, संस्कृत शिक्षाको विकास विस्तार र सुदृढीकरण गर्ने कार्यक्रम नराखि देखाव्नटका निम्ति २०४३ संवत्मा स्थापित गरिएका संस्कृत-विश्वविद्यालयले पनि २०२८ संवत्मा गरिएको प्रवेशिकाको (एस्.एल्.सि.को) अनिवार्य संस्कृतभाषा हटाउने संस्कृतमाध्यमिक विद्यालयहरु मास्ने इत्यादि गरि शासकले गरेका संस्कृत शिक्षाको जरो उखेल्ने कामलाइ अगि बडाउँदै पूर्व-मध्यमा तहलाइ अन्यथासिद्ध गर्ने गरि सो तहका संस्कृत विषयहरु नपडिकनै ४ मैने प्रशिक्षणबाट उत्तरमध्यमामा प्रवेश दिने व्यवस्था गरि संस्कृत-शिक्षाको जरो उखेल्ने कामलाइ अगाडि बडाउँदै गर्नाले र संस्कृत विश्वविद्यालयले तथा गोर्खापत्र, रेडियो नेपाल, नेपाल दूरदर्शन (टेलिविजन) इत्यादि शासकीय सञ्चारमाध्यमसमेतका नानाप्रकारका सञ्चारमाध्यमहरुले धर्मका विषयमा समेत वेदशास्त्रव्यवस्थाको प्रतिकूल अप्रामाणिक ग्रन्थलाइ विचारलाइ र व्यवहारलाइ अन्दाधुन्द प्रचारमा ल्याउन थाल्नाले समेत अज्ञानमा, मतिभ्रममा, विपन्नतामा र पतनमा जकडिन पुग्दै गएका ब्राह्मणहरुमा **ब्राह्मणत्वको र वेदवेदाङ्गको आर्षशिक्षाका माहात्म्यको चेतना तथा कुन देशमा कुन कालमा कस्ता कर्ताले के फल पाउन कुन पद्धतिले स्थापित अग्निमा केके सामग्रीले कुन पदार्थक्रमले कुन शास्त्रका आधारमा कुन विधिवाक्यका आधारमा के कर्म गर्न पर्ने हो इत्यादि कुरा शास्त्रका आधारमा निश्चय गरि धर्मकर्म गर्न गराउन पर्नेमा मूल वेद-वेदाङ्गशास्त्र-प्रतिपादित धर्मकृत्यका देश, काल, कर्ता, अधिकारि, अग्नि, हवि, समिधा, अरु शास्त्रीय सामग्री, विधि-निषेध, क्रियाक्रम इत्यादिका व्यवस्थापक शास्त्र पड्न र शास्त्रका कुरा बुज्न गुरु-पुरोहितको काम गर्ने ब्राह्मणहरुले पनि विविध कारणले आजभोलि नपाउने हुँदै गएको र तिनमा तेस विषयको शास्त्रीय चेतना हराउँदै जान लागेको देखि सो जगाउन स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब अनेक प्रकारले यथाशक्ति प्रयत्न गरिरहेको छ।** एसै प्रसङ्गमा श्रौत-स्मार्त-धर्मकर्मका लागि कालगणनाको सिद्धान्त बताउने **"पञ्चसंवत्सरमयम्"** इत्यादि परमप्रामाणिक मूल वेदाङ्ग-ज्योतिषग्रन्थका र अरु वेद-वेदाङ्ग-ग्रन्थका सिद्धान्तमा ध्यान आकृष्ट गर्दै पञ्चाङ्गनिर्णायक

समितिले स्वीकृत गर्ने पञ्चाङ्गहरुमा वैदिक कालगणनापद्धतिअन्सारका विषय पनि समाविष्ट गर्न अनुरोध गर्दा पनि तेसो गर्ने व्यवस्था नगरि वैदिक मूल कालगणनापद्धतिलाइ प्रकाशमा ल्याउनमा विघ्नबाधा उपस्थापित गर्ने पञ्चाङ्ग-निर्णायक-समितिको प्रवृत्ति देखिएको छ। संस्कृत-विश्वविद्यालयले पञ्चाङ्ग प्रकाशित गर्दा पनि मूल वैदिक कालणनापद्धतिमा ध्यान नदिय्येको देखिञ्छ। अनि भारततिर पनि प्रान्तैपिच्छे सौरपक्षीय, आर्यपक्षीय, ब्रह्मगुप्तपक्षीय, दृक्सिद्ध, आर्तव इत्यादि नानाप्रकारका पञ्चाङ्गहरु बन्ने र प्रकाशित हुने गर्दा र **राष्ट्रिय पञ्चाङ्ग** भनि पञ्चाङ्ग प्रकाशित गर्दा पनि वास्तविक वैदिक तिथिपत्र बनाउन र प्रकाशित-प्रचारित गर्न ध्यान गएको पाइँदैन। वेद-वेदाङ्गप्रतिपादित धर्मकर्मव्यवस्थालाइ यथाशक्ति प्रकाशनमा र प्रचारणमा ल्याउनु स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बले आँफ्नो प्रमुख कर्तव्य मानेको छ। वेदवेदाङ्गानुयायि सज्जनहरुबाट एस्तो तिथिपत्र (पञ्चाङ्ग) प्रकाशित गर्न स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बलाइ वारंवार अनुरोध गरिँदै आएको पनि हो। ठुलो श्रौतकर्म भनेर कर्म गरेको भनिँदा पनि वेदवेदाङ्गोक्त कर्मविशेषकाल नबुजि नसमाति कर्म गरिएको देखिँदै आएको छ। एस परिस्थितिमा यो **वैदिक-तिथिपत्र** प्रकाशित गर्ने काम भएको हो। एसबाट वेदवेदाङ्गानुयायि सज्जनहरुलाइ **श्रौत-स्मार्त धर्मकर्म**का लागि श्रुति-स्मृतिप्रोक्त धर्मकृत्यविशेषकाल ठम्याउन र समात्न तथा श्रौत-स्मार्त धर्मकर्मका सङ्कल्पमा श्रुति-स्मृतिसम्मत रूपमा कालको उल्लेख गर्न सहयोग पुग्ने छ भन्ने आशा राखिएको छ। एस प्रकारका काममा वेदवेदाङ्गानुयायि सज्जनहरुको अरु सहायता प्राप्त हुँदै जानेछ भन्ने पनि आशा गरिएको छ।

केवल पाश्चात्त्य अनुसन्धाता जर्बिस, कोलब्रुक, म्याक्समुलर, याकोबि, व़ेबेर, थिबो इत्यादिले मात्र हैन; आर्यावर्तमा शककुषाणादि विदेशि-विधर्मिहरुका आक्रमणादिले मौलिक वैदिक आर्षशिक्षापद्धतिमा पर्न आएका बाधाव्यवधानले गर्दा भारतीय अनुसन्धाता कृष्णशास्त्रि गोडबोले, जनार्दन बालाजी मोडक, शङ्करबालकृष्ण दीक्षित, लाला छोटेलाल (बार्हस्पत्य), सुधाकर द्विवेदि, बालगङ्गाधर तिलक, वेङ्कटेश बापूजी केतकर, गोविन्दगणक, योगेशचन्द्र राय, शामशास्त्रि, गोरखप्रसाद, सत्यप्रकाश, इन्द्रनारायण द्विवेदि, भारत-सर्कारका पञ्चाङ्ग-सुधारसमितिका अध्यक्ष ठुला खगोलवैज्ञानिक मानिएका मेघनाद साहा, सदस्यसचिव निर्मलचन्द्र लाहिडि, अन्य सदस्यहरु इत्यादिले पनि राम्ररि बुज्न र व्याख्या गर्न नसकिराखेको वेदाङ्ग-ज्योतिषको मूल कालगणनापद्धतिलाइ वेद-वेदाङ्ग-स्मृति-पुराणेतिहासको गम्भीर अध्ययनका आधारमा वेदाङ्गज्योतिषको कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानद्वारा स्पष्ट पारि आँफ्ना मौलिक वैदिक कालगणनापद्धतिका विषयमा २ हजार वर्ष जति अगिदेखि आर्यजनमा फैलिँदै आएका अज्ञानान्धकारलाइ चिर्दै आर्यतपोभूमि एस हिमवत्खण्डस्थ-नेपालबाट यो वैदिक तिथिपत्र प्रकाशित गर्ने काम थालिएको छ। एसको वेदवादि शास्त्रवादि वैदिकसनातनवर्णाश्रमधर्मवादि न्यायवादि सत्यवादि ब्राह्मणहरुले विवेचन-अनुशीलन गर्नुहुनेछ र एसमा आवश्यक परिष्कार गर्दै जान सहयोग गर्नुहुनेछ भन्ने आकाङ्क्षा राखिएको छ। यो भर्खरै थालिएको एस्तो प्रयास भएकाले एसमा त्रुटि रहन गएका हुन सक्छन्। तिनको परिमार्जन आगामि वर्षहरुमा हुँदै जाने छ।

सम्बद्ध सबैका कुरा सुनेर सैद्धान्तिक रूपमा मैले आँफुले निर्णय गरि निर्धारण गरेको मार्ग अँगालेर एस पात्रालाइ एस रूपमा निष्पन्न गर्ने काम मुख्य रूपमा प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन-बाट भएको हो। एस पात्राको एस आकारमा मुद्रण गर्न स्वरूप निष्पन्न गर्ने काम सुमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायनबाट भएको हो। आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायनबाट एस काममा धेरै सहयोग भएको छ। सम्मोदवर्धन कौण्डिन्न्यायनबाट र अतिसम्मोदवर्धन कौण्डिन्न्यायनबाट पनि केइ सहयोग भएको छ। सुसङ्गमकयन्त्रद्वारा पात्रोको गणना गर्नमा रघुनाथ उपाध्याय ढुङ्गेलबाट सहयोग भएको छ। प्रचारणसंयोजक कृष्णराज व़ाग्ले, कृष्णप्रसाद दुव़ाडि आत्रेय, केशव दाहाल इत्यादि विविध क्षेत्रका व्यक्तिहरुबाट प्रचारणमा विशेष अग्रसरता लिइएको छ। एस पात्राका प्रकाशनमा र प्रचारणमा विशेष सहयोग गर्ने सज्जनहरुका नामहरु गातामा पछाडिपट्टि मुद्रित गरिएका छन्। प्रकाशनमा सहयोग गर्ने अरु सज्जनहरुका नाम पनि तिँहिँ मुद्रित छन्। उक्त सबैलाइ यथोचित आशीर्वाद, धन्यवाद र साधुवाद छ।

—शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन

कलिसंवत् ५०८१, ऊर्जशुक्लपञ्चमी (२०७३।५।२१)

(फ) वेदमा प्राप्त कालगणनाविषयक महत्त्वपूर्ण कतिपय उल्लेखहरु

(१) वेदमा अहोरात्रात्मक तिथि

अहोरात्रेभ्यः स्वाहाऽर्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहऽ ऋतुभ्यः स्वाहाऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा।—माध्यन्दिनीय-वाजसनेयिशुक्लयजुर्वेदमन्त्रार्षसंहिता (२२।२८),
द्र.– तैत्तिरीयकृष्णयजुर्वेदसंहिता (७।१।१५)।

उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्ताम् मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्तां संवत्सरस्ते कल्पताम्।—मा.वा.शुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिता (२७।४५)।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासाऽऋतवः संवत्सरे प्रतिष्ठिताः।—माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेद-शतपथब्राह्मण (१२।८।३।१४)।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरा विधृताः।—मा.वा.शु.य.वे.श.ब्रा. (१४।६।८।९)।

(२) वेदमा मधु-माधवादि १३ चान्द्र मास

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोर्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहांहसस्पतये स्वाहा।
—मा.वा.शुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिता २२।३१।

(३) वेदमा चान्द्र ऋतु

मधुश् च माधवश् च वासन्तिकावृतू।... –मा.वा.शु.य.वे. १३।२५,१४।६,१५,१६,२७,१५।५७।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासाऽऋतवः संवत्सरे प्रतिष्ठिताः।—मा.वा.शु.य.वे.शत.ब्रा. १२।८।३।१४।

अहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरा विधृताः।—मा.वा.शु.य.वे.शत.ब्रा. १४।६।८।९।

अर्धमासा मासा ऋतवः संवत्सर ओषधीः पचन्ति।—तैत्तिरीयकृष्णयजुर्वेदसंहिता ५।७।२।५।

अर्धमासानेव मासानृतून् संवत्सरं प्रीणाति।—तै.सं. ५।७।२।६।

अहोरात्रे निमेषोऽर्धमासाः पर्वाणि मासाः सन्धानान्यृतवोऽङ्गानि संवत्सर आत्मा।
—तै.सं. ७।५।२५।१।

स त्वाऽह्ने परिददात्वहस् त्वा रात्रौ परिददातु रात्रिस् त्वाऽहोरात्राभ्यां परिददात्वहोरात्रौ त्वाऽर्धमासेभ्यः परिदत्तामर्धमासास् त्वा मासेभ्यः परिददतु मासास् त्वर्तुभ्यः परिददत्वृतवस् त्वा संवत्सराय परिददतु।—ताण्डिकौथुमराणायनीयसामवेदमन्त्रब्राह्मण १।५।१५।

(४) वेदमा सौरचान्द्र वर्ष

द्वादश वा वै त्रयोदश वा संवत्सरस्य मासाः।—मा.वा.शु.य.वे.शतपथब्राह्मण २।२।३।२७।

संवत्सरो वाव विवर्तोऽष्टाचत्वारिंशस् तस्य षड्विंशतिरर्धमासास् त्रयोदश मासाः सप्तर्तवो द्वे अहोरात्रे।—मा.वा.शु.य.वे.शतपथब्राह्मण ८।४।१।२५।

(५) वेदमा पञ्चवर्षात्मक युग

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि।
— मा.वा.शुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिता २७।४५, मा.वा.शु.य.वे.शतपथब्राह्मण ८।१।४।८।

संवत्सराय पर्य्यायिणीम् परिवत्सरायाऽविजातामिदावत्सरायाऽतित्वरीमिद्वत्सरायाऽतिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जरां संवत्सराय पलिक्नीम्।— मा.वा.शुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिता ३०।१५।

(६) वेदमा नक्षत्र र नक्षत्रदेवताका नाम

अग्निर् देवता कृत्तिका नक्षत्रं प्रजापतिर् देवता रोहिणी नक्षत्रं मरुतो देवतेन्वका नक्षत्रं रुद्रो देवता बाहुर् नक्षत्रमदितिर् देवता पुनर्वसुर् नक्षत्रं बृहस्पतिर् देवता तिष्यो नक्षत्रं सर्पा देवताऽऽश्लेषा नक्षत्रं पितरो देवता मघा नक्षत्रं भगो देवता फल्गुनीर् नक्षत्रमर्यमा देवतोत्तराः फल्गुनीर् नक्षत्रं सविता देवता हस्तौ नक्षत्रं त्वष्टा देवता चित्रा नक्षत्रं वायुर् देवता निष्ट्या नक्षत्रमिन्द्राग्नी देवता विशाखं नक्षत्रं मित्रो देवताऽनूराधा नक्षत्रमिन्द्रो देवता ज्येष्ठा नक्षत्रं निरृतिर् देवता मूलं नक्षत्रमापो देवताऽषाढा नक्षत्रं विश्वेदेवा देवतोत्तरा अषाढा नक्षत्रं विष्णुर् देवताऽश्वत्थो नक्षत्रं वसवो देवता श्रविष्ठा नक्षत्रं वरुणो देवता शतभिषङ् नक्षत्रमज एकपाद् देवता प्रोष्ठपदा नक्षत्रमहिर्बुध्न्यो देवतोत्तरे प्रोष्ठपदा नक्षत्रं पूषा देवता रेवती नक्षत्रमश्विनौ देवताऽश्वयुजौ नक्षत्रं यमो देवताऽप-भरणीर् नक्षत्रमग्ने रुचस् स्थ प्रजापतेस् सोमस्य धातुर् भूयासं प्रजनिषीय तेन ब्रह्मणा तेन छन्दसा तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवास् सीदत।—काठककृष्णयजुर्वेदसंहिता (३९।१३ [३३।९०])।

(ञ)यजुर्वेदिनां परम्परयाऽऽगतं लगधमुनिप्रोक्तं परिष्कृतं
वेदाङ्गज्योतिषम्

[प्रणाम तथा प्रतिज्ञा]

पञ्चसंवत्सरमयं युगाध्यक्षं प्रजापतिम्।
दिनर्त्वयनमासाङ्गं प्रणम्य शिरसा शुचिः ॥१॥

ज्योतिषामयनं पुण्यं प्रवक्ष्याम्यनुपूर्वशः।
सम्मतं ब्राह्मणेन्द्राणां यज्ञकालार्थसिद्धये ॥२॥

[ज्योतिषज्ञानको आवश्यकता]

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश् च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥३॥

[ज्योतिषप्रशंसा]

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम् ॥४।

[वेदाङ्गज्योतिषको प्रतिपाद्य विषय]

माघशुक्लप्रपन्नस्य पौषकृष्णसमापिनः।
युगस्य पञ्चवर्षस्य कालज्ञानं प्रचक्षते ॥५॥

[आदियुगको निरूपण]

स्वराक्रमेते सोमार्कौ यदा साकं सवासवौ।
स्यात् तदाऽऽदियुगं माघस् तपश्शुक्लोऽयनं ह्युदक् ॥६॥

[उदगयन-दक्षिणायनकालको निर्देश]

प्रपद्येते श्रविष्ठादौ सूर्याचन्द्रमसावुदक्।
सार्पार्धे दक्षिणाऽर्कस् तु माघ-श्रावणयोः सदा ॥७॥

[दिनमानको वृद्धि र रात्रिमानको ह्रासका आधारमा अयनको निरूपण]

घर्मवृद्धिरपां प्रस्थः क्षपाह्रास उदग्गतौ।
दक्षिणेतौ विपर्यासः षण्मुहूर्त्ययनेन तु ॥८॥

[आदियुगका सौर अयनका आरम्भका तिथि]

प्रथमं १ सप्तमं ७ चाहुरयनाद्यं त्रयोदशम् १३।
चतुर्थं ४ दशमं १० चैव द्विर् युग्मं बहुले त्वृतौ ॥९॥

[आदियुगका सौर अयनका आरम्भमा रहने चान्द्र नक्षत्र]

वसुस् त्वष्टा भवोऽजश् च मित्रः सर्पोऽश्विनौ जलम्।
धाता कश् चाऽयनाद्याः स्युरर्धपञ्चमभस् त्वृतुः ॥१०॥

[आदियुगका सौर ऋतु का आरम्भका तिथि र पञ्चपर्वा ऋतु]

एकान्तरेऽह्नि मासे च पूर्वान् कृत्वाऽऽदिरुत्तरः।
अर्धयोः पञ्चपर्वाणावृतू पञ्चदशाऽष्टमौ ॥११॥

[पक्षद्युहानव्यवस्था र पादपरिभाषादि]

द्यु हेयं पर्व चेत् पादे पादस् त्रिंशत् तु सैकिका।
भागात्मनाऽपमृज्यांऽशान् निर्दिशेदधिको यदि ॥१२॥

[पर्वराशिज्ञानको उपाय]

निरेकं द्वादशाभ्यस्तं द्विगुणं चाऽऽप्तसंयुतम्।
षष्ट्याषष्ट्या युतं द्वाभ्यां पर्वणां राशिरुच्यते ॥१३॥

[मतभेदसहित पर्वसम्मित काल]

स्युः पादोर्ध्वं त्रिपद्यायास् त्रिर् द्व्येकेऽह्नः कृते स्थितिम्।
साम्येनेन्दोः स्तृणोऽन्ये तु पञ्चकाः पर्वसम्मिताः ॥१४॥

[पर्वान्तमा सूर्य र चन्द्रबाट अथवा चन्द्रबाट भुक्त भांश जान्ने उपाय]

भाऽंशाः स्युरष्टकाः कार्याः पक्षद्वादशकोद्गताः।
एकादशगुणश् चोनः शुक्लेऽर्धं चैन्दवा यदि ॥१५॥

[पर्वभांशको स्थितिमा अन्य विशेष]

नवकैरुद्गतोऽंशः स्यादूनः सप्तगुणो भवेत्।
आवापस् त्वयुजेऽर्धं स्यात् पौलस्त्येऽस्तङ्गतेऽपरम् ॥१६॥

[भांशमूलक पर्वनक्षत्रज्ञानोपाय इत्यादि]

जावाद्यंशैः समं विद्यात् पूर्वार्धे पर्वसूत्तराः।
भाऽदानं स्याच् चतुर्दश्यां द्विभागेभ्योऽधिको यदि ॥१७॥

[अनेक प्रकारले उपयोग हुने जावादिनक्षत्रव्यवस्था]

१जौ २द्रा ३गः ४खे ५श्वे ६ही ७रो ८षाश्
९चिन् १०मू ११षक् १२ण्यः १३सू १४मा १५धा १६णः।

१७रे १८मृ(म्रे) १९घाः २०स्वा २१पो २२जः २३कृ २४ष्यो
२५ह २६ज्ये २७ष्ठा इत्यृक्षा लिङ्गैः ॥१८॥

[पर्वभादानकलाको ज्ञान गर्ने उपाय]

कार्या भाऽंशाऽष्टकस्थाने कला एकान्नविंशतिः ।
ऊनस्थाने तु सप्ततिमुद्वपेद् युक्तिसम्भवे ॥१९॥

[तिथिनक्षत्रको आदेशको व्यवस्था]

तिथिमेकादशाभ्यस्तां पर्वभांशसमन्विताम् ।
विभज्य भसमूहेन तिथिनक्षत्रमादिशेत् ॥२०॥

[तिथिभादानिका कला]

याः पर्वभादानकलास् तासु सप्तगुणा तिथिः ।
युक्ता ताश् च विजानीयात् तिथिभादानिकाः कलाः ॥२१॥

[तिथिसमाप्तिको काल]

अतीतपर्वभागेभ्यः शोधयेद् द्विगुणां तिथिम् ।
तेषु मण्डलभागेषु तिथिनिष्ठां गतो रविः ॥२२॥

[विषुवान् तिथि]

विषुवन्तं द्विरभ्यस्तं रूपोनं षड्गुणीकृतम् ।
पक्षा यदर्धं पक्षाणां तिथिः स विषुवान् स्मृतः ॥२३॥

[नाडिकाप्रमाण]

पलानि पञ्चाशदपां धृतानि तदाढकं द्रोणमतः प्रमेयम्
त्रिभिर् विहीनं कुडवैस्तु कार्यं तन् नाडिकायास्तु भवेत् प्रमाणम् ॥

[इष्टतिथिमा सूर्यनक्षत्रको ज्ञानको उपाय]

एकादशभिरभ्यस्य पर्वाणि नवभिस् तिथिम् ।
युगलब्धं सपर्व स्याद् वर्तमानाऽर्कभं क्रमात् ॥२५॥

[सूर्य नक्षत्रविशेषमा प्रवेश गर्ने काल जान्ने उपाय]

सूर्यर्क्षभागान् नवभिर् विभज्य शेषं द्विरभ्यस्य दिनोपभुक्तिः ।
तिथेर् युता भुक्तिदिनेषु कालोऽयोगे दिनैकादशकेन तद् भम् ॥२६॥

[रविदिवसभोग्य नक्षत्रांशमान इत्यादि]

त्रिंशी भशेषो दिवसांशभागश् चतुर्दशस्याऽप्युपनीय भिन्नम् ।
भार्धाऽधिके चापि गते परोऽंशो द्वावुक्तमेकं नवकै रवेर् द्यु ॥२७॥

[युगको र युगका अवयव दिनादिको सङ्ख्या]

त्रिशत्यह्नां सषट्षष्टिरब्दः ३६६ षट् ६ चर्तवोऽयने ।
मासा द्वादश १२ सौराः स्युरेतत् पञ्चगुणं युगम् ॥२८॥

[एक युगमा श्रविष्ठादिका उदयको सङ्ख्या]

उदया वासवस्य स्युर् दिनराशिः सपञ्चकः ।
ऋषेर् द्विषष्ट्या हीनः स्याद् विंशत्या सैकया स्तृणाम् ॥२९॥

[युगमा सूर्यनक्षत्र, चान्द्र अयन र पर्वको सङ्ख्या तथा कलाकाष्ठा]

पञ्चत्रिंशं शतं पौष्णमेकोनमयनान्यृषेः ।
पर्वणां स्याच् चतुष्पादी काष्ठानां चैव ताः कलाः ॥३०॥

[युगमा सावनमास, चान्द्रमास र नाक्षत्रमासको सङ्ख्या तथा
सावनादिमासका दिनको सङ्ख्या]

सावनेन्दुस्तृमासानां षष्टिः सैकद्विसप्तिका ६१, ६२, ६७ ।
द्युत्रिंशत् सावनः ३० साऽर्धः सौरः $३०\frac{१}{२}$ स्तृणां स पर्ययः $२७\frac{२१}{६७}$ ॥३१॥

[नक्षत्रका देवता]

अग्निः प्रजापतिः सोमो रुद्रोऽदितिर् बृहस्पतिः ।
सर्पाश् च पितरश् चैव भगश् चैवाऽर्यमाऽपि च ॥३२॥

सविता त्वष्टाऽथ वायुश् चेन्द्राऽग्नी मित्र एव च ।
इन्द्रो निरृतिरापो वै विश्वेदेवास् तथैव च ॥३३॥

विष्णुर् वसवो वरुणोऽज एकपात् तथैव च ।
अहिर्बुध्न्यस् तथा पूषा अश्विनौ यम एव च ॥३४॥

[यजमानको यज्ञकर्मार्थ नक्षत्रज नाम
नक्षत्रदेवताबाट राख्ने विधि]

नक्षत्रदेवता ह्येता एताभिर् यज्ञकर्मणि ।
यजमानस्य शास्त्रज्ञैर् नाम नक्षत्रजं स्मृतम् ॥३५॥

[नक्षत्रविशेषको उग्र र क्रूर सञ्ज्ञा]

उग्राण्यार्द्रा च चित्रा च विशाखा श्रवणोऽश्वयुक् ।
क्रूराणि तु मघाः स्वातिर् ज्येष्ठा मूलं यमस्य यत् ॥३६॥

[वैदिक अधिकमासको व्यवस्था]

द्व्यूनं द्विषष्टिभागेन दिनं सौराच् च पार्वणम् ।
यत्कृतावुपजायेते मध्येऽन्ते चाऽधिमासकौ ॥३७॥

[नाडिकाको र मुहूर्तको परिभाषा, दिनगत मुहूर्तसङ्ख्या
र कलासङ्ख्या]

कला दश सविंशाः $१०\frac{१}{२०}$ स्यान् नाडिका, ते २ मुहूर्तकः ।
द्यु त्रिंशत् ३०, तत् कलानां तु षट्शती त्र्यधिका ६०३ भवेत् ॥

[चन्द्रको र सूर्यको नक्षत्रयोगको काल तथा काष्ठाको परिभाषा]

ससप्तकं ६१० भयुक् सोमः सूर्यो द्यूनि त्रयोदश।
नवमानि च पञ्चाऽह्नः १३⁵⁄₉ काष्ठा पञ्चाऽक्षरा ५ भवेत्॥३९॥

[दिनमान जान्ने उपाय]

यदुत्तरस्याऽयनतो गतं स्याच् छेषं तथा दक्षिणतोऽयनस्य।
तदेकषष्ट्या द्विगुणं विभक्तं सद्वादशं स्याद् दिवसप्रमाणम्॥४०॥

[ऋतुशेष जान्ने उपाय]

यदर्धं दिनभागानां सदा पर्वणिपर्वणि।
ऋतुशेषं तु तद् विद्यात् संख्याय सह पर्वणाम्॥४१॥

[प्रस्तुत ग्रन्थको कालज्ञानोपायसमुद्देशपरत्व र अन्यकल्पनाधारत्व]

इत्युपायसमुद्देशो भूयोऽप्येनं प्रकल्पयेत्।
ज्ञेयराशिं गताभ्यस्तं विभजेज् ज्ञातराशिना॥४२॥

[वेदाङ्गज्योतिषको प्रतिपाद्य विषय र प्रवक्ताको निर्देशबाट ग्रन्थको उपसंहार]

इत्येतन् मासवर्षाणां मुहूर्तोदयपर्वणाम्।
दिनर्त्वयनमासानां व्याख्यानं लगधोऽब्रवीत्॥४३॥

[ग्रन्थार्थज्ञानको फल]

सोमसूर्यस्तृचरितं विद्वान् वेदविदश्नुते।
सोमसूर्यस्तृचरितं लोकं लोके च सन्ततिम्,
लोकं लोके च सन्ततिमिति॥४४॥

॥इति यजुर्वेदिनां परम्परयाऽऽगतं परिष्कृतं वेदाङ्गज्योतिषम् समाप्तम्॥

(ट) पुराण-इतिहासादिमा वैदिक कालगणनापद्धति

श्रवणान्तं धनिष्ठादि युगं स्यात् पञ्चवार्षिकम्।
भानोर् गतिविशेषेण चक्रवत् परिवर्तते॥

—लिङ्गपुराण १।६१।५५-५६।

सर्वग्रहाणामेतेषामादिरादित्य उच्यते।
ताराग्रहाणां शुक्रस् तु केतूनां चैव धूमवान्॥
ध्रुवः कीलो ग्रहाणां तु विभक्तानां चतुर्दिशम्।
नक्षत्राणां श्रविष्ठा स्यादयनानां तथोत्तरम्॥
वर्षाणामपि पञ्चानामाद्यः संवत्सरः स्मृतः।
ऋतूनां शिशिरश् चाऽपि मासानां माघ एव च॥
पक्षाणां शुक्लपक्षश् च तिथीनां प्रतिपत् तथा।
अहोरात्रविभागानामहश् चाऽपि प्रकीर्तितम्॥
मुहूर्तानां तथैवाऽऽदिर् मुहूर्तो रुद्रदैवतः॥

—ब्रह्माण्डपुराण पूर्व. २४।१३९–१४३, लिङ्ग-पुराण १।६१।५०–५४, वायुपुराण १।५३।१११–११५।

अहः पूर्वं ततो रात्रिर् मासाः शुक्लादयस् तथा।
श्रविष्ठादीनि ऋक्षाणि ऋतवः शिशिरादयः॥

—महाभारत शोधसंस्करण आश्वमेधिकपर्व ४४।२।

अहान्यस्तमयान्तानि उदयान्ता च शर्वरी।

—महाभारत, आश्वमेधिकपर्व ४४।१८।

कालमानमत ऊर्ध्वम्। त्रुटो लवो निमेषः काष्ठा कला नाडिका मुहूर्तः पूर्वापरभागौ दिवसो रात्रिः पक्षो मास ऋतुरयनं संवत्सरो युगमिति कालाः। शिशिराद्युत्तरायणम्। वर्षादि दक्षिणायनम्। द्व्ययनः संवत्सरः। पञ्चसंवत्सरो युगम्।

—कौटलीय अर्थशास्त्र २।२०।

तस्य संवत्सरात्मनो भगवानादित्यो गतिविशेषेणाऽक्षिनिमेष-काष्ठा-कला–मुहूर्ता-ऽहोरात्र–पक्ष–मासर्त्वयन-संवत्सर-युग-प्रविभागं करोति। तत्र लघ्वक्षरोच्चारणमात्रोऽक्षिनिमेषः। पञ्चदशाक्षिनिमेषाः काष्ठा। त्रिंशत् काष्ठाः कला। विंशतिकलो मुहूर्तः कलादशभागश् च। त्रिंशन्मुहूर्तमहोरात्रम्। पञ्चदशाऽहोरात्राणि पक्षः। स च द्विविधः शुक्लः कृष्णश् च। तौ मासः। तत्र माघादयो द्वादश मासा द्विमासिकमृतुं कृत्वा षड्तवो भवन्ति। ते शिशिर-वसन्त-ग्रीष्म-वर्षा-शरद्-धेमन्ताः। तेषां तपस्-तपस्यौ शिशिरः। मधु-माधवौ वसन्तः। शुचि-शुक्रौ ग्रीष्मः। नभोनभस्यौ वर्षाः। इषोर्जौ शरत्। सहस्-सहस्यौ हेमन्तः इति। त एते शीतोष्णवर्षलक्षणाश् *चन्द्रादित्ययोः* काल-विभागकरत्वादयने द्वे भवतो दक्षिणमुत्तरं च। तयोर् दक्षिणं वर्षा-शरद्-धेमन्ताः। तेषु भगवानाप्यायते सोमः, अम्ल-लवण-मधुराश् च रसा बलवन्तो भवन्ति, उत्तरोत्तरं च सर्वप्राणिनां बलमभिवर्धते। उत्तरं च शिशिर-वसन्त-ग्रीष्माः। तेषु भगवानाप्यायतेऽर्कः, तिक्त-कषायकटुकाश् च रसा बलवन्तो भवन्ति, उत्तरोत्तरं च सर्वप्राणिनां बलमपहीयते। ... अथ खल्वयने द्वे युगपत् संवत्सरो भवति। ते तु पञ्च युगमिति संज्ञां लभन्ते। स एष निमेषादि-युगपर्यन्तः कालश् चक्रवत् परिवर्तमानः कालचक्रमुच्यत इत्येके।

—सुश्रुतसंहिता, सूत्रस्थान ६।३-९।

वैदिकतिथिपत्रम् (वैदिक पात्रो)

कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५–९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, शिशिर ऋतुः, तपाः [माघः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७३, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३८, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **वृश्चिकमासः** (मङ्सिर), **मार्गशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, थिंलाथ्वः=मार्गशुक्लपक्षः) [नोवेम्बर-डिसेम्बर, २०१६ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा (बजेसम्म)	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा (बजेसम्म)	लौ.न.	घण्टा (बजेसम्म)	योगाः	घण्टा (बजेसम्म)	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा. (घ.मि.)	सू.उ. (बजे)	सू.अ. (बजे)	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ मङ्सिर १५ – २९
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	२०:२१	**ज्ये**	**२५।१३**	**२७:०७**	ज्ये.	२६:५०	धृ.	२९:५०	ध्वाङ्क्षः	२६:५०	१०::३२	६:३६	१७:०८	३४५	**बु**	**१५**	**30**	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, *वैदिकनववर्षारम्भः* परिवत्सरारम्भः,**☾
द्वितीया	बाल.	२	२२:२३	**मू**	**२५।१९**	**२७:२४**	मू.	२९:१६	शू.	३०:१३	धूम्रः	धनुः	१०:३१	६:३७	१७:०८	३४६	**बृ**	**१६**	**1**	**दिसम्बर**मासप्रारम्भः (२०१६ क्रैस्ताब्दः)
तृतीया	तैति.	३	२४:१०	**पूषा**	**२६।६**	**२७:४१**	पू.	अहोरात्र	ग.	३०:२३	वर्धमा.	धनुः	१०:३१	६:३७	१७:०८	३४७	**शु**	**१७**	**2**	☾ **चान्द्रकीलकसंवत्सर(४२)-प्रारम्भः, उदगयनारम्भः,** ☽
चतुर्थी	वाणि.	४	२५:३७	**उषा**	**२६।१३**	**२७:५८**	पू.	७:२६	वृ.	३०:१८	मातङ्गः	१३:५७	१०:३०	६:३९	१७:०९	३४८	**श**	**१८**	**3**	☽**वैदिकशिशिरर्त्वारम्भः,** तिब्बतीयानां ह्लोसारः, पौराणिकानामग्निव्रतम्
पञ्चमी	बवम्	५	२६:४०	**श्र**	**२७।०**	**२८:१६**	उ.	९:१८	ध्रु.	२९:५५	मुसल.	मकरः	१०:२९	६:३९	१७:०९	३४९	**आ**	**१९**	**4**	पौराणिकानां विवाहपञ्चमी
षष्ठी	कौल.	६	२७:१३	**ध**	**२७।७**	**२८:३३**	श्र.	१०:४४	व्या.	२९:०७	सिद्धिः	२३:१७	१०:२९	६:४०	१७:०९	३५०	**सो**	**२०**	**5**	
सप्तमी	गराजिः	७	२७:०९	**श**	**२७।१४**	**२८:५०**	ध.	११:३९	ह.	२७:५०	उत्पातः	कुम्भः	१०:२८	६:४१	१७:०९	३५१	**म**	**२१**	**6**	**चित्रायां गुरुः (बृहस्पतिः)**◈
अष्टमी	विष्टिः	८	२६:२३	**पूभ**	**२८।०**	**२९:०७**	श.	११:५७	व.	२६:०१	मानसम्	२९:४३	१०:२८	६:४१	१७:०९	३५२	**बु**	**२२**	**7**	**◈ २९।०५ (१८:१९)**
नवमी	बाल.	९	२४:५४	**उभ**	**२८।७**	**२९:२४**	पू.	११:३२	सि.	२३:३८	मुद्गरः	मीनः	१०:२७	६:४२	१७:०९	३५३	**बृ**	**२३**	**8**	
दशमी	तैति.	१०	२२:४४	**रे**	**२८।१४**	**२९:४१**	उ.	१०:२६	व्य.	२०:४१	ध्वजः	मीनः	१०:२७	६:४३	१७:०९	३५४	**शु**	**२४**	**9**	
एकादशी	वाणि.	११	१९:५८	**अश्व**	**२९।१**	**२९:५९**	रे.	८:४२ ३०:२५	व.	१७:१६	धाता	८:४२	१०:२६	६:४४	१७:१०	३५५	**श**	**२५**	**10**	पौराणिकानांमोक्षदा एकादशी☞
द्वादशी	बवम्	१२	१६:४४	**भ**	**२९।८**	**३०:१६**	भ.	२७:४४	प.	१३:२६	कालद.	मेषः	१०:२६	६:४४	१७:१०	३५६	**आ**	**२६**	**11**	☞मन्वादिः, गीताजयन्ती
त्रयोदशी	कौल.	१३	१३:११	**कृ**	**२९।१५**	**३०:३३**	कृ.	२४:५०	शि.	९:२० २९:०५	स्थिरः	९:०१	१०:२५	६:४५	१७:१०	३५७	**सो**	**२७**	**12**	
चतुर्दशी	गराजिः	१४	९:३० २९:५२	**रो**	**अहोरात्र**	**अहोरात्र**	रो.	२१:५३	सा.	२४:५०	मातङ्गः	वृषः	१०:२५	६:४६	१७:१०	३५८	**म**	**२८**	**13**	○(योमरिपुह्नि), उँधौलि
पूर्णिमा	विष्टिः	१	२६:२६	**रो**	**०।१**	**६:५०**	मृ.	१९:०६	शु.	२०:४४	अमृतम्	८:२८	१०:२५	६:४६	१७:११	३५९	**बु**	**२९**	**14**	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** पौराणिकानां धान्यपूर्णिमा, गैडुपूजा ○

वैदिक नववर्ष

दिनमान बड्न थाल्दा सौर उत्तरायण लाग्छ। तेसैको प्रायः अगाडि पर्ने शुक्ल-प्रतिपदाबाट वैदिक नववर्ष लाग्छ। उत्तरा-यण देवताको दिन र दक्षिणायन रात हो। दिन र रातले अहोरात्र भएजस्तै उत्तरायण र दक्षिणायन मिलेर एक वर्ष पूरा हुञ्छ, देवताको अहोरात्र हुञ्छ। तेसैले वेदाङ्ग-ज्योतिषमा उत्तरायणबाट वर्षको आरम्भ मानिएको छ। विक्रमसंवत्को आरम्भ पनि एसै दिन मान्न सकिञ्छ।

तपःशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः (कलियुगको प्रारम्भदेखि एस वर्ष तपःशुक्लप्रतिपदासम्म बितेका दिनहरुको सङ्ख्या) १८५५७९१, तपःशुक्लषष्ठ्यां ज्येष्ठायां सूर्यः २६।६ (२७:४२)। गृह्यसूत्रमा पाणिग्रहणविधान— **उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिङ् गृह्णीयात्**— पारस्करगृह्यसूत्र १।४।५; जैमिनीयधर्ममीमांसाशास्त्रमा दैवकर्मकालनिर्णय— **उदगयन-पूर्वपक्षा-ऽहःपुण्याहेषु दैवानि स्मृतिरूपान्यार्थदर्शनात्। अहनि च कर्मसाकल्यम्।**—जैमिनीयधर्ममीमांसासूत्र ६।८।२३-२४। **पूर्वाह्णादौ देवकार्याणि कुर्यात्।**—मण्डनमिश्रकृत-मीमांसानुक्रमणिका ६।८।६। माद्रिकास्नाने (माहेन्द्रीस्नाने) मन्त्रः— **महेन्द्रनगसम्भूते गण्डकीक्षेत्रमध्यगे। नीलाभ्रेऽघौघशमनि पापं मे हर माद्रिके॥**—वैदिकमन्त्रसङ्ग्रहपरिशिष्टे (पृ.१२८)।

१ २०७३।८।२२ प्रातः ६:०० बजेको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति

ग्रह	स्थिति	दैनिक गति	ग्रह	स्थिति	दैनिक गति
सू	७:२०:५९:४१	६१:०१	शु	९:०४:५८:०१	६९:०३
म	९:२६:२०:४८	४५:१४	श	७:२४:०६:३४	७:०५
बु	८:११:०६:४६	५७:४१	रा	४:१३:१३:०६	३:११
बृ	५:२३:२९:०५	८:५७		**९।४–१६:३६ बुध वक्री**	

९बु
७
म१०शु
सू ८ श
६बृ
११ के
५ रा
१२
२
४
१
३

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, शिशिर ऋतुः, तपाः [माघः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७३, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३८, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **वृश्चिकमास-धनुर्मासौ** (मङ्सिर-पुस), **पौषकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, थिंलागाः=मार्गकृष्णपक्षः) [डिसेम्बर २०१६ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ मङ्सिर ३० – पुस १३
प्रतिपदा	बाल.	२	२३:२४	**मृ**	**०।८**	**७:०७**	आ.	१६:३९	शु.	१६:५५	काणः	मिथुनम्	१०:२४	६:४७	१७:११	३६०	**बृ**	३०	15	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः, निरूढपशुबन्धः,** पौराणिकानामग्निव्रतम् ◈
द्वितीया	तैति.	३	२०:५७	**आ**	**०।१५**	**७:२४**	पुन	१४:४३	ब्र.	१३:३१	लुम्बः	९:०९	१०:२४	६:४७	१७:१२	३६१	**शु**	१	16	**धनुर्मासप्रारम्भः (पुस) २०७३** ◈ धनुषि सूर्यः ५६।२७ (२९:२४)
तृतीया	वाणि.	४	१९:१२	**पुन**	**१।२**	**७:४१**	पु.	१३:२७	ऐ.	१०:३९	मित्रम्	कर्कटः	१०:२४	६:४८	१७:१२	३६२	**श**	२	17	
चतुर्थी	बवम्	५	१८:१७	**पु**	**१।९**	**७:५९**	अ.	१२:५८	वै.	८:२५	वज्रम्	१२:५८	१०:२४	६:४९	१७:१२	३६३	**आ**	३	18	
पञ्चमी	कौल.	६	१८:१४	**अ**	**१।१६**	**८:१६**	म.	१३:१९	वि.	६:५२ ३०:१७	ध्वाङ्क्षः	सिंहः	१०:२४	६:४९	१७:१३	३६४	**सो**	४	19	
षष्ठी	गराजिः	७	१९:०२	**म**	**२।३**	**८:३३**	पू.	१४:३०	आ.	२९:४२	धूम्रः	२०:५६	१०:२४	६:५०	१७:१३	३६५	**म**	५	20	
सप्तमी	विष्टिः	८	२०:३५	**पूफ**	**२।१०**	**८:५०**	उ.	१६:२६	सौ.	२९:५	वर्धमा.	कन्या	१०:२४	६:५०	१७:१४	१	**बु**	६	21	**दृक्सिद्ध-वैदिक-सौरोदगयनारम्भः (वास्तविक सौर उत्तरायणको** ☼
अष्टमी	बाल.	९	२२:४३	**उफ**	**२।१७**	**९:०७**	ह.	१८:५६	शो.	३०:३४	राक्षसः	कन्या	१०:२४	६:५१	१७:१४	२	**बृ**	७	22	**स्मार्तानां वैदिकानाम् एकाष्टका**
नवमी	तैति.	१०	२५:१२	**हस्तः**	**३।४**	**९:२४**	चि.	२१:४९	अ.	अहोरात्र	मुसल.	८:२१	१०:२४	६:५१	१७:१५	३	**शु**	८	23	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अन्वष्टका**
दशमी	वाणि.	११	२७:५०	**चित्रा**	**३।११**	**९:४२**	स्वा.	२४:५१	अ.	७:२४	सिद्धिः	तुला	१०:२४	६:५१	१७:१५	४	**श**	९	24	**☼आरम्भ) उत्तरायणसङ्क्रान्तिः, सायनमकरे सूर्यः २३।२८ (१६:११)**
एकादशी	बवम्	१२	३०:२५	**स्वा**	**३।१८**	**९:५९**	वि.	२७:५२	सु.	८:१८	उत्पातः	२१:०८	१०:२४	६:५२	१७:१६	५	**आ**	१०	25	पौराणिकानां सफला एकादशी
द्वादशी	कौल.	१३	अहोरात्र	**वि**	**४।४**	**१०:१६**	अ.	३०:४२	धृ.	९:०९	मानसम्	वृश्चिकः	१०:२४	६:५२	१७:१७	६	**सो**	११	26	⊙ हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम्
त्रयोदशी	गराजिः	१३	८:४८	**अनु**	**४।१२**	**१०:३३**	ज्ये.	अहोरात्र	शू.	९:५१	मुद्गरः	वृश्चिकः	१०:२४	६:५३	१७:१७	७	**म**	१२	27	● **दर्शश्राद्धम्**, मौनीअमावास्या, गोकर्णप्रदेशे विष्णुपादुकाश्राद्धम् ⊙
अमावास्या	चतुष्.	१४	१०:५४	**ज्ये**	**४।१९**	**१०:५०**	ज्ये.	९:१६	ग.	१०:१९	ध्वाङ्क्षः	९:१६	१०:२५	६:५३	१७:१८	८	**बु**	१३	28	(दिसिचह्रेपूजा), **श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां** ●

सौरचान्द्र अयन—दिनमान बड्न थाल्दा सौर उत्तरायण र घट्न थाल्दा सौर दक्षिणायन लाग्छ। धार्मिक कार्यका लागि त सौर अयन नलिएर एस वैदिकतिथिपत्रमा देखाएजस्तो सौरअयनसापेक्ष शुक्लप्रतिपदाबाट प्रारम्भ हुने चान्द्र अयन नै लिन पर्छ। सङ्कल्पमा तेसैको उल्लेख गर्न पर्छ।

तपःकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५८०६, तपःकृष्णपञ्चम्यां मूलबर्हण्यां सूर्यः **११।१८ (१६:२२)।**

अमावास्यामा विशेष— वैदिक सिद्धान्तअनुसार जुन दिन पिण्डपितृयज्ञ वा दर्शश्राद्ध हुञ्छ तेसै दिन **हलो बार्ने, ढिकि-जाँतो-ठेको बार्ने, निशि बार्ने** काम गर्नपर्ने हुनाले तेसै दिन **"हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजनपरिहारदिनम्"** भन्ने उल्लेख गरिएको हो। (**हल**=हलो, **कण्डनी**=ढिकि, **यन्त्रक**=जाँतो, **सायम्भोजन**=बेलुकाको भोजन, **परिहार**=बार्ने काम, त्याग गर्ने काम)। **अमावास्यां नैव छिन्द्याद् वृक्ष-गुल्मौषधीर् द्विजः। महादेवः स्मृतः सोमस् तस्याऽऽत्मा ह्यौषधीगणः॥**–ब्रह्माण्डपुराण १।१०।६२। **चन्द्रक्षयेऽमतिर् विप्रो यो युनक्ति वृषं क्वचित्। तं पञ्चदश वर्षाणि त्यजन्ति पितरोऽहितम्॥**–स्मृतिसन्दर्भ, पृ. ७४५। देवघट्टस्नानमन्त्रः–**यत्र विष्णुः प्राङ्मुखश् च शिवः प्रत्यङ्मुखः स्थितः। रक्षार्थं सततं तत्र क्षेत्रे हरिहराभिधे॥ सितासिते सरिच्छ्रेष्ठे देवानामपि दुर्लभे। युवयोस् सङ्गमे ह्यादिप्रयागे स्नामि सिद्धये॥**—वैदिकमन्त्रसङ्ग्रहपरिशिष्टे (पृ. ११९)।

२ २०७३।९।७ प्रातः ६:००

सू	८:०६:२०:०२	६१:०६	शु	९:२२:१२:३८	६६:३३
म	१०:०७:४४:३२	४५:१९	श	७:२५:५७:३०	६:५७
बु	८:२०:१६:०९	-७०:४४	रा	४:१२:३०:२४	३:११
बृ	५:२५:४३:५२	७:१२			

९।७–२२:१४ बुध प. अस्त

९।१२–८:३२ शनिको उदय

९।१९–२३:१० बुध पू. उदय

१० शु, ८ श, ११ मके, सू ९ बु, ७, १२, ६ बृ, १, ३, ५ रा, २, ४

 वैदिकतिथिपत्रे **कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, शिशिरः ऋतुः, तपस्यः [फाल्गुनः] मासः, शुक्लः पक्षः**

विक्रमसंवत् २०७३, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३८, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **धनुर्मासः** (पुस), **पौषशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, पोहेलाथ्वः=पौषशुक्लपक्षः) [डिसेम्बर, २०१६-जनबरि, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ पुस १४ – २८
प्रतिपदा	कौस्तु.	३०	१२:३९	मू	५।५	११:०७	मू.	११:३०	वृ.	१०:३२	धूम्रः	धनुः	१०:२५	६:५४	१७:१८	९	बृ	१४	29	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, श्रौतिनां वैदिकानां संवत्सरेप्सूनां** ☾
द्वितीया	बाल.	१	१४:०२	पूषा	५।१३	११:२५	पू.	१३:२३	ध्रु.	१०:२८	वर्धमा.	१९:४९	१०:२५	६:५४	१७:१९	१०	शु	१५	30	तमुह्लोसारः (गुरुङ समुदायको नववर्ष)
तृतीया	तैति.	२	१५:०३	उषा	५।२०	११:४२	उ.	१४:५६	व्या.	१०:०८	राक्षसः	मकरः	१०:२६	६:५४	१७:२०	११	श	१६	31	☾ **शुनासीरीयपर्व,** (तोल-ह्लोसारः) पौराणिकानामग्निव्रतम्
चतुर्थी	वाणि.	३	१५:४३	श्र	६।७	११:५९	श्र.	१६:०९	ह.	९:३२	गदः	२८:३८	१०:२६	६:५४	१७:२०	१२	आ	१७	1	**जनबरि**मासप्रारम्भः (**२०१७** क्रैस्ताब्दः)
पञ्चमी	बवम्	४	१६:०१	ध	६।१४	१२:१६	ध.	१७:००	व.	८:४०	शुभः	कुम्भः	१०:२६	६:५५	१७:२१	१३	सो	१८	2	
षष्ठी	कौल.	५	१५:५५	श	७।१	१२:३३	श.	१७:२८	सि.	७:२९ २९:५५	मृत्युः	कुम्भः	१०:२७	६:५५	१७:२२	१४	म	१९	3	
सप्तमी	गराजिः	६	१५:२२	पूभ	७।८	१२:५०	पू.	१७:२९	व.	२८:०५	पद्मम्	११:३२	१०:२७	६:५५	१७:२३	१५	बु	२०	4	
अष्टमी	विष्टिः	७	१४:१९	उभ	७।१५	१३:०७	उ.	१७:०१	प.	२५:४८	छत्रम्	मीनः	१०:२८	६:५५	१७:२३	१६	बृ	२१	5	
नवमी	बाल.	८	१२:४५	रे	८।२	१३:२५	रे.	१६:०२	शि.	२३:०६	श्रीवत्सः	१६:०२	१०:२८	६:५६	१७:२४	१७	शु	२२	6	
दशमी	तैति.	९	१०:४०	अ	८।९	१३:४२	अ.	१४:३४	सि.	२०:०१	सौम्यः	मेषः	१०:२९	६:५६	१७:२५	१८	श	२३	7	
एकादशी	वाणि.	१०	८:१० २९:१९	भ	८।१६	१३:५९	भ.	१२:४१	सा.	१६:३७	कालद.	१८:१०	१०:३०	६:५६	१७:२६	१९	आ	२४	8	पौराणिकानां पुत्रदा एकादशी
द्वादशी	बवम्	१२	२६:१५	कृ	९।३	१४:१६	कृ.	१०:३०	शु.	१२:५८	स्थिरः	वृषः	१०:३०	६:५६	१७:२६	२०	सो	२५	9	
त्रयोदशी	कौल.	१३	२३:०८	रो	९।१०	१४:३३	रो.	८:०८ २९:४५	शु.	९:१२ २९:३२	मातङ्गः	१८:५६	१०:३१	६:५६	१७:२७	२१	म	२६	10	○माघस्नानारम्भः, लौकिकानां स्वस्थानीव्रतप्रारम्भः (मिलापुह्नि)
चतुर्दशी	गराजिः	१४	२०:०६	मृ	९।१७	१४:५०	आ.	२७:३०	ऐ.	२५:४६	मुसल.	मिथुनम्	१०:३२	६:५६	१७:२८	२२	बु	२७	11	**श्रौतिनां वैदिकानां शुनासीरीयपर्व**
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	१७:१९	आ	१०।५	१५:०८	पुन	२५:३३	वै.	२२:२०	सिद्धिः	२०:०१	१०:३३	६:५६	१७:२९	२३	बृ	२८	12	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, वैश्वदेवपर्व,** पौराणिकानाम् ○

परिवत्सरमा यवदान (जौको दान) गर्न पर्ने विधान

संवत्सरे तिलान् दद्याद् यवाँस् तु परिवत्सरे।
इडापूर्वे च वस्त्राणि धान्यं चाऽप्यनुवत्सरे॥
इद्वत्सरे तु रजतं क्रमाद् देयानि शक्तितः।
—मार्कण्डेयस्मृति, स्मृतिसन्दर्भ–६, पृ.१३४।

तपस्यशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५८२०, तपस्यशुक्लचतुर्थ्यां पूर्वाषाढासु सूर्यः २७।१३ (२९:२)।

शुक्लपक्षे रात्रिकरणानि— प्रतिपदायाम्—**बवम्**, द्वितीयायाम्—**कौलवम्**, तृतीयायाम्—**गराजिः**, चतुर्थ्याम्—**विष्टिः**, पञ्चम्याम्—**बालवम्**, षष्ठ्याम्—**तैतिलम्**, सप्तम्याम्—**वाणिजम्**, अष्टम्याम्—**बवम्**, नवम्याम्—**कौलवम्**, दशम्याम्—**गराजिः**, एकादश्याम्—**विष्टिः**, द्वादश्याम्—**बालवम्**, त्रयोदश्याम्—**तैतिलम्**, चतुर्दश्याम्—**वाणिजम्**, पूर्णिमायाम्—**बवम्**। सन्ध्योपासनम्— **ब्राह्मणः सर्वयत्नेन सायम्प्रातः समाहितः। सन्ध्यामात्रपरो भूयात् तावन्मात्रात् तरिष्यति॥**—लौगाक्षिस्मृति, स्मृतिसन्दर्भ, षष्ठभाग, पृ.२८५। ऋतुचर्या—**शिशिरे पवनः शीतो हिमपातोऽपि वा भवेत्। तदा वस्त्रं सुष्ठु धार्यं जलं पेयं कवोष्णकम्॥** धर्म— **सुखं हि सर्वैराकाङ्क्ष्यं तच् च धर्मसमुद्भवम्। तस्माद् धर्मोऽत्र कर्तव्यश् चातुर्वर्ण्येन यत्नतः॥**—स्कन्दपुराण ४।४०।२७॥

३ २०७३।९।२२ प्रातः ६:००

सू	८:२१:३७:०८	६१:०७	शु	१०:०८:३७:११	६२:१०
म	१०:१९:०४:०५	४५:१२	श	७:२७:४०:२६	६:३३
बु	८:०५:०२:३१	-१३:१४	रा	४:११:४२:४२	३:११
बृ	५:२७:२४:०३	४:५५	**९।२४–१५:१२ बुध मार्गी**		

१०
८श
मशुके
सू ९ बु
७
१२
६ बृ
१
३
५ रा
२
४

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, शिशिरः ऋतुः, तपस्यः [फाल्गुनः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७३, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३८, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **धनुर्मास-मकरमासौ** (पुस-माघ), **माघकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, पोहेलागाः=पौषकृष्णपक्षः) [जनबरि २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ पुस २९ — माघ १४
प्रतिपदा	बाल.	१	१४:५७	**पुन**	**१०।१२**	**१५:२५**	पु.	२४:०४	वि.	१९:१६	उत्पातः	कर्कटः	१०:३४	६:५६	१७:२९	२४	**शु**	**२९**	13	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम् □ मकरस्नानारम्भः
द्वितीया	तैति.	२	१३:०८	**पु**	**१०।१९**	**१५:४२**	अ.	२३:१२	प्री.	१६:३९	मानसम्	२३:१२	१०:३४	६:५६	१७:३०	२५	**श**	**१**	14	**मकरमासप्रारम्भः (माघ) २०७३** (माघी), मकरे सूर्यः १४।२७(१२:४५) □
तृतीया	वाणि.	३	११:५९	**अ**	**११।६**	**१५:५९**	म.	२३:००	आ.	१४:३६	मुद्गरः	सिंहः	१०:३५	६:५६	१७:३१	२६	**आ**	**२**	15	
चतुर्थी	बवम्	४	११:३६	**म**	**११।१३**	**१६:१६**	पू.	२३:३५	सौ.	१३:०८	ध्वजः	२९:५१	१०:३६	६:५६	१७:३२	२७	**सो**	**३**	16	
पञ्चमी	कौल.	५	१२:००	**पूफ**	**१२।०**	**१६:३३**	उ.	२४:५४	शो.	१२:१७	धाता	कन्या	१०:३७	६:५५	१७:३३	२८	**म**	**४**	17	
षष्ठी	गराजिः	६	१३:०९	**उफ**	**१२।८**	**१६:५०**	ह.	२६:५४	अ.	१२:००	आनन्दः	कन्या	१०:३८	६:५५	१७:३३	२९	**बु**	**५**	18	
सप्तमी	विष्टिः	७	१४:५६	**ह**	**१२।१५**	**१७:०८**	चि.	२९:२५	सु.	१२:१२	चरः	१६:०७	१०:३९	६:५५	१७:३४	३०	**बृ**	**६**	19	सायनकुम्भेसूर्यः ४१।९ (२३:४९)
अष्टमी	बाल.	८	१७:१२	**चि**	**१३।२**	**१७:२५**	स्वा.	अहोरात्र	धृ.	१२:४६	गदः	तुला	१०:४०	६:५५	१७:३५	३१	**शु**	**७**	20	
नवमी	तैति.	९	१९:४३	**स्वा**	**१३।९**	**१७:४२**	स्वा.	८:१७	शू.	१३:३३	सिद्धिः	२८:३१	१०:४१	६:५५	१७:३६	३२	**श**	**८**	21	
दशमी	वाणि.	१०	२२:१५	**वि**	**१३।१७**	**१७:५९**	वि.	११:१५	ग.	१४:२४	उत्पातः	वृश्चिकः	१०:४२	६:५४	१७:३७	३३	**आ**	**९**	22	
एकादशी	बवम्	११	२४:३७	**अनु**	**१४।४**	**१८:१६**	अ.	१४:०८	वृ.	१५:१०	मानसम्	वृश्चिकः	१०:४३	६:५४	१७:३८	३४	**सो**	**१०**	23	पौराणिकानां षट्तिला एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	२६:३९	**ज्ये**	**१४।११**	**१८:३३**	ज्ये.	१६:४६	ध्रु.	१५:४२	मुद्गरः	१६:४६	१०:४५	६:५४	१७:३८	३५	**म**	**११**	24	
त्रयोदशी	गराजिः	१३	२८:१३	**मू**	**१४।१९**	**१८:५१**	मू.	१९:००	व्या.	१५:५७	ध्वजः	धनुः	१०:४६	६:५३	१७:३९	३६	**बु**	**१२**	25	
चतुर्दशी	विष्टिः	१४	२९:१७	**पूषा**	**१५।६**	**१९:०८**	पू.	२०:४५	ह.	१५:५०	धाता	२७:०८	१०:४७	६:५३	१७:४०	३७	**बृ**	**१३**	26	⊙ हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम्
अमावास्या	चतुष्.	३०	२९:५१	**उषा**	**१५।१३**	**१९:२५**	उ.	२२:०२	व.	१५:१९	आनन्दः	मकरः	१०:४८	६:५३	१७:४१	३८	**शु**	**१४**	27	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ⊙

सौर अयन र वर्ष

अरु पात्राहरुमा दिनमान लेख्ता पुस ७ गतेबाट दिनमान बढ्न थालेको कुरा लेख्तालेख्तै पनि उत्तरायणको आरम्भ मकरमास (माघ) १ गते लेख्ने गरेको कुरा अयथार्थ र अनुचित हो।

क्रैस्त ग्रेगोरियन पात्रोको जनबरि १ मा सौर नववर्ष मान्ने कुरा उत्तरायण लागेको १० दिन पछि परेकाले १० दिनले अशुद्ध छ।

तपस्यकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५८३५, तपस्यकृष्णतृतीयायाम् उत्तराषाढासु सूर्यः १३।९ (१७:४३)। कृष्णपक्षे रात्रिकरणानि—

प्र.—**कौलवम्**, द्वि.—**गराजिः**, तृ.—**विष्टिः**, च.—**बालवम्**, प.—**तैतिलम्**, ष.—**वाणिजम्**, स.—**बवम्**, अ.—**कौलवम्**, न.—**गराजिः**, द.—**विष्टिः**, ए.—**बालवम्**, द्वा.—**तैतिलम्**, त्रयो.—**वाणिजम्**, चतु.— **शकुनिः**, अमा.—**नागम्**। अमावास्यामा (औँसिमा) रात्रिभोजन नगर्ने र रुखबिरुवाका पात पनि चुँड्न नहुने तथा लुगा धुन नहुने भन्ने नियम :— **द्विर् भोजनममावस्यां न कर्तव्यं कदाचन। शर्वर्यां च विशेषेण माघफाल्गुनयोर् नरैः॥**—भविष्यपुराण २।२।८।१३७। **छिनत्ति वीरुधो यस् तु वीरुत्संस्थे निशाकरे। पत्रं वा पातयत्येकं ब्रह्महत्यां स विन्दति॥**-विष्णुपुराण २।१२।१०॥ ...**अमायां श्राद्धवासरे । वस्त्राणां क्षारसंयोगं करोति केवलं नरः। स याति क्षारकुण्डं च सूत्रमानाब्दमेव च। स व्रजेद् रजकीं योनिं सप्तजन्मसु भारते॥**—देवीभागवत ९।३३।६,७। सदाचारस्य मुख्यत्वम्—**सावित्रीमात्रसारोऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः। नाऽयन्त्रितस् त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयी।**—मनुस्मृति १।११८।

४ २०७३।१०।७ प्रातः ६:००

सू	९:०५:५७:४८	६१:०१	**शु**	१०:२२:५४:१७	५५:२३
म	१०:२९:४१:०९	४४:५५	**श**	७:२९:१५:२३	५:५६
बु	८:११:५२:१४	७१:२७	**रा**	४:११:०३:११	३:११
बृ	५:२८:३०:४४	२:२९			

मशुके
बु ९
१२
१० सू
८ श
१
७
२
४
६ बृ
३
५ रा

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, वसन्तः ऋतुः, मधुः [चैत्रः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७३, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३८, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **मकरमास** (माघ), **माघशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, शिल्लाध्वः=माघशुक्लपक्षः) [जनबरि-फरबरि, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ माघ १५ – २९
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	२९:५६	**श्र**	**१६।०**	**१९:४२**	श्र.	२२:५०	सि.	१४:२५	स्थिरः	मकरः	१०:४९	६:५२	१७:४२	३९	**श**	**१५**	28	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकवसन्तर्त्वारम्भः,** ☾
द्वितीया	बाल.	२	२९:३६	**ध**	**१६।८**	**१९:५९**	ध.	२३:१२	व्य.	१३:११	मातङ्गः	११:०४	१०:५०	६:५२	१७:४२	४०	**आ**	**१६**	29	☾ पौराणिकानामग्निव्रतम् (सोनम्-ह्लोसारः)
तृतीया	तैति.	३	२८:५४	**श**	**१६।१५**	**२०:१६**	श.	२३:१२	व.	११:३७	अमृतम्	कुम्भः	१०:५२	६:५१	१७:४३	४१	**सो**	**१७**	30	✎ रतिकामदेवपूजा, हल्सारो, **फरबरि**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रै.)
चतुर्थी	वाणि.	४	२७:५२	**पूभ**	**१७।२**	**२०:३३**	पू.	२२:५३	प.	९:४७	काणः	१७:००	१०:५३	६:५१	१७:४४	४२	**म**	**१८**	31	मङ्गलचतुर्थी
पञ्चमी	बवम्	५	२६:३३	**उभ**	**१७।१०**	**२०:५१**	उ.	२२:१६	शि.	७:४३ २९:२६	लुम्बः	मीनः	१०:५४	६:५०	१७:४४	४३	**बु**	**१९**	1	**वैदिक-वसन्तपञ्चमी,** पौराणिकानां श्रीपञ्चमी (सरस्वतीपूजा), ✎
षष्ठी	कौल.	६	२४:५७	**रे**	**१७।१७**	**२१:०८**	रे.	२१:२४	सा.	२६:५३	मित्रम्	२१:२४	१०:५६	६:५०	१७:४५	४४	**बृ**	**२०**	2	पौराणिकानां स्कन्दषष्ठी, **आचार्यकौण्डिन्न्यायनजन्मदिवसः सप्तसप्ततः**
सप्तमी	गराजिः	७	२३:०७	**अ**	**१८।५**	**२१:२५**	अ.	२०:१६	शु.	२४:१०	वज्रम्	मेषः	१०:५७	६:४९	१७:४६	४५	**शु**	**२१**	3	पौराणिकानाम् अचलासप्तमी, रथसप्तमी, मन्वादिः
अष्टमी	विष्टिः	८	२१:०४	**भ**	**१८।१२**	**२१:४२**	भ.	१८:५६	शु.	२१:१७	ध्वाङ्क्षः	२४:३४	१०:५८	६:४९	१७:४७	४६	**श**	**२२**	4	भीष्माष्टमी
नवमी	बाल.	९	१८:५०	**कृ**	**१८।१९**	**२१:५९**	कृ.	१७:२५	ब्र.	१८:१६	धूम्रः	वृषः	११:००	६:४८	१७:४८	४७	**आ**	**२३**	5	द्रोणनवमी
दशमी	तैति.	१०	१६:३०	**रो**	**१९।७**	**२२:१६**	रो.	१५:४६	ऐ.	१५:०९	वर्धमा.	२६:५७	११:०१	६:४७	१७:४९	४८	**सो**	**२४**	6	शल्यदशमी
एकादशी	वाणि.	११	१४:०७	**मृ**	**१९।१४**	**२२:३४**	मृ.	१४:०६	वै.	१२:००	राक्षसः	मिथुनम्	११:०२	६:४७	१७:४९	४९	**म**	**२५**	7	पौराणिकानां भीमा एकादशी
द्वादशी	बवम्	१२	११:४९	**आ**	**२०।२**	**२२:५१**	आ.	१२:३०	वि.	८:५४ २९:४९	मुसल.	२९:२४	११:०४	६:४६	१७:५०	५०	**बु**	**२६**	8	पौराणिकानां भीष्मद्वादशी
त्रयोदशी	कौल.	१३	९:४०	**पुन**	**२०।९**	**२३:०८**	पुन	११:०४	आ.	२७:०९	सिद्धिः	कर्कटः	११:०५	६:४५	१७:५१	५१	**बृ**	**२७**	9	☐ (सिपुह्नि), झापामा कीचकवधमेला, मकरस्नानपूर्तिः
चतुर्दशी	गराजिः	१४	७:४८ ३०:२०	**पु**	**२०।१७**	**२३:२५**	पु.	९:५४	सौ.	२४:४१	उत्पातः	कर्कटः	११:०७	६:४५	१७:५२	५२	**शु**	**२८**	10	○पौराणिकानां माघस्नानपूर्तिः, लौकिकानां स्वस्थानीव्रतसमाप्तिः ☐
पूर्णिमा	विष्टिः	१	२९:२२	**अ**	**२१।४**	**२३:४२**	अ.	९:०९	शो.	२२:३५	मानसम्	९:०९	११:०८	६:४४	१७:५२	५३	**श**	**२९**	11	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानां चैत्रीकर्म,**○

स्वधर्म

वैदिक हिन्दुहरुले आँफ्नो देश, जाति, धर्म, संस्कृति, विद्या, परम्परा इत्यादिमा गौरवानुभूति गर्न पर्छ। विदेशिको अन्धानुकरण नगरि आँफ्नै मूल्य-मान्यता रीतिथितिलाइ व्यवहारमा उतार्न पर्छ।

मधुशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५८५०, मधुशुक्लद्वितीयायां श्रवणे सूर्यः २९।८ (३०:२३)। मधुशुक्लपूर्णिमायां धनिष्ठासु सूर्यः १५।८ (१९:०३) कृच्छ्रप्रायश्चित्तम्– **येषां द्विजानां सावित्री नाऽनूच्येत यथाविधि। तांश्चारयित्वा त्रीन् कृच्छ्रान् यथाविध्युपनाययेत्॥ प्रायश्चित्तं चिकीर्षन्ति विकर्मस्थास्तु ये द्विजाः। ब्रह्मणा च परित्यक्तास्तेषामप्येतदादिशेत्॥**-मनु. ११।१९१। श्रौताग्न्याधानकालः– **ब्रह्मैव वसन्तः क्षत्रं ग्रीष्मो विडेव वर्षास् तस्माद् ब्राह्मणो वसन्त (अग्नी) आदधीत ... क्षत्रियो ग्रीष्म (अग्नी) आदधीत ... वैश्यो वर्षासु (अग्नी) आदधीत ...**।–माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेद-शतपथब्राह्मण २।१।३।४। भोजने नियमः– **उपस्पृश्य द्विजो नित्यमन्नमद्यात् समाहितः। भुक्त्वा चोपस्पृशेत् सम्यगद्भिः खानि च संस्पृशेत्॥**–मनुस्मृति २।५३। ऋतुचर्या– **वसन्ते नाऽतिशीतोष्णः पवनस् तत्र सर्वदा। धार्यं वस्त्रं नाऽतिपृथु भोजनं च हितं लघु॥**

५ २०७३।१०।२२ प्रातः ६:००

सू	९:२१:१२:१९	६०:४५	शु	११:०६:०६:४०	४२:५४
म	११:१०:५३:३२	४४:२९	श	८:००:४१:३४	५:०३
बु	९:००:५४:४२	८९:२२	रा	४:१०:१५:३०	३:११
बृ	५:२८:५८:११	०:२०		**१०।२४–१२:०१ गुरु वक्री**	

११।५–८:०६ बुध पू.अस्त

११
९ श
म १२ शु
सू १० बु
८
१
७
२ के
४
६ बृ
३
५ रा

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, वसन्तः ऋतुः, मधुः [चैत्रः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७३, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३८, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **कुम्भमासः** (फागुन), **फाल्गुनकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, शिल्लागाः=माघकृष्णपक्षः) [फरबरि, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ फागुन १ – १५
प्रतिपदा	बाल.	२	२८:५९	म	२१।११	२३:५९	म.	८:५४	अ.	२०:५६	मुद्गरः	सिंहः	११:१०	६:४३	१७:५३	५४	आ	१	12	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम् ◈
द्वितीया	तैति.	३	२९:१५	पूफ	२१।१९	२४:१६	पू.	९:१४	सु.	१९:४७	ध्वजः	१५:२५	११:११	६:४३	१७:५४	५५	सो	२	13	◈ **कुम्भमासप्रारम्भः (फागुन) २०७३,** कुम्भे सूर्यः ४१।३३ (२३:२२)
तृतीया	वाणि.	४	३०:११	उफ	२२।६	२४:३४	उ.	१०:१२	धृ.	१९:०८	धाता	कन्या	११:१३	६:४२	१७:५५	५६	म	३	14	
चतुर्थी	बवम्	५	अहोरात्र	हस्तः	२२।१४	२४:५१	ह.	११:४७	शू.	१८:५९	आनन्दः	२४:४९	११:१४	६:४१	१७:५५	५७	बु	४	15	
पञ्चमी	कौल.	५	७:४३	चित्रा	२३।१	२५:०८	चि.	१३:५७	ग.	१९:१५	चरः	तुला	११:१६	६:४०	१७:५६	५८	बृ	५	16	
षष्ठी	गराजिः	६	९:४४	स्वातिः	२३।९	२५:२५	स्वा.	१६:३२	वृ.	१९:४९	गदः	तुला	११:१७	६:३९	१७:५६	५९	शु	६	17	
सप्तमी	विष्टिः	७	१२:०४	वि	२३।१६	२५:४२	वि.	१९:२३	ध्रु.	२०:३५	शुभः	१२:४०	११:१९	६:३८	१७:५७	६०	श	७	18	सायनमीने सूर्यः ☼
अष्टमी	बाल.	८	१४:३२	अनु	२४।४	२५:५९	अ.	२२:१७	व्या.	२१:२३	मृत्युः	वृश्चिकः	११:२०	६:३८	१७:५८	६१	आ	८	19	☼१२।४८ (११:४९)
नवमी	तैति.	९	१६:५५	ज्येष्ठा	२४।११	२६:१७	ज्ये.	२५:०३	ह.	२२:०५	पद्मम्	२५:०३	११:२२	६:३७	१७:५८	६२	सो	९	20	
दशमी	वाणि.	१०	१८:५८	मू	२४।१९	२६:३४	मू.	२७:२७	व.	२२:३१	छत्रम्	धनुः	११:२३	६:३६	१७:५९	६३	म	१०	21	◈विजया एकादशी
एकादशी	बवम्	११	२०:३४	पूषा	२५।६	२६:५१	पू.	२९:२२	सि.	२२:३५	श्रीवत्सः	धनुः	११:२५	६:३५	१८:००	६४	बु	११	22	पौराणिकानां ◈
द्वादशी	कौल.	१२	२१:३३	उषा	२५।१४	२७:०८	उ.	अहोरात्र	व्य.	२२:१२	सौम्यः	११:४६	११:२६	६:३४	१८:००	६५	बृ	१२	23	
त्रयोदशी	गराजिः	१३	२१:५४	श्र	२६।१	२७:२५	उ.	६:४२	व.	२१:१९	कालद.	मकरः	११:२८	६:३३	१८:०१	६६	शु	१३	24	● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम्, द्वापरयुगादिः
चतुर्दशी	विष्टिः	१४	२१:३६	ध	२६।९	२७:४२	श्र.	७:२३	प.	१९:५६	स्थिरः	१९:३१	११:३०	६:३२	१८:०२	६७	श	१४	25	पौराणिकानां **महाशिवरात्रिः** (सिलाचह्रे)
अमावास्या	चतुष्.	३०	२०:४३	श	२६।१७	२८:००	ध.	७:२८	शि.	१८:०६	मातङ्गः	कुम्भः	११:३१	६:३१	१८:०२	६८	आ	१५	26	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

आधारभूत शास्त्र

माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदका अनुयायी वैदिकहरुले आफ्ना शाखाका **मन्त्र-संहिता, शतपथब्राह्मण, कात्यायनश्रौतसूत्र, पारस्करगृह्यसूत्र, कातीय-त्रिकण्डिकस्नान-सूत्र, कात्यायनश्राद्धकल्पसूत्र** इ शास्त्रअनुसार धर्मकर्म गर्न पर्छ। वेदअनुसारको लगध मुनि-प्रोक्त **ज्योतिषग्रन्थ** नै **मूल वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थ** हुनाले वैदिक धार्मिक कुराका निम्ति वेदाङ्गज्योतिषअनुसारको पात्रोको प्रयोग गर्न पर्छ।

मधुकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५८६५, मधुकृष्णचतुर्दश्यां शतभिषजि सूर्यः १।१० (७:४४)।

औषधसेवने पौराणमन्त्रः— **ब्रह्म-दक्षा-ऽश्वि-रुद्रेन्द्र-भू-चन्द्रा-ऽर्का-ऽनला-ऽनिलाः। देवाश्च सौषधिग्रामा भूमिदेवाश्च पान्तु नः॥ रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतं यथा। सुधेवोत्तमनागानां भैषज्यमिदमस्तु मे॥** माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयुजुर्वेदशाखाध्यायिनां विधिवदधीतवेदानामुपाध्यायब्राह्मणानामौषधसेवनमन्त्रः— **ओ३म्, या ओषधीः सोमराज्ञीर् ब्बह्वीः शतविचक्षणाः। तासामसि त्वमुत्तमाऽरङ् कामाय शं हृदे॥**—शु.य.वे. १२।९२।

वसन्तचर्या— **व्यायामोद्वर्तनं धूमं कवलग्रहमञ्जनम्। सुखाम्बुनो शौचविधिं शीलयेत् कुसुमागमे॥**—चरकसंहिता सूत्रस्थान ६।२४।

६ २०७३।११।७ प्रातः ६:००

सू	१०:०५:२७:०६	६०:२६	शु	११:१५:१७:४७	२२:३३
म	११:२१:१९:५१	४३:५९	श	८:०१:५४:१९	४:०१
बु	९:२२:२६:५६	१०१:३९	रा	४:०९:३५:३०	३:११
बृ	५:२८:५०:३३	-२:५७	**११।२१–१४:३३ शुक्र वक्री**		

म१२शु, १०बु, १, सू ११ के, ९श, २, ८, ३, ५ रा, ७, ४, ६बृ

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, वसन्तः ऋतुः, माधवः [वैशाखः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७३, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३८, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **कुम्भमासः** (फागुन), **फाल्गुनशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, चिल्लाथ्वः=फाल्गुनशुक्लपक्षः) [फरबरि-मार्च, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ फागुन १६ – ३०
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	१९:२०	**पूभ**	**२७।४**	**२८:१७**	श.	७:०१ ३०:०८	सि.	१५:५१	अमृतम्	२४:२४	११:३३	६:३०	१८:०३	६९	**सो**	**१६**	27	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, ग्याल्पो ह्लोसार
द्वितीया	बाल.	२	१७:३४	**उभ**	**२७।१२**	**२८:३४**	उ.	२८:५४	सा.	१३:१७	सिद्धिः	मीनः	११:३४	६:२९	१८:०४	७०	**म**	**१७**	28	
तृतीया	तैति.	३	१५:३०	**रे**	**२७।१९**	**२८:५१**	रे.	२७:२७	शु.	१०:२९	उत्पातः	२७:२७	११:३६	६:२८	१८:०४	७१	**बु**	**१८**	1	**मार्च**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रै.)
चतुर्थी	वाणि.	४	१३:१६	**अ**	**२८।७**	**२९:०८**	अ.	२५:५२	शु.	७:३० २८:३०	मानसम्	मेषः	११:३८	६:२७	१८:०५	७२	**बृ**	**१९**	2	
पञ्चमी	बवम्	५	१०:५७	**भ**	**२८।१४**	**२९:२५**	भ.	२४:१६	ऐ.	२५:२२	मुद्गरः	२९:५३	११:३९	६:२६	१८:०५	७३	**शु**	**२०**	3	
षष्ठी	कौल.	६	८:३८	**कृ**	**२९।२**	**२९:४२**	कृ.	२२:४२	वै.	२२:२०	ध्वजः	वृषः	११:४१	६:२५	१८:०६	७४	**श**	**२१**	4	
सप्तमी	गराजिः	७	६:२४ २८:१८	**रो**	**२९।१०**	**३०:००**	रो.	२१:१६	वि.	१९:२४	धाता	वृषः	११:४२	६:२४	१८:०७	७५	**आ**	**२२**	5	रविसप्तमी
अष्टमी	विष्टिः	९	२६:२२	**मृ**	**२९।१७**	**३०:१७**	मृ.	१९:५९	प्री.	१६:३६	आनन्दः	८:३७	११:४४	६:२३	१८:०७	७६	**सो**	**२३**	6	पौराणिकानां चीरोत्थापनम्, होलिकारम्भः
नवमी	बाल.	१०	२४:४०	**आ**	**अहोरात्र**	**अहोरात्र**	आ.	१८:५५	आ.	१३:५८	चरः	मिथुनम्	११:४६	६:२२	१८:०८	७७	**म**	**२४**	7	
दशमी	तैति.	११	२३:१३	**आ**	**०।५**	**६:३४**	पुन	१८:०६	सौ.	११:३१	गदः	१२:१७	११:४७	६:२१	१८:०८	७८	**बु**	**२५**	8	
एकादशी	वाणि.	१२	२२:०३	**पुन**	**०।१३**	**६:५१**	पु.	१७:३२	शो.	९:१७	शुभः	कर्कटः	११:४९	६:२०	१८:०९	७९	**बृ**	**२६**	9	पौराणिकानाम् आमलकी एकादशी
द्वादशी	बवम्	१३	२१:१२	**पु**	**१।०**	**७:०८**	अ.	१७:१८	अ.	७:१७ २९:३४	मृत्युः	१७:१८	११:५१	६:१९	१८:०९	८०	**शु**	**२७**	10	पौराणिकानां गोविन्दद्वादशी
त्रयोदशी	कौल.	१४	२०:४४	**अ**	**१।८**	**७:२५**	म.	१७:२५	धृ.	२८:०९	पद्मम्	सिंहः	११:५२	६:१८	१८:१०	८१	**श**	**२८**	11	
चतुर्दशी	गराजिः	१५	२०:४२	**म**	**१।१६**	**७:४३**	पू.	१७:५७	शू.	२७:०६	छत्रम्	२४:०९	११:५४	६:१७	१८:१०	८२	**आ**	**२९**	12	○ (फागुपूर्णिमा), मन्वादिः
पूर्णिमा	विष्टिः	१	२१:०९	**पूफ**	**२।३**	**८:००**	उ.	१८:५६	ग.	२६:२६	श्रीवत्सः	कन्या	११:५६	६:१५	१८:११	८३	**सो**	**३०**	13	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** रात्रौ चीरदाहः, पौराणिकानां **होलाका** ○

कथाको तात्पर्य— पुराणका कथाका आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक विविध अर्थ हुने हुनाले कथाको तात्पर्य बुज्न प्रयास गर्न पर्छ। बहकिएर वेद र धर्मशास्त्रको विपरीत कुनै पनि अर्थ लिन हुँदैन।

माधवशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५८८०, माधवशुक्लद्वादश्यां पूर्वभद्रपदयोः सूर्यः **१७।१२ (२०:२४)।**

प्रायश्चित्तम्— **प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते। तपोनिश्चयसंयुक्तं प्रायश्चित्तमिति स्मृतम्॥**—मनुस्मृति ११।४७। **क्षान्त्या शुद्ध्यन्ति विद्वांसो दमेनाऽकार्यकारिणः। प्रच्छन्नपापा जप्येन तपसा वेदवित्तमाः॥**—मनुस्मृति ५।१०७; (द्र.– याज्ञवल्क्यस्मृति ३।३१०)। **यथायथा मनस् तस्य दुष्कृतं कर्म गर्हति। तथातथा शरीरं तत् तेनाऽधर्मेण मुच्यते॥**—मनुस्मृति ११।२२९। **न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्। स शूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः।**—मनुस्मृति २।१०३। महाभारतश्रावण— **सर्वस् तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु। श्रावयेच् चतुरो वर्णान् कृत्वा ब्राह्मणमग्रतः॥**—महाभारत शान्तिपर्व ३२७।४८–४९। **कृतानि यानि कर्माणि दैवतैर् मुनिभिस्तथा। न चरेत् तानि धर्मात्मा श्रुत्वा चाऽपि न कुत्सयेत्॥**—महाभा. शान्ति.२९१।१७।

७ २०७३।११।२२ प्रातः ६:००

सू	१०:२०:३२:०२	६०:००	शु	११:१९:०३:४२	-११:३५
म	०:०२:१७:३१	४३:२३	श	८:०२:५०:१५	२:४४
बु	१०:१८:४५:००	११६:१२	रा	४:०८:४८:१७	३:११
बृ	५:२७:५७:१६	-५:२४			

१२शु
१०
१म
सू ११ बु के
९श
२
८
३
५ रा
७
४
६ बृ

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५–९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम् , वसन्तः ऋतुः, माधवः [वैशाखः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७३, शकान्तसंवत्(शकसंवत्) १९३८, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **मीनमासः** (चइत), **चैत्रकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, चिल्लागाः=फाल्गुनकृष्णपक्षः) [मार्च, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ चइत १ – १४
प्रतिपदा	बाल.	२	२२:०६	**उफ**	**२।११**	**८:१७**	ह.	२०:२५	वृ.	२६:०९	सौम्यः	कन्या	११:५७	६:१४	१८:१२	८४	**म**	**१**	14	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम् ◈
द्वितीया	तैति.	३	२३:३४	**ह**	**२।१८**	**८:३४**	चि.	२२:२४	ध्रु.	२६:१५	कालद.	९:२२	११:५९	६:१३	१८:१२	८५	**बु**	**२**	15	◈ **मीनमासप्रारम्भः (चइत) २०७३,** मीने सूर्यः ३२।१५ (१९:१०)
तृतीया	वाणि.	४	२५:२८	**चि**	**३।६**	**८:५१**	स्वा.	२४:४८	व्या.	२६:४१	स्थिरः	तुला	१२:००	६:१२	१८:१३	८६	**बृ**	**३**	16	**वैदिक परिधान—** वैदिक वस्त्र अन्तरीय (धोति) र उत्तरीय (उपर्ना)
चतुर्थी	बवम्	५	२७:४३	**स्वा**	**३।१४**	**९:०८**	वि.	२७:३२	ह.	२७:२३	मातङ्गः	२०:५०	१२:०२	६:११	१८:१३	८७	**शु**	**४**	17	भएकाले वैदिक धार्मिक कृत्य गर्दा सिएको लुगा नलगाइ शुद्ध अन्तरीय
पञ्चमी	कौल.	६	३०:०८	**वि**	**४।१**	**९:२५**	अ.	अहोरात्र	व.	२८:१२	अमृतम्	वृश्चिकः	१२:०४	६:१०	१८:१४	८८	**श**	**५**	18	(धोति) र उत्तरीय (उपर्ना) लगाउनु उचित हुन्छ—
षष्ठी	गराजिः	७	अहोरात्र	**अनु**	**४।९**	**९:४३**	अ.	६:२६	सि.	२९:०२	मृत्युः	वृश्चिकः	१२:०५	६:०९	१८:१४	८९	**आ**	**६**	19	**उत्तीर्य धौते बाससी परिधाय।**—कातीय त्रिकण्डिकस्नानसूत्र २।
सप्तमी	विष्टिः	७	८:३३	**ज्ये**	**४।१६**	**१०:००**	ज्ये.	९:२०	व्य.	२९:४३	पद्मम्	९:२०	१२:०७	६:०८	१८:१५	९०	**सो**	**७**	20	**दृक्सिद्ध-वैदिक-वासन्त-विषुवम् (वसन्त ऋतुको दिन र रात बराबर** ☼
अष्टमी	बाल.	८	१०:४५	**मू**	**५।४**	**१०:१७**	मू.	१२:०१	व.	अहोरात्र	छत्रम्	धनुः	१२:०९	६:०७	१८:१५	९१	**म**	**८**	21	शीतलाष्टमी, गणगौरपूजारम्भः ☼ **हुने समय) विषुवत्सूर्यसङ्क्रमः,** ☐
नवमी	तैति.	९	१२:३१	**पूषा**	**५।१२**	**१०:३४**	पू.	१४:१६	व.	६:०७	श्रीवत्सः	२०:४६	१२:१०	६:०६	१८:१६	९२	**बु**	**९**	22	**शुक्र पश्चिमतिर अस्त ५०।३० (२६:१७)** ☐ **याज्ञवल्क्यस्मृत्युक्त-श्राद्ध-** ❁
दशमी	वाणि.	१०	१३:४०	**उषा**	**५।१९**	**१०:५१**	उ.	१५:५७	प.	६:०६ २९:१६	सौम्यः	मकरः	१२:१२	६:०४	१८:१६	९३	**बृ**	**१०**	23	⊙ परिहार-दिनम्, लौकिकानाम् अश्वयात्रा (घोडे जात्रा)
एकादशी	बवम्	११	१४:०७	**श्र**	**६।७**	**११:०८**	श्र.	१६:५६	सि.	२८:२४	धूम्रः	२९:०९	१२:१४	६:०३	१८:१७	९४	**शु**	**११**	24	पौराणिकानां पापमोचनी एकादशी ❁ **कालविशेषः, सायनमेषे सूर्यः ७।३९**
द्वादशी	कौल.	१२	१३:४८	**ध**	**६।१५**	**११:२६**	ध.	१७:१०	सा.	२६:४०	वर्धमा.	कुम्भः	१२:१५	६:०२	१८:१७	९५	**श**	**१२**	25	● **वैदिकानां दर्शश्राद्धम् ,**हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्मसायम्भोजन-⊙
त्रयोदशी	गराजिः	१३	१२:४४	**श**	**७।२**	**११:४३**	श.	१६:४१	शु.	२४:२३	राक्षसः	कुम्भः	१२:१७	६:०१	१८:१८	९६	**आ**	**१३**	26	**शुक्रको पूर्वतिर उदय ४०।१५ (२२:०७)**
अमावास्या	चतुष्.	१४	११:०१	**पूभ**	**७।१०**	**१२:००**	पू.	१५:३३	शु.	२१:३६	मुसल.	९:५४	१२:१८	६:००	१८:१८	९७	**सो**	**१४**	27	पिशाचचतुर्दशी (पाशाचह्रे), **श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः,स्मार्तानां** ●

माधवकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५८९५, माधवकृष्णैकादश्याम् उत्तरभद्रपदयोः सूर्यः **३।१६ (९:०५)।**

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैतत् प्रधार्यताम्। आत्मनः प्रतिकूलानि न परेषां समाचरेत्॥—पद्मपु., सृष्टि. १९।३३५। पौराणिकानां दुःस्वप्ननाशनमन्त्रः— **शिवं दुर्गां गणपतिं कार्त्तिकेयं दिनेश्वरम्। धर्मं गङ्गां च तुलसीं राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम्॥ नामान्येतानि भद्राणि जले स्नात्वा च यो जपेत्॥ वाञ्छितं च लभेत् सोऽपि दुस्वप्नश् शुभवान् भवेत्॥** (ब्रह्मवैवर्तपुराणे), कुलीनानामधीतवेदानामुपाध्यायब्राह्मणानां दुस्वप्ननाशनमन्त्रः— **ओ३म्, यज् जाग्रतो दूरमुदैति दैवन् तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमञ् ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन् तन्न् मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥**—मा.वा.शु.यजुर्वेदसं. ३४।१।

व्यासनगरसमीपस्थ-शङ्करतीर्थे स्नाने मन्त्रः— **शुक्लिके चैव माहेन्द्रि युवयोः सङ्गमे शिवे। स्नामि शङ्करतीर्थाख्ये पापं मे हरतं शुभे॥**

वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस् तथा। सर्वान् संसाधयेदर्थानक्षिण्वन् योगतस् तनुम्।—मनुस्मृति २।१००।

८ २०७३।१२।७ प्रातः ६:००

सू ११:०५:३०:०८ ५९:२९ शु ११:१४:१२:१२ -३७:३७

म ०:१३:०६:०३ ४२:४५ श ८:०३:२६:१७ १:१८

बु ११:१७:५२:४३ १०२:१३ रा ४:०८:००:३६ ३:११

बृ ५:२६:२९:३२ -६:१३ **१२।८–२६:५१ बुध प. उदय**

१२।९–२६:१७ शुक्र प. अस्त १२।१३–२२:०७ शुक्र पू. उदय

१ म
११ के
२
सू १२ बु शु
१०
३
९ श
४
६ बृ
८
५ रा
७

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, ग्रीष्मः ऋतुः, शुक्रः [ज्येष्ठः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत्२०७३,शकान्तसंवत्(शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः साधारणः संवत्सरः (४४), **मीनमासः**(चइत), **चैत्रशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत्११३७, चौलाथ्वः=चैत्रशुक्लपक्षः) [मार्च-अप्रिल, २०१७क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ चइत १५ – २९
प्रतिपदा	कौस्तु.	३०	८:४४	उभ	७।१७	१२:१७	उ.	१३:५५	ब्र.	१८:२५	सिद्धिः	मीनः	१२:२०	५:५९	१८:१९	९८	म	१५	28	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिक- ग्रीष्मर्त्वारम्भः,** ☾
द्वितीया	बाल.	१	६:०२ २७:०५	रे	८।५	१२:३४	रे.	११:५४	ऐ.	१४:५७	उत्पातः	११:५४	१२:२२	५:५८	१८:२०	९९	बु	१६	29	मत्स्यजयन्ती, कान्तिपुरे मत्स्यग्रामे (मच्छेगाउँ) मत्स्यनारायणमेला, मन्वादिः
तृतीया	तैति.	३	२४:००	अश्व	८।१३	१२:५१	अ.	९:३९	वै.	११:१९	मानसम्	मेषः	१२:२३	५:५७	१८:२०	१००	बृ	१७	30	☾ पौराणिकानामग्निव्रतम्, नवरात्रारम्भः
चतुर्थी	वाणि.	४	२०:५८	भ	९।०	१३:०८	भ.	७:२० २९:०७	वि.	७:३९ २७:५९	मुद्गरः	१२:४६	१२:२५	५:५६	१८:२१	१०१	शु	१८	31	
पञ्चमी	बवम्	५	१८:०६	कृ	९।८	१३:२६	रो.	२७:०७	आ.	२४:३८	श्रीवत्सः	वृषः	१२:२७	५:५५	१८:२१	१०२	श	१९	1	**अप्रिल**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रै.)
षष्ठी	कौल.	६	१५:३२	रो	९।१५	१३:४३	मृ.	२५:२७	सौ.	२१:२९	सौम्यः	१४:१४	१२:२८	५:५३	१८:२२	१०३	आ	२०	2	
सप्तमी	गराजिः	७	१३:२१	मृ	१०।३	१४:००	आ.	२४:१३	शो.	१८:४१	कालद.	मिथुनम्	१२:३०	५:५२	१८:२२	१०४	सो	२१	3	
अष्टमी	विष्टिः	८	११:३८	आ	१०।१	१४:१७	पुन	२३:२७	अ.	१६:१५	स्थिरः	१७:३७	१२:३१	५:५१	१८:२३	१०५	म	२२	4	शाक्तानां तान्त्रिकाणां पौराणिकानां च नवरात्रान्तर्गता चैत्राष्टमी (चइते दसैँ)
नवमी	बाल.	९	१०:२४	पुन	१०।१	१४:३४	पु.	२३:१०	सु.	१४:१३	मातङ्गः	कर्कटः	१२:३३	५:५०	१८:२३	१०६	बु	२३	5	पौराणिकानां रामनवमी
दशमी	तैति.	१०	९:३८	पु	११।६	१४:५१	अ.	२३:२०	धृ.	१२:३३	अमृतम्	२३:२०	१२:३५	५:४९	१८:२४	१०७	बृ	२४	6	
एकादशी	वाणि.	११	९:१९	अ	११।१	१५:०९	म.	२३:५५	शू.	११:१४	काणः	सिंहः	१२:३६	५:४८	१८:२४	१०८	शु	२५	7	पौराणिकानां कामदा एकादशी, स्वास्थ्यदिवसः
द्वादशी	बवम्	१२	९:२४	म	१२।१	१५:२६	पू.	२४:५२	ग.	१०:१४	लुम्बः	सिंहः	१२:३८	५:४७	१८:२५	१०९	श	२६	8	
त्रयोदशी	कौल.	१३	९:५२	पूफ	१२।९	१५:४३	उ.	२६:११	वृ.	९:३२	मित्रम्	७:१०	१२:३९	५:४६	१८:२५	११०	आ	२७	9	❀ पुनः हस्ते गुरुः (बृहस्पतिः) ४६।३० (२४:२३)
चतुर्दशी	गराजिः	१४	१०:४३	उफ	१२।१	१६:००	ह.	२७:५२	ध्रु.	९:०७	वज्रम्	कन्या	१२:४१	५:४५	१८:२६	१११	सो	२८	10	○पौराणिकानां हनुमज्जयन्ती लौकिकानां बालाजु-बाइसधारा-मेला, ❀
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	११:५५	हस्त	१३।४	१६:१७	चि.	अहोरात्र	व्या.	९:००	ध्वाङ्क्षः	१६:५१	१२:४३	५:४४	१८:२६	११२	म	२९	11	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** पौराणिकानां वैशाखस्नानारम्भः,मन्वादिः,○

शुक्रशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५९०९, शुक्रशुक्लदशम्यां रेवत्यां सूर्यः १९।१८ (२१:४५)।

यथाशक्ति दानम्– **एकां गां दशगुर् दद्याद् दश दद्याच् च गोशती। शतं सहस्रगुर् दद्यात् सर्वे तुल्यफला हि ते॥**–अग्निपुराण २११।१। **दद्यादाढ्यस् तु नगरं हस्तमात्रमकिञ्चनः। भुवं तयोः समफलं प्राहुर् वेदविदो जनाः॥**–नारदीयपुराण १।१२।१६। **सहस्रशक्तिश् च शतं शतशक्तिर् दशाऽपि वा। दद्यादपश् च यः शक्त्या सर्वे तुल्यफलाः स्मृताः॥**–महाभारत आश्वमेधिकपर्व ९०।९६। वृक्षरोपण–**सदा स तीर्थी भवति सदा दानं प्रयच्छति। सदा यज्ञं स यजते यो रोपयति पादपान्॥**-भविष्यपुराण ४।१२८।१०। **स्थावराणां च भूतानां जातयः षट् प्रकीर्तिताः। वृक्ष-गुल्म-लता-वल्ल्यस् त्वक्साराः कृमिजातयः॥ एता जात्यस् तु वृक्षाणां तेषां रोपे गुणान्विते। कीर्तिश् च मानुषे लोके प्रेत्य चैव शुभं फलम्॥**–महाभा.अनुशा. ५८ अध्याय। धर्मनिर्णये वेदस्य प्रधानता– **वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस् तद्विपर्ययः। वेदो नारायणः साक्षात् स्वयम्भूरिति शुश्रुम॥**–विष्णुभागवत ६।१।४०।

१ २०७३।१२।२२ प्रातः ६:००

सू	११:२०:२०:४६	५८:५९	**शु**	११:०५:२७:४९	-१८:०२
म	०:२३:४४:५९	४२:०६	**श**	८:०३:४०:३७	०:११
बु	०:०८:४५:१६	१३:१२	**रा**	४:०७:१२:५४	३:११
बृ	५:२४:३९:५६	-७:४३			

१२।२४–१०:०६ शनि वक्री
१२।२८–५:०७ बुध वक्री
१२।२९–२५:४७ बुध प.अस्त
१२–१६:०३ शुक्र मार्गी

म१बु
११ के
२
सू १२ शु
१०
३
९ श
४
६ बृ
८
५ रा
७

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, ग्रीष्मः ऋतुः, शुक्रः [ज्येष्ठः] मासः, कृष्णः पक्षः

वि.सं. २०७३-२०७४,शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **मीनमास-मेषमासौ** (चइत-वैशाख)**, वैशाखकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७,चौलागाः=चैत्रकृष्णपक्षः)[अप्रिल, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७३ चइत ३० – २०७४ वैशाख १३
प्रतिपदा	बाल.	१	१३:३०	चित्रा	१३।११	१६:३४	चि.	५:५४	ह.	९:१०	कालद.	तुला	१२:४४	५:४३	१८:२७	११३	बु	३०	12	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	२	१५:२६	स्वातिः	१३।१९	१६:५१	स्वा.	८:१७	व.	९:३६	स्थिरः	२८:१७	१२:४६	५:४२	१८:२७	११४	बृ	३१	13	मेषे सूर्यः ५५।१५ (२७:४९)
तृतीया	वाणि.	३	१७:३९	वि	१४।६	१७:०९	वि.	१०:५८	सि.	१०:१६	मातङ्गः	वृश्चिकः	१२:४७	५:४१	१८:२७	११५	शु	१	14	साँखुयात्रा (सकोयाः), **मेषमासप्रारम्भः (वैशाख) २०७४**
चतुर्थी	बवम्	४	२०:०३	अनु	१४।१४	१७:२६	अ.	१३:५१	व्य.	११:०६	अमृतम्	वृश्चिकः	१२:४९	५:४०	१८:२८	११६	श	२	15	
पञ्चमी	कौल.	५	२२:३१	ज्ये	१५।२	१७:४३	ज्ये.	१६:५०	व.	१२:०१	काणः	१६:५०	१२:५०	५:३९	१८:२९	११७	आ	३	16	
षष्ठी	गराजिः	६	२४:५१	मू	१५।९	१८:००	मू.	१९:४४	प.	१२:५४	लुम्बः	धनुः	१२:५२	५:३८	१८:३०	११८	सो	४	17	❁**संवत्सरारम्भः(४५)१४।४५(११:३०)**
सप्तमी	विष्टिः	७	२६:५१	पूषा	१५।१७	१८:१७	पू.	२२:२१	शि.	१३:३७	मित्रम्	२८:५७	१२:५४	५:३७	१८:३०	११९	म	५	18	**बार्हस्पत्य-विरोधकृत्-** ❁
अष्टमी	बाल.	८	२८:२१	उषा	१६।४	१८:३४	उ.	२४:३१	सि.	१४:००	वज्रम्	मकरः	१२:५५	५:३६	१८:३१	१२०	बु	६	19	**सायनवृषे सूर्यः ३७।४९ (२०:४३)**
नवमी	तैति.	९	२९:०९	श्र	१६।१२	१८:५२	श्र.	२६:०२	सा.	१३:५६	ध्वजः	मकरः	१२:५७	५:३५	१८:३१	१२१	बृ	७	20	
दशमी	वाणि.	१०	२९:०९	ध	१६।१९	१९:०९	ध.	२६:४७	शु.	१३:१८	धाता	१४:३१	१२:५८	५:३४	१८:३२	१२२	शु	८	21	छन्दोदिवसः
एकादशी	बवम्	११	२८:१८	श	१७।७	१९:२६	श.	२६:४३	शु.	१२:०१	आनन्दः	कुम्भः	१३:००	५:३३	१८:३२	१२३	श	९	22	पौराणिकानां वरूथिनी एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	२६:४०	पूभ	१७।१५	१९:४३	पू.	२५:५१	ब्र.	१०:०५	चरः	२०:०९	१३:०१	५:३२	१८:३३	१२४	आ	१०	23	
त्रयोदशी	गराजिः	१३	२४:२०	उभ	१८।२	२०:००	उ.	२४:१७	ऐ.	७:३१ २८:४०	गदः	मीनः	१३:०३	५:३१	१८:३३	१२५	सो	११	24	⦿परिहारदिनम्, लौकिकानां मातृसम्मानदिवसः (आमाको मुख हेर्ने दिन)
चतुर्दशी	विष्टिः	१४	२१:२४	रे	१८।१०	२०:१७	रे.	२२:०९	वि.	२४:४९	शुभः	२२:०९	१३:०४	५:३०	१८:३४	१२६	म	१२	25	(मातातिचह्लेपूजा)● हल-कण्डनी-यन्त्रक- मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-⦿
अमावास्या	चतुष्.	३०	१८:०४	अश्व	१८।१७	२०:३५	अ.	१९:३५	प्री.	२०:५५	मृत्युः	मेषः	१३:०६	५:२९	१८:३५	१२७	बु	१३	26	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

ज्ञातव्य विषय

आजभन्दा १५०० वर्ष जति अगि मेषमास (वैशाख) १ मा दिनरात बराबर हुन्थ्यो। आजभोलि मीन-मास (चइत) ७ गते दिनरात बरा-बर हुने विषुवद्दिन पर्छ। वेदाङ्ग-**ज्योतिषअनुसार नववर्षको** आरम्भ उत्तरायणको आरम्भसँगै शुक्ल-प्रतिपदाबाट हुन्छ।

शुक्रकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५९२४, शुक्रकृष्णनवम्याम् अश्वयुजोः सूर्यः **६।१ (१०:२५)**।

वर्णानामाश्रमाणां च सदाचारः पृथक्पृथक्। सामान्यः सविशेषश्च स्वधर्मः स उदीर्यते॥–स्कन्दपु.वै.ख.९।२०।११। **श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥**–गीता ३।३५, १८।४७। **वरं स्वधर्मो विगुणो न पारक्यः स्वनुष्ठितः। परधर्मेण जीवन् हि सद्यः पतति जातितः॥**–मनु.१०।९७ **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर् विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥**–मनुस्मृति ६।९२। **ज्येष्ठस्यैकादशितिथौ विष्णुना प्रभविष्णुना। वाराहं रूपमास्थाय उद्धृता धरणी विभो॥**–स्कन्दपुराण आवन्त्य खण्ड ३।१८९।३६-३७। स्वास्थ्याय ऋतुचर्या– **ग्रीष्मे तु वात उष्णोऽत्र धारयेदातपत्रकम्। स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नपानं भवेद् हितम्॥**

१० २०७४।१।७ प्रातः ६:००

सू	०:०६:०२:२४	५८:२८	शु	११:०३:१४:४६	१८:२९
म	१:०४:५५:५५	४१:२६	श	८:०३:३१:२९	-१:४२
बु	०:०६:२५:३७	-३८:५७	रा	४:०६:२२:०२	३:११
बृ	५:२२:३८:०२	-७:०३			

१।१५–१६:४९ बुध पू. उदय

१।२०–२२:०८ बुध मार्गी

म २ | शु१२के | ३ | सू१ बु | ११ | ४ | १० | ५ रा | ७ | ९श | ६ बृ | ८

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, ग्रीष्मः ऋतुः, प्रथमशुचिः [प्रथमाषाढः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **मेषमासः** (वैशाख), **वैशाखशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, वछलाथ्वः=वैशाखशुक्लपक्षः) [अप्रिल-मे, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ वैशाख १४ – २८
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	१४:२९	भ	१९।५	२०:५२	भ.	१६:४८	आ.	१६:५०	पद्मम्	२२:०६	१३:०७	५:२८	१८:३५	१२८	बृ	१४	27	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	बाल.	२	१०:५०	कृ	१९।१	२१:०९	कृ.	१३:५७	सौ.	१२:४३	छत्रम्	वृषः	१३:०९	५:२७	१८:३६	१२९	शु	१५	28	
तृतीया	तैति.	३	७:१७ २८:२२	रो	२०।०	२१:२६	रो.	११:१५	शो.	८:४२ २८:५५	श्रीवत्सः	२२:००	१३:१०	५:२६	१८:३६	१३०	श	१६	29	पौराणिकानाम् अक्षयतृतीया, त्रेतायुगादिः, परशुरामजयन्ती
चतुर्थी	वाणि.	५	२५:०८	मृ	२०।७	२१:४३	मृ.	८:५०	सु.	२५:२८	सौम्यः	मिथुनम्	१३:११	५:२६	१८:३७	१३१	आ	१७	30	
पञ्चमी	बवम्	६	२२:४९	आ	२०।१	२२:००	आ.	६:५३	धृ.	२२:३०	कालद.	२३:४८	१३:१३	५:२५	१८:३७	१३२	सो	१८	1	**लौकिकानां शङ्करभगवत्पादजयन्ती, मेमासप्रारम्भः** (२०१७ क्रैस्ताब्दः)
षष्ठी	कौल.	७	२१:०९	पुन	२१।२	२२:१७	पुन	५:३० २८:४७	शू.	२०:०२	स्थिरः	कर्कटः	१३:१४	५:२४	१८:३८	१३३	म	१९	2	
सप्तमी	गराजिः	८	२०:०९	पु	२१।१०	२२:३५	अ.	२८:४४	ग.	१८:०८	राक्षसः	२८:४४	१३:१५	५:२३	१८:३९	१३४	बु	२०	3	गङ्गासप्तमी
अष्टमी	विष्टिः	९	१९:४९	अ	२१।१	२२:५२	म.	२९:१८	वृ.	१६:४५	मुसल.	सिंहः	१३:१७	५:२२	१८:३९	१३५	बृ	२१	4	
नवमी	बाल.	१०	२०:०५	म	२२।४	२३:०९	पू.	अहोरात्र	ध्रु.	१५:५२	सिद्धिः	सिंहः	१३:१८	५:२२	१८:४०	१३६	शु	२२	5	सीतानवमी
दशमी	तैति.	११	२०:५२	पूफ	२२।१	२३:२६	पू.	६:२७	व्या.	१५:२४	लुम्बः	१२:४९	१३:२०	५:२१	१८:४०	१३७	श	२३	6	
एकादशी	वाणि.	१२	२२:०४	उफ	२२।१	२३:४३	उ.	८:०३	ह.	१५:१६	मित्रम्	कन्या	१३:२१	५:२०	१८:४१	१३८	आ	२४	7	पौराणिकानां मोहिनी एकादशी, किरात-समाजसुधार-दिवस
द्वादशी	बवम्	१३	२३:३६	ह	२३।७	२४:००	ह.	१०:०१	व.	१५:२४	वज्रम्	२३:०७	१३:२२	५:१९	१८:४२	१३९	सो	२५	8	
त्रयोदशी	कौल.	१४	२५:२५	चि	२३।१४	२४:१८	चि.	१२:१७	सि.	१५:४७	ध्वाङ्क्षः	तुला	१३:२३	५:१९	१८:४२	१४०	म	२६	9	○ वैशाखस्नानसमाप्तिः, चण्डीपूर्णिमा, बुद्धजयन्ती
चतुर्दशी	गराजिः	१५	२७:२८	स्वा	२४।२	२४:३५	स्वा.	१४:४८	व्य.	१६:२१	धूम्रः	तुला	१३:२५	५:१८	१८:४३	१४१	बु	२७	10	पौराणिकानां नृसिंहजयन्ती, कूर्मजयन्ती
पूर्णिमा	विष्टिः	१	अहोरात्र	वि	२४।९	२४:५२	वि.	१७:३१	व.	१७:०५	वर्धमा.	१०:५०	१३:२६	५:१७	१८:४३	१४२	बृ	२८	11	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, वरुणप्रघासपर्व,** पौराणिकानां ○

षष्टिसंवत्सर

चान्द्र षष्टि संवत्सर र बार्हस्पत्य षष्टि संवत्सरको भेद बुज्न पर्छ। सङ्कल्पमा **चान्द्र संवत्सरको** उल्लेख गर्न पर्छ।

प्रथमशुचिशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५९३९, प्रथमशुचिशुक्लसप्तम्याम् अपभरणीषु सूर्यः २२।३ (२३:०६)।

अक्षयतृतीयायां धर्मघटदाने मन्त्रः— **एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुहरात्मकः। अस्य प्रदानात् तृप्यन्तु पितरोऽपि पितामहाः॥ गन्धोदकतिलैर् मिश्रं साऽन्नं कुम्भं फलान्वितम्। पितृभ्यः सम्प्रदास्यामि अक्षय्यमुपतिष्ठतु॥** पात्रता— **सुभुक्तमपि विद्वांसं धार्मिकं भोजयेद् द्विजम्। न तु मूर्खमवृत्तस्थं दशरात्रमुपोषितम्॥**—कूर्मपु. २।२६।६३; **वेदविद्वेषिणश्चैव द्विजविद्वेषिणस् तथा। स्वकर्मत्यागिनश् चैव दत्तं भवति निष्फलम्॥**—स्कन्द.वैष्णव.१।२२।५-६।

अज्ञानी बध्यते नित्यं कर्मभिर् बन्धनात्मकैः। कुर्वन्नेवेह कर्माणि ज्ञानी मुक्तिं प्रयाति हि॥—स्कन्दपुराण नागरखण्ड २६३।१७।

११ २०७४।१।२२ प्रातः ६:००

सू	०:२०:३७:४४	५८:०१	**शु**	११:०९:१७:०७	४०:१८
म	१:१५:१५:१८	४०:५०	**श**	८:०३:०१:१९	-२:५७
बु	०:००:१५:०४	२४:३३	**रा**	४:०५:३४:२०	३:११
बृ	५:२०:५७:४१	-५:२०			

म २
१२ शु
३
सू १ बु
११ के
४
१०
५ रा
७
९ श
६ बृ
८

_वैदिकतिथिपत्रे_ कलिसंवत्५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, ग्रीष्मः ऋतुः, प्रथमशुचिः [प्रथमाषाढः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **मेषमास-वृषमासौ** (वैशाख-जेठ), **ज्येष्ठकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, वछलागाः=वैशाखकृष्णपक्षः) [मे, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ वैशाख २९ – जेठ ११
प्रतिपदा	बाल.	१	५:४३	**अनु**	**२४।१७**	**२५:०९**	अ.	२०:२४	प.	१७:५६	राक्षसः	वृश्चिकः	१३:२७	५:१७	१८:४४	१४३	**शु**	**२९**	12	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	२	८:०६	**ज्ये**	**२५।४**	**२५:२६**	ज्ये.	२३:२२	शि.	१८:५२	मुसल.	२३:२२	१३:२८	५:१६	१८:४४	१४४	**श**	**३०**	13	अगस्त्यास्तमयः१२।३९ **(१०:२२)**
तृतीया	वाणि.	३	१०:३१	**मू**	**२५।११**	**२५:४३**	मू.	२६:१९	सि.	१९:४८	सिद्धिः	धनुः	१३:३०	५:१५	१८:४५	१४५	**आ**	**३१**	14	वृषे सूर्यः ५२।३२ (२६:१८)
चतुर्थी	बवम्	४	१२:५३	**पूषा**	**२५।१९**	**२६:००**	पू.	२९:०७	सा.	२०:३९	उत्पातः	धनुः	१३:३१	५:१५	१८:४६	१४६	**सो**	**१**	15	**वृषमासप्रारम्भः (जेठ) २०७४**
पञ्चमी	कौल.	५	१५:०२	**उषा**	**२६।६**	**२६:१८**	उ.	अहोरात्र	शु.	२१:१९	मानसम्	११:४७	१३:३२	५:१४	१८:४६	१४७	**म**	**२**	16	
षष्ठी	गराजिः	६	१६:४७	**श्र**	**२६।१४**	**२६:३५**	उ.	७:३८	शु.	२१:३८	मुद्गरः	मकरः	१३:३३	५:१४	१८:४	१४८	**बु**	**३**	17	
सप्तमी	विष्टिः	७	१७:५९	**ध**	**२७।१**	**२६:५२**	श्र.	९:३९	ब्र.	२१:३१	ध्वजः	२२:२६	१३:३४	५:१३	१८:४	१४९	**बृ**	**४**	18	
अष्टमी	बाल.	८	१८:२८	**श**	**२७।८**	**२७:०९**	ध.	११:०१	ऐ.	२०:४९	धाता	कुम्भः	१३:३५	५:१३	१८:४	१५०	**शु**	**५**	19	
नवमी	तैति.	९	१८:०८	**पूभ**	**२७।१६**	**२७:२६**	श.	११:३७	वै.	१९:२७	आनन्दः	कुम्भः	१३:३६	५:१२	१८:४	१५१	**श**	**६**	20	सायनमिथुने सूर्यः ☼
दशमी	वाणि.	१०	१६:५७	**उभ**	**२८।३**	**२७:४३**	पू.	११:२३	वि.	१७:२६	चरः	५:३२	१३:३७	५:१२	१८:४	१५२	**आ**	**७**	21	☼**४०।५८ (२१:३७)**
एकादशी	बवम्	११	१४:५८	**रे**	**२८।१०**	**२८:०१**	उ.	१०:२१	प्री.	१४:४५	गदः	मीनः	१३:३८	५:११	१८:५०	१५३	**सो**	**८**	22	पौराणिकानाम् अपरा एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	१२:१७	**अ**	**२८।१**	**२८:१**	रे.	८:३५	आ.	११:३०	शुभः	८:३५	१३:३९	५:११	१८:५०	१५४	**म**	**९**	23	◉ मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम्, पौराणिकानां वटसावित्रीव्रतम्
त्रयोदशी	गराजिः	१३	९:०२	**भ**	**२९।५**	**२८:३५**	अ.	६:१४ २७:२८	सौ.	७:४६ २७:५१	मृत्युः	मेषः	१३:४०	५:११	१८:५१	१५५	**बु**	**१०**	24	● **स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्**, हल-कण्डनी-यन्त्रक- ◉
अमावास्या	चतुष्.	१४	५:२४ २५:३३	**कृ**	**२९।१२**	**२८:५२**	कृ.	२४:२६	अ.	२३:२७	लुम्बः	८:४३	१३:४१	५:१०	१८:५१	१५६	**बृ**	**११**	25	सावित्रीचतुर्दशी (सिठिचह्लेपूजा), **श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः**,●

धर्मगुरु

गृहस्थ पण्डित उपाध्याय ब्राह्मण नै वैदिक-सनातन-वर्णाश्रमधर्मानुयायी-हरुका गुरु हुन्। **वैदिक तिथिपत्र**को प्रचारप्रसारमा र ब्राह्मणहरुको मुख्य पर्व **उपाकर्म (जनैपूर्णिमा)** वैदिक निर्देशअनुसार ठिक समयमा मनाउने विषयमा पनि चेतना जगाउनु उनि-हरुको कर्तव्य हो।

(**उपाकर्म**का विषयमा एसै *वैदिक तिथपत्र*को ३२औँ पृष्ठ हेर्नुहोस्।)

प्रथमशुचिकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५९५४, प्रथमशुचिकृष्णषष्ठ्यां कृत्तिकासु सूर्यः ८।३ (११:४६)।

अन्नशुद्धिः– **अन्नशुद्धौ सत्त्वशुद्धिर् न मृदा न जलेन वै। सत्त्वशुद्धौ भवेत् सिद्धिस् ततोऽन्नं परिशोधयेत्॥**–लिङ्गपुराण १।८५।१४०।

आत्मगुणाः– **अथाऽष्टावात्मगुणाः– दया सर्वभूतेषु क्षान्तिरनसूया शौचमनायासो मङ्गलमकार्पण्यमस्पृहेति।**–गौतमधर्मसूत्र १।८।२३–२४।

आचार्यलक्षणम्– **स्वयमाचरते यस्तु आचारे स्थापयत्यपि। आचिनोति च शास्त्रार्थानाचार्यस् तेन चोच्यते॥**–लिङ्गपुराण २।१९।२०।

स्वस्थः– **समदोषः समाग्निश् च समधातुमलक्रियः। प्रसन्नाऽऽत्मेन्द्रिय-मनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥**–सुश्रुतसंहिता १।१५।४४।

नरो हिताऽऽहार-विहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः। दाता समः सत्यपरः क्षमावानाप्तोपसेवी च भवत्यरोगः॥–चरकसंहिता शारीरस्थान २।४५।

१२ २०७४।२।७ प्रातः ६:००

सू १:०५:५९:३०	५७:३९	**शु**	११:२०:५३:५८	५२:५९
म १:२६:०१२०	४०:१५	**श**	८:०२:०४:५५	-३:५५
बु ०:१०:३९:१५	७८:०५	**रा**	४:०४:३८:२८	३:११
बृ ५:१९:३६:५९	-२:४७			

३ | १बु | ४ | सू २ म | १२शु | ५ रा | ११ के | ६ बृ | ८ | १० | ७ | ९ श

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५–९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम् , ग्रीष्मः ऋतुः, द्वितीयशुचिः [द्वितीयाषाढः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **वृषमासः** (जेठ), **ज्येष्ठशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, तछलाथ्वः=ज्येष्ठशुक्लपक्षः) [मे-जुन, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ जेठ १२ – २६
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	२१:३९	**रो**	**२९।२०**	**२९:०९**	रो.	२१:२२	सु.	१९:०९	मित्रम्	वृषः	१३:४२	५:१०	१८:५२	१५७	**शु**	**१२**	**26**	**श्रौतिनां वैदिकानांदर्शेष्टिः, वैदिकाधिकमासारम्भः (अंहसस्पतिमासारम्भः)**✧
द्वितीया	बाल.	२	१७:५४	**मृ**	**अहोरात्र**	**अहोरात्र**	मृ.	१८:२७	धृ.	१४:५७	वज्रम्	७:५३	१३:४३	५:१०	१८:५२	१५८	**श**	**१३**	**27**	✧ पौराणिकानामग्निव्रतम्, गोस्वामिकुण्ड-स्नानारम्भः (गोसाइँकुण्डमा ❍
तृतीया	तैति.	३	१४:२८	**मृ**	**०।७**	**५:२६**	आ.	१५:५१	शू.	१०:५९	ध्वाङ्क्षः	मिथुनम्	१३:४४	५:०९	१८:५३	१५९	**आ**	**१४**	**28**	रम्भातृतीया
चतुर्थी	वाणि.	४	११:३०	**आ**	**०।१४**	**५:४३**	पुन	१३:४४	ग.	७:२४ २८:३०	धूम्रः	८:१३	१३:४४	५:०९	१८:५४	१६०	**सो**	**१५**	**29**	❍ स्नानको प्रारम्भ) पौराणिकानां गङ्गादशहरास्नानारम्भः
पञ्चमी	बवम्	५	९:०९	**पुन**	**१।१**	**६:०१**	पु.	१२:१५	ध्रु.	२५:४७	वर्धमा.	कर्कटः	१३:४५	५:०९	१८:५४	१६१	**म**	**१६**	**30**	
षष्ठी	कौल.	६	७:३०	**पु**	**१।९**	**६:१८**	अ.	११:३०	व्या.	२३:५३	राक्षसः	११:३०	१३:४६	५:०९	१८:५	१६२	**बु**	**१७**	**31**	पौराणिकानां कुमारषष्ठी (सिठिनखः), विन्ध्यवासिनीपूजा
सप्तमी	गराजिः	७	६:३९	**अ**	**१।१६**	**६:३५**	म.	११:३०	ह.	२२:३७	मुसल.	सिंहः	१३:४७	५:०८	१८:५	१६३	**बृ**	**१८**	**1**	कुमारयात्रा, **जुन**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रैस्ताब्दः)
अष्टमी	विष्टिः	८	६:३३	**म**	**२।३**	**६:५२**	पू.	१२:१६	व.	२१:५५	सिद्धिः	१८:३५	१३:४७	५:०८	१८:५६	१६४	**शु**	**१९**	**2**	पौराणिकानां वाय्वष्टमी
नवमी	बाल.	९	७:१०	**पूफ**	**२।१०**	**७:०९**	उ.	१३:४२	सि.	२१:४३	उत्पातः	कन्या	१३:४८	५:०८	१८:५६	१६५	**श**	**२०**	**3**	
दशमी	तैति.	१०	८:२२	**उफ**	**२।१८**	**७:२६**	ह.	१५:४०	व्य.	२१:५६	मानसम्	२८:४९	१३:४९	५:०८	१८:५१	१६६	**आ**	**२१**	**4**	पौराणिकाानां गङ्गादशहरा (गङ्गादशमी)
एकादशी	वाणि.	११	१०:०२	**ह**	**३।५**	**७:४४**	चि.	१८:०३	व.	२२:२६	मुद्गरः	तुला	१३:४९	५:०८	१८:५	१६७	**सो**	**२२**	**5**	पौराणिकानां निर्जला एकादशी, तुलसीबीजरोपणम्
द्वादशी	बवम्	१२	१२:०१	**चि**	**३।१२**	**८:०१**	स्वा.	२०:४२	प.	२३:०९	ध्वजः	तुला	१३:५०	५:०८	१८:५	१६८	**म**	**२३**	**6**	
त्रयोदशी	कौल.	१३	१४:१४	**स्वा**	**३।१९**	**८:१८**	वि.	२३:३२	शि.	२४:००	धाता	१६:५०	१३:५०	५:०८	१८:५	१६९	**बु**	**२४**	**7**	
चतुर्दशी	गराजिः	१४	१६:३३	**वि**	**४।६**	**८:३५**	अ.	२६:२७	सि.	२४:५५	आनन्दः	वृश्चिकः	१३:५१	५:०८	१८:५	१७०	**बृ**	**२५**	**8**	○ मन्वादिः, गैडुपूजा, पौराणिकानां वटसावित्रीव्रतम् (पूर्णिमापक्ष)
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	१८:५५	**अनु**	**४।१३**	**८:५२**	ज्ये.	अहोरात्र	सा.	२५:५१	चरः	वृश्चिकः	१३:५१	५:०८	१८:५	१७१	**शु**	**२६**	**9**	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** पौराणिकानां मष्टपूर्णिमा (ज्यापुह्नि), ○

द्वितीयशुचिशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५९६८, द्वितीयशुचिशुक्लपञ्चम्यां रोहिण्यां सूर्यः २४।२ (२४:२६)।

भोजननियमः— **न लोभान् नाऽप्यविज्ञानादाहारमुपयोजयेत्। परीक्ष्य हितमश्नीयाद् देहो ह्याहारसम्भवः॥**—चरकसंहिता। **हिताशी स्यान् मिताशी स्यात् कालभोजी जितेन्द्रियः। पश्यन् रोगान् बहून् कष्टान् बुद्धिमान् विषमाशनात्॥**—चरकसंहिता। अधिकमासः— **द्व्यूनं द्विषष्टिभागेन दिनं सौराच्च पार्वणम्। यत्कृतावुपजायेते मध्येऽन्ते चाऽधिमासकौ॥**—वेदाङ्गज्योतिष ३७। अधिकमासमा नित्यनैमित्तिक कर्म गर्न पर्छ, काम्य कर्म थाल्न हुँदैन— **तत्राऽनन्यगतिं कुर्यान् नित्यां नैमित्तिकीं क्रियाम्। न त्वारभेत विबुधः काम्ययज्ञव्रतादिकम्॥**—वैदिक-मन्त्र-सङ्ग्रह, १३७ पृ.।

१३ २०७४।२।२२ प्रातः ६:००

सू १:२०:२३:०८ 　 ५७:२३ 　 **शु** ०:०४:३४:२७ 　 ५९:५३

म २:०६:०३:२४ 　 ३९:४६ 　 **श** ८:०१:०४:१५ 　 -४:२२

बु १:०२:२३:२५ 　 ११५:२३ 　 **रा** ४:०३:५१:४७ 　 ३:११

बृ ५:१९:०४:३१ 　 -०:०६ 　 **२।२६–१९:३१ गुरु मार्गी**

२।२७–१७:५३ बुध पू. अस्त

३ म
१ शु
४
सू २ बु
१२
५ रा
११ के
६ बृ
८
१०
७
९ श

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत्५०८२, सौम्यं युगम्(८५-९), परिवत्सरः(२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), उदगयनम्, ग्रीष्मःऋतुः, द्वितीयशुचिः [द्वितीयाषाढः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **वृषमास-मिथुनमासौ** (जेठ-असार), **आषाढकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, तछलागाः=ज्येष्ठकृष्णपक्षः) [जुन, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ जेठ २७ – असार ९
प्रतिपदा	बाल.	१	२१:१६	ज्ये	५।०	९:०९	ज्ये.	५:२४	शु.	२६:४४	मुसल.	५:२४	१३:५२	५:०८	१८:५९	१७२	श	२७	10	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	२	२३:३०	मू	५।८	९:२७	मू.	८:१६	शु.	२७:३२	सिद्धिः	धनुः	१३:५२	५:०८	१८:५९	१७३	आ	२८	11	
तृतीया	वाणि.	३	२५:३२	पूषा	५।१५	९:४४	पू.	११:०१	ब्र.	२८:११	उत्पातः	१७:४१	१३:५२	५:०८	१९:००	१७४	सो	२९	12	
चतुर्थी	बवम्	४	२७:१८	उषा	६।२	१०:०१	उ.	१३:३३	ऐ.	२८:३६	मानसम्	मकरः	१३:५३	५:०८	१९:००	१७५	म	३०	13	
पञ्चमी	कौल.	५	२८:३८	श्र	६।९	१०:१८	श्र.	१५:४४	वै.	२८:४२	छत्रम्	२८:४१	१३:५३	५:०८	१९:०१	१७६	बु	३१	14	
षष्ठी	गराजिः	६	अहोरात्र	ध	६।१६	१०:३५	ध.	१७:२९	वि.	२८:२३	श्रीवत्सः	कुम्भः	१३:५३	५:०८	१९:०१	१७७	बृ	१	15	**मिथुनमासप्रारम्भः (असार) २०७४,** मिथुने सूर्यः १८।१ (१२:२२)
सप्तमी	विष्टिः	६	५:२६	श	७।३	१०:५२	श.	१८:३७	प्री.	२७:३२	सौम्यः	कुम्भः	१३:५३	५:०८	१९:०१	१७८	शु	२	16	
अष्टमी	बाल.	७	५:३५ २८:५८	पूभ	७।१०	११:०९	पू.	१९:०३	आ.	२६:०६	कालद.	१३:०२	१३:५३	५:०८	१९:०२	१७९	श	३	17	**☼सायनकर्कटे सूर्यः ११।३५ (१०:१३)**
नवमी	तैति.	९	२७:३५	उभ	७।१७	११:२७	उ.	१८:४४	सौ.	२४:०३	स्थिरः	मीनः	१३:५४	५:०८	१९:०२	१८०	आ	४	18	**✧यनको आरम्भ) दक्षिणायनसङ्क्रान्तिः,** योगदिवसः,☼
दशमी	वाणि.	१०	२५:२८	रे	८।४	११:४४	रे.	१७:४१	शो.	२१:२३	मातङ्ग	१७:४१	१३:५४	५:०८	१९:०२	१८१	सो	५	19	◉परिहारदिनम्, **वैदिकाधिकमाससमाप्तिः (अंहसस्पतिमाससमाप्तिः)**
एकादशी	बवम्	११	२२:४३	अश्व	८।१२	१२:०१	अ.	१५:५६	अ.	१८:११	अमृतम्	मेषः	१३:५४	५:०९	१९:०२	१८२	म	६	20	पौराणिकानां योगिनी एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	१९:२८	भ	८।१९	१२:१८	भ.	१३:३८	सु.	१४:३२	काणः	१९:००	१३:५४	५:०९	१९:०३	१८३	बु	७	21	**दृक्सिद्ध-वैदिक-सौर-दक्षिणायनारम्भः (वास्तविक सौर दक्षिणा-** ✧
त्रयोदशी	गराजिः	१३	१५:५२	कृ	९।६	१२:३५	कृ.	१०:५६	धृ.	१०:३४	लुम्बः	वृषः	१३:५४	५:०९	१९:०३	१८४	बृ	८	22	भूमिरजः ●**दर्शश्राद्धम्,** हल-कण्डनी-यन्त्रक- मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-◉
अमावास्या	चतुष्.	१४	१२:०५	रो	९।१३	१२:५२	रो.	८:०१ २९:०४	शू.	६:२५ २६:०५	मित्रम्	१८:३३	१३:५४	५:०९	१९:०३	१८५	शु	९	23	(दिलाचह्रे), **श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां** ●

सङ्कल्प

वैदिक धार्मिक कार्यका सङ्कल्पमा वेदाङ्गज्योतिषले निर्दिष्ट गरेअनुसारका युग, वर्ष, अयन, ऋतु, महिना, पक्ष, तिथि र नक्षत्रको उल्लेख गर्न आवश्यक हुन्छ। वैदिक सङ्कल्प एसै तिथिपत्रमा पछाडि दिइएको छ।

द्वितीयशुचिकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५५९८३, द्वितीयशुचिकृष्णचतुर्थ्यां मृगशीर्षे सूर्यः ९।२० (१३:०७)।

योगः– **युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥**—गीता ६।१७।

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः। न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः।—मनुस्मृति २।९८।

वेदाऽनुवचनं यज्ञो ब्रह्मचर्यं तपो दमः। श्रद्धोपवासः स्वातन्त्र्यमात्मनो ज्ञानहेतवः॥—याज्ञ. ३।१९०। **गार्भैर् होमैर् जातकर्मचौडमौञ्जीनिबन्धनैः। बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते॥ स्वाध्यायेन व्रतैर् होमैस् त्रैविद्येनेज्यया सुतैः। महायज्ञैश् च यज्ञैश् च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः॥**—मनुस्मृति २।२७-२८।

अयने विषुवे वाऽपि सङ्क्रान्तिव्रतमाचरेत्।—मत्स्यपुराण ९८।२।

१४ २०७४।३७ प्रातः ६:००

सू	२:०५:३५:३१	५७:१४	शु	०:२०:४२:३१	६३:५६
म	२:१६:३२:४७	३९:१९	श	७:२९:४९:०३	-४:१९
बु	२:०४:५२:४१	१२९:२६	रा	४:०:५४:५४	३:११
बृ	५:१९:०९:१८	२:४३	**३।१८–२२:५४ बुध प. उदय**		

४ २
५रा सू ३ म बु १शु
६ बृ १२
७ ९ ११के
८ श १०

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम् , वर्षाः ऋतुः, नभाः [श्रावणः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **मिथुनमासः** (असार), **आषाढशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, दिल्लाथ्वः=आषाढशुक्लपक्षः) [जुन-जुलाइ, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ असार १० – २४
प्रतिपदा	कौस्तु.	३०	८:१८ २८:४१	मृ	१०।०	१३:१०	आ.	२६:१४	वृ.	२२:०५	मुद्गरः	मिथुनम्	१३:५४	५:०९	१९:०३	१८६	श	१०	24	श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकदक्षिणायनारम्भः वैदिकवर्षर्त्वारम्भः ☾
द्वितीया	बाल.	२	२५:२३	आ	१०।७	१३:२७	पुन	२३:४४	ध्रु.	१८:१३	ध्वजः	१८:२०	१३:५३	५:१०	१९:०३	१८७	आ	११	25	☾(दक्षिणाायनको र वैदिक ◈
तृतीया	तैति.	३	२२:३५	पुन	१०।१४	१३:४४	पु.	२१:४२	व्या.	१४:४२	धाता	कर्कटः	१३:५३	५:१०	१९:०३	१८८	सो	१२	26	◈ वर्षा ऋतुको आरम्भ),❖
चतुर्थी	वाणि.	४	२०:२३	पु	११।१	१४:०१	अ.	२०:१८	ह.	११:४०	आनन्दः	२०:१८	१३:५३	५:१०	१९:०३	१८९	म	१३	27	
पञ्चमी	बवम्	५	१८:५५	अ	११।८	१४:१८	म.	१९:३६	व.	९:११	चरः	सिंहः	१३:५३	५:११	१९:०४	१९०	बु	१४	28	
षष्ठी	कौल.	६	१८:१५	म	११।१५	१४:३५	पू.	१९:४१	सि.	७:२०	गदः	२५:५०	१३:५२	५:११	१९:०४	१९१	बृ	१५	29	
सप्तमी	गराजिः	७	१८:२१	पूफ	१२।२	१४:५२	उ.	२०:३३	व्य.	६:०७	शुभः	कन्या	१३:५२	५:११	१९:०४	१९२	शु	१६	30	
अष्टमी	विष्टिः	८	१९:११	उफ	१२।९	१५:१०	ह.	२२:०६	व.	५:३१	मृत्युः	कन्या	१३:५२	५:१२	१९:०४	१९३	श	१७	1	**जुलाइ**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रैस्ताब्दः)
नवमी	बाल.	९	२०:३८	हस्तः	१२।१६	१५:२७	चि.	२४:१५	प.	५:२६	पद्मम्	११:०७	१३:५२	५:१२	१९:०४	१९४	आ	१८	2	❖पौराणिकानामग्निव्रतम्
दशमी	तैति.	१०	२२:३३	चित्रा	१३।३	१५:४४	स्वा.	२६:५०	शि.	५:४८	छत्रम्	तुला	१३:५१	५:१२	१९:०४	१९५	सो	१९	3	पौराणिकानां मन्वादिः
एकादशी	वाणि.	११	२४:४७	स्वातिः	१३।१०	१६:०१	वि.	अहोरात्र	सि.	६:२९	श्रीवत्सः	२२:५७	१३:५१	५:१३	१९:०४	१९६	म	२०	4	पौराणिकानां हरिशयनी एकादशी, तुलसीरोपणम्
द्वादशी	बवम्	१२	२७:०९	वि	१३।१७	१६:१८	वि.	५:४०	सा.	७:२१	धाता	वृश्चिकः	१३:५०	५:१३	१९:०३	१९७	बु	२१	5	¤ मठधारिणां तान्त्रिकाणां वैष्णवादीनां सन्न्यासिनां **गुरुपूर्णिमा**, व्यासजयन्ती
त्रयोदशी	कौल.	१३	अहोरात्र	अनु	१४।४	१६:३५	अ.	८:३८	शु.	८:१९	आनन्दः	वृश्चिकः	१३:५०	५:१४	१९:०३	१९८	बृ	२२	6	○**अध्यायोपाकर्म (जनैपूर्णिमा)**, पौराणिकानां चातुर्मास्यव्रतारम्भः ¤
चतुर्दशी	गराजिः	१३	५:३२	ज्येष्ठा	१४।११	१६:५३	ज्ये.	११:३६	शु.	९:१६	चरः	११:३६	१३:४९	५:१४	१९:०३	१९९	शु	२३	7	द्विजानां प्रायश्चित्तकर्मानुष्ठानदिनम्
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	७:४९	मू	१४।१८	१७:१०	मू.	१४:२४	ब्र.	१०:०७	गदः	धनुः	१३:४९	५:१५	१९:०३	२००	श	२४	8	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानां श्रवणाकर्म (सर्पबलिः),**○

उपाकर्म (जनैपूर्णिमा)

उपाकर्म वर्षा ऋतु आरम्भ भएर ओषधि-वनस्पतिहरु उम्रन थाले पछिको पूर्णिमामा गर्न पर्ने निर्देश छ (पारस्करगृह्यसूत्र २।१०)। तेसैले यो पर्व शास्त्रनिर्दिष्ट ठिक समयमा मनाउने चेतना फैलाउन आवश्यक छ।

सौरचान्द्र अयन

धार्मिक कार्यका लागि सौर अयन नलिएर एस वैदिक तिथि-पत्रमा जस्तो सौर अयन-सापेक्ष शुक्लप्रतिपदाबाटप्रारम्भ हुने चान्द्र अयन नै लिन पर्छ। एस वर्ष असार १० गतेदेखि सङ्कल्पमा **"दक्षिणायने वर्षासु ऋतौ"** भन्न पर्छ।

नभःशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः१८५५९९७, नभःशुक्लतृतीयायाम् आर्द्रायां सूर्यः **२५।१६ (२५:४७)।**

अध्यायोपाकर्म— अथातोऽध्यायोपाकर्मौषधीनां प्रादुर्भावे श्रवणेन श्रावण्यां पौर्णमास्यां श्रावणस्य पञ्चमीं हस्तेन वा॥–पारस्करगृह्यसूत्र २।१०, **अध्यायानामुपाकर्म श्रावण्यां श्रवणेन वा। हस्तेनौषधिभावे वा पञ्चम्यां श्रावणस्य तु।**–याज्ञवल्क्यस्मृति १।१४२। **यज्ञोपवीतपूर्णिमा (जनैपूर्णिमा)—** अध्यायोपाकर्मका दिनलाइ जनैपूर्णिमा मानेर यज्ञोपवीताऽभिमन्त्रण गर्नु र नूतनयज्ञोपवीतधारण गर्नु उचित हुञ्छ। एसै दिन **रक्षाबन्धन** पनि गर्न हुञ्छ। नूतनयज्ञोपवीतधारणमन्त्रः— **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥** अथवा **ओ३म् भूर्भुवःस्वः।** पुराणयज्ञोपवीतत्यागमन्त्रः— **एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया। जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्॥** अथवा **ओ३म् समुद्रङ्ग् गच्छ स्स्वाहा।** चार मैना पुरानो जनै फेर्न पर्छ— **सूतके मृतके चैव गते मासचतुष्टये। नवयज्ञोपवीतानि धृत्वा जीर्णानि सन्त्यजेत्॥**

१५ २०७४।३।२२ प्रातः ६:००

सू	२:१९:५३:४७	५७:१३	शु	१:०६:५१:२२	६६:३४
म	२:२६:२१:१०	३९:०३	श	७:२८:४५:५६	-३:४६
बु	३:०५:४५:०७	१०२:३५	रा	४:०२:०७:१३	३:११
बृ	५:१९:५८:४४	५:०८			

४ बु
२ शु
५ रा
सू ३ म
१
६ बृ
१२
७
९
११ के
८ श
१०

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, वर्षाः ऋतुः, नभाः [श्रावणः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **मिथुनमास-कर्कटमासौ** (असार-साउन), **श्रावणकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, दिल्लागाः=आषाढकृष्णपक्षः) [जुलाइ, २०१७क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ असार २५ – साउन ८
प्रतिपदा	बाल.	**१५**	९:५३	**पूषा**	**१५।५**	**१७:२७**	पू.	१७:०१	ऐ.	१०:४९	शुभः	२३:३८	१३:४८	५:१५	१९:०३	२०१	**आ**	**२५**	9	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः, निरूढपशुबन्धः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	**१**	११:४२	**उषा**	**१५।१२**	**१७:४४**	उ.	१९:२१	वै.	११:१८	मृत्युः	मकरः	१३:४७	५:१६	१९:०३	२०२	**सो**	**२६**	10	**सौर अयन–** अरु पात्राहरुमा दिनमान लेख्ता असार ७ गतेबाट दिनमान घट्न थालेको कुरा लेख्तालेख्तै पनि दक्षिणायनको आरम्भ कर्कटमास (साउन) १ गते लेख्ने गरेको कुरा अयथार्थ र अनुचित हो।
तृतीया	वाणि.	**२**	१३:११	**श्र**	**१५।१९**	**१८:०१**	श्र.	२१:२२	वि.	११:३३	लुम्बः	मकरः	१३:४७	५:१६	१९:०३	२०३	**म**	**२७**	11	
चतुर्थी	बवम्	**३**	१४:१८	**ध**	**१६।६**	**१८:१८**	ध.	२३:००	प्री.	११:३०	मित्रम्	१०:१५	१३:४६	५:१६	१९:०२	२०४	**बु**	**२८**	12	
पञ्चमी	कौल.	**४**	१५:००	**श**	**१६।१२**	**१८:३५**	श.	२४:१३	आ.	११:०८	वज्रम्	कुम्भः	१३:४५	५:१७	१९:०२	२०५	**बृ**	**२९**	13	लौकिकानां भानुजयन्ती [२०४ औँ] (सौरमानेन)
षष्ठी	गराजि	**५**	१५:१३	**पूभ**	**१६।१९**	**१८:५३**	पू.	२४:५५	सौ.	१०:२४	ध्वाङ्क्षः	१८:४८	१३:४४	५:१७	१९:०२	२०६	**शु**	**३०**	14	
सप्तमी	विष्टिः	**६**	१४:५३	**उभ**	**१७।६**	**१९:१०**	उ.	२५:०४	शो.	९:१४	धूम्रः	मीनः	१३:४४	५:१८	१९:०२	२०७	**श**	**३१**	15	रविसप्तमी
अष्टमी	बाल.	**७**	१३:५८	**रे**	**१७।१३**	**१९:२७**	रे.	२४:३८	अ.	७:३६	वर्धमा.	२४:३८	१३:४३	५:१८	१९:०१	२०८	**आ**	**१**	16	**कर्कटमासप्रारम्भः (साउन) २०७४,** कर्कटे सूर्यः ५६।९ (२७:४७),✧
नवमी	तैति.	**८**	१२:२६	**अ**	**१८।०**	**१९:४४**	अ.	२३:३६	सु.	५:२९ २६:४७	राक्षसः	मेषः	१३:४२	५:१९	१९:०१	२०९	**सो**	**२**	17	✧ लौकिकहरुको लुतो फाल्ने दिन लौकिकानां भानुजयन्ती (नभःकृष्णाष्टमी)
दशमी	वाणि.	**९**	१०:२०	**भ**	**१८।७**	**२०:०१**	भ.	२२:०१	शू.	२३:५२	मुसल.	२७:३३	१३:४१	५:१९	१९:००	२१०	**म**	**३**	18	
एकादशी	बवम्	**१०**	७:४४ २८:४५	**कृ**	**१८।१४**	**२०:१८**	कृ.	१९:५९	ग.	२०:२८	सिद्धिः	वृषः	१३:४०	५:२०	१९:००	२११	**बु**	**४**	19	पौराणिकानां कामिका एकादशी
द्वादशी	कौल.	**१२**	२५:२९	**रो**	**१९।१**	**२०:३६**	रो.	१७:३८	वृ.	१६:४८	उत्पातः	२८:२३	१३:३९	५:२१	१९:००	२१२	**बृ**	**५**	20	**☼सायनसिंहे सूर्यः ४८।१९ (२४:४१)**
त्रयोदशी	गराजिः	**१३**	२२:०५	**मृ**	**१९।८**	**२०:५३**	मृ.	१५:०६	ध्रु.	१२:५९	मानसम्	मिथुनम्	१३:३८	५:२१	१८:५९	२१३	**शु**	**६**	21	● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजनपरिहारदिनम्
चतुर्दशी	विष्टिः	**१४**	१८:४३	**आ**	**१९।१५**	**२१:१०**	आ.	१२:३२	व्या.	९:०८ २९:१७	मुद्गरः	२८:४२	१३:३७	५:२२	१८:५९	२१४	**श**	**७**	22	पौराणिकानां घण्टाकर्णचतुर्दशी (गठामगुचह्रे) ☼
अमावास्या	चतुष्.	**३०**	१५:३२	**पुन**	**२०।२**	**२१:२७**	पुन	१०:०७	व.	२५:४८	ध्वजः	कर्कटः	१३:३६	५:२२	१८:५८	२१५	**आ**	**८**	23	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,●**

नभःकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६०१२, नभःकृष्णद्वितीयायां पुनर्वस्वोः **सूर्यः ११।१० (१४:२८)**। नभोमासामावास्यायां पुष्ये (तिष्ये) सूर्यः **२७।४ (२७:०८)**। अनध्यायाः– **वातेऽमावास्यायां सर्वानध्यायः**।–पारस्करगृ.सू. २।११।१। **अमावास्या गुरुं हन्ति शिष्यं हन्ति चतुर्दशी। ब्रह्माऽष्टमी-पौर्णमास्यौ तस्मात् ताः परिवर्जयेत्॥**–मनुस्मृति ४।११४। वैदिक शास्त्रमा अमावास्याका (औँसिका) दुइ भेद बताइएको छ– **सिनीवाली** र **कुहू**। अमावास्याका दिन प्रातःकालमा सूर्योदयभन्दा पैलेइ चन्द्रमा सारै साना रेखारूप देखिए तेस्तो अमावास्यालाइ **सिनीवाली** अमावास्या भन्दछन्, चन्द्रमा कत्ति पनि नदेखिए **कुहू** अमावास्या भन्दछन्। **तद् धैके दृष्ट्वोपवसन्ति श्वो नोदेतेति**।–मा.वा.शु.य.वे.शतपथब्राह्मण (११।१।४।१-४)। **दृष्टचन्द्राममावास्यां सिनीवालीं प्रचक्षते। तामेव च कुहूमाहुर् नष्टचन्द्रां महर्षयः॥**–वृद्धवसिष्ठवचन हेमाद्रिकृत चतुर्वर्गचिन्तामणि, परिशेषखण्ड, काल. (पृ.३१५)।

१६ २०७४।४।७ प्रातः ६:००

सू	३:०५:०४:२७	५७:१९	**शु**	१:२४:४०:०५	६८:३७
म	३:०६:३८:०६	३८:३८	**श**	७:२७:४४:३४	-२:४३
बु	४:००:४९:५१	६८:११	**रा**	४:०१:११:२०	३:११
बृ	५:२१:३५:०४	७:२२			

४ बु
२ शु
५ रा
सू ३ म
१
६ बृ
१२
७
९
११ के
८ श
१०

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५–९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, वर्षाः ऋतुः, नभस्यः [भाद्रः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **कर्कटमासः** (साउन), **श्रावणशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, गुंलाथ्वः=श्रावणशुक्लपक्षः) [जुलाइ-अगष्ट, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ साउन ९ – २३
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	१२:४१	पु	२०।९	२१:४४	पु.	७:५८	सि.	२२:३५	धाता	कर्कटः	१३:३५	५:२३	१८:५८	२१६	सो	९	24	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	बाल.	२	१०:१७	अ	२०।१६	२२:०१	अ.	६:१७ २९:०९	व्य.	१९:४७	आनन्दः	६:१७	१३:३४	५:२३	१८:५७	२१७	म	१०	25	
तृतीया	तैति.	३	८:२९	म	२१।३	२२:१८	पू.	२८:४१	व.	१७:३१	स्थिरः	सिंहः	१३:३३	५:२४	१८:५७	२१८	बु	११	26	पौराणिकानां वराहजयन्ती
चतुर्थी	वाणि.	४	७:२२	पूफ	२१।९	२२:३६	उ.	२८:५८	प.	१५:५०	मातङ्ग	१०:४२	१३:३२	५:२४	१८:५६	२१९	बृ	१२	27	
पञ्चमी	बवम्	५	७:००	उफ	२१।१६	२२:५३	ह.	अहोरात्र	शि.	१४:४४	अमृतम्	कन्या	१३:३१	५:२५	१८:५६	२२०	शु	१३	28	पौराणिकानां **नागपञ्चमी**, ✧
षष्ठी	कौल.	६	७:२३	ह	२२।३	२३:१०	ह.	५:५८	सि.	१४:१४	मृत्युः	१८:४५	१३:३०	५:२५	१८:५५	२२१	श	१४	29	✧ कल्किजयन्ती
सप्तमी	गराजिः	७	८:२७	चि	२२।१०	२३:२७	चि.	७:४०	सा.	१४:१५	पद्मम्	तुला	१३:२८	५:२६	१८:५४	२२२	आ	१५	30	रविसप्तमी
अष्टमी	विष्टिः	८	१०:०६	स्वा	२२।१७	२३:४४	स्वा.	९:५५	शु.	१४:४१	छत्रम्	तुला	१३:२७	५:२६	१८:५४	२२३	सो	१६	31	
नवमी	बाल.	९	१२:१०	वि	२३।४	२४:०१	वि.	१२:३५	शु.	१५:२५	श्रीवत्सः	५:५४	१३:२६	५:२७	१८:५३	२२४	म	१७	1	**अगष्ट**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रै.)
दशमी	तैति.	१०	१४:३०	अ	२३।११	२४:१९	अ.	१५:२९	ब्र.	१६:१९	सौम्यः	वृश्चिकः	१३:२५	५:२८	१८:५२	२२५	बु	१८	2	
एकादशी	वाणि.	११	१६:५२	ज्ये	२३।१८	२४:३६	ज्ये.	१८:२६	ऐ.	१७:१५	कालद.	१८:२६	१३:२४	५:२८	१८:५२	२२६	बृ	१९	3	पौराणिकानां पुत्रदा एकादशी
द्वादशी	बवम्	१२	१९:०८	मू	२४।५	२४:५३	मू.	२१:१५	वै.	१८:०६	स्थिरः	धनुः	१३:२२	५:२९	१८:५१	२२७	शु	२०	4	
त्रयोदशी	कौल.	१३	२१:०८	पूषा	२४।१२	२५:१०	पू.	२३:४९	वि.	१८:४५	मातङ्ग	धनुः	१३:२१	५:२९	१८:५०	२२८	श	२१	5	○ हयग्रीवोत्पत्तिः, पौराणिकानां **रक्षाबन्धनम्, खण्डग्रासचन्द्रग्रहणम्**
चतुर्दशी	गराजिः	१४	२२:४६	उषा	२४।१९	२५:२७	उ.	२६:०१	प्री.	१९:०७	अमृतम्	६:२५	१३:२०	५:३०	१८:४९	२२९	आ	२२	6	चित्रायां गुरुः (बृहस्पतिः) ३१।४० (१८:१०)
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	२३:५८	श्र	२५।६	२५:४४	श्र.	२७:४७	आ.	१९:०९	सिद्धिः	मकरः	१३:१८	५:३०	१८:४९	२३०	सो	२३	7	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानाम् इन्द्रयज्ञः**,○

श्राद्धविषयको शुक्लयजुर्वेदशतपथब्राह्मणको वचन

तद् वाऽ एतत्। मासिमास्येव पितृभ्यो ददतो यदैवैष न पुरस्तान् न पश्चाद् ददृशेथैभ्यो ददात्येष वै सोमो राजा देवानामन्नंय् यच् चन्द्रमाः सऽ एताँ रात्रिङ् क्षीयते तस्मिन् क्षीणे ददाति तथैभ्योऽसमदं करोत्यथ यदक्षीणे दद्यात् समदꣳ ह कुर्याद् देवेभ्यश्च पितृभ्यश्च तस्माद् यदैवैष न पुरस्तान् न पश्चाद् ददृशेथैभ्यो ददाति ॥७॥ स वाऽ अपराह्णे ददाति। पूर्वाह्णो वै देवानाम् मद्ध्यन्दिनो मनुष्याणामपराह्णः पितृणान् तस्मादपराह्णे ददाति ॥८॥

—मा.वा.शु.य.वे.शतपथब्राह्मण २।४।२।७-८।

नभस्यशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६०२७, नभस्यशुक्लचतुर्दश्याम् आश्लेषासु सूर्यः १२।१८ (१५:४८)।

सुखाभ्युदयिकं चैव नैश्श्रेयसिकमेव च। प्रवृत्तं च निवृत्तं च द्विविधं कर्म वैदिकम्॥ इह चाऽमुत्र वा काम्यं प्रवृत्तं कर्म कीर्त्यते। निष्कामं ज्ञानपूर्वं तु निवृत्तमुपदिश्यते॥ प्रवृत्तं कर्म संसेव्य देवानामेति साम्यताम्। निवृत्तं सेवमानस् तु भूतान्यत्येति पञ्च वै॥ सर्वभूतेषु चाऽऽत्मानं सर्वभूतानि चाऽऽत्मनि। समं पश्यन्नात्मयाजी स्वाराज्यमधिगच्छति॥—मनुस्मृति १२।८७-९१। श्रद्धा— **श्रद्धया साध्यते धर्मो बहुभिर् नाऽर्थराशिभिः। अकिञ्चना हि मुनयः श्रद्धावन्तो दिवं गताः॥**—मूलगरुडपु.२।१२।३२–३३। **अधीत्य सर्ववेदान् वै सद्यो दुःखाद् विमुच्यते। मानसं हि चरन् धर्मं स्वर्गलोकमुपाऽश्नुते॥**—महाभा. अनु. ७।२०। **अश्रद्धा परमः पाप्मा श्रद्धा हि परमं तपः। तस्मादश्रद्धया दत्तं हविर् नाऽश्नन्ति देवताः॥**—बौधायनध.सू.१।१०६। **अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस् तप्तं कृतं च यत्। असदित्युच्यते पार्थ न च तत् प्रेत्य नो इह॥**—गीता १७।२८। रक्षाबन्धनमन्त्रः— **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥ ओ३म् त्वंय् यंविष्ठ दाशुषो नॄः पांहि शृणुधी गिरंः। रक्षां तोकमुत त्मनां॥**—१३।५२, १८।७७।

१७ २०७४।४।२२ प्रातः ६:००

सू	३:१९:२४:५६	५७:३३	शु	२:११:५४:४२	७०:०७
म	३:१६:१६:५०	३८:२५	श	७:२७:०७:५७	-१:२७
बु	४:१५:१५:३२	१५:३२	रा	४:००:२३:३९	३:११
बृ	५:२३:२१:४५	९:०६			

४।२९–६:४८ बुध वक्री

५।३–२१:०६ बुध प. अस्त

बु ५ रा | ३ शु | ६ बृ | सू ४ म | २ | ७ | १ | ८ श | १० | १२ | ९ | ११ के

वैदिकतिथिपत्रे **कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, वर्षाः ऋतुः, नभस्यः [भाद्रः] मासः, कृष्णः पक्षः**

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **कर्कटमास-सिंहमासौ** (साउन-भदौ), **भाद्रकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, गुंलागाः=श्रावणकृष्णपक्षः) [अगष्ट २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ साउन २४ – भदौ ५
प्रतिपदा	बाल.	१	२४:४२	**ध**	**२५।१३**	**२६:०२**	ध.	२९:०६	सौ.	१८:५०	उत्पातः	१६:३०	१३:१७	५:३१	१८:४८	२३१	**म**	**२४**	8	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, लौकिकानां ☾
द्वितीया	तैति.	२	२४:५८	**श**	**२५।२०**	**२६:१९**	श.	अहोरात्र	शो.	१८:०९	मानसम्	कुम्भः	१३:१६	५:३१	१८:४७	२३२	**बु**	**२५**	9	रोपैँजात्रा ☾ गोयात्रा (गाइजात्रा, सापारु)
तृतीया	वाणि.	३	२४:४८	**पूभ**	**२६।६**	**२६:३६**	श.	५:५८	अ.	१७:०७	वज्रम्	२४:२१	१३:१४	५:३२	१८:४६	२३३	**बृ**	**२६**	10	देवीयात्रा
चतुर्थी	बवम्	४	२४:१३	**उभ**	**२६।१३**	**२६:५३**	पू.	६:२४	सु.	१५:४४	ध्वाङ्क्षः	मीनः	१३:१३	५:३२	१८:४५	२३४	**शु**	**२७**	11	बाघजात्रा
पञ्चमी	कौल.	५	२३:१३	**रे**	**२७।०**	**२७:१०**	उ.	६:२६	धृ.	१४:०१	धूम्रः	मीनः	१३:१२	५:३३	१८:४४	२३५	**श**	**२८**	12	
षष्ठी	गराजिः	६	२१:५०	**अश्व**	**२७।७**	**२७:२७**	रे.	६:०५ २९:२०	शू.	१२:००	वर्धमा.	६:०५	१३:१०	५:३३	१८:४४	२३६	**आ**	**२९**	13	
सप्तमी	विष्टिः	७	२०:०६	**भ**	**२७।१४**	**२७:४४**	भ.	२८:१४	ग.	९:४०	चरः	मेषः	१३:०९	५:३४	१८:४३	२३७	**सो**	**३०**	14	▤ मन्वादिः, हिलेजात्रा
अष्टमी	बाल.	८	१८:०१	**कृ**	**२८।१**	**२८:०२**	कृ.	२६:४९	वृ.	७:०३ २८:१५	गदः	९:५५	१३:०७	५:३४	१८:४२	२३८	**म**	**३१**	15	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अष्टका,** पौराणिकानां श्रीकृष्णजन्माष्टमी (जर्मठि) ▤
नवमी	तैति.	९	१५:३९	**रो**	**२८।८**	**२८:१९**	रो.	२५:०८	व्या.	२५:०६	शुभः	वृषः	१३:०६	५:३५	१८:४१	२३९	**बु**	**३२**	16	⊙ जनकसम्मानदिवसः, बाबुको मुख हेर्ने), मन्वादिः
दशमी	वाणि.	१०	१३:०४	**मृ**	**२८।१५**	**२८:३६**	मृ.	२३:१७	ह.	२१:५१	मृत्युः	१२:१४	१३:०४	५:३५	१८:४०	२४०	**बृ**	**१**	17	**सिंहमासप्रारम्भः (भदौ) २०७४,** सिंहे सूर्यः २३।५८ (१५:१०)
एकादशी	बवम्	११	१०:२२	**आ**	**२९।२**	**२८:५३**	आ.	२१:२०	व.	१८:३३	पद्मम्	मिथुनम्	१३:०३	५:३६	१८:३९	२४१	**शु**	**२**	18	पौराणिकानाम् अजा एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	७:३७ २८:५७	**पुन**	**२९।९**	**२९:१०**	पुन	१९:२४	सि.	१५:१४	छत्रम्	१३:५३	१३:०१	५:३६	१८:३८	२४२	**श**	**३**	19	✧ लघुस्मृतिपुराणानुसारिणां **कुशग्रहणम् (कुशे अम्सि),** (लौकिकानां⊙
त्रयोदशी	गराजिः	१४	२६:२७	**पु**	**२९।१६**	**२९:२७**	पु.	१७:३७	व्य.	१२:०१	श्रीवत्सः	कर्कटः	१३:००	५:३७	१८:३७	२४३	**आ**	**४**	20	● हल-कण्डनी- यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजनपरिहारदिनम् ✧
अमावास्या	चतुष्.	३०	२४:१६	**अ**	**अहोरात्र**	**अहोरात्र**	अ.	१६:०६	व.	८:५९	सौम्यः	१६:०६	१२:५९	५:३७	१८:३६	२४४	**सो**	**५**	21	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

एक मात्र वैदिक पात्रो

यो ***वैदिकतिथिपत्रम्*** एकमात्र वैदिक पात्रो भएकाले एसको प्रयोग गर्ने र एसको प्रचारप्रसार गर्ने कार्यमा सहयोग पुऱ्याउनु सबै वैदिकसनातनीहरुको कर्तव्य हो।

नभस्यकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६०४२, नभस्यकृष्णद्वादश्यां मघासु सूर्यः २८।१२ (२८:२९)।

अभक्ष्यभक्षणे प्रायश्चित्तम्— **छत्राकं विड्वराहं च लशुनं ग्रामकुक्कुटम्। पलाण्डुं गृञ्जनं चैव मत्या जग्ध्वा पतेद् द्विजः॥ अमत्यैतानि षड् जग्ध्वा कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत्। यतिचान्द्रायणं वाऽपि शेषेषूपवसेदहः॥**—मनुस्मृति ५।१९,२०। **पलाण्डुं विड्वराहं च छत्राकं ग्रामकुक्कुटम्। लशुनं गृञ्जनं चैव जग्ध्वा चान्द्रायणं चरेत्॥**—याज्ञवल्क्यस्मृति १।१७६। ऋतुचर्या— ***स्वाद्वम्ललवणाः सेव्या रसा वर्षासु धीमता। शृतशीतं जलं पेयं वर्ज्यं नद्यादिजं जलम्। परिधानं चाऽन्न-पानं दण्डं छत्रम् पदत्रकम्। तत्तद्दृत्वनुकूलं हि प्रयोज्यं स्वास्थ्यमिच्छता॥*** **अप्रसूतास् तु वै दर्भाः प्रसूतास् तु कुशाः स्मृताः। समूलाः कुतपा ज्ञेया इत्येषा नैगमी श्रुतिः॥**—द्वितीय यज्ञपार्श्व, श्लो.४-५। **विरिञ्चिमनुनाऽऽमन्त्र्य हुम्फट्छिन्नान् कुशान् द्विजः। सर्वदा सर्वकार्येषु योजयेदेकदाऽपरान्॥**—बृहन्नारदीयपुराण १।१२४।८७, **विरिञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनिसर्गज। नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव॥ हुम् फट्।** ***ततो दात्रेण पूर्वास्य उदगास्योऽथवा कुशान्। मुष्टिमात्रोपरिष्ठात् तु च्छिन्द्यात् प्रणवमुच्चरन्॥ प्रेतक्रियार्थं पित्रर्थमभिचारार्थमेव च। दक्षिणाभिमुखश् छिन्द्यात् प्राचीनावीतिको द्विजः॥***—भारद्वाजस्मृति, स्मृतिसन्दर्भ, ३१९९पृ.।

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, शरद् ऋतुः, इषः [आश्वयुजः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **सिंहमासः** (भदौ), **भाद्रशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, जलाथ्वः=भाद्रशुक्लपक्षः) [अगष्ट-सेप्टेम्बर, २०१७ क्रैस्ताब्दः]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ भदौ ६ – २०
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	२२:३२	अ	०।२	५:४५	म.	१४:५६	प.	६:१४ २७:५०	कालद.	सिंहः	१२:५७	५:३८	१८:३५	२४५	म	६	22	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकशरदृत्वारम्भः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	बाल.	२	२१:१९	म	०।९	६:०२	पू.	१४:१८	सि.	२५:५७	स्थिरः	२०:१४	१२:५६	५:३८	१८:३४	२४६	बु	७	23	**सायनकन्यायां सूर्यः ११।५६ (१०:२४)**
तृतीया	तैति.	३	२०:४४	पूफ	०।१६	६:१९	उ.	१४:१४	सा.	२४:३२	मातङ्गः	कन्या	१२:५४	५:३९	१८:३३	२४७	बृ	८	24	पौराणिकानां हरितालिका तृतीया (तिज)
चतुर्थी	वाणि.	४	२०:५०	उफ	१।३	६:३६	ह.	१४:५१	शु.	२३:४०	अमृतम्	२७:२५	१२:५२	५:३९	१८:३२	२४८	शु	९	25	पौराणिकानां गणेशचतुथी
पञ्चमी	बवम्	५	२१:३७	हस्तः	१।१०	६:५३	चि.	१६:०७	शु.	२३:२०	काणः	तुला	१२:५१	५:४०	१८:३१	२४९	श	१०	26	**पौराणिकानाम् ऋषिपञ्चमी (श्रौति र स्मार्त वैदिकका निम्ति पनि ग्राह्य)**
षष्ठी	कौल.	६	२३:०१	चित्रा	१।१७	७:१०	स्वा.	१८:०१	ब्र.	२३:२८	लुम्बः	तुला	१२:४९	५:४०	१८:३०	२५०	आ	११	27	सूर्यषष्ठी
सप्तमी	गराजिः	७	२४:५५	स्वातिः	२।४	७:२७	वि	२०:२५	ऐ.	२३:५९	मित्रम्	१३:४७	१२:४८	५:४१	१८:२९	२५१	सो	१२	28	⊙ दूर्वाष्टमी, गोरापर्व
अष्टमी	विष्टिः	८	२७:०९	वि	२।११	७:४५	अ.	२३:१०	वै.	२४:४६	वज्रम्	वृश्चिकः	१२:४६	५:४१	१८:२८	२५२	म	१३	29	पौराणिकनांमहालक्ष्मीव्रतारम्भः,⊙
नवमी	बाल.	९	२९:३२	अनु	२।१८	८:०२	ज्ये.	२६:०६	वि.	२५:३९	ध्वाङ्क्षः	२६:०६	१२:४५	५:४२	१८:२७	२५३	बु	१४	30	पौराणिकानां मन्वादिः
दशमी	तैति.	१०	अहोरात्र	ज्येष्ठा	३।५	८:१९	मू.	२८:५८	प्री.	२६:३१	धूम्रः	धनुः	१२:४३	५:४२	१८:२५	२५४	बृ	१५	31	
एकादशी	वाणि.	१०	७:५०	मू	३।१२	८:३६	पू.	अहोरात्र	आ.	२७:१२	वर्धमा.	धनुः	१२:४२	५:४३	१८:२४	२५५	शु	१६	1	पौराणिकानां हरिपरिवर्तिनी एकादशी, **सेप्टेम्बर**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रै.)
द्वादशी	बवम्	११	९:५२	पूषा	३।१९	८:५३	पू.	७:३५	सौ.	२७:३५	मातङ्गः	१४:१२	१२:४०	५:४३	१८:२३	२५६	श	१७	2	पौराणिकानाम् **इन्द्रध्वजोत्थापनम्**, वामनजयन्ती
त्रयोदशी	कौल.	१२	११:२८	उषा	४।६	९:१०	उ.	९:४९	शो.	२७:३३	मुसल.	मकरः	१२:३८	५:४४	१८:२२	२५७	आ	१८	3	✧ यात्रा, **अगस्त्योदयः** ३९।३९ **(२१:३६)**
चतुर्दशी	गराजिः	१३	१२:३१	श्र	४।१३	९:२८	श्र.	११:३१	अ.	२७:०५	सिद्धिः	२४:१०	१२:३७	५:४४	१८:२१	२५८	सो	१९	4	पौराणिकानामनन्तचतुर्दशी, **इन्द्रयात्रा** (इन्द्रजात्रा), लौकिकानां कुमारी-✧
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	१२:५९	ध	५।०	९:४५	ध.	१२:३९	सु.	२६:०८	उत्पातः	कुम्भः	१२:३५	५:४५	१८:२०	२५९	म	२०	5	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः**

वैदिक धर्मकर्मका लागि संक्षण गर्न पर्ने वनस्पति– कुश, दुबो, अपामार्ग (दतिउन), आँक, आँप, पिपल, बर, डुम्रि, पाखरि, पलाश, खयर, मयल, निम (नपाए महानिम्ब= बकाइनो), शास्त्रीय शमी, सिप्लिगान, अशोक, साल, बेल, कटहर, केरा, बाँस, उखु इत्यादि।

इषशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६०५६, इषशुक्लद्वादश्यां पूर्वफल्गुन्योः सूर्यः १४।६ (१७:०९)।

अगस्त्योदये सप्ताहाऽभ्यन्तरे अगस्त्यलोपामुद्राभ्यामर्घयोर् दाने पौराणमन्त्रौ– **काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसम्भव। मित्रावरुणयोः पुत्र कुम्भयोने नमोऽस्तु ते॥ राजपुत्रि महाभागे ऋषिपत्नि वरानने। लोपामुद्रे नमस् तुभ्यमर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्॥ (येषु देशेष्वगस्त्यर्षेः पूजनं क्रियते जनैः। तेषु देशेषु पर्जन्यः कामवर्षी प्रजायते॥)**–भविष्योत्तरपुराण ११८।८०। मिथ्यापवादनिराकरणाय जपनीयः पौराणमन्त्रः– **सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस् तव ह्येष स्यमन्तकः॥**

ब्राह्मणको कर्तव्य– **कलिधर्मपरो न स्याद् ब्राह्मणो वैदिकोत्तमः। कुशास्त्रभाषाशास्त्राणि प्रामाण्येन न विश्वसेत्॥**–लौगाक्षिस्मृति, ३६४ पृ.।

१८ २०७४।५।७ प्रातः ६:००

सू	४:०५:३९:४२	५७:५५	शु	३:०१:४८:२५	७१:३४
म	३:२७:०३:४८	३८:१३	श	७:२६:४५:१९	-०:०९
बु	४:१२:४७:२२	-५४:०४	रा	३:२९:२४:३६	३:११
बृ	५:२५:५८:४७	१०:४०			

५।१८–११:३७ बुध पू. उदय **५।१९–१५:१६ शनि मार्गी** **५।२०–१७:०५ बुध मार्गी**

६ बृ
म ४ शुरा
७
सू ५ बु
३
८ श
२
९
११
१
१० के
१२

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, शरद् ऋतुः, इषः [आश्वयुजः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **सिंहमास-कन्यामासौ** (भदौ-असोज), **आश्विनकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, जलागाः=भाद्रकृष्णपक्षः) [सेप्टेम्बर,२०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ भदौ २१ – असोज ३
प्रतिपदा	बाल.	१५	१२:५१	श	५।७	१०:०२	श.	१३:११	धृ.	२४:४४	मानसम्	कुम्भः	१२:३४	५:४५	१८:१९	२६०	बु	२१	6	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानां श्राद्धषोडशकारम्भः [सोर-✧
द्वितीया	तैति.	१	१२:१०	पूभ	५।१४	१०:१९	पू.	१३:१२	शू.	२२:५६	मुद्गरः	७:१५	१२:३२	५:४५	१८:१८	२६१	बृ	२२	7	**द्वितीयाश्राद्धम्** ✧ सरातको आरम्भ] (प्रतिमासं दर्शश्राद्धं कर्तुमशक्तानां स्मार्तानां ❍
तृतीया	वाणि.	२	११:०१	उभ	६।१	१०:३६	उ.	१२:४५	ग.	२०:४७	ध्वजः	मीनः	१२:३२	५:४६	१८:१७	२६२	शु	२३	8	**तृतीयाश्राद्धम्** ❍ वैदिकानामपि ग्राह्यः [प्रतिमहिना औँसिमा श्राद्ध गर्न नसक्ने स्मार्त ■
चतुर्थी	बवम्	३	९:२९	रे	६।८	१०:५३	रे.	११:५७	वृ.	१८:२१	धाता	११:५७	१२:२९	५:४६	१८:१५	२६३	श	२४	9	**चतुर्थीश्राद्धम्,** पौराणिकानाम् **इन्द्रध्वजपातनम्,** पौराणिकानां करकचतुर्थीव्रतम्
पञ्चमी	कौल.	४	७:४१ २९:४०	अ	६।१५	११:१०	अ.	१०:५०	ध्रु.	१५:४३	आनन्दः	मेषः	१२:२७	५:४७	१८:१४	२६४	आ	२५	10	पञ्चमीश्राद्धम् ■ वैदिकहरुका निम्ति पनि ग्राह्य]), **प्रतिपदाश्राद्धम्,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
षष्ठी	गराजिः	६	२७:३२	भ	७।२	११:२८	भ.	९:३४	व्या.	१२:५७	चरः	१५:१४	१२:२६	५:४७	१८:१३	२६५	सो	२६	11	**षष्ठीश्राद्धम्**
सप्तमी	विष्टिः	७	२५:२०	कृ	७।९	११:४५	कृ.	८:१०	ह.	१०:०६	गदः	वृषः	१२:२४	५:४८	१८:१२	२६६	म	२७	12	सप्तमीश्राद्धम् ❁ तुलायां गुरुः (बृहस्पतिः) ४१।०५ (२२:१४)
अष्टमी	बाल.	८	२३:०७	रो	७।१६	१२:०२	रो.	६:४३ २९:१७	व.	७:१२ २८:१६	शुभः	१८:०१	१२:२३	५:४८	१८:११	२६७	बु	२८	13	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अष्टका**, **अष्टमीश्राद्धम्,** पौराणिकानां ▤
नवमी	तैति.	९	२०:५७	मृ	८।२	१२:१९	आ.	२७:५४	व्य.	२५:२८	काणः	मिथुनम्	१२:२१	५:४९	१८:१०	२६८	बृ	२९	14	**नवमीश्राद्धम्** ▤ महालक्ष्मीव्रतसमाप्तिः, (जितिया पर्व) ❁
दशमी	वाणि.	१०	१८:५२	आ	८।९	१२:३६	पुन	२६:३५	व.	२२:४१	लुम्बः	२०:५५	१२:१९	५:४९	१८:०८	२६९	शु	३०	15	**दशमीश्राद्धम्** ◉ सायम्भोजन-परिहार-दिनम्
एकादशी	बवम्	११	१६:५३	पुन	८।१६	१२:५३	पु.	२५:२४	प.	१९:५९	मित्रम्	कर्कटः	१२:१८	५:५०	१८:०७	२७०	श	३१	16	**एकादशीश्राद्धम्,** पौराणिकानाम् इन्दिरा एकादशी
द्वादशी	कौल.	१२	१५:०४	पु	९।३	१३:११	अ.	२४:२५	शि.	१७:२६	वज्रम्	२४:२५	१२:१६	५:५०	१८:०६	२७१	आ	१	17	द्वादशीश्राद्धम्, **कन्यामासप्रारम्भः (असोज)२०७४,** कन्यायां सूर्यः २५।७ (१५:५३)
त्रयोदशी	गराजिः	१३	१३:२८	अ	९।१०	१३:२८	म.	२३:४०	सि.	१५:०४	ध्वाङ्क्षः	सिंहः	१२:१५	५:५०	१८:०५	२७२	सो	२	18	त्रयोदशीश्राद्धम् ● **दर्शश्राद्धम्,** हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-◉
अमावास्या	चतुष्.	१४	१२:१०	म	९।१७	१३:४५	पू.	२३:१५	सा.	१२:५७	धूम्रः	२९:१३	१२:१३	५:५१	१८:०४	२७३	म	३	19	**चतुर्दशीश्राद्धम्, श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां** ●

इषकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६०७१, इषकृष्णदशम्याम् उत्तरफल्गुन्योः सूर्यः ३०१० (२९:४९)।

वैदिकसिद्धान्तानुसार जुन दिन **जुन वैदिक तिथि छ** तेस दिन तेइ **तिथिको** श्राद्ध हुञ्छ। तिथिक्षयवृद्धिको विचार गर्नपर्दैन। चतुर्दशीश्राद्धमा मात्र चतुर्दशी टुटेका पक्षमा अमावास्यामा हुञ्छ। आमश्राद्ध (काँचा अन्नले गरिने श्राद्ध) पूर्वाह्णमा, एकोद्दिष्टश्राद्ध मध्याह्नमा, पार्वणश्राद्ध अपराह्णमा र वृद्धिश्राद्ध (आभ्युदयिकश्राद्ध वा नान्दीमुखश्राद्ध) प्रातःकालमा गर्नपर्छ भन्ने वचन– **आमश्राद्धं तु पूर्वाह्णे एकोद्दिष्टं तु मध्यमे। पार्वणं चापराह्णे तु प्रातर् वृद्धि-निमित्तकम्॥**–हारीतवचन, निर्णयसिन्धु। **अक्षय्योदकदान–** अक्षय्योदकदान काँहाँ गर्ने भन्ने विषयमा चल्तिका श्राद्धपद्धतिका सम्पादक अल्मलिएका देखिञ्छन्। एस पद्धतिमा स्वशाखासूत्रको, तेसका व्याख्याहरुको र अरु स्मृति-पुराणव्याख्यानादि-वचनको पनि राम्ररि विचार गरि ब्राह्मणका हातमा अक्षय्योदक दिने कुरा देखाइएको छ र वाक्यको पनि तदनुसारै प्रयोग देखाइएको छ।–पार्वणश्राद्धपद्धतिः,रत्नपुस्तकभण्डार,द्वि.सं. २०७२, पृ. १५७।

१९ २०७४।५।२२ प्रातः ६:००

सू	४:२०:०९:५२	५८:२०	शु	३:१९:४५:४१	७२:३८
म	४:०६:३६:२९	३८:०५	श	७:२६:५२:४४	१:३६
बु	४:०४:१०:४५	४७:४६	रा	३:२८:३६:५४	३:११
बृ	५:२८:४२:३१	११:४२			

६ बृ
शु ४ रा
७
सू ५ म बु
३
८ श
२
९
११
१
१०के
१२

वैदिकितिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, शरद् ऋतुः, ऊर्जः [कार्त्तिकः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **कन्यामासः** (असोज), **आश्विनशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३७, कौलाथ्वः=आश्विनशुक्लपक्षः) [सेप्टेम्बर-अक्टोबर,२०१७क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ असोज ४ – १८
प्रतिपदा	कौस्तु.	३०	११:१६	पूफ	१०।४	१४:०२	उ.	२३:१५	शु.	११:०८	वर्धमा.	कन्या	१२:११	५:५१	१८:०३	२७४	बु	४	20	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्, शाक्तानां ☾
द्वितीया	बाल.	१	१०:४९	उफ	१०।११	१४:१९	ह.	२३:४५	शु.	९:४१	राक्षसः	कन्या	१२:१०	५:५२	१८:०२	२७५	बृ	५	21	चन्द्रदर्शनम् ☾ तान्त्रिकाणां पौराणिकानां च **नवरात्रारम्भः, घटस्थापना**
तृतीया	तैति.	२	१०:५६	ह	१०।१८	१४:३६	चि.	२४:५०	ब्र.	८:४०	मुसल.	१२:१४	१२:०८	५:५२	१८:००	२७६	शु	६	22	हिजरिसंवत् १४३९ प्रारम्भ (मोहरम १)
चतुर्थी	वाणि.	३	११:३८	चि	११।५	१४:५३	स्वा.	२६:२८	ऐ.	८:०७	सिद्धिः	तुला	१२:०७	५:५३	१७:५९	२७७	श	७	23	**दृक्सिद्धवैदिक-शारदविषुवम् (शरद् ऋतुको दिनरात बराबर हुने समय)** ☼
पञ्चमी	बवम्	४	१२:५६	स्वा	११।१२	१५:११	वि.	२८:४०	वै.	८:०१	उत्पातः	२२:०५	१२:०५	५:५३	१७:५८	२७८	आ	८	24	☼ **विषुवत्सूर्यसङ्क्रमः, याज्ञवल्क्यस्मृत्युक्तः** (१।२१७) **श्राद्धकालविशेषः** ❁
षष्ठी	कौल.	५	१४:४५	वि	११।१९	१५:२८	अ.	अहोरात्र	वि.	८:२०	मानसम्	वृश्चिकः	१२:०३	५:५४	१७:५७	२७९	सो	९	25	❁ **सायनतुलायां सूर्यः ५।८ (८:१९)**
सप्तमी	गराजिः	६	१६:५८	अनु	१२।६	१५:४५	अ.	७:१७	प्री.	८:५९	वज्रम्	वृश्चिकः	१२:०२	५:५४	१७:५६	२८०	म	१०	26	शाक्तानां तान्त्रिकाणां पौराणिकानां च **नवपत्रिकाप्रवेशः (फुलपाति)**
अष्टमी	विष्टिः	७	१९:२५	ज्ये	१२।१३	१६:०२	ज्ये.	१०:१२	आ.	९:५१	ध्वाङ्क्षः	१०:१२	१२:००	५:५५	१७:५५	२८१	बु	११	27	शाक्तानां तान्त्रिकाणां पौराणिकानां च **महाष्टमी**
नवमी	बाल.	८	२१:५१	मू	१३।०	१६:१९	मू.	१३:०९	सौ.	१०:४५	धूम्रः	धनुः	११:५९	५:५५	१७:५४	२८२	बृ	१२	28	शाक्तानां तान्त्रिकाणां पौराणिकानां च **महानवमी**
दशमी	तैति.	९	२४:०३	पूषा	१३।७	१६:३६	पू.	१५:५८	शो.	११:३४	वर्धमा.	२२:३८	११:५७	५:५६	१७:५२	२८३	शु	१३	29	शाक्तानां तान्त्रिकाणां पौराणिकानां च **विजयादशमी**
एकादशी	वाणि.	१०	२५:४९	उ	१३।१४	१६:५४	उ.	१८:२६	अ.	१२:०७	राक्षसः	मकरः	११:५५	५:५६	१७:५१	२८४	श	१४	30	पौराणिकानां पापाङ्कुशा एकादशी
द्वादशी	बवम्	११	२६:५८	श्र	१४।१	१७:११	श्र.	२०:२०	सु.	१२:१५	गदः	मकरः	११:५४	५:५७	१७:५०	२८५	आ	१५	1	पौराणिकानां मन्वादिः, **अक्टोबर**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रैस्ताब्दः)
त्रयोदशी	कौल.	१२	२७:२४	ध	१४।८	१७:२८	ध.	२१:३४	धृ.	११:५३	शुभः	९:०३	११:५२	५:५७	१७:४९	२८६	सो	१६	2	
चतुर्दशी	गराजिः	१३	२७:०६	श	१४।१५	१७:४५	श.	२२:०६	शू.	१०:५७	मृत्युः	कुम्भः	११:५०	५:५७	१७:४८	२८७	म	१७	3	
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	२६:०७	पूभ	१५।१	१८:०२	पू.	२१:५५	ग.	९:२६	पद्मम्	१६:०२	११:४९	५:५८	१७:४७	२८८	बु	१८	4	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, साकमेधपर्व, स्मार्तानां वैदिकानां पायसश्रपणयज्ञः**

ऊर्जशुक्लप्रतिपदाया गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६०८५, ऊर्जशुक्लदशम्यां हस्ते सूर्यः **१५।१४ (१८:३०)**। विजयादशम्यामाशीर्वचनम्– आयुर्द्रोणसुते श्रियो दशरथे शत्रुक्षयो राघवे, ऐश्वर्यं नहुषे गतिश्च पवने मानश्च दुर्योधने। शौर्यं शान्तनवे बलं हलधरे सत्यं च कुन्तीसुते, विज्ञानं विदुरे भवन्तु भवतः कीर्तिश्च नारायणे॥ आयुर्वृद्धिर्यशोवृद्धिर्वृद्धिः प्रज्ञासुखश्रियाम्। धर्मसन्तानयोर् वृद्धिः सन्तु ते सप्त वृद्धयः॥ अव्याधिना शरीरेण मनसा च निराधिना। पूरयन्नर्थिनामाशास्त्वं जीव शरदां शतम्॥ भद्रमस्तु शिवं चाऽस्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः॥ महाकाली महालक्ष्मीस्तथा महासरस्वती। त्वयि नित्यं प्रसन्नाश्च सन्तु कल्याणदायिकाः॥ स्त्रीभ्य आशीर्वचनम्– जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ भद्रमस्तु शिवं चाऽस्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सुस्थिराः॥ महाकाली महालक्ष्मीस्तथा महासरस्वती। त्वयि नित्यं प्रसन्नाश्च सन्तु कल्याणदायिकाः॥

२० २०७४।६।७ प्रातः ६:००

सू	५:०५:४५:१५	५८:५१	शु	४:०९:११:५६	७३:३६
म	४:१६:४५:२९	३८:००	श	७:२७:२४:२१	३:३६
बु	४:२२:५४:२९	१०९:०७	रा	३:२७:४६:०२	३:११
बृ	६:०१:५३:१२	१२:३०	६।७–६:४४ बुध पू. अस्त		

७ बृ
म५बुशु
८ श
६सू
४रा
९
३
१०के
१२
२
११
१

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, शरद् ऋतुः, ऊर्जः [कार्तिकः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्)१९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **कन्यामास-तुलामासौ** (असोज-कात्तिक), **कार्त्तिककृष्णपक्षः**(नेपालसंवत्११३७, कौलागाः=आश्विनकृष्णपक्षः) [अक्टोबर, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ असोज १९ – कात्तिक २
प्रतिपदा	बाल.	१५	२४:३०	**उभ**	**१५।८**	**१८:१९**	उ.	२१:०८	वृ.	७:२३ २८:४५	छत्रम्	मीनः	११:४७	५:५८	१७:४६	२८९	**बृ**	**१९**	5	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	१	२२:२५	**रे**	**१५।१५**	**१८:३७**	रे.	१९:५०	व्या.	२५:५८	श्रीवत्सः	१९:५०	११:४६	५:५९	१७:४५	२९०	**शु**	**२०**	6	☼तुलायां सूर्यः ५१।१२ (२६:३४)
तृतीया	वाणि.	२	१९:५८	**अ**	**१६।२**	**१८:५४**	अ.	१८:०९	ह.	२२:४८	सौम्यः	मेषः	११:४४	५:५९	१७:४४	२९१	**श**	**२१**	7	■ पौराणिकानां च **लक्ष्मीपूजा, दीपावली,** सुखरात्रिः
चतुर्थी	बवम्	३	१७:१८	**भ**	**१६।९**	**१९:११**	भ.	१६:१५	व.	१९:२८	कालद.	२१:क४७	११:४२	६:००	१७:४२	२९२	**आ**	**२२**	8	पौराणिकानां करकचतुर्थीव्रतम् (करवाचौथ)
पञ्चमी	कौल.	४	१४:३५	**कृ**	**१६।१६**	**१९:२८**	कृ.	१४:१७	सि.	१६:०६	स्थिरः	वृषः	११:४१	६:०१	१७:४१	२९३	**सो**	**२३**	9	❖ तान्त्रिकाणां पौराणिकानां च **बलिराज्यत्रिरात्रारम्भः** (कौमुदी-❁
षष्ठी	गराजिः	५	११:५५	**रो**	**१७।३**	**१९:४५**	रो.	१२:२३	व्य.	१२:४७	मातङ्गः	२३:२९	११:३९	६:०१	१७:४०	२९४	**म**	**२४**	10	★ लौकिकानां श्वानबलिदानम् (कुकुरतियार), वैष्णवानां ❖
सप्तमी	विष्टिः	६	९:२५	**मृ**	**१७।१०**	**२०:०२**	मृ.	१०:३९	व.	९:३७	अमृतम्	मिथुनम्	११:३८	६:०२	१७:३९	२९५	**बु**	**२५**	11	**गुरु (बृहस्पति) पश्चिमतिर अस्त ४७।४५ (२५:०७)**
अष्टमी	बाल.	७	७:११ २९:१६	**आ**	**१७।१७**	**२०:१९**	आ.	९:१०	प.	६:३९ २७:५८	काणः	२६:१६	११:३६	६:०२	१७:३८	२९६	**बृ**	**२६**	12	यमदंष्ट्रारम्भः (आयुर्वेद) ✧ दानम्, **धन्वन्तरिजयन्ती, धनत्रयोदशी,** ☼
नवमी	तैति.	९	२७:४०	**पुन**	**१८।४**	**२०:३७**	पुन	८:००	सि.	२५:२९	लुम्बः	कर्कटः	११:३५	६:०३	१७:३७	२९७	**शु**	**२७**	13	❁ महोत्सवारम्भः) **तुलामासप्रारम्भः (कात्तिक) २०७४**
दशमी	वाणि.	१०	२६:२४	**पु**	**१८।११**	**२०:५४**	पु.	७:०९	सा.	२३:१८	मित्रम्	कर्कटः	११:३३	६:०३	१७:३६	२९८	**श**	**२८**	14	⊙ सायम्भोजनपरिहारदिनम्, वैष्णवानां तान्त्रिकाणां कार्त्तिकव्रतिनां ■
एकादशी	बवम्	११	२५:२७	**अ**	**१८।१८**	**२१:११**	अ.	६:३८	शु.	२१:२२	वज्रम्	६:३८	११:३१	६:०४	१७:३५	२९९	**आ**	**२९**	15	पौराणिकानां रमा एकादशी, **स्वातौ गुरुः (बृहस्पतिः) ३४।३८ (१९:५०)**
द्वादशी	कौल.	१२	२४:४८	**म**	**१९।५**	**२१:२८**	म.	६:२५	शु.	१९:४०	ध्वाङ्क्षः	सिंहः	११:३०	६:०४	१७:३४	३००	**सो**	**३०**	16	गोवत्सद्वादशी ● **दर्शश्राद्धम्,** हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-⊙
त्रयोदशी	गराजिः	१३	२४:२९	**पूफ**	**१९।१२**	**२१:४५**	पू.	६:३०	ब्र.	१८:१३	धूम्रः	१२:३५	११:२८	६:०५	१७:३३	३०१	**म**	**३१**	17	लौकिकानां काकबलिदानम् (कागतियार), सायंकाले द्वारबहिर्भागे यमदीप-✧
चतुर्दशी	विष्टिः	१४	२४:३१	**उफ**	**१९।१९**	**२२:०२**	उ.	६:५५	ऐ.	१७:०२	वर्धमा.	कन्या	११:२७	६:०५	१७:३२	३०२	**बु**	**१**	18	वैष्णवानां तान्त्रिकाणां पौराणिकानां कर्त्तिकव्रतिनां च **नरकचतुर्दशी** ★
अमावास्या	चतुष्.	३०	२४:५७	**हस्तः**	**२०।५**	**२२:२०**	ह.	७:४१	वै.	१६:१०	राक्षसः	२०:१३	११:२५	६:०६	१७:३१	३०३	**बृ**	**२**	19	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां** ●

ऊर्जकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६१००, ऊर्जकृष्णनवम्यां चित्रायां सूर्यः १।८ (३१:१०)। आश्विने कृष्णत्रयोदश्यां निशामुखे यमदीपदाने पौराणो मन्त्रः— **मृत्युना पाश-दण्डाभ्यां कालेन श्यामया सह त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम॥**–स्कन्दपुराण, वैष्णवखण्ड ४।९।२३। आश्विने कृष्णचतुर्दश्यां प्रातः स्नानानन्तरं नरकप्रीतये दीपदाने (दीपप्रवाहणे) पौराणो मन्त्रः—**दत्तो दीपश् चतुर्दश्यां नरकप्रीतये मया। चतुर्वर्तिसमायुक्तः सर्वपापापनुत्तये॥** कृष्णचतुर्दश्यां प्रातःस्नाने अपामार्गभ्रामणे पौराणो मन्त्रः— **सीतालोष्टसमायुक्त सकण्टकदलान्वित। हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाण पुनःपुनः॥ आपदं किल्बिषं चाऽपि ममाऽपहर सर्वशः। अपामार्ग नमस् तेऽस्तु शरीरं मम शोधय॥** नरकचतुर्दश्यां माषपत्रशाकेन भोजनस्य माहात्म्यम्—**माषपत्रस्य शाकेन भुक्त्वा तस्मिन् दिने नरः। प्रेताख्यायां चतुर्दश्यां सर्वपापैः प्रमुच्यते॥**–कार्त्तिकमाहात्म्य १३।१९। **कुर्यात् संलग्नमेतच्च दीपोत्सवदिनत्रयम्॥**–सनत्कुमारीयकार्त्तिकमाहात्म्य १३।२१। कृष्णचतुर्दश्यां रात्र्यां दीपदाने मन्त्रः— **नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे॥ नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः॥**—कार्त्तिकमाहात्म्य १०।६५।

३१ २०७४।६।२२ प्रातः ६:००

सू	५:२०:२९:४४	५९:२१	**शु**	४:२७:३८:३९	७४:१९
म	४:२६:१५:११	३७:५६	**श**	७:२८:१४:४४	४:१७
बु	५:१९:५१:२७	१०१:४२	**रा**	३:२६:५८:२०	३:११
बृ	६:०५:०२:१९	१२:५६	**६।२५–२५:०७ गुरु प. अस्त**		

७ बृ
म ५ शु
८ श
सू ६ बु
४ रा
९
३
१० के
१२
२
११
१

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, हेमन्तः ऋतुः, सहाः [मार्गशीर्षः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **तुलामासः** (कात्तिक), **कार्त्तिकशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३८, कछलाथ्वः=कार्त्तिकशुक्लपक्षः) [अक्टोबर-नोवेम्बर, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ कात्तिक ३ – १७
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	२५:५१	चित्रा	२०।१२	२२:३७	चि.	८:५१	वि.	१५:३७	मुसल.	तुला	११:२४	६:०७	१७:३०	३०४	शु	३	20	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, हेमन्तर्त्वारम्भः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, ☾
द्वितीया	बाल.	२	२७:१४	स्वातिः	२०।१९	२२:५४	स्वा.	१०:२८	प्री.	१५:२७	सिद्धिः	३०:००	११:२२	६:०७	१७:२९	३०५	श	४	21	वैष्णवानां तान्त्रिकाणां कार्त्तिकव्रतिनां पौराणिकानां च ✧
तृतीया	तैति.	३	२९:०५	वि	२१।६	२३:११	वि.	१२:३३	आ.	१५:३८	उत्पातः	वृश्चिकः	११:२१	६:०८	१७:२८	३०६	आ	५	22	✧ **यमद्वितीया (भ्रातृद्वितीया)**
चतुर्थी	वाणि.	४	अहोरात्र	अनु	२१।१३	२३:२८	अ.	१५:०५	सौ.	१६:१०	मानसम्	वृश्चिकः	११:१९	६:०८	१७:२७	३०७	सो	६	23	**सायनवृश्चिके सूर्यः २५।१६ (१६:१५)**
पञ्चमी	बवम्	४	७:२१	ज्ये	२२।०	२३:४५	ज्ये.	१७:५८	शो.	१६:५९	मुद्गरः	१७:५८	११:१८	६:०९	१७:२७	३०८	म	७	24	☾तान्त्रिकाणां कार्त्तिकव्रतिनां पौराणिकानां च **गोवर्धनपूजा,**
षष्ठी	कौल.	५	९:५४	मू	२२।७	२४:०२	मू.	२१:०२	अ.	१७:५६	ध्वजः	धनुः	११:१६	६:१०	१७:२६	३०९	बु	८	25	**सूर्यषष्ठी (छठ)** विन्ध्यावलीसहित**बलिराजपूजा दीपोत्सवश्च,** ❖
सप्तमी	गराजिः	६	१२:३२	पूषा	२२।१४	२४:२०	पू.	२४:०५	सु.	१८:५४	धाता	धनुः	११:१५	६:१०	१७:२५	३१०	बृ	९	26	❖ **आत्मपूजा (ह्मपूजा), नेपालसंवत् ११३८**
अष्टमी	विष्टिः	७	१५:००	उषा	२३।०	२४:३७	उ.	२६:५४	धृ.	१९:४३	आनन्दः	६:५०	११:१३	६:११	१७:२४	३११	शु	१०	27	पौराणिकानां गोपाष्टमी, यमदंष्ट्रासमाप्तिः (आयुर्वेद)
नवमी	बाल.	८	१७:०६	श्र	२३।७	२४:५४	श्र.	२९:१५	शू.	२०:१२	स्थिरः	मकरः	११:१२	६:१२	१७:२३	३१२	श	११	28	पौराणिकानां कूष्माण्डनवमी,☐
दशमी	तैति.	९	१८:३५	ध	२३।१४	२५:११	ध.	अहोरात्र	ग.	२०:१३	मातङ्गः	१८:११	११:१०	६:१२	१७:२२	३१३	आ	१२	29	☐ कृतयुगादिः (सत्ययुगादिः)
एकादशी	वाणि.	१०	१९:१८	श	२४।१	२५:२८	ध.	६:५६	वृ.	१९:३८	शुभः	कुम्भः	११:०९	६:१३	१७:२२	३१४	सो	१३	30	पौराणिकानां हरिबोधिनी एकादशी
द्वादशी	बवम्	११	१९:११	पूभ	२४।८	२५:४५	श.	७:५०	ध्रु.	१८:२४	मृत्युः	२५:५८	११:०७	६:१४	१७:२१	३१५	म	१४	31	पौराणिकानां मन्वादिः
त्रयोदशी	कौल.	१२	१८:१४	उभ	२४।१५	२६:०३	पू.	७:५४	व्या.	१६:३१	पद्मम्	मीनः	११:०६	६:१४	१७:२०	३१६	बु	१५	1	**नोवेम्बर**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रै.)
चतुर्दशी	गराजिः	१३	१६:३०	रे	२५।२	२६:२०	उ.	७:११ २९:४७	ह.	१४:००	छत्रम्	२९:४७	११:०४	६:१५	१७:१९	३१७	बृ	१६	2	○पौराणिकानां चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिः
पूर्णिमा	विष्टिः	१४	१४:०८	अश्व	२५।९	२६:३७	अ.	२७:४९	व.	१०:५७	वज्रम्	मेषः	११:०३	६:१६	१७:१९	३१८	शु	१७	3	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानां प्रस्तरारोहणकर्म,**○

गुरुशुक्रास्तविचार– गुरु–शुक्रको उदय हुँदा मात्र यो कर्म गर्नु, अस्त हुँदा यो कर्म नगर्नु भन्ने विधि–निषेध वेदमन्त्रसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, वेदाङ्गज्योतिष इत्यादि **मूल वेद-वेदाङ्ग-ग्रन्थमा** र मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य–स्मृति इत्यादिमा पनि छैन।

सहःशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६११४, सहःशुक्लसप्तम्यां स्वातौ सूर्यः १७।१ (१९:५०)।

यमदंष्ट्राका समयमा अल्पाहार (थोरै भोजन) गरेर स्वास्थ्यरक्षा गर्न पर्ने– **कार्त्तिकस्य दिनान्यष्टावष्टाऽऽग्रहायणस्य च। यमदंष्ट्रोदिता ह्यत्र योऽल्पाहारः स जीवति॥ वैद्यानां तु शरन् माता पिता च कुसुमाकरः। यमदंष्ट्रा स्वसा प्रोक्ता हितभुङ् मितभुग् रिपुः॥**

शुक्लप्रतिपदि रात्रौ दीपदाने वाक्यम्– **बलिराज नमस् तुभ्यं दैत्यदानववन्दित। कृता त्वद्राज्यकौमुद्यां गृह्यतां दीपमालिका।**

भ्रातृद्वितीयायां भ्रातृभ्यो भोजनदाने वाक्यम्– **भ्रातस् तवाग्र(नु)जाताऽहं भुङ्क्ष्वाऽपूपादिकं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः॥**

ऋतुचर्या– **हेमन्ते दधि दुग्धं च घृतं माषतिलान्वितम्। शाल्यन्नं च नवं भोज्यं जलं सेव्यं सुखोष्णकम्॥** कौशिकीस्नाने मन्त्रः– **गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः स्वसः। ऋचीकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।**–वैदिकमन्त्रसङ्ग्रहपरिशिष्टे, पृ. १२९।

२२ २०७४।७।७ प्रातः ६:००

सू	६:०६:२१:३५	५९:५३	शु	५:१७:३०:०९	७४:५२
म	५:०६:२१:५७	३७:५३	श	७:२९:२७:५२	५:२३
बु	६:१६:१५:४२	९१:४८	रा	३:२६:०७:२८	३:११
बृ	६:०८:३०:१३	१३:०६		७।१२–८:२८ बुध प. उदय	

७।२०–२५:१० गुरु पू. उदय

८ श		म ६ शु
९	सू ७ बुबृ	५
१० के		४ रा
११	१	३
१२		२

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, हेमन्तः ऋतुः, सहाः [मार्गशीर्षः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **तुलामास-वृश्चिकमासौ** (कात्तिक-मङ्सिर), **मार्गशीर्षकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३८, कछलागाः=कार्त्तिककृष्णपक्षः) [नोवेम्बर, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	**२०७४ कात्तिक १८ – मङ्सिर २**
प्रतिपदा	बाल.	**१५**	११:१६	**भ**	**२५।१५**	**२६:५४**	भ.	२५:२७	सि.	७:२९ २७:२८	ध्वाङ्क्षः	मेषः	१९:०२	६:१६	१७:१८	३१९	**श**	**१८**	**4**	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः**, पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	तैति.	**१**	८:०४ २८:४४	**कृ**	**२६।२**	**२७:११**	कृ.	२२:५३	व.	२३:४८	धूम्रः	६:५०	११:००	६:१७	१७:१७	३२०	**आ**	**१९**	**5**	
तृतीया	वाणि.	**३**	२५:२३	**रो**	**२६।९**	**२७:२८**	रो.	२०:१७	प.	१९:५१	वर्धमा.	वृषः	१०:५९	६:१८	१७:१७	३२१	**सो**	**२०**	**6**	**गुरुको (बृहस्पतिको) पूर्वतिर उदय ४७।१२ (२५:१०)**
चतुर्थी	बवम्	**४**	२२:१२	**मृ**	**२६।१६**	**२७:४५**	मृ.	१७:४९	शि.	१६:००	राक्षसः	७:०२	१०:५८	६:१८	१७:१६	३२२	**म**	**२१**	**7**	मङ्गलचतुर्थी
पञ्चमी	कौल.	**५**	१९:२१	**आ**	**२७।३**	**२८:०३**	आ.	१५:३८	सि.	१२:२३	मुसल.	मिथुनम्	१०:५६	६:१९	१७:१५	३२३	**बु**	**२२**	**8**	
षष्ठी	गराजिः	**६**	१६:५७	**पुन**	**२७।१०**	**२८:२०**	पुन	१३:५२	सा.	९:०६ ३०:१३	सिद्धिः	८:१६	१०:५५	६:२०	१७:१५	३२४	**बृ**	**२३**	**9**	
सप्तमी	विष्टिः	**७**	१५:०३	**पु**	**२७।१७**	**२८:३७**	पु.	१२:३६	शु.	२७:४६	उत्पातः	कर्कटः	१०:५४	६:२१	१७:१४	३२५	**शु**	**२४**	**10**	
अष्टमी	बाल.	**८**	१३:४४	**अ**	**२८।३**	**२८:५४**	अ.	११:५४	ब्र.	२५:४६	मानसम्	११:५४	१०:५२	६:२१	१७:१४	३२६	**श**	**२५**	**11**	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अष्टका**
नवमी	तैति.	**९**	१२:५८	**म**	**२८।१०**	**२९:११**	म.	११:४४	ऐ.	२४:१२	मुद्गरः	सिंहः	१०:५१	६:२२	१७:१३	३२७	**आ**	**२६**	**12**	**स्मार्तानांवैदिकानाम्अन्वष्टका**
दशमी	वाणि.	**१०**	१२:४२	**पूफ**	**२८।१७**	**२९:२८**	पू.	१२:०५	वै.	२३:००	ध्वजः	१८:१५	१०:५०	६:२३	१७:१३	३२८	**सो**	**२७**	**13**	
एकादशी	बवम्	**११**	१२:५४	**उफ**	**२९।४**	**२९:४६**	उ.	१२:५२	वि.	२२:०८	धाता	कन्या	१०:४९	६:२४	१७:१२	३२९	**म**	**२८**	**14**	पौराणिकानाम् उत्पत्तिका एकादशी
द्वादशी	कौल.	**१२**	१३:३०	**हस्तः**	**२९।११**	**३०:०३**	ह.	१४:०२	प्री.	२१:३३	आनन्दः	२६:४५	१०:४७	६:२४	१७:१२	३३०	**बु**	**२९**	**15**	● हल-कण्डनी-यन्त्रक-मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-परिहारदिनम्
त्रयोदशी	गराजिः	**१३**	१४:२७	**चित्रा**	**२९।१८**	**३०:२०**	चि.	१५:३३	आ.	२१:१४	चरः	तुला	१०:४६	६:२५	१७:११	३३१	**बृ**	**३०**	**16**	वृश्चिके सूर्यः ४३।५२ (२३:५९) ¤ (शतबीजरोपणम्)
चतुर्दशी	विष्टिः	**१४**	१५:४६	**स्वातिः**	**अहोरात्र**	**अहोरात्र**	स्वा.	१७:२४	सौ.	२१:१२	गदः	तुला	१०:४५	६:२६	१७:११	३३२	**शु**	**१**	**17**	**वृश्चिकमासप्रारम्भः (मुङ्सिर) २०७४**, पौराणिकानां बालाचतुर्दशी ¤
अमावास्या	चतुष्.	**३०**	१७:२६	**स्वातिः**	**०।४**	**६:३७**	वि.	१९:३६	शो.	२१:२६	शुभः	१३:०१	१०:४४	६:२७	१७:११	३३३	**श**	**२**	**18**	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानांदर्शश्राद्धम्**, ●

वैदिकतिथिपत्रको सहयोगी बन्न, वैदिक धार्मिक विषयको प्रचारप्रसारमा सहभागी हुन सबै वैदिक-सनातन-धर्म-परम्पराका अनुयायीहरुमा अनुरोध छ ।

—स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब

सहःकृष्णप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६१२९, सहःकृष्णषष्ठ्यां विशाखयोः सूर्यः २।१५ (८:३१)।

माघ-वैशाख-कार्त्तिकस्नानादिव्रतचारिभिः पौराणिकैः मार्गकृष्णप्रतिपदि (कार्त्तिककृष्णप्रतिपदि) त्रिजटायाः पूजां कृत्वा तस्यै नवीनफलादिसहितस्याऽर्घस्य दाने प्रयोज्यः पौराणो मन्त्रः— **रावणाऽवरजे देवि सीतायाः प्रियवादिनि। गृहाणाऽर्घ्यं मया दत्तं त्रिजटायै नमोनमः॥** धर्ममूलम्— **वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृति-शीले च तद्विदाम्। आचारश् चैव साधूनामात्मनस् तुष्टिरेव च।॥**—मनुस्मृति २।६।

तिथिकृत्य— वैदिकपद्धतिअनुसार जुन दिन जुन वैदिक तिथि छ तेस दिन तेइ वैदिक तिथिको कृत्य हुन्छ। तिथिक्षयवृद्धिको विचार गर्नपर्दैन। कृष्णपक्षका चतुर्दशीका कृत्यका विषयमा मात्र चतुर्दशी टुटेका पक्षमा विशेष विचार गर्नपर्छ— **या तिथिस् तदहोरात्रं यस्मादभ्युदितो रविः। तया कर्माणि कुर्वीत ह्रासवृद्धी न कारणम्।**—परिशिष्टवचन, वे.ज्यो.सोमाकरभाष्य, २९ श्लो.।

२३ २०७४।७।२२ प्रातः ६:००

सू	६:२१:२१:३३	६०:२१	शु	६:०६:१४:३२	७५:१३
म	५:१५:५०:०३	३७:५०	श	८:००:५१:२६	६:१०
बु	७:०८:४६:२२	८३:०४	रा	३:२५:१९:४७	३:११
बृ	६:११:४६:२३	१२:५७			

८ बु
६ म
९ श
सू ७ बृ शु
५
१० के
४ रा
११
१
३
१२
२

वैदिकतिथिपत्रे कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५-९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, हेमन्तः ऋतुः, सहस्यः [पौषः] मासः, शुक्लः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंवत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **वृश्चिकमासः** (मङ्सिर), **मार्गशीर्षशुक्लपक्षः** (नेपालसंवत् ११३८, थिंलाथ्वः=मार्गशीर्षशुक्लपक्षः) [नोवेम्बर-डिसेम्बर, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ मङ्सिर ३ – १७
प्रतिपदा	कौस्तु.	१	१९:२८	वि	०।११	६:५४	अ.	२२:०८	अ.	२१:५५	मृत्युः	वृश्चिकः	१०:४३	६:२८	१७:१०	३३४	आ	३	19	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	बाल.	२	२१:४९	अनु	०।१८	७:११	ज्ये.	२४:५८	सु.	२२:३९	पद्मम्	२४:५८	१०:४२	६:२८	१७:१०	३३५	सो	४	20	
तृतीया	तैति.	३	२४:२६	ज्येष्ठा	१।४	७:२८	मू.	२८:०२	धृ.	२३:३४	छत्रम्	धनुः	१०:४१	६:२९	१७:१०	३३६	म	५	21	
चतुर्थी	वाणि.	४	२७:१०	मू	१।११	७:४६	पू.	अहोरात्र	शू.	२४:३५	श्रीवत्सः	धनुः	१०:४०	६:३०	१७:१०	३३७	बु	६	22	**सायनधनुषि सूर्यः १२।२९ (११:३०)**
पञ्चमी	बवम्	५	२९:५१	पूषा	१।१८	८:०३	पू.	७:१२	ग.	२५:३४	धाता	१३:५९	१०:३९	६:३१	१७:०९	३३८	बृ	७	23	पौराणिकानां विवाहपञ्चमी
षष्ठी	कौल.	६	अहोरात्र	उषा	२।५	८:२०	उ.	१०:१६	वृ.	२६:२३	कालद.	मकरः	१०:३८	६:३१	१७:०९	३३९	शु	८	24	
सप्तमी	गराजिः	६	८:१५	श्र	२।१२	८:३७	श्र.	१३:०३	ध्रु.	२६:५१	स्थिरः	२६:१७	१०:३७	६:३२	१७:०९	३४०	श	९	25	
अष्टमी	विष्टिः	७	१०:०९	ध	२।१९	८:५४	ध.	१५:१९	व्या.	२६:४९	मातङ्गः	कुम्भः	१०:३६	६:३३	१७:०९	३४१	आ	१०	26	
नवमी	बाल.	८	११:२१	श	३।५	९:११	श.	१६:५३	ह.	२६:११	अमृतम्	कुम्भः	१०:३५	६:३४	१७:०९	३४२	सो	११	27	
दशमी	तैति.	९	११:४१	पूभ	३।१२	९:२९	पू.	१७:३६	व.	२४:५१	काणः	११:३०	१०:३४	६:३५	१७:०९	३४३	म	१२	28	
एकादशी	वाणि.	१०	११:०८	उभ	३।१९	९:४६	उ.	१७:२६	सि.	२२:५०	लुम्बः	मीनः	१०:३३	६:३५	१७:०८	३४४	बु	१३	29	पौराणिकानां मोक्षदा एकादशी, मन्वादिः, गीताजयन्ती
द्वादशी	बवम्	११	९:४२	रे	४।६	१०:०३	रे.	१६:२७	व्य.	२०:०८	मित्रम्	१६:२७	१०:३२	६:३६	१७:०८	३४५	बृ	१४	30	
त्रयोदशी	कौल.	१२	७:३० २८:३९	अ	४।१३	१०:२०	अ.	१४:४३	व.	१६:५२	वज्रम्	मेषः	१०:३२	६:३७	१७:०८	३४६	शु	१५	1	**डिसेम्बर**मासप्रारम्भः (२०१७ क्रै.)
चतुर्दशी	गराजिः	१४	२५:१८	भ	५।०	१०:३७	भ.	१२:२४	प.	१३:०७	ध्वाङ्क्षः	१७:४५	१०:३१	६:३८	१७:०८	३४७	श	१६	2	○ (योमरिपुह्नि), गैडुपूजा,
पूर्णिमा	विष्टिः	१५	२१:४०	कृ	५।६	१०:५४	कृ.	९:४०	शि.	९:०३ २८:४२	धूम्रः	वृषः	१०:३०	६:३८	१७:०८	३४८	आ	१७	3	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** पौराणिकानांधान्यपूर्णिमा ○

सङ्कल्पमा कालको उल्लेख

धार्मिक कार्यको सङ्कल्पमा कालको उल्लेख गर्दा एस वैदिकतिथिपत्रमा देखाइए अनुसारका वेदाङ्गज्योतिषोक्त वर्ष, अयन, महिना, पक्ष, तिथि, नक्षत्रको उल्लेख गर्न पर्छ। अरु पात्राका अयन, ऋतु इत्यादि ग्राह्य छैनन्।

सहस्यशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६१४४, सहस्यशुक्लचतुर्थ्याम् अनुराधासु सूर्यः १८।७ (२१:११)।

शैशिरीय-शाकल-ऋग्वेद-मन्त्र-संहितामा माञ्छेलाइ उद्यमशील हुन प्रेरणा गर्ने खालका धेरै मन्त्र पाँइञ्छन्— **इदाह्नः पीतिमुत वो मदं धुर् *न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।* ते नूनमस्मे ऋभवो वसूनि तृतीये अस्मिन् त्सवने दधात॥**–शैशिरीयशाकलऋग्वेदमन्त्रसंहिता ४।३३।११। **यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति। यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥**–५।४४।१४। **इच्छन्ति देवा सुन्वन्तं *न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।* यन्ति प्रमादमतन्द्राः॥**–८।२।१८। **त्रातारो देवा अधिवोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः। वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम॥**–८।४८।१४। **मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर् भुवो वाजानां पते। मत्स्वा सुतस्य गोमतः॥**–८।९२।३०।

२४ २०७४।८।७ प्रातः ६:००

सू	७:०६:३३:०७	६०:४३	शु	६:२५:०८:२८	७५:२४
म	५:२५:२२:१९	३७:४६	श	८:०२:३१:०३	६:४३
बु	७:२८:२२:४१	४७:५५	रा	३:२४:३७:०५	३:११
बृ	६:१५:०४:१८	१२:३०			

८।१७–१३:१९ बुध वक्री

८।१९–९:१६ शनि अस्त

८।२०–२९:४२ बुध प.अस्त

९ श
बृ ७ शु
१० के
सू ८ बु
६ म
११
५
१२
२
४ रा
१
३

_वैदिकतिथिपत्रे_ कलिसंवत् ५०८२, सौम्यं युगम् (८५–९), परिवत्सरः (२) (चान्द्रः कीलकः संवत्सरः ४२), दक्षिणायनम्, हेमन्तः ऋतुः, सहस्यः [पौषः] मासः, कृष्णः पक्षः

विक्रमसंवत् २०७४, शकान्तसंत् (शकसंवत्) १९३९, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५), **वृश्चिकमास-धनुर्मासौ** (मङ्सिर-पुस), **पौषकृष्णपक्षः** (नेपालसंवत् ११३८, थिंलागाः=मार्गशीर्षकृष्णपक्षः) [डिसेम्बर, २०१७ क्रै.]

वै.ति.	करणम्	लौ.ति.	घण्टा	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	लौ.न.	घण्टा	योगाः	घण्टा	योगाः	चन्द्रराशिः	दिनमा.	सू.उ.	सू.अ.	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ मङ्सिर १८ – पुस २
प्रतिपदा	बाल.	१	१७:५४	**रो**	**५।१३**	**११:१२**	रो.	६:४२ २७:४२	सा.	२४:२७	वर्धमा.	१७:१२	१०:२९	६:३९	१७:०९	३४९	**सो**	**१८**	4	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, ⌑
द्वितीया	तैति.	२	१४:१२	**मृ**	**६।०**	**११:२९**	आ.	२४:५०	शु.	२०:१४	चरः	मिथुनम्	१०:२९	६:४०	१७:०९	३५०	**म**	**१९**	5	⌑ **अध्यायोत्सर्जनम्**
तृतीया	वाणि.	३	१०:४३	**आ**	**६।७**	**११:४६**	पुन	२२:१७	शु.	१६:१३	गदः	१६:५३	१०:२८	६:४१	१७:०९	३५१	**बु**	**२०**	6	
चतुर्थी	बवम्	४	७:३७ २९:०४	**पुन**	**६।१४**	**१२:०३**	पु.	२०:११	ब्र.	१२:३४	शुभः	कर्कटः	१०:२८	६:४१	१७:०९	३५२	**बृ**	**२१**	7	
पञ्चमी	कौल.	६	२७:०७	**पु**	**७।१**	**१२:२०**	अ.	१८:४२	ऐ.	९:२२ ३०:३४	मृत्युः	१८:४२	१०:२७	६:४२	१७:०९	३५३	**शु**	**२२**	8	❁ श्राद्धम्, **विशाखयोः गुरुः (बृहस्पतिः) ५।१५ (२६:५३)**
षष्ठी	गराजिः	७	२५:५४	**अ**	**७।८**	**१२:३७**	म.	१७:५२	वि.	२८:३४	पद्मम्	सिंहः	१०:२७	६:४३	१७:०९	३५४	**श**	**२३**	9	◉ परिहारदिनम्, मौनी अमावास्या, गोकर्णप्रदेशे विष्णुपादुका- ❁
सप्तमी	विष्टिः	८	२५:२४	**म**	**७।१४**	**१२:५४**	पू.	१७:४५	प्री.	२७:०१	छत्रम्	२३:५०	१०:२६	६:४३	१७:१०	३५५	**आ**	**२४**	10	रविसप्तमी
अष्टमी	बाल.	९	२५:३५	**पूफ**	**८।१**	**१३:१२**	उ.	१८:१९	आ.	२६:००	श्रीवत्सः	कन्या	१०:२६	६:४४	१७:१०	३५६	**सो**	**२५**	11	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अष्टका, वैकल्पिकम् अध्यायोत्सर्जनदिनम्**
नवमी	तैति.	१०	२६:२३	**उफ**	**८।८**	**१३:२९**	ह.	१९:३०	सौ.	२५:२६	सौम्यः	कन्या	१०:२५	६:४५	१७:१०	३५७	**म**	**२६**	12	**स्मार्तानां वैदिकानाम् अन्वष्टका**
दशमी	वाणि.	११	२७:४१	**ह**	**८।१५**	**१३:४६**	चि.	२१:११	शो.	२५:१६	कालद.	८:१७	१०:२५	६:४५	१७:१०	३५८	**बु**	**२७**	13	● **दर्शश्राद्धम्,** हल-कण्डनी-यन्त्रक- मन्थनीकर्म-सायम्भोजन-◉
एकादशी	बवम्	१२	२९:२४	**चि**	**९।२**	**१४:०३**	स्वा.	२३:१८	अ.	२५:२५	स्थिरः	तुला	१०:२५	६:४६	१७:११	३५९	**बृ**	**२८**	14	पौराणिकानां सफला एकादशी
द्वादशी	कौल.	१३	अहोरात्र	**स्वा**	**९।९**	**१४:२०**	वि.	२५:४३	सु.	२५:४८	मातङ्गः	१९:०६	१०:२४	६:४७	१७:११	३६०	**शु**	**२९**	15	✧ **शुक्र पूर्वतिर अस्त १३।१५ (१२:०५)**
त्रयोदशी	गराजिः	१३	७:२६	**वि**	**९।१६**	**१४:३७**	अ.	२८:२५	धृ.	२६:२४	अमृतम्	वृश्चिकः	१०:२४	६:४७	१७:११	३६१	**श**	**१**	16	**धनुर्मासप्रारम्भः (पुस) २०७४,** धनुषि सूर्यः ११।५२ (११:३४) ✧
अमावास्या	चतुष्.	१४	९:४४	**अनु**	**१०।३**	**१४:५५**	ज्ये.	अहोरात्र	शू.	२७:०९	काणः	वृश्चिकः	१०:२४	६:४८	१७:१२	३६२	**आ**	**२**	17	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां** ●

सहस्यशुक्लप्रतिपदायां गतकलिसावनाऽहर्गणः १८५६१४९, सहस्यशुक्लतृतीयायां ज्येष्ठायां सूर्यः ३।२० (९:५२)।

अध्यायोत्सर्जनम्– **पौषस्य रोहिण्यां मध्यमायां वाऽष्टकायामध्यायानुत्सृजेयुः।**–पारस्करगृह्यसूत्र २।१२। **पौषमासस्य रोहिण्यामष्टकायामथाऽपि वा। जलान्ते छन्दसां कुर्यादुत्सर्गं विधिवद् बहिः।**–याज्ञवल्क्यस्मृति १।१४३। **अत ऊर्ध्वं तु च्छन्दांसि शुक्लेषु नियतः पठेत्। वेदाङ्गानि च सर्वाणि कृष्णपक्षेषु सम्पठेत्।**–मनुस्मृति ४।९८। वेदको अध्यापन गर्ने शास्त्रीय अधिकार भएका ब्राह्मणहरुले शास्त्रीय रूपमा अध्यायोपाकर्म र अध्यायोत्सर्जन गर्ने प्रथा चलाउनु उचित हुन्छ।

तपः– **वेदमेव सदाऽभ्यस्येत् तपस् तप्स्यन् द्विजोत्तमः। वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते॥**–मनुस्मृति २।१६६।

२५ २०७४।८।२२ प्रातः ६:००

सू	७:२१:४४:५९	६१:००	**शु**	७:१३:५९:५८	७५:३०
म	६:०४:४८:२५	३७:३९	**श**	८:०४:१३:०३	७:०१
बु	८:०२:५७:३८	-८१:३०	**रा**	३:२३:४९:२४	३:११
बृ	६:१८:०९:१७	११:४३			

बु ९श
म ७बृ
१०के
सू ८ शु
६
११
५
१२
२
४रा
१
३

कलिसंवत् ५०८३ इदावत्सरको उदगयनको (उत्तरायणको) संक्षिप्त तिथिपत्र (पात्रो)

कलिसंवत् ५०८३, सौम्यं युगम्, इदावत्सरः ३(चान्द्रः सौम्यः संवत्सरः ४३), उदगयनम्, शिशिर ऋतुः, तपाः [माघः] मासः
विकमसंवत् २०७४, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५) **धनुर्मास-मकरमासै** (पुस-माघ) **पौषशुक्लपक्षः, माघकृष्णपक्षः च**

वै.ति.	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ पुस ३ – माघ २
शु.प्रतिपदा	ज्ये	१०।९	१५:१२	३६३	सो	३	18	श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकनववर्षारम्भः, ☾
द्वितीया	मू	१०।१६	१५:२९	३६४	म	४	19	☾इदावत्सरारम्भः चान्द्रसोम्यसंवत्सरप्रारम्भः, उदगयनारम्भः, ❖
तृतीया	पूषा	११।३	१५:४६	३६५	बु	५	20	❖ शिशिरर्त्वारम्भः, (ह्लोसारः), पौराणिकानामग्निव्रतम्
चतुर्थी	उषा	११।१०	१६:०३	१	बृ	६	21	दृक्सिद्ध-वैदिकसौरोदगयनारम्भः (वास्तविक सौर उत्तरायणको आरम्भ)
पञ्चमी	श्र	११।१७	१६:२०	२	शु	७	22	
षष्ठी	ध	१२।४	१६:३७	३	श	८	23	
सप्तमी	श	१२।११	१६:५५	४	आ	९	24	रविसप्तमी
अष्टमी	पूभ	१२।१८	१७:१२	५	सो	१०	25	
नवमी	उभ	१३।५	१७:२९	६	म	११	26	
दशमी	रे	१३।१२	१७:४६	७	बु	१२	27	
एकादशी	अ	१३।१९	१८:०३	८	बृ	१३	28	पौराणिकानां पुत्रदा एकादशी, मन्वादिः
द्वादशी	भ	१४।६	१८:२०	९	शु	१४	29	
त्रयोदशी	कृ	१४।१३	१८:३८	१०	श	१५	30	
चतुर्दशी	रो	१५।०	१८:५५	११	आ	१६	31	○ स्वस्थानीव्रतारम्भः (मिलापुह्नि)
पूर्णिमा	मृ	१५।७	१९:१२	१२	सो	१७	1	श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः, जनवरि (१, २०१८ क्रै.) ○
कृ.प्रतिपदा	आ	१५।१४	१९:२९	१३	म	१८	2	श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः, पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	पुन	१६।१	१९:४६	१४	बु	१९	3	
तृतीया	पु	१६।८	२०:०३	१५	बृ	२०	4	
चतुर्थी	अ	१६।१५	२०:२०	१६	शु	२१	5	
पञ्चमी	म	१७।२	२०:३८	१७	श	२२	6	
षष्ठी	पूफ	१७।९	२०:५५	१८	आ	२३	7	
सप्तमी	उफ	१७।१७	२१:१२	१९	सो	२४	8	
अष्टमी	हस्तः	१८।४	२१:२९	२०	म	२५	9	स्मार्तानां वैदिकानाम् एकाष्टका
नवमी	चित्रा	१८।११	२१:४६	२१	बु	२६	10	स्मार्तानां वैदिकानाम् अन्वष्टका
दशमी	स्वातिः	१८।१८	२२:०३	२२	बृ	२७	11	
एकादशी	वि	१९।५	२२:२१	२३	शु	२८	12	पौराणिकानां षट्तिला एकादशी
द्वादशी	अनु	१९।१२	२२:३८	२४	श	२९	13	
त्रयोदशी	ज्येष्ठा	१९।१९	२२:५५	२५	आ	३०	14	
चतुर्दशी	मू	२०।७	२३:१२	२६	सो	१	15	मकरमासप्रारम्भः (माघ) २०७४
अमावास्या	पूषा	२०।१४	२३:२९	२७	म	२	16	श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्

वैदिक सङ्कल्पमा सौरअयनसापेक्ष चान्द्रअयन लिन पर्ने हुनाले एस वर्ष पुस ३ गते देखि सङ्कल्पमा “उदगयने शिशिरे ऋतौ” भन्न पर्छ।

कलिसंवत् ५०८३, सौम्यं युगम्, इदावत्सरः ३(चान्द्रः सौम्यः संवत्सरः ४३), उदगयनम्, शिशिर ऋतुः, तपस्यः [फाल्गुनः] मासः
विकमसंवत् २०७४, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५) **मकरमास-कुम्मासौ** (माघ-फागुन) **माघशुक्लपक्षः, फाल्गुनकृष्णपक्षः च**

वै.ति.	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	अहर्गणः	वार	गते	ता.	२०७४ माघ ३ – फागुन ३
शु.प्रतिपदा	उषा	२१।१	२३:४६	२८	बु	३	17	श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकानां ☾
द्वितीया	श्र	२१।८	२४:०४	२९	बृ	४	18	☾संवत्सरप्पूनां शुनासीरीयपर्व, पौराणिकानामग्निव्रतम्
तृतीया	ध	२१।१५	२४:२१	३०	शु	५	19	
चतुर्थी	श	२२।३	२४:३८	३१	श	६	20	
पञ्चमी	पूभ	२२।१०	२४:५५	३२	आ	७	21	पौराणिकानां श्रीपञ्चमी
षष्ठी	उभ	२२।१७	२५:१२	३३	सो	८	22	
सप्तमी	रे	२३।४	२५:२९	३४	म	९	23	पौराणिकानाम् अचला सप्तमी, रथसप्तमी
अष्टमी	अ	२३।१२	२५:४६	३५	बु	१०	24	
नवमी	भ	२३।१९	२६:०४	३६	बृ	११	25	
दशमी	कृ	२४।६	२६:२१	३७	शु	१२	26	
एकादशी	रो	२४।१४	२६:३८	३८	श	१३	27	पौराणिकानां भीमा एकादशी
द्वादशी	मृ	२५।१	२६:५५	३९	आ	१४	28	
त्रयोदशी	आ	२५।८	२७:१२	४०	सो	१५	29	○ स्वस्थानीव्रतसमप्तिः (सिपुह्नि) **खग्रासचन्द्रग्रहणम्**
चतुर्दशी	पुन	२५।१६	२७:२९	४१	म	१६	30	श्रौतिनां वैदिकानां शुनासीरीयपर्व
पूर्णिमा	पु	२६।३	२७:४७	४२	बु	१७	31	श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, वैश्वदेवपर्व, ○
कृ.प्रतिपदा	अ	२६।१०	२८:०४	४३	बृ	१८	1	श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः, पौराणिकानामग्निव्रतम् ✧
द्वितीया	म	२६।१८	२८:२१	४४	शु	१९	2	शुक्रको पश्चिमतिर उदय २।२५ (७:४८)
तृतीया	पूफ	२७।५	२८:३८	४५	श	२०	3	✧ फरबरि (२, २०१८ क्रै.)
चतुर्थी	उफ	२७।१२	२८:५५	४६	आ	२१	4	
पञ्चमी	ह	२८।०	२९:१२	४७	सो	२२	5	
षष्ठी	चि	२८।७	२९:२९	४८	म	२३	6	
सप्तमी	स्वा	२८।१५	२९:४७	४९	बु	२४	7	
अष्टमी	वि	२९।२	३०:०४	५०	बृ	२५	8	
नवमी	अनु	२९।९	३०:२१	५१	शु	२६	9	
दशमी	ज्ये	२९।१७	३०:३८	५२	श	२७	10	
एकादशी	मू	अहोरात्र	अहोरात्र	५३	आ	२८	11	पौराणिकानां विजया एकादशी
द्वादशी	मू	०।५	६:५५	५४	सो	२९	12	● स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्
त्रयोदशी	पूषा	०।१२	७:१२	५५	म	१	13	कुम्भमासप्रारम्भः (फागुन) २०७४,
चतुर्दशी	उ	१।०	७:३०	५६	बु	२	14	पौराणिकनां महाशिवरात्रिः, सिलाचह्रेपूजा
अमावास्या	श्र	१।७	७:४७	५७	बृ	३	15	श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, ●

इदावत्सरमा वस्त्रको दान गर्न पर्ने विधान

संवत्सरे तिलान् दद्याद् यवाँस् तु परिवत्सरे।
इडापूर्वे च वस्त्राणि धान्यं चाऽप्यनुवत्सरे॥
इद्वत्सरे तु रजतं क्रमाद् देयानि शक्तितः।
—मार्कण्डेयस्मृति।

कलिसंवत् ५०८३, सौम्यं युगम्, इदावत्सरः ३(चान्द्रः सौम्यः संवत्सरः ४३), उदगयनम्, वसन्त ऋतुः, मधुः [चैत्रः] मासः

विकमसंवत् २०७४, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५) **कुम्भमास-मीनमासौ** (फागुन-चइत) **फाल्गुनशुक्लपक्षः, चैत्रकृष्णपक्षः** च

वै.ति.	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ फागुन ४ – चइत ३
शु.प्रतिपदा	ध	१।१५	८:०४	५८	शु	४	16	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिक- वसन्तर्त्वारम्भः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	श	२।२	८:२१	५९	श	५	17	
तृतीया	पूभ	२।१०	८:३८	६०	आ	६	18	
चतुर्थी	उभ	२।१७	८:५५	६१	सो	७	19	
पञ्चमी	रे	३।५	९:१२	६२	म	८	20	**वैदिकवसन्तपञ्चमी**
षष्ठी	अश्व	३।१२	९:३०	६३	बु	९	21	आचार्य-कौण्डिन्न्यायन-जन्मदिवसः अष्टसप्ततः
सप्तमी	भ	४।०	९:४७	६४	बृ	१०	22	
अष्टमी	कृ	४।७	१०:०४	६५	शु	११	23	पौराणिकानां चीरोत्थापनम्, होलिकारम्भः
नवमी	रो	४।१५	१०:२१	६६	श	१२	24	
दशमी	मृ	५।२	१०:३८	६७	आ	१३	25	
एकादशी	आ	५।१०	१०:५५	६८	सो	१४	26	पौराणिकानाम् आमलकी एकादशी
द्वादशी	पुन	५।१७	११:१३	६९	म	१५	27	पौराणिकानां गोविन्दद्वादशी
त्रयोदशी	पु	६।५	११:३०	७०	बु	१६	28	
चतुर्दशी	अ	६।१२	११:४७	७१	बृ	१७	1	मार्च (३, २०१८ क्रै.)
पूर्णिमा	म	७।०	१२:०४	७२	शु	१८	2	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, स्मार्तानां वैदिकानां चैत्रीकर्म** ○
कृ.प्रतिपदा	पूफ	७।८	१२:२१	७३	श	१९	3	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	उफ	७।१५	१२:३८	७४	आ	२०	4	○ पौराणिकानां फागुपूर्णिमा (होलाका)
तृतीया	ह	८।३	१२:५५	७५	सो	२१	5	
चतुर्थी	चि	८।१०	१३:१३	७६	म	२२	6	मङ्गलचतुर्थी
पञ्चमी	स्वा	८।१८	१३:३०	७७	बु	२३	7	
षष्ठी	वि	९।६	१३:४७	७८	बृ	२४	8	
सप्तमी	अनु	९।१३	१४:०४	७९	शु	२५	9	
अष्टमी	ज्ये	१०।१	१४:२१	८०	श	२६	10	
नवमी	मू	१०।८	१४:३८	८१	आ	२७	11	
दशमी	पूषा	१०।१६	१४:५६	८२	सो	२८	12	
एकादशी	उषा	११।३	१५:१३	८३	म	२९	13	पौराणिकानां पापमोचनी एकादशी
द्वादशी	श्र	११।११	१५:३०	८४	बु	३०	14	
त्रयोदशी	ध	११।१९	१५:४७	८५	बृ	१	15	**मीनमासप्रारम्भः (चइत) २०७४**
चतुर्दशी	श	१२।६	१६:०४	८६	शु	२	16	● **अश्वयात्रा (घोडेजात्रा)**
अमावास्या	पूभ	१२।१४	१६:२१	८७	श	३	17	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्,** ●

वैदिकतिथिपत्रको प्रचारप्रसारमा सहयोग पुऱ्याउन वैदिकसनातन-वर्णाश्रमधर्मानुयायीहरु अग्रसर हुनुहोस्।

कलिसंवत् ५०८३, सौम्यं युगम्, इदावत्सरः ३(चान्द्रः सौम्यः संवत्सरः४३), उदगयनम्, वसन्त ऋतुः, माधवः [वैशाखः] मासः

विकमसंवत् २०७४-२०७५, बार्हस्पत्यः विरोधकृत् संवत्सरः (४५) **मीनमास-मेषमासौ** (चइत-वैशाख) **चैत्रशुक्लपक्षः, वैशाखकृष्णपक्षः** च

वै.ति.	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७४ चइत ४ – २०७५ वैशाख २
शु.प्रतिपदा	उभ	१३।१	१६:३९	८८	आ	४	18	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्, नवरात्रारम्भः
द्वितीया	रे	१३।९	१६:५६	८९	सो	५	19	
तृतीया	अश्व	१३।१७	१७:१३	९०	म	६	20	**वासन्तविषुवत्सूर्यसङ्क्रमः**
चतुर्थी	भ	१४।४	१७:३०	९१	बु	७	21	
पञ्चमी	कृ	१४।१२	१७:४७	९२	बृ	८	22	
षष्ठी	रो	१५।०	१८:०४	९३	शु	९	23	
सप्तमी	मृ	१५।७	१८:२१	९४	श	१०	24	
अष्टमी	आ	१५।१५	१८:३९	९५	आ	११	25	पौराणिकानां चैत्राष्टमी (चैते दसैं)
नवमी	पुन	१६।२	१८:५६	९६	सो	१२	26	पौराणिकानां रामनवमी
दशमी	पु	१६।१०	१९:१३	९७	म	१३	27	
एकादशी	अ	१६।१८	१९:३०	९८	बु	१४	28	पौराणिकानां कामदा एकादशी
द्वादशी	म	१७।५	१९:४७	९९	बृ	१५	29	
त्रयोदशी	पूफ	१७।१३	२०:०४	१००	शु	१६	30	
चतुर्दशी	उफ	१८।०	२०:२२	१०१	श	१७	31	
पूर्णिमा	हस्तः	१८।८	२०:३९	१०२	आ	१८	1	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** अप्रिल (४, २०१८ क्रै.)
कृ.प्रतिपदा	चित्रा	१८।१६	२०:५६	१०३	सो	१९	2	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	स्वातिः	१९।३	२१:१३	१०४	म	२०	3	
तृतीया	वि	१९।११	२१:३०	१०५	बु	२१	4	
चतुर्थी	अनु	१९।१९	२१:४७	१०६	बृ	२२	5	
पञ्चमी	ज्येष्ठा	२०।६	२२:०४	१०७	शु	२३	6	
षष्ठी	मू	२०।१४	२२:२२	१०८	श	२४	7	
सप्तमी	पूषा	२१।१	२२:३९	१०९	आ	२५	8	रविसप्तमी
अष्टमी	उषा	२१।९	२२:५६	११०	सो	२६	9	
नवमी	श्र	२१।१६	२३:१३	१११	म	२७	10	
दशमी	ध	२२।४	२३:३०	११२	बु	२८	11	
एकादशी	श	२२।१२	२३:४७	११३	बृ	२९	12	पौराणिकानां वरूथिनी एकादशी
द्वादशी	पूभ	२२।१९	२४:०५	११४	शु	३०	13	● लौकिकानां मातृसम्मानदिवसः (आमाको मुख हेर्ने दिन)
त्रयोदशी	उभ	२३।७	२४:२२	११५	श	१	14	**मेषमासप्रारम्भः (वैशाख) २०७५**
अमावास्या	रे	२३।१४	२४:३९	११६	आ	२	15	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्** ●

वैदिक नववर्षको आरम्भ उत्तरायण लाग्ने शुक्लपक्षको प्रतिपदामा हुन्छ।

कलिसंवत् ५०८३, सौम्यं युगम्, इदावत्सरः ३ (चान्द्रः सौम्यः संवत्सरः ४३), उदगयनम्, ग्रीष्म ऋतुः, शुक्रः [ज्येष्ठः] मासः

विकमसंवत् २०७५, बार्हस्पत्यः परिधावी संवत्सरः (४६) **मेषमास-वृषमासौ** (वैशाख-जेठ) **वैशाखशुक्लपक्षः, ज्येष्ठकृष्णपक्षः** च

वै.ति.	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७५ वैशाख ३ – जेठ १
शु.प्रतिपदा	अ	२४।२	२४:५६	११७	सो	३	16	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः, वैदिकग्रीष्मर्त्वारम्भः** ☾
द्वितीया	भ	२४।१०	२५:१३	११८	म	४	17	☾ पौराणिकानामग्निव्रतम्
तृतीया	कृ	२४।१७	२५:३०	११९	बु	५	18	पौराणिकानाम् अक्षयतृतीया
चतुर्थी	रो	२५।५	२५:४७	१२०	बृ	६	19	
पञ्चमी	मृ	२५।१२	२६:०५	१२१	शु	७	20	
षष्ठी	आ	२६।०	२६:२२	१२२	श	८	21	
सप्तमी	पुन	२६।७	२६:३९	१२३	आ	९	22	रविसप्तमी
अष्टमी	पु	२६।१५	२६:५६	१२४	सो	१०	23	
नवमी	अ	२७।२	२७:१३	१२५	म	११	24	
दशमी	म	२७।१०	२७:३०	१२६	बु	१२	25	
एकादशी	पूफ	२७।१७	२७:४८	१२७	बृ	१३	26	पौराणिकानां मोहिनी एकादशी
द्वादशी	उफ	२८।५	२८:०५	१२८	शु	१४	27	
त्रयोदशी	ह	२८।१२	२८:२२	१२९	श	१५	28	
चतुर्दशी	चि	२९।०	२८:३९	१३०	आ	१६	29	
पूर्णिमा	स्वा	२९।७	२८:५६	१३१	सो	१७	30	**श्रौतिनां वैदिकानाम् उपवसथः,** पौराणिकानां चण्डीपूर्णिमा
कृ.प्रतिपदा	वि	२९।१५	२९:१३	१३२	म	१८	1	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम् ✧
द्वितीया	अनु	अहोरात्र	अहोरात्र	१३३	बु	१९	2	✧ मे (५, २०१८ क्रै.)
तृतीया	अनु	०।३	५:३०	१३४	बृ	२०	3	
चतुर्थी	ज्ये	०।१०	५:४८	१३५	शु	२१	4	
पञ्चमी	मू	०।१८	६:०५	१३६	श	२२	5	
षष्ठी	पूषा	१।५	६:२२	१३७	आ	२३	6	
सप्तमी	उ	१।१३	६:३९	१३८	सो	२४	7	
अष्टमी	श्र	२।०	६:५६	१३९	म	२५	8	
नवमी	ध	२।८	७:१३	१४०	बु	२६	9	
दशमी	श	२।१५	७:३१	१४१	बृ	२७	10	
एकादशी	पूभ	३।२	७:४८	१४२	शु	२८	11	पौराणिकानां अपरा एकादशी
द्वादशी	उभ	३।१०	८:०५	१४३	श	२९	12	
त्रयोदशी	रे	३।१७	८:२२	१४४	आ	३०	13	
चतुर्दशी	अ	४।५	८:३९	१४५	सो	३१	14	● **दर्शश्राद्धम्,** वटसावित्रीव्रतम्, **वृषमासप्रारम्भः (जेठ) २०७५**
अमावास्य	भ	४।१२	८:५६	१४६	म	१	15	**श्रौतिनां वैदिकानां पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां** ●

वैदिक सनातन वर्णाश्रम-धर्मका अनुयायीहरु आफ्नो धर्मको निर्विकल्प भाषा संस्कृत सिक्ने-सिकाउने काममा सहयोगी र सहभागी हुनुहोस्।

कलिसंवत् ५०८३, सौम्यं युगम्, इदावत्सरः ३ (चान्द्रः सौम्यः संवत्सरः ४३), उदगयनम्, ग्रीष्म ऋतुः, शुचिः [आषाढः] मासः

विकमसंवत् २०७५, बार्हस्पत्यः परिधावी संवत्सरः (४६) **वृषमासः** (जेठ) **अधिकज्येष्ठशुक्लपक्षः, अधिकज्येष्ठकृष्णपक्षः** च

वै.ति.	वै.न.	मुहूर्तः	घण्टा	अहर्गणः	वारः	गते	ता.	२०७५ जेठ २ – ३०
शु.प्रतिपदा	कृ	४।१९	९:१४	१४७	बु	२	16	**श्रौतिनां वैदिकानां दर्शेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम् ☾
द्वितीया	रो	५।७	९:३१	१४८	बृ	३	17	☾ पौराणिकानां गङ्गादशहरास्नानारम्भः
तृतीया	मृ	५।१४	९:४८	१४९	शु	४	18	
चतुर्थी	आ	६।१	१०:०५	१५०	श	५	19	
पञ्चमी	पुन	६।९	१०:२२	१५१	आ	६	20	
षष्ठी	पु	६।१६	१०:३९	१५२	सो	७	21	
सप्तमी	अ	७।३	१०:५६	१५३	म	८	22	
अष्टमी	म	७।११	११:१४	१५४	बु	९	23	
नवमी	पूफ	७।१८	११:३१	१५५	बृ	१०	24	
दशमी	उफ	८।५	११:४८	१५६	शु	११	25	पौराणिकानां गङ्गादशहरा (गङ्गादशमी)
एकादशी	हस्तः	८।१३	१२:०५	१५७	श	१२	26	पौराणिकानां पद्मिनी एकादशी
द्वादशी	चित्रा	९।०	१२:२२	१५८	आ	१३	27	
त्रयोदशी	स्वातिः	९।७	१२:३९	१५९	सो	१४	28	
चतुर्दशी	वि	९।१५	१२:५७	१६०	म	१५	29	
पूर्णिमा	अनु	१०।२	१३:१४	१६१	बु	१६	30	**श्रौतिनां वैदिकानामुपवसथः, वरुणप्रघासपर्व**
कृ.प्रतिपदा	ज्ये	१०।९	१३:३१	१६२	बृ	१७	31	**श्रौतिनां वैदिकानां पूर्णमासेष्टिः,** पौराणिकानामग्निव्रतम्
द्वितीया	मू	१०।१६	१३:४८	१६३	शु	१८	1	जुन (६, २०१८ क्रै.)
तृतीया	पूषा	११।३	१४:०५	१६४	श	१९	2	
चतुर्थी	उषा	११।११	१४:२२	१६५	आ	२०	3	
पञ्चमी	श्र	११।१८	१४:३९	१६६	सो	२१	4	
षष्ठी	ध	१२।५	१४:५७	१६७	म	२२	5	
सप्तमी	श	१२।१२	१५:१४	१६८	बु	२३	6	
अष्टमी	पूभ	१२।२०	१५:३१	१६९	बृ	२४	7	
नवमी	उभ	१३।७	१५:४८	१७०	शु	२५	8	
दशमी	रे	१३।१४	१६:०५	१७१	श	२६	9	
एकादशी	अश्व	१४।१	१६:२२	१७२	आ	२७	10	पौराणिकानाम् परमा एकादशी
द्वादशी	भ	१४।८	१६:४०	१७३	सो	२८	11	
त्रयोदशी	कृ	१४।१५	१६:५७	१७४	म	२९	12	
अमावास्या	रो	१५।२	१७:१४	१७५	बु	३०	13	**श्रौतिनां वैदिकानाम् पिण्डपितृयज्ञः, स्मार्तानां वैदिकानां दर्शश्राद्धम्**

अर्वाचीन मतअनुसार अधिकमास मानिने महिनाहरु वैदिक सिद्धान्तअनुसार शुद्ध महिना नै हुञ्छन् (द्रष्टव्य– पृ.४७)।

करणचक्रम्

तिथयः	शुक्लपक्षे		कृष्णपक्षे		तिथयः
	दिने	रात्रौ	दिने	रात्रौ	
१	कौस्तुभम्	बवम्	बालवम्	कौलवम्	१
२	बालवम्	कौलवम्	तैतिलम्	गराजिः	२
३	तैतिलम्	गराजिः	वाणिजम्	विष्टिः	३
४	वाणिजम्	विष्टिः	बवम्	बालवम्	४
५	बवम्	बालवम्	कौलवम्	तैतिलम्	५
६	कौलवम्	तैतिलम्	गराजिः	वाणिजम्	६
७	गराजिः	वाणिजम्	विष्टिः	बवम्	७
८	विष्टिः	बवम्	बालवम्	कौलवम्	८
९	बालवम्	कौलवम्	तैतिलम्	गराजिः	९
१०	तैतिलम्	गराजिः	वाणिजम्	विष्टिः	१०
११	वाणिजम्	विष्टिः	बवम्	बालवम्	११
१२	बवम्	बालवम्	कौलवम्	तैतिलम्	१२
१३	कौलवम्	तैतिलम्	गराजिः	वाणिजम्	१३
१४	गराजिः	वाणिजम्	विष्टिः	शकुनिः	१४
१५	विष्टिः	बवम्	चतुष्पदम्	नागम्	३०

अधिकमास र शुद्धमासका सम्बन्धमा जान्न पर्ने कुरा

अरु पात्रामा अधिकमास मानिएका महिना पनि वैदिक सिद्धान्तअनुसार शुद्ध महिना हुने र अरु पात्रामा शुद्ध मास भनिएका कतिपय महिनाहरु वैदिक सिद्धान्तअनुसार अधिकमास हुने हुँदा वैदिक तिथिपत्रको अनुसरण गर्नेहरुलाइ एस विषयको विशेष ज्ञान आवश्यक हुञ्छ। अतः वर्तमान षष्टिसंवत्सरअन्तर्गत पर्ने अर्वाचीन मतअनुसारका अधिकमास र ति महिनामा पर्ने वैदिक शुद्ध मासहरुको विवरण तल दिइञ्छ—

विक्रम-संवत्	अर्वाचीनमतको अधिकमास	वैदिक शुद्धमास	विक्रम-संवत्	अर्वाचीनमतको अधिकमास	वैदिक शुद्धमास
२०३४	आषाढ	**नभाः** (श्रावण)	२०६४	ज्येष्ठ	**शुचि** (आषाढ)
२०३७	ज्येष्ठ	**शुचि** (आषाढ)	२०६७	वैशाख	**शुक्र** (ज्येष्ठ)
२०३९	आश्विन	**ऊर्ज** (कार्त्तिक)	२०६९	भाद्र	**इष** (आश्विन)
२०३९	फाल्गुन	**मधु** (चैत्र)	२०७२	आषाढ	**नभाः** (श्रावण)
२०४२	श्रावण	**नभस्य** (भाद्र)	२०७५	ज्येष्ठ	**शुचि** (आषाढ)
२०४५	ज्येष्ठ	**शुचि** (आषाढ)	२०७७	आश्विन	**ऊर्ज** (कार्त्तिक)
२०४८	वैशाख	**शुक्र** (ज्येष्ठ)	२०८०	श्रावण	**नभस्य** (भाद्र)
२०५०	भाद्र	**इष** (आश्विन)	२०८३	ज्येष्ठ	**शुचि** (आषाढ)
२०५३	आषाढ	**नभाः** (श्रावण)	२०८५	कार्त्तिक	**सहाः** (मार्ग)
२०५६	ज्येष्ठ	**शुचि** (आषाढ)	२०८५	चैत्र	**माधव** (वैशाख)
२०५८	आश्विन	**ऊर्ज** (कार्त्तिक)	२०८८	भाद्र	**इष** (आश्विन)
२०६१	श्रावण	**नभस्य** (भाद्र)	२०९१	आषाढ	**नभाः** (श्रावण)

वैदिक तिथिपत्र (कलिसंवत् ५०८२)

अनुबन्ध

(१) वैदिक अनुष्ठानविशेषका दिनहरु

आजभोलि लोकमा वैदिक कर्मभन्दा तान्त्रिक र पौराणिक कर्म बडि चलेकाले वैदिक अनुष्ठानविशेषका विषयमा प्रचारको खाँचो देखिएको छ। तेसैले याहाँ केइ वैदिक अनुष्ठानविशेषका र तिनका कालका विषयमा बताइञ्छ।

शतरुद्रियमन्त्रपाठ— माध्यन्दिनीयवाजसनेयिशुक्लयजुर्वेदमन्त्रसंहिताका सौरौँ अध्यायका मन्त्रलाइ शतरुद्रियमन्त्र भञ्छन्। श्रौत कर्मका प्रसङ्गमा चयन यागमा इनको प्रयोग हुञ्छ। एसको पाठ विधिवत् गुरुसँग वेदमन्त्रसंहिता पडेका उपाध्याय ब्राह्मणद्वारा अरिष्टशान्ति, आयुर्वृद्धि, आरोग्यप्राप्ति, लक्ष्मीप्राप्ति, समृद्धिप्राप्ति, स्वर्गप्राप्ति, मोक्षप्राप्ति इत्यादि विभिन्न उद्देश्यले गराउने विधान यजुर्विधानमा छ। एसका लागि दिनहरु दैवकर्मका लागि शुभ मानिएका तिथि-नक्षत्र परेका दिनहरु लिन सकिञ्छन्। अरिष्टशान्ति-रोगशान्ति इत्यादि उद्देश्यका लागि त ति कुराको विशेष आकाङ्क्षा भएका दिनमा वा अवसरमा यो काम गर्न हुञ्छ।

मन्त्रपाठ— जन्मोत्सवमा आफुले गुरुमुख गरेर वेद पडेको भए आँफैले नभए तेसरि वेद पडेका सदाचारि शुद्धकुलीन ब्राह्मणद्वारा **"विभ्राड्"** इत्यादि मन्त्र १०८ पटक अथवा १००८ पटक वा यथाशक्ति त्योभन्दा धेरै पटक पाठ गर्नु आयुर्वृद्धिका लागि राम्रो हुञ्छ। एसमा जति वर्षको व्यक्तिको जन्मोत्सव हो तेति जाना ब्राह्मणद्वारा प्रतिब्राह्मण १००८ पटक पाठ गराउन पनि सकिञ्छ।

वेदमन्त्रसंहितापारायण— वेदमन्त्रसंहितापारायण सम्पूर्ण पापको नाश गर्ने र भुक्ति-मुक्ति दिने मानिएको छ। मनुस्मृतिबाट पनि (११।२६२) यो कुरा ज्ञात हुञ्छ। एस्तो पारायण आँफै गर्न नसक्नेले गुरुमुखबाट सुनेर तदनुसार उच्चारण गरेर राम्ररि वेद पडेका शुद्धकुलीन सदाचारि उपाध्यायब्राह्मणबाट सुन्न जाति हुञ्छ। एसका लागि शुचिशुक्लपूर्णिमादेखि (वैदिक आर्तव आषाढ-शुक्लपूर्णिमादेखि तपश्शुक्लप्रतिपदासम्मको (वैदिक आर्तव माघशुक्लप्रतिपदासम्मको) समय विशेष समुचित हुञ्छ। सामान्यतया जैलेसुकै पनि वेद प्रति श्रद्धा जागेका अवस्थामा यो कर्म गर्न हुञ्छ।

पिता माता इत्यादि अगति परेका हुन सक्ने लागेका अवस्थामा ब्राह्मणका मुखबाट वेदपाठ सुन्नु समुचित हुने कुरा मूलगरुडपुराणको **"सच्छास्त्रश्रवणं विष्णोः पूजा सज्जनसङ्गतिः। प्रेतयोनि-विनाशाय भवन्तीति मया श्रुतम्"** (२।२७।४२–४३) भन्ने वचनबाट पनि देखिञ्छ।

विविध काम्य कर्महरु— पुष्य नक्षत्रमा गरेको काम सिद्ध हुने हुनाले **'सिद्ध्य'** भन्ने नाम रहेको तथा उत्तरायण र शुक्लपक्षलाइ दैव कर्मकाल मानिएको हुनाले **पुष्य नक्षत्र परेका उत्तरायणका शुक्लपक्ष दिन**लाइ विविध काम्य कर्मका लागि उत्तम दिन मानेर कर्म गर्न उचित हुञ्छ। एस वर्षका तेस्ता दुर्लभ विशिष्ट दिनहरुको विवरण—

मधुशुक्लचतुर्दशी **(२०७३ माघ २८)**, माधवशुक्ल-एकादशी **(२०७३ फागुन २६)**, शुक्रशुक्ल-दशमी **(२०७३ चइत २४, १४:५१ सम्म)** प्रथमशुचिशुक्लसप्तमी **(२०७४ वैशाख २०)**।

(२) विवाह-व्रतबन्धादिका लागि गोत्रप्रवरज्ञान

गोत्र-प्रवरज्ञान व्रतबन्ध-विवाहादिका लागि अत्यावश्यक हो। नेपालि थरहरुको वा पदहरुको शास्त्रमा उल्लेख नहुने हुँदा शास्त्रबाट यो थरको यो गोत्र हुञ्छ भन्ने कुरा जानिने कुरा हैन। गोत्र कुलवृद्ध-व्यवहारपरम्पराबाट मात्र जानिने कुरा हो। लोकमा गोत्रको उच्चारण पनि शुद्ध शास्त्रीय रूपमा नभैरहेको पनि पाँइञ्छ। तथापि अशुद्धउच्चारणबाट पनि गोत्रको शुद्ध शास्त्रीय रूपको अनुमान हुञ्छ। गोत्र यथार्थ रूपमा जानिएमा तेसको प्रवर मूल शास्त्रका अध्ययनबाट जान्न सकिञ्छ। प्रवरको शुद्ध शास्त्रीय उच्चारण गर्ने परम्परा दुर्लभ छ। आजभोलि नेपालि थरगोत्रप्रवरकोशसमेत नानाथरि थरगोत्रप्रवरावलि छापिएका छन्; कतिपय पञ्चाङ्गमा पनि गोत्र-प्रवरको विवरण दिने गरिएको पाँइञ्छ। किन्तु ति थरगोत्रप्रवरावलि र थरगोत्रप्रवरकोश तथा पात्राका विवरण गोत्र-प्रवरको प्रतिपादन गर्ने मूल ग्रन्थको ज्ञान नगरिकन लेखिएका हुनाले अशुद्ध वा अशास्त्रीय हुन गएका छन्। तेस विषयमा शास्त्रश्रद्धायुक्त सज्जनहरु सावधान हुन पर्छ।

(३) विवाहमा गोत्रको, प्रवरको र गणको विचार

द्विजातिका लागि र विशेष गरि ब्राह्मणका लागि आँफ्नो गोत्र-प्रवरको ज्ञान अत्त्यावश्यक छ। प्रवराध्यायनामक-शास्त्रअनुसार **विवाहमा गोत्रको, प्रवरको र गणको पनि विशेष विचार हुञ्छ।** किन्तु नेपालि समाजमा सगोत्रमा (एउटै गोत्रमा) विवाह गर्न हुँदैन भन्ने कुरा सम्म सामान्यतया प्रसिद्धै भएपनि तेसलाइ पनि ठुलै अज्ञानले गर्दा कतैकतै मिच्ने गरेको पनि देखिन आएको छ। नेपालका कतिपय स्थानमा अत्रिगोत्रका वा आत्रेयगोत्रका गोतामे(गौतम)-पौडेल-खतेड्डा(खतिव्रडा)-सिग्देल-हरुको परस्परमा बिया चलाएको देखिञ्छ, कतै अत्रिगोत्रका वा आत्रेयगोत्रका पौडेलको र पोख्रेल-हरुको, कतै गोतामेको र पौडेलको बियाबरि चलाएको देखिञ्छ; कश्यपगोत्रका वा काश्यपगोत्रका घिमिरे-अधिकारिहरुको परस्पर बिया पनि कतैकतै चलाएको सुनिञ्छ; कुमाइँहरुमा पनि काश्यप-गोत्रकि कन्याको काश्यपगोत्रकै व्यक्तिसँग बिया भएको कुरा सुनिञ्छ; 'कश्यपगोत्र र काश्यपगोत्र भिन्न गोत्र हुन्, यो कुरा जनार्दन पाण्डेका कर्मकाण्डप्रदीपमा लेखिएको छ, तसर्थ कश्यप-काश्यप-गोत्रिको विवाह शास्त्रसम्मतै हो' भनेर पनि कोइ भञ्छन्, गोत्रप्रवरको निर्णयमा प्रमाणभूत मूल ग्रन्थको ज्ञान नभएका माञ्छे 'कश्यप र काश्यप दुइ गोत्र हुन्' भनेर भ्रमैमा भौँतारिएर भ्रमै फैलाइ-रहेका पनि देखिञ्छन्, किन्तु कर्मकाण्डप्रदीपका गोत्रप्रवराध्यायीमा (पृ.१९७–१९८) लेखिएका सबै गोत्रप्रवरहरु मूलशास्त्रसम्मत नदेखिएकाले र तेसरि भ्रममा भौँतारिनेहरुबाट कश्यप-काश्यप गोत्रका प्रवरहरुको छुट्टाछुट्टै स्पष्टीकरण पनि नगरिएकाले तथा कतिपय अधिकारिहरुले केइ वर्ष अगि आफ्नो परम्परागत **"काश्यप आवत्सार नैध्रुव"** प्रवरलाइ फेरेर नमिल्दो प्रवर अँगालेको बुजिएकाले समेत त्यो भनाइ उचित देखिँदैन; भारद्वाजगोत्रका देउकोटा(उप्रेत)-सुवेदि-पोख्रेल-पन्थिहरुको परस्परमा बिया पनि कतैकतै चलाएको सुनिञ्छ। एस विषयमा धार्मिक समाजमा शास्त्रीय चर्चा चलाउनु, अज्ञान हटाउनु र **शास्त्रसम्मत नभएका एस्ता व्यवहारलाइ रोक्नु उचित छ।**

समान प्रवरमा र समान गणमा पनि बिया गर्न हुँदैन भन्ने कुरा त प्रसिद्ध नभएको बुजिञ्छ। तसर्थ एस विषयमा शास्त्रीय मूल कुरा संक्षेपमा लेखिँदैछ।

नेपालि ब्राह्मणमा अत्यन्त प्रसिद्ध गोत्रहरुमध्ये—**१.**वत्सगोत्र **भृगुगण**को हो; **२.**भारद्वाजगोत्र[१] र गर्गगोत्र[२] **भरद्वाजगण**का हुन्; **३.**मौद्गल्यगोत्र **अङ्गिरोगण**को हो; **४.**अत्रिगोत्र वा आत्रेयगोत्र **अत्रि-गण**को हो; **५.**कौशिकगोत्र[१], घृतकौशिकगोत्र[२], धनञ्जयगोत्र[३] र माण्डव्यगोत्र[४] **विश्वामित्रगण**का हुन्; **६.**कश्यपगोत्र वा काश्यपगोत्र[१] र शाण्डिल्यगोत्र[२] **कश्यपगण**का हुन्; **७.**वसिष्ठगोत्र[१], कौण्डिन्यगोत्र[२], उपमन्युगोत्र[३] र पराशरगोत्र[४] **वसिष्ठगण**का हुन् (कुण्डिन गोत्र वसिष्ठगणको हो, कौण्डिन्य गोत्र भारद्वाजगणको हो, तसर्थ कौण्डिन्य गोत्र भन्नेहरूले 'वासिष्ठ मैत्रावरुण कौण्डिन्य' प्रवर भन्नु शास्त्रमर्यादाबाहिरको कुरा हो भन्ने भनाइ [**नेपाली थरगोत्र-प्रवर-कोश,** श्रीहरि रूपाखेती, २०६८, पृ. ७२] अबोधमूलक हो); **८.**अगस्त्यगोत्र **अगस्त्यगण**को हो।

एउटै गणभित्र पर्ने गोत्र भएकाहरुको परस्परमा विवाहसम्बन्ध सामान्यतया शास्त्रनिषिद्ध छ। यो कुरा निर्णयसिन्धुमा र धर्मसिन्धुमा पनि लेखिएकै छ। तथापि **भरद्वाजगण**अन्तर्गत पर्ने गर्गगोत्रका भुर्तेल आचार्यहरुको र भारद्वाजगोत्रका व्राग्लेहरुको, **विश्वामित्रगण**अन्तर्गत पर्ने कौशिक गोत्रका रेग्मिहरुको र घृतकौशिक गोत्रका खँदाल(खनाल)हरुको, **कश्यपगण**अन्तर्गत पर्ने कश्यपगोत्रका घिमिरेहरुको र शाण्डिल्यगोत्रका काफ्लेहरुको, **वसिष्ठगोत्र**अन्तर्गत पर्ने वसिष्ठगोत्रका भटराइहरुको र कौण्डिन्यगोत्रका आचार्य-नेउपानेहरुको, तथा कौण्डिन्यगोत्रका आचार्यहरुको र उपमन्युगोत्रका ढकालहरुको परस्परमा विवाह चलेको देखिञ्छ। तसर्थ एस विषयमा नेपालि धर्मशास्त्रिले र आस्तिक ब्राह्मणले पनि ध्यान दिइ राम्ररि विषय केलाइ आँफ्नो मूल शास्त्रको व्यवस्था बुझेर **शास्त्रानुकूल व्यवहार गर्ने गर्नु र शास्त्रसँग नमिल्ने व्यवहार छोड्ने गर्नु आवश्यक देखिञ्छ।**

समान-प्रवरमा पनि सामान्यतया परस्पर विवाहसम्बन्ध हुँदैन। तेसमा **भृगुगणमा** र **अङ्गिरो-गण**मा ५ प्रवर भएकामा ३ प्रवर मिलेमा र ३ प्रवर भएकामा २ प्रवर मिलेमा समान प्रवर भएको मानिञ्छ र तेस्तामा बिया फुक्तैन। **अत्रिगणमा, विश्वामित्रगणमा, कश्यपगणमा, वसिष्ठगणमा** र **अगस्त्यगण**मा भने ५ प्रवर भएकामा वा ३ प्रवर भएकामा पनि एउटै मत्रै प्रवर मिलेपनि समान प्रवर भएको मानिञ्छ र सामान्यतया बिया फुक्तैन भन्ने प्रवराध्यायको एक व्यवस्था छ—

पञ्चानां त्रिषु सामान्यादविवाहस् त्रिषु द्वयोः। भृग्वङ्गिरोगणेष्वेवं शेषेष्वेकोऽपि वारयेत्॥

एस कुरामा पनि नेपालि ब्राह्मणहरुको ध्यान गएजस्तो देखिँदैन। तसर्थ एस विषयमा पनि नेपालि धर्मशास्त्रिहरुको र ब्राह्मणहरुको ध्यान जानु उचित छ।

(४) आमाका (मातामहका) गोत्रकि कन्न्या विवाहगर्न निषेध

आमाका (मात्रलिका) गोत्रकि कन्न्या विवाहगर्न नहुने शास्त्रव्यवस्था छ। कातीय-प्रावरिकासूत्रका श्लोककाण्डमा र स्मृति-पुराणहरुमा आमाका गोत्रकि अर्थात् मातामहका गोत्रकि कन्न्या तथा समान प्रवर भएकि कन्न्या बिया गर्न नहुने कुरा प्रतिपादित छ—

मातुलस्य सुतामूढ्वा मातृगोत्रां तथैव च। समानप्रवरां चैव त्यक्त्वा चान्द्रायणं चरेत्॥

यो वचन निर्णयसिन्धुमा पनि उद्धृत छ। मनुस्मृतिकै वचनबाट पनि यो कुरा बुजिने भन्ने व्याख्याताहरुको भनाइ छ। किन्तु नेपालि ब्राह्मणहरुले एस विषयमा राम्रो ध्यान नपुर्‍याएको पाइएको छ। एस विषयमा ध्यान पुर्‍याउन आवश्यक देखिञ्छ। अरुले मातृगोत्रवर्जन नगरेपनि माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिहरुले त मातृगोत्रवर्जन झन् गर्नै पर्ने भन्ने भावको सत्याषाढको वचन निर्णयसिन्धुमा उल्लिखित छ। निर्णयसिन्धुकारले त सबैका लागि मातृगोत्र विवाहका लागि वर्जनीय (त्याज्य) नै हुञ्छ भन्ने व्यवस्था मानेका छन्।

(५) विवाहमा सापिण्ड्यको (नातासम्बन्धको) विचार

नाता-लाग्ने (सापिण्ड्य निवृत्त नभएका) कन्न्याको र वरको पनि विवाह गर्न हुँदैन। तर एस विषयमा धेरै मत देखिञ्छन्। पराशरका मतमा छैटादेखिका वरले चौथि कन्न्या र चौथादेखिका वरले छैटि कन्न्या बिया (विवाह) गर्न हुने देखिञ्छ। पराशरका मतमा पाँचौं वरले पाँचौं कन्न्या बिया गर्न भने हुँदैन भन्ने छ। तर विश्वरूपले याज्ञवल्क्यस्मृतिको व्याख्या बालक्रीडामा (१।५३) **"पञ्चमीं वोभयतः"** भन्ने शङ्खलिखितको वचन उद्धृत गरि पितापट्टिबाट पनि पाँचौं पुस्ताकि र मातापट्टिबाट पनि पाँचौ पुस्ताकि कन्न्यासित पनि विवाह खुल्ने कुरा लेखेका छन्। नेपालमा भने बाउपट्टिबाट आएको नाता भए साजा मूल पुरुषबाट आठौं कन्न्यासित र आमापट्टिबाट आएको नाता भए साजा मूल पुरुषबाट छैटि कन्न्यासित बिया खुलाउने पक्ष बर्ता प्रचलित देखिञ्छ। एकापट्टिबाट पुस्ता नपुगे पनि आर्कापट्टिबाट पुस्ता पुगे विवाह खुलाउने शास्त्रसम्मत प्रचलन पनि नेपालिहरुमा चलेको छ। तिनओटा गोत्रले बिचमा छेकेमा पुस्ता नपुगेका कन्न्याको र वरको पनि विवाह हुन सक्ने वचन र तेस्तो नेपालिहरुको प्रचलन पनि छ।

याज्ञवल्क्यस्मृतिका विश्वरूपले व्याख्या गरेका पाठबाट पितृपक्षबाट (बाबुपट्टिबाट) आएका नातामा साजा मूल पुरुषबाट **सातौं पुस्ता**कि कन्न्यासित र मातृपक्षबाट (आमापट्टिबाट) आएका नातामा साजा मूल पुरुषबाट **पाचौं पुस्ता**कि कन्न्यासित विवाह हुन सक्ने कुरा स्पष्ट हुञ्छ। आपत्-कालमा योग्य कुटुम्ब नमिल्दा नजिकका नाताकि कन्यासित पनि बिया गर्न हुने कुरा माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिहरुको स्वशाखासूत्ररूप ग्रन्थ प्रावरिकासूत्रका श्लोककाण्डका वचनबाट र चतुर्विंशतिमतप्रभृतिग्रन्थका वचनबाट पनि स्पष्ट हुञ्छ। याज्ञवल्क्यस्मृतिका प्राप्त व्याख्या-मध्ये सबैभन्दा पुरानो व्याख्या बालक्रीडामा विश्वरूपले पनि यो कुरा स्पष्ट रूपमा बोलेका छन्।

पुस्ता गन्दा दुवैको नाता जोडिने **साजा मूल पुरुष पैलो** पुस्ता, उसका छोरा-छोरि **दोस्रो** पुस्ता, साजा मूल पुरुषका नाति-नातिनि अथवा दौहित्र-दौहित्री **तेस्रो** पुस्ता, तिनका छोरा-छोरि **चौथो** पुस्ता, तिनका पनि छोरा-छोरि **पाँचौं** पुस्ता, एस प्रकारले गनिञ्छ।

(६) विवाह-व्रतबन्धादिको पुण्याह

संस्कार-कर्मको विधान गर्ने मूलग्रन्थ गृह्यसूत्रहरुमा **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे कल्याणे नक्षत्रे चौलकर्मोपनयनगोदानविवाहाः"** (आश्वलायनगृ.१।४।१), **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्यै पाणिं गृह्णीयात्"** (कौषीतकिगृ.१।१।८), **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्"** (पारस्करगृ.१।४।५) **"उदगयन-पूर्वपक्षा-ऽहःपुण्याहेषु दैवानि स्मृतिरूपान्यार्थदर्शनात्। अहनि च कर्मसाकल्यम्। इतरेषु तु पित्र्याणि।"** (जै.ध.मी.सू. ६।८।२३–२५) इत्यादि वचन छन्। त्याँहाँ लग्नहरुको उल्लेख छैन। तेसैले वैदिकहरुलाइ विवाह-व्रतबन्धादि संस्कार कर्म गर्न उत्तरायणका शुक्लपक्षको पुण्याह (राम्रो तिथि र राम्रो नक्षत्र भएको दिन) भए पुग्छ, लग्नादिको अरु विचार गर्न पर्दैन। पुण्याह भनेको राम्रो तिथि र राम्रो नक्षत्र परेको दिन हो । यो कुरा शास्त्रहरुको अनुशीलनबाट बुजिञ्छ। इच्छा हुनेले लग्नको पनि विचार गरेर काम गरे हुञ्छ। **गृह्यसूत्रका प्रतिकूल कालको लग्न भने कथमपि लिन हुँदैन। एस वर्षका विवाहमा ग्राह्य पुण्याहको विवरण—**

(७) विवाहदिन

उदगयने तपसि मासे शुक्ले पक्षे— चतुर्थ्याम्, *पञ्चम्याम्,* षष्ठ्याम्, नवम्याम्, दशम्याम्, *एकादश्याम्,* चतुर्दश्यां पूर्णिमायां च (**२०७३ मङ्सिर**[1] **१८, *१९,* २०, २३, २४, *२५,* २८, २९**) विवाहः शुभः। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात्*[2] *पञ्चम्याः एकादश्याश्च (मङ्सिर १९, २५) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने तपस्ये मासे शुक्ले पक्षे— तृतीयायाम्, *चतुर्थ्याम्,* पञ्चम्याम्, अष्टम्याम्, नवम्याम्, *दशम्याम्,* त्रयोदश्याम्, चतुर्दश्यां च तिथौ (**२०७३ पुस १६, *१७,* १८, २१, २२, *२३,* २६, २७**) विवाहः शुभः। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वाच् चतुर्थ्याः दशम्याश्च (पुस १७, २३) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने मधौ मासे[3] शुक्ले पक्षे— द्वितीयायाम्, पञ्चम्याम्, षष्ठ्याम्, *सप्तम्याम्,* दशम्याम्, एकादश्यां च तिथौ (**२०७३ माघ १६, १९, २०, *२१,* २४, २५**) विवाहः शुभः। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् सप्तम्याः (माघ २१) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने माधवे मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीयायाम्, तृतीयायाम्, *चतुर्थ्याम्,* सप्तम्याम्, अष्टम्यां च तिथौ (**२०७३ फागुन १७, १८, *१९,* २२, २३**) विवाहः शुभः। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वाच् चतुर्थ्याः (फागुन १९) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने शुक्रे मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीयायाम्, षष्ठ्याम्, सप्तम्याम्, चतुर्दश्याम्, पूर्णिमायां च तिथौ (**२०७३ चइत**[3] **१६, २०, २१, २८, २९**) विवाहः शुभः।

उदगयने प्रथमशुचौ मासे शुक्ले पक्षे— तृतीयायाम्, चतुर्थ्याम्, एकादश्याम्, द्वादश्याम्, *त्रयोदश्या* च तिथौ (**२०७४ वैशाख १६, १७, २४, २५, *२६***[4]) विवाहः शुभः। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् त्रयोदश्याः (वैशाख २६) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

२०७४ पुस *७, ८,* ११, १२, *१३,* १६, १७ गते, **माघ *४,* ५, ८, ९, *१०,* १३, १४, फागुन ६, ७, *८,* १२ चइत ५, *६,* ९, १०, १७, १८ इ.।**

[इ विवाह-पुण्याहहरु **माध्यन्दिनीयवाजसनेयिशुक्लयजुर्वेदाध्यायि** कुलीन उपाध्यायब्राह्मणहरुका र तेस्ता ब्राह्मणलाइ गुरु-पुरोहित मान्ने **सम्पूर्ण वैदिकसनातन-वर्णाश्रम-धर्मानुयायि(हिन्दुहरु)का लागि** पारस्करगृह्यसूत्रका विधानअनुसार दिइएका हुन्, **पारस्करगृह्यसूत्रमा** विवाहका लागि नक्षत्रनिर्देश गर्दा **"उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्, त्रिषुत्रिषूत्तरासु स्वातौ मृगशिरसि रोहिण्यां वा"** (१।४।५-७) भनिएको हुनाले विवाहमा ग्राह्य नक्षत्र उत्तरफल्गुनी, हस्त, चित्रा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तरभद्रपद, रेवती, अश्विनी, स्वाति, मृगशिरा र रोहिणी हुन्। एसै आधारमा याँहाँ विवाहपुण्याह दिइएका हुन्। (वारको पनि विचार गर्नेहरुले आइत-सोम-मङ्गल-शनिवार परेका दिन विवाह नगर्नु भञ्छन्।)]

---

१. वेदाङ्गज्योतिषको गणनापद्धतिअनुसार २०७३ मङ्सिर १५ गते सौरचान्द्र **उत्तरायण लाग्ने** तथा वैदिक गणनाअनुसार **तपोमास (आर्तव माघमास) लाग्ने हुँदा** आजभोलि **मुङ्सिर भनिने** र आजभोलि **पुस भनिने** महिनामा पनि मूल वेदाङ्गशास्त्र वेदाङ्गज्योतिषअनुसार विवाहदिन दिइएका हुन्।

२. वेदाङ्गज्योतिषअनुसार **आर्द्रा**, **चित्रा**, **विशाखा**, **श्रवण**, **अश्विनी** इ नक्षत्र उग्र नक्षत्र हुन्। **मघा**, **स्वाति**, **ज्येष्ठा**, **मूल** र **भरणी** क्रूर नक्षत्र हुन्। इ नक्षत्र परेका दिन क्षत्रियहरुका निम्ति र क्षत्रियको जस्तो शूरता-वीरता चाहनेहरुका निम्ति ग्राह्य हुञ्छन्।

३. हाम्रो वेदशाखाको गृह्यसूत्र (विवाहपद्धति बताउने मुख्य शास्त्र) **पारस्करगृह्यसूत्र**मा मधुमासमा अथवा चैत्रमा अथवा मीनमासमा (आजभोलि चइत भनिने गरेका महिनामा) **विवाहको निषेध नभएकाले उत्तरायण**मा पर्ने वैदिक **मधुमास**मा र आजभोलि **चइत भनिने** गरेका महिनामा पनि **शुक्लपक्ष**मा **मूल वेदाङ्गशास्त्र गृह्यसूत्र**अनुसार विवाहदिन दिइएका हुन्।

४. एसभन्दा पछि कृष्णपक्ष, तेसपछि वैदिक अधिकमास (द्वितीयशुचिमास) र तेसपछि दक्षिणायन पर्छन्।

(८) चूडाकरणदिन

चूडाकरणको पुण्याहका विषयमा पारस्करगृह्यसूत्रमा विशेष वचन छैन तापनि अन्य शाखाका गृह्यसूत्रादिका र लघुस्मृति-पुराणका वचनबाट वैदिकहरुले सामान्यतया दैवकर्मका लागि विहित उदगयनका (उत्तरायणका) शिशिर-वसन्त-ग्रीष्म ऋतुका शुक्लपक्षका शुभतिथिहरु चूडाकरणका लागि पुण्याह हुने मानिएको देखिएकाले तेसैअनुसार चूडाकरणदिनको विवरण दिइएको छ। चूडाकरणका लागि राम्रा मानिएका तिथि– (द्वितीया), तृतीया, पञ्चमी, (षष्ठी), सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी हुन् र चूडाकरणका लागि सामान्यतया राम्रा मानिएका नक्षत्र मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, रेवती, अश्विनी हुन्। आश्वलायनगृह्यसूत्रमा **"कल्याणे नक्षत्रे चौलकर्मोपनयनविवाहाः"** (१।४।१) भन्ने वचन छ। वैखानसगृह्यसूत्रमा **"उत्तरायणे पक्ष आपूर्यमाणे पुन्नाम्नि नक्षत्रे"** (३।२४) भन्ने वचन छ। **व्रतबन्धकै दिन चूडाकरण गर्दा छुट्टै विचार गरिँदैन, छुट्टै चूडाकरण गर्दा इ कुराको विचार गरिन्छ।** (वारको पनि विचार गर्नेहरुले आइत-मङ्गल-सन्सर(शनि)वारमा चूडाकरण नगर्नु भन्छन्। तेसमा ब्राह्मणका लागि आइतवार, क्षत्रियका लागि मङ्गलवार र वैश्य-शूद्रका लागि सन्सरवार ग्राह्य नै हुन्छन् पनि भन्छन्।) एस वर्षका चूडाकरणमा ग्राह्य पुण्याहको विवरण तल दिइन्छ–

उदगयने तपसि मासे शुक्ले पक्षे– पञ्चम्याम्, षष्ठ्याम्, सप्तम्याम्, दशम्याम्, एकादश्यां च तिथौ (**२०७३ मुङ्सिर १९, २०, २१, २४, २५)** चूडाकरणं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् पञ्चम्याः एकादश्याश्च (मुङ्सिर १९, २५) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने तपस्ये मासे शुक्ले पक्षे– पञ्चम्याम्, षष्ठ्याम्, दशम्यां च तिथौ **(२०७३ पुस १८, १९, २३)** चूडाकरणं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वाद् दशम्याः (पुस २३) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने मधौ मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीयायाम्, तृतीयायाम्, षष्ठ्याम्, सप्तम्याम्, एकादश्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७३ माघ १६, १७, २०, २१, २५, २७)** चूडाकरणं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् सप्तम्याः (माघ २१) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने माधवे मासे शुक्ले पक्षे– तृतीयायाम्, दशम्याम्, एकादश्यां च तिथौ **(२०७३ फागुन १८, २५, २६)** चूडाकरणं शुभम्।

उदगयने शुक्रे मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीयायाम्, तृतीयायाम्, सप्तम्याम्, दशम्यां च तिथौ **(२०७३ चइत १६, १७, २१, २४)** चूडाकरणं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् तृतीयायाः (चइत १७) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने प्रथमशुचौ मासे शुक्ले पक्षे– षष्ठ्याम्, सप्तम्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७४ वैशाख १९, २०, २६)** चूडाकरणं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् त्रयोदश्याः (वैशाख २६) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

२०७४ पुस ७, ९, माघ ४, ५, फागुन १३, १६, चइत ६, १०, १३ इ.।

(९) व्रतबन्धदिन (उपनयनदिन)

उपनयनको पुण्याहका विषयमा पारस्करगृह्यसूत्रमा विशेष वचन छैन तापनि वैदिकहरुले श्रौत अग्न्याधानकालनिर्देशको अनुकूल **"वसन्ते ब्राह्मणमुपनयीत, ग्रीष्मे राजन्यम्, शरदि वैश्यम्, वर्षासु रथकारमिति, सर्वानेव वा वसन्ते"** भन्ने बौधायनगृह्यसूत्रको वचन विचारमा राखि कर्म गर्नु उचित देखिएकाले र **"शिशिरे वा सर्वान्"** भन्ने पनि भारद्वाजगृह्यसूत्रको वचन भएकाले याँहाँ सामान्यतया दैवकर्मका लागि विहित उदगयनका (उत्तरायणका) शिशिर-वसन्त-ग्रीष्म ऋतुका शुक्लपक्षका शुभतिथिहरु व्रतबन्धका लागि पुण्याह हुने मानि व्रतबन्धदिनको विवरण दिइएको छ। उपनयनका लागि द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, (षष्ठी, सप्तमी), दशमी, एकादशी, द्वादशी, (त्रयोदशी) तिथि ग्राह्य मानिएका छन्। नैमित्तिक अनध्यायमा पनि व्रतबन्ध हुँदैन। व्रतबन्धका लागि सामान्यतया राम्रा मानिएका नक्षत्र रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, रेवती हुन्। आश्वलायनगृह्यसूत्रमा **"कल्याणे नक्षत्रे चौलकर्मोपनयनविवाहाः"** (१।४।१) भन्ने वचन छ। भारद्वाजगृह्यसूत्रमा **"पुण्ये नक्षत्रे विशेषेण पुन्नामधेये"** (१।१) भन्ने वचन छ। पुन्नामधेय नक्षत्रमा पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, शतभिषक्, पूर्वभद्रपद, उत्तरभद्रपद, अश्वयुक् गनिएका छन्। मुहूर्तचिन्तामणिको पीयूषधाराव्याख्यामा कृत्तिका, मघा, विशाखा, ज्येष्ठा र भरणी नक्षत्र उपनयनमा सर्वथा त्याज्य भनिएका छन्। (वारको पनि विचार गर्नेले मङ्लवारमा र सन्सरवारमा उपनयन नगर्नु भन्छन्। आइतवारमा र सउँवारमा पनि उपनयन नगर्नु जाति हो भन्छन्। सामवेदिका लागि र क्षत्रियका लागि

मङ्लवार पनि ग्राह्यै हो पनि भन्छन्। अस्ताएका वा पापग्रहयुक्त बुधको वार पनि शुभ हैन पनि भन्छन्।) एस वर्षका व्रतबन्धमा (उपनयनमा) ग्राह्य पुण्याहको विवरण तल दिइन्छ—

उदगयने तपसि मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चम्याम्, षष्ठ्याम्, सप्तम्याम्, दशम्यां च तिथौ (**२०७३ मङ्सिर**[1] **१९, २०, २१, २४)** उपनयनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् पञ्चम्याः (मङ्सिर १९) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

उदगयने तपस्ये मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चम्याम्, षष्ठ्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७३ पुस १८, १९, २६)** उपनयनं शुभम्।

उदगयने मधौ मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीयायाम्, तृतीयायाम्, षष्ठ्याम्, दशम्याम्, एकादश्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७३ माघ १६, १७, २०, २४, २५, २७)** उपनयनं शुभम्।

उदगयने माधवे मासे शुक्ले पक्षे— तृतीयायाम्, सप्तम्याम्, दशम्याम्, एकादश्यां च तिथौ **(२०७३ फागुन १८, २२, २५, २६)** उपनयनं शुभम्।

उदगयने शुक्रे मासे शुक्ले पक्षे— षष्ठ्याम्, नवम्याम्, दशम्यां च तिथौ **(२०७३ चइत २०, २३, २४)** उपनयनं शुभम्।

उदगयने प्रथमशुचौ मासे शुक्ले पक्षे— तृतीयायाम्, षष्ठ्याम्, द्वादश्यां च तिथौ **(२०७४ वैशाख १६, १९, २५)** उपनयनं शुभम्।

२०७४ पुस ८, ९, माघ ५, ९, १३, फागुन १३ (१०:३८ पर्यन्त), १५, १६ (११:३० पर्यन्त), चइत ५, ९, १३ इ.।

(१०) वेदारम्भदिन

उपनयन भएपछि वा समावर्तन पनि भएपछि पनि वर्षा ऋतुको पैलो पूर्णिमामा वेदारम्भ (अध्यायोपाकर्म) गर्ने विधान छ। पहिलो पटकको अध्यायोपाकर्म अथवा उपाकर्म नै वेदारम्भ हो। उपाकर्म गरिने **नभोमासको पूर्णिमा**मा एस वर्ष २०७४।३।२४ (शनिवार) परेको छ। एस दिन गर्न नसकिनेजस्तो भएमा **नभोमासका पञ्चमी**मा (२०७४।३।१४ बुधवार) उपाकर्म गर्न सकिन्छ।

एस दिन उपाकर्म गरेर यथाशक्ति आफ्नो शाखाको वेदको अध्ययन गरिसकेपछि अध्यायोत्सर्जन गर्ने दिन **सहस्यमासको रोहिणी नक्षत्र परेको दिन** २०७४।८।१८ सोमवार परेको छ। वैकल्पिक अध्यायोत्सर्जन गर्ने दिन अर्थात् **सहस्यकृष्णाष्टमी** २०७४।८।२५ सोमवार परेको छ।

(११) अन्नप्राशनदिन (भातख्वाइ/पास्नि गर्ने दिन)

अन्नप्राशनको पुण्याहका विषयमा पारस्करगृह्यसूत्रमा विशेष वचन छैन तापनि वैदिकहरुले **"अथातः प्राशनकर्म, पूर्वपक्षे पुण्ये नक्षत्रे"** (जैमिनिगृह्यसूत्र १।१०) **"उदगयन-पूर्वपक्षा-हःपुण्याहेषु दैवानि स्मृतिरूपान्यार्थदर्शनात्। अहनि च कर्मसाकल्यम्"** (जैमिनीयधर्ममीमांसासूत्र ६।८।२३-२४) इत्यादि वचन विचारमा राखि कर्म गर्नु उचित देखिएकाले याँहाँ सामान्यतया दैवकर्मका लागि विहित शुक्लपक्षका शुभतिथिहरु अन्नप्राशनका लागि पुण्याह हुने मानि अन्नप्राशनदिनको विवरण दिइएको छ। अन्नप्राशनका लागि द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी तिथि ग्राह्य मानिएका छन्। अन्नप्राशनका लागि सामान्यतया राम्रा मानिएका नक्षत्र रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरफल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, उत्तरभद्रपद, रेवती, अश्विनी हुन्। (वारको पनि विचार गर्नेले आइत-मङ्ल-सन्सरवार अन्नप्राशन नगर्नु भन्छन्। कसैले सउँवार र सुकवार पनि त्याज्य तथा आइतवार ग्राह्य पनि भनेका छन्।) एस वर्षका अन्नप्राशनमा ग्राह्य पुण्याहको विवरण तल दिइन्छ—

तपसि मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चम्याम्, सप्तम्याम्, दशम्यां च तिथौ **(२०७३ मङ्सिर १९, २१, २४)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् पञ्चम्याः (मङ्सिर १९) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

तपस्ये मासे शुक्ले पक्षे— तृतीयायाम्, पञ्चम्याम्, दशम्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७३ पुस १६, १८, २३, २६)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वाद् दशम्याः (पुस २३) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

मधौ मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीयायाम्, तृतीयायाम्, पञ्चम्याम्, सप्तम्याम्, दशम्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७३ माघ १६, १७, १९, २१, २४, २७)** अन्नप्राशनं शुभम्।

---

१. वेदाङ्गज्योतिषको गणनापद्धतिअनुसार २०७३ मङ्सिर १५ गते सौरचान्द्र **उत्तरायण लाग्ने** तथा वैदिक गणनाअनुसार **तपोमास (आर्तव माघमास) लाग्ने हुँदा** आजभोलि **मुङ्सिर भनिने** र आजभोलि **पुस भनिने** महिनामा पनि मूल वेदाङ्गशास्त्र वेदाङ्गज्योतिषअनुसार उपनयनदिन दिइएका हुन्।

माधवे मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीयायाम्, तृतीयायाम्, सप्तम्याम्, दशम्यां च तिथौ **(२०७३ फागुन १७, १८, २२, २५)** अन्नप्राशनं शुभम्।

शुक्रे मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीयायाम्, तृतीयायाम्, सप्तम्याम्, दशम्यां च तिथौ **(२०७३ चइत १६, १७, २१, २४)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् तृतीयायाः (चइत १७) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

प्रथमशुचौ मासे शुक्ले पक्षे– तृतीयायाम्, सप्तम्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७४ वैशाख १६, २०, २६)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् त्रयोदश्याः (वैशाख २६) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

द्वितीयशुचौ मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीयायाम्, पञ्चम्याम्, द्वादश्यां च तिथौ **(२०७४ जेठ १३, १६, २३)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्य क्रूरत्वाद् द्वादश्याः (जेठ २३) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

नभसि मासे शुक्ले पक्षे– तृतीयायाम्, दशम्यां च तिथौ **(२०७४ असार १२, १९)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्य उग्रत्वाद् दशम्याः (असार १९) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

नभस्ये मासे शुक्ले पक्षे– पञ्चम्याम्, सप्तम्याम्, दशम्यां च तिथौ **(२०७३ साउन १३, १५, १८)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् सप्तम्याः (साउन १५) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

इषे मासे शुक्ले पक्षे– तृतीयायाम्, पञ्चम्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७४ भदौ ८, १०, १८)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्य क्रूरत्वात् पञ्चम्याः (भदौ १०) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

ऊर्जे मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीयायाम्, तृतीयायाम्, पञ्चम्याम्, सप्तम्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७४ असोज ५, ६, ८, १०, १६)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्य क्रूरत्वात् पञ्चम्याः (असोज ८) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

सहसि मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीयायाम्, दशम्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७४ कात्तिक ४, १२, १५)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्य क्रूरत्वाद् द्वितीयायाः (कात्तिक ४) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

सहस्ये मासे शुक्ले पक्षे– पञ्चम्याम्, सप्तम्याम्, त्रयोदश्यां च तिथौ **(२०७४ मङ्सिर ७, ९, १५)** अन्नप्राशनं शुभम्। *तत्र नक्षत्रस्योग्रत्वात् सप्तम्याः त्रयोदश्याश्च (मङ्सिर ९, १५) क्षत्रियग्राह्यत्वम्।*

२०७४ पुस ७, ९, १२, माघ ४, ५, ९, फागुन ८, १३, १६, चइत ५, ६, १०, १३ इ.।

(१२) गृहारम्भ-गृहप्रवेशदिन

गृहारम्भका विषयमा पारस्करगृह्यसूत्रमा विशेष समय निश्चित गरिएको छैन। पुण्याहमा गृहारम्भ गर्ने कुरा त्याँहाँ छ। एसको कर्कोपाध्याय-जयराम इत्यादि व्याख्याताहरुले **"पुण्याहे शालां कारयेत्"** (३।४।१) भन्ने सूत्रका व्याख्यामा **"पुण्याहग्रहणमुदगयनाऽऽपूर्यमाणपक्षयोरनादरार्थम्" "पुनः पुण्याहग्रहणं तूदगयनशुक्लपक्षयोरनियमार्थम्"** इत्यादि भनि दक्षिणायनका र कृष्णपक्षका पनि पुण्याहमा गृहारम्भ हुने कुरा स्पष्ट पारेका छन्। अन्यत्र गृहारम्भका निम्ति उत्तरायणको आवश्यकता मानिएको छैन, फाल्गुन-वैशाखका साथै श्रावण, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, पौष मैनाहरुमा पनि गृहारम्भ हुने कुरा पाँइन्छ। वैदिकहरुले राम्रो तिथि-नक्षत्र पारेर गृहारम्भ गर्नु उचित छ। गृहारम्भमा ग्राह्य तिथिमा द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी र पूर्णिमा मानिएका छन्। गृहारम्भका निम्ति ग्राह्य नक्षत्रमा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य (तिष्य), उत्तरफल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, उत्तराषाढा, धनिष्ठा, शतभिषक्, उत्तरभद्रपद, रेवती मानिएका छन्। कसैले धनिष्ठापञ्चक-लाइ त्याज्य भनेका छन्। (वारको पनि विचार गर्नेले आइतवारलाइ र मङ्लवारलाइ गृहारम्भमा त्याज्य भनेका भञ्छन्। कसैले सन्सरवारलाइ पनि चोरभय गराउने भनि त्याज्य जस्तै मानेका छन्।)

गृहप्रवेशका विषयमा पारस्करगृह्यसूत्रमा पुण्याहमा गृहारम्भ गरेपछि जैले गृहनिर्माण सम्पन्न हुञ्छ तैले गृहप्रवेश गर्ने कुरा **"निष्ठितां प्रपद्यते"** (३।४।१८) भनेर प्रतिपादित गरिएको हुनाले जुनसुकै मैनामा पनि पुण्याहमा गृहप्रवेश गर्न हुञ्छ, अरु वास्तुशास्त्र-ज्योतिषादिले भनेका कुराको व्रास्ता नगरे पनि हुञ्छ, इच्छा लागे तिनको पनि विचार गरेर गृहप्रवेश गरे पनि हुञ्छ। तसर्थ पारस्करगृह्यसूत्रानुसार गृहप्रवेश गर्नका लागि वर्षभोरिका पुण्याह (राम्रो तिथि-नक्षत्र भएका दिन) ग्राह्य हुने देखिञ्छन्। गृहप्रवेशमा (प्रतिपदा), द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, पूर्णिमा तिथि ग्राह्य मानिएका छन्। ग्राह्य नक्षत्र रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरफल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, उत्तराषाढा, धनिष्ठा, शतभिषक्, उत्तरभाद्र, रेवती नै मानिएका छन्। वारको पनि विचार गर्नेले सउँवार, बुधवार, बीवार, शुकवार (सन्सरवार) ग्राह्य मानेका छन्।

एस वर्षका गृहारम्भमा र गृहप्रवेशमा ग्राह्य पुण्याहहरुको सङ्क्षिप्त विवरण तल दिइञ्छ।

तपसि मासे शुक्ले पक्षे– षष्ठी (ध.), दशमी (रे.) पूर्णिमा **(२०७३ मङ्सिर २०, २४, २९)**।

तपसि मासे कृष्णे पक्षे– तृतीया, अष्टमी **(२०७३ पुस २, ७)**।

तपस्ये मासे शुक्ले पक्षे– तृतीया, पञ्चमी (धनि.), त्रयोदशी **(२०७३ पुस १६, १८, २६)।**

तपस्ये मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी **(२०७३ माघ १, ५, ६, ७)**।

मधौ मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीया (ध.), तृतीया (श.), पञ्चमी (उभ.), दशमी, एकादशी **(२०७३ माघ १६, १७, १९, २४, २५)**।

मधौ मासे कृष्णे पक्षे– तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, अष्टमी **(२०७३ फागुन ३, ५, ६, ८)**।

माधवे मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीया (उ.भ.), तृतीया (रे.), सप्तमी, अष्टमी, एकादशी, पूर्णिमा **(२०७३ फागुन १७, १८, २२, २३, २६, ३०)**।

माधवे मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, तृतीया **(२०७३ चइत २, ३)**।

शुक्रे मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीया, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, पूर्णिमा **(२०७३ चइत १६, २०, २१, २४, २९)**।

शुक्रे मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, अष्टमी, दशमी **(२०७३ चइत ३१, २०७४ वैशाख ६, ८)**।

प्रथमशुचौ मासे शुक्ले पक्षे– तृतीया, सप्तमी, एकादशी, त्रयोदशी **(२०७४ वैशाख १६, २०, २४, २६)**।

प्रथमशुचौ मासे कृष्णे पक्षे– पञ्चमी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी **(२०७४ जेठ २, ४, ५, ७)**।

नभसि मासे शुक्ले पक्षे– अष्टमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी **(२०७४ असार १७, १९, २०, २२)**।

नभसि मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी, अष्टमी **(२०७४ असार २६, २९, ३१, साउन १)**।

नभस्ये मासे शुक्ले पक्षे– पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी **(२०७४ साउन १३, १४, १५, १६, १८)**।

नभस्ये मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, पञ्चमी, दशमी **(२०७४ साउन २५, २८, भदौ १)**।

इषे मासे शुक्ले पक्षे– पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, त्रयोदशी, पूर्णिमा **(२०७४ भदौ १०, ११, १२, १८, २०)**।

ऊर्जे मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, एकादशी, त्रयोदशी **(२०७४ असोज ५, ६, ८, १०, १४, १६)**।

ऊर्जे मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, षष्ठी, सप्तमी, दशमी **(२०७४ असोज २०, २४, २५, २८)**।

सहसि मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीया, अष्टमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी **(२०७४ कात्तिक ४, १०, १२, १३, १५)**।

सहसि मासे कृष्णे पक्षे– तृतीया, सप्तमी **(२०७४ कात्तिक २०, २४)**।

सहस्ये मासे शुक्ले पक्षे– पञ्चमी, अष्टमी, एकादशी **(२०७४ मङ्सिर ७, १०, १३)**।

सहस्ये मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया (मृ. ११:१२ पर्यन्त), पञ्चमी (पु. १२:२० पर्यन्त), दशमी **(२०७४ मङ्सिर १९, २२, २७)**।

२०७४ पुस ८, ९, १२, १७, २०, २४, २५, २७ गते, **माघ** ५, ८, ९, १३, १४, १७, २२, २३, २४ **फागुन** ६ (८:३८ पश्चात्), १३ (१०:३८ पर्यन्त), १६ (११:३० पर्यन्त) २०, २१, २३, २५, **चइत** ५, ९, १०, १३, १८, २०, २६, २८ इ.।

(१३) धान्यच्छेदनदिन (मुठि लिने दिन)

इषे मासे शुक्लपक्षे– त्रयोदशी **(२०७४ भदौ १८)**

इषे मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, षष्ठी, द्वादशी, त्रयोदशी **(२०७४ भदौ २२, २६, असोज १, २)**

ऊर्जे मासे शुक्लपक्षे– द्वितीया, तृतीया, अष्टमी, दशमी, एकादशी, पूर्णिमा **(२०७४ असोज ५, ६, ११, १३, १४, १८)**

ऊर्जे मासे कृष्णपक्षे– पञ्चमी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी **(२०७४ असोज २३, २५, २६, २८)**

सहसि मासे शुक्लपक्षे- द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, द्वादशी, त्रयोदशी **(२०७४ कात्तिक ४, ७, ९, १२, १४, १५)**।

सहसि मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी, अष्टमी **(२०७४ कात्तिक १९, २२, २४, २५)**।

सहस्ये मासे शुक्ले पक्षे–द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, दशमी, पूर्णिमा **(२०७४ मङ्सिर ४, ५, ७, ८, १२, १७)**।

सहस्ये मासे कृष्णे पक्षे– द्वितीया, पञ्चमी **(२०७४ मङ्सिर १९, २२)**।

मधौ मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीया, पञ्चमी, अष्टमी, द्वादशी **(२०७४ माघ १६, १९, २२, २६)**।

माधवे मासे शुक्ले पक्षे– द्वितीया, पञ्चमी, अष्टमी, एकादशी **(२०७४ फागुन १७, २०, २३, २६)**।

(१४) नवान्नप्राशनदिन (न्वाइ खाने दिन)

तपसि मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चमी, दशमी **(२०७३ मङ्सिर १९, २४)।**
तपस्ये मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चमी, दशमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा **(२०७३ पुस १८, २३, २७, २८)।**
माधवे मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीया, तृतीया, सप्तमी, एकादशी **(२०७३ फागुन १७, १८, २२, २६)।**
शुक्रे मासे शुक्ले पक्षे— द्वितीया, षष्ठी, दशमी **(२०७३ चइत १६, २०, २४)।**
सहसि मासे शुक्लपक्षे— द्वितीया, दशमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा **(२०७४ कात्तिक ४, १२, १६, १७)।**
सहस्ये मासे शुक्ले पक्षे— सप्तमी, अष्टमी, द्वादशी **(२०७४ मङ्सिर ९, १०, १४)।**
२०७४ पुस ७, ९, १२, फागुन ४, ८, १५, चइत ५, ६, १०, १३ इ.।

[यो लौकिक-पौराणिक प्रयोगको कुरा हो, नएँ अन्न खाने श्रौतसूत्रोक्त आग्रयणेष्टि र गृह्यसूत्रोक्त नवान्नप्राशन भने पूर्णिमाका वा अम्सिका भोलिपल्ट मात्र हुञ्छन्।]

(१५) वाणिज्यारम्भदिन (बेपार आरम्भ गर्ने / पसल खोल्ने दिन)

तपसि मासे शुक्लपक्षे— दशमी, एकादशी, पूर्णिमा **(२०७३ मङ्सिर २४, २५, २९)।**
तपस्ये मासे शुक्लपक्षे— पञ्चमी, सप्तमी, अष्टमी **(२०७३ पुस १८, २०, २१)।**
मधौ मासे शुक्लपक्षे— पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी **(२०७३ माघ १९, २०, २१, २४)।**
माधवे मासे शुक्लपक्षे— तृतीया, सप्तमी, अष्टमी, एकादशी, पूर्णिमा **(२०७३ फागुन १८, २२, २३, २६, ३०)।**
शुक्रे मासे शुक्लपक्षे— द्वितीया, षष्ठी, सप्तमी, दशमी **(२०७३ चइत १६, २०, २१, २४)।**
प्रथमशुचौ मासे शुक्लपक्षे–तृतीया, सप्तमी, एकादशी, द्वादशी **(२०७४ वैशाख १६, २०, २४, २५)।**
नभसि मासे शुक्लपक्षे— अष्टमी, दशमी, त्रयोदशी **(२०७४ असार १७, १९, २२)।**
नभस्ये मासे शुक्लपक्षे— पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी **(२०७४ साउन १३, १४, १५, १८)।**
इषे मासे शुक्लपक्षे— तृतीया, पञ्चमी **(२०७४ भदौ ८, १०)।**
ऊर्जे मासे शुक्लपक्षे— द्वितीया, तृतीया, एकादशी **(२०७४ असोज ५, ६, १४)।**
सहसि मासे शुक्लपक्षे— द्वितीया, अष्टमी, त्रयोदशी, पूर्णिमा **(२०७४ कात्तिक ४, १०, १५, १७)।**
सहस्ये मासे शुक्ले पक्षे— पञ्चमी, एकादशी, द्वादशी **(२०७४ मङ्सिर ७, १३, १४)।**
२०७४ पुस १२, १३, १७ गते, माघ ८, १०, १३, १४, १७ फागुन ९, १३ चइत ५, ९, १८ इ.।

(१६) कर्णवेधदिन

कर्णवेध गर्दा जन्ममास, चतुर्मास, चैत्र, पौष महिना र जन्मनक्षत्र छोड्नु पर्ने मानिएको छ। मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी नक्षत्र ग्राह्य मानिएका छन्। छोराको दाहिने र छोरिको देउरे कान पहिला छेड्ने प्रचलन छ। जन्मेको बारौं अथवा सोरौं दिनमा कर्णवेध गर्नु पनि राम्रो मानिएको छ। (वारको पनि विचार गर्नेले सउँवार, बुधवार, बिहिवार, शुक्रवार ग्राह्य भनेका छन्।)

(१७) अक्षरारम्भदिन

चूडाकर्म भएपछि अर्थात् तिन वर्ष पछि अक्षरारम्भ गराउने प्रचलन रहेको बुझिन्छ। आजभोलि ५ वर्षमा अक्षरारम्भ गराउने प्रसिद्धि छ। अक्षरारम्भ (लिपिशिक्षारम्भ) गर्नका निम्ति द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी, द्वादशी तिथि ग्राह्य मानिएका छन्। नक्षत्रमा अश्लेषा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, रेवती, अश्विनी नक्षत्र ग्राह्य मानिएका छन्। (वारको पनि विचार गर्नेले सउँवार, बुधवार र बिहिवार ग्राह्य भनेका छन्।)

(१८) विविध

व्याकरणारम्भ— प्रतिपदा-अष्टमी-त्रयोदशी-चतुर्दशी-अम्सि तिथिबाहेकका तिथि तथा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अश्विनी नक्षत्र (र बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

गणितारम्भ— रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, अनुराधा, शतभिषक्, पूभ, रेवती (र बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

कन्यावरण– कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, मघा, पूफ, उफ, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, पूषा, उषा, श्रवण, धनिष्ठा, पूभ, उभ, रेवती नक्षत्र (र शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

क्षौरकर्म (कपालदारि बनाउने)– मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, रेवती, अश्विनी (सोमवार, बुधवार, बिहिवार, शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

पशूनां गृहप्रवेशः– चतुर्थी-नवमी-चतुर्दशी-अष्टमी-अमावास्या तिथि छोडेर रोहिणी, उफ, उषा, श्रवण, उभ इ नक्षत्र छोडेर (मङ्गलवार छोडेर) अन्य तिथि-नक्षत्र-(वार) पशु सार्न ग्राह्य छन्।

पशु किनबेच– प्रतिपदा-चतुर्थी-नवमी-चतुर्दशी-अष्टमी तिथि बाहेकका तिथि, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, विशाखा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषक्, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र बिहिवार, शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

चुल्लीनिर्माण (चुलो बनाउने)– रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, पूफ, उफ, पूषा, उषा, पूभ, उभ, अश्विनी नक्षत्र ग्राह्य छन्।

द्रव्यप्रयोग– मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, स्वाति, विशाखे, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, रेवती, अश्विनी नक्षत्र ग्राह्य छन्। (वारको पनि विचार गर्नेले बुधवार ऋण नदिने र आइतवार-मङ्गलवार नलिने गर्नु भञ्छन्)।

गृहच्छादन (घर छाउने)– द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी तिथि तथा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र आइतवार-मङ्गलवारबाहेकका अरु वार) ग्राह्य छन्।

औषध-सेवन– मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र आइत, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र वार) ग्राह्य छन्।

हल्सारो– चतुर्थी-नवमी-चतुर्दशी-षष्ठीबाहेकका तिथि तथा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखे, अनुराधा, मूल, उषा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, उभ, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र आइतवार-शनिवारबाहेकका अरु वार) ग्राह्य छन्।

बीजवपन (बिउ छर्ने)– चतुर्थी-नवमी-चतुर्दशी-षष्ठीबाहेकका तिथि तथा रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, उषा, धनिष्ठा, उभ, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र सोमवार, बुधवार, बिहिवार, शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

रोपाइँ– कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूफ, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखे, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूषा, उषा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पूभ, उभ, रेवती, अश्विनी, भरणी नक्षत्र (र मङ्गलवार-शनिवारबाहेकका अरु वार) ग्राह्य छन्।

दाइँ– रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूफ, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखे, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूषा, उषा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पूभ, उभ, रेवती नक्षत्र ग्राह्य छन्।

भकारि भर्ने– कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूफ, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखे, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूषा, उषा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पूभ, उभ, रेवती, अश्विनी नक्षत्र (र सोमवार, बुधवार, बिहिवार, शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

काठको खलियो लाउने– कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूफ, उफ, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखे, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूषा, उषा, श्रवण नक्षत्र (र आइतवार, सोमवार, मङ्गलवार, बुधवार, शुक्रवार) ग्राह्य छन्।

विशेष– मूल वैदिक परम्परामा मेषादि-लग्नविचारको आवश्यकता पर्दैन। दैव कर्मका निम्ति पूर्वाह्णलाइ उत्तम मानिएको छ। विविध कर्मका निम्ति आथर्वण ज्योतिष्ले बताएका मुहूर्तको विचार गरेर समयनिर्धारण गर्नु उचित हुञ्छ। तिनको विवरण एसै तिथिपत्रमा पछाडि दिइएको छ (पृ.८१)।

(१९) काठमाण्डपनगरस्य प्रथमलग्नसारणी (काठमाण्डु २७° ४२')

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेषः	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
१	५१	५८	५	१४	२०	२८	३६	४३	५१	५९	६	१४	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१९	२६	३५	४३	५१	०	८	१७	२६	३४	४३
वृषः	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
२	५२	१	९	१८	२७	३६	४५	५५	३	१३	२२	३१	४१	५०	१	१०	१९	२९	३९	४९	५९	९	१८	३०	४०	५०	१	११	२१	३२
मिथुनम्	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
३	४३	५३	३	१५	२५	३६	४६	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	८
कर्कटः	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
४	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	४	१५	२७	३८	५०	२	१४	२५	३७	४८	६०	१२	२३	३५	४६	५८
सिंहः	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
५	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५१	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	६	१८	२८	४१
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
६	५१	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
७	३२	४२	५४	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२२	३३	४४	५६	८	२०	३१	४३	५५	७
वृश्चिकः	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
८	१८	२९	४१	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	२	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३
धनुः	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
९	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३१	४३	५३	४	१४	२५	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४६	५६	६
मकरः	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
१०	१५	२४	३४	४३	५३	२	११	२०	२९	३७	४७	५६	५	१३	२२	३१	३९	४७	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१८	२६
कुम्भः	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
११	३३	४२	५०	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४२	५०	५६	३	११	१८	२५	३३	३९	४७	५४	१	९
मीनः	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
१२	१५	२२	३०	३६	४३	५१	५८	५	१३	१९	२६	३४	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३१	३७	४५	५२	५९	७	१४	२१	२९	३६	४४
अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

(२०) लग्नषड्वर्गशुद्धिविचारः

एकविंशे तु मेषस्य वृषस्य तु चतुर्दशे।
मिथुनस्य सप्तदशे सप्तमे कर्कटस्य च॥

अष्टादशेऽंशे सिंहस्य कन्यायाः सप्तमे तथा।
चतुर्विंशे तुलायाश्च द्वादशे वृश्चिकस्य च॥

धनुषः स्यात् सप्तदशे मकरस्य चतुर्दशे।
षड्विंशेऽशे तु कुम्भस्य शुद्धिर् मीनस्य सप्तमे॥

अर्थ– मेषको एक्काइसौँ, वृषको चौधौँ, मिथुनको सत्रौँ, कर्कटको सातौँ, सिंहको अठारौँ, कन्याको सातौँ, तुलाको चौबिसौँ, वृश्चिकको बारौँ, धनुको सत्रौँ, मकरको चौधौँ, कुम्भको छब्बिसौँ र मीनको सातौँ अंशमा षड्वर्गशुद्धि हुन्छ।

[लग्नको विचार गर्न चाहानेहरुलाइ सुविधा पुऱ्याउन याँहाँ प्रथम लग्नसारणी दिय्येको हो। मूल वैदिक परम्परामा लग्नविचारको आवश्यकता पर्दैन। वैदिक मुहूर्तहरुको विचार गरेर कर्म गर्न उचित हुञ्छ। वैदिक मुहूर्तहरुको विवरण एसै तिथिपत्रमा पछाडि दिइएको छ (पृ.८१)]

(२१) सार्वत्रिक दशमलग्नसारणी

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेषः	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
१	४७	५६	५	१४	२४	३३	४३	५२	२	११	२२	३२	४१	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	०	१०	१९	२९	३९	४९	५९	९	२०	३०
वृषः	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
२	४०	५१	१	११	२१	३२	४२	५३	३	१३	२५	३५	४५	५६	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४८
मिथुनम्	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
३	५९	१०	२१	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३१	४२	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	८	१९	३०	४०	५१	२	१२
कर्कटः	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
४	२३	३३	४४	५४	५	१५	२६	३६	४६	५७	७	१७	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७
सिंहः	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८
५	२७	३६	४६	५६	५	१५	२४	३४	४४	५३	३	१२	२१	३१	४०	५०	५९	८	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९
कन्या	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
६	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	४९	५९	९	१८	२६	३५	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५१	०	९	१८	२८	३७
तुला	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८
७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४३	५३	२	१२	२२	३१	४१	५१	०	१०	२०	३०	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	२०	३०
वृश्चिकः	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
८	४०	५०	१	११	२१	३२	४२	५३	३	१४	२४	३५	४५	५६	७	१७	२८	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४८
धनुः	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	४०	५१	२	१२
मकरः	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
१०	२३	३३	४४	५४	५	१५	२६	३६	४६	५७	७	१७	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७
कुम्भः	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
११	२७	३६	४६	५६	५	१५	२४	३४	४४	५३	३	१२	२१	३१	४०	५०	५९	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४१	५०	५९
मीनः	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
१२	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३५	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२८	३७
अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

(२२) अवकहडचक्र (वर-वधूमेलापकसारणीसहित)

चरणगत नामाद्याक्षर	नक्षत्र राशि	राशि-स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	वैरि-योनि	गण	नाडी	आसन
चूचेचोला	अश्विनी मेष	मङ्गल	क्षत्रि	चतुष्पद	अश्व	महिष	देव	आद्य	अश्व
लीलूलेलो	भरणी मेष	मङ्गल	क्षत्रि	चतुष्पद	गज	सिंह	नर	मध्य	प्रेत
अइउए	कृ.१ मेष कृ.३ वृष	मङ्गल १ शुक्र ३	क्षत्रि १ वैश्य ३	चतुष्पद	अज	वानर	राक्षस	अन्त्य	अग्निकुण्ड
ओवावीवू	रोहिणी वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	नकुल	नर	अन्त्य	गौ
वेवोकाकी	मृग.२ वृष मृग.२ मिथुन	शुक्र २ बुध २	वैश्य २ शूद्र २	चतु २ द्विपद २	सर्प	नकुल	देव	मध्य	मृग
कुघङछ	आर्द्रा मिथुन	बुध	शूद्र	द्विपद	श्वान	मृग	नर	आद्य	सर्प
केकोहाही	पुन.३ मिथुन पुन.१ कर्कट	बुध ३ चन्द्र १	शूद्र ३ ब्राह्मण १	द्विपद ३ जल १	मार्जार	मूषक	देव	आद्य	कमल
हुहेहोडा	तिष्य कर्कट	चन्द्र	ब्राह्मण	जल	मेष	वानर	देव	मध्य	कलश
डिडुडेडो	अश्ले. कर्कट	चन्द्र	ब्राह्मण	जल	मार्जार	मूषक	राक्षस	अन्त्य	काक
मामिमूमे	मघा सिंह	सूर्य	क्षत्रि	चतुष्पद	मूषक	मार्जार	राक्षस	अन्त्य	महिष
मोटाटीटु	पूफ सिंह	सूर्य	क्षत्रि	चतुष्पद	मूषक	मार्जार	नर	मध्य	शिला
टेटोपपी	उफ.१ सिंह उफ.३ कन्या	सूर्य १ बुध ३	क्षत्रि १ वैश्य ३	चतु १ द्विपद ३	गौ	व्याघ्र	नर	आद्य	शिला
पुषणठ	हस्त कन्या	बुध	वैश्य	द्विपद	महिष	अश्व	देव	आद्य	गज
पेपोररी	चित्रा २ कन्या चित्रा २ तुला	बुध २ शुक्र २	वैश्य २ शूद्र २	द्विपद	व्याघ्र	गौ	राक्षस	मध्य	मयूर
रूरेरोता	स्वाति तुला	शुक्र	शूद्र	द्विपद	महिष	अश्व	देव	अन्त्य	दोला
तीतूतेतो	विशा.३ तुला विशा.१ वृश्चि.	शुक्र ३ मङ्गल १	शूद्र ३ ब्राह्मण १	द्विपद ३ कीट १	व्याघ्र	गौ	राक्षस	अन्त्य	अज
नानीनूने	अनुराधा वृश्चि.	मङ्गल	ब्राह्मण	कीट	मृग	श्वान	देव	मध्य	हंस
नोयायियु	ज्येष्ठा वृश्चि.	मङ्गल	ब्राह्मण	कीट	मृग	श्वान	राक्षस	आद्य	कच्छप
येयोभाभी	मूल.धनु	गुरु	क्षत्रि	मनुष्य	श्वान	मृग	राक्षस	आद्य	मूल
भूधफाढ	पूषा धनु	गुरु	क्षत्रि	मनुष्य	वानर	अज	नर	मध्य	शयन
भेभोजाजी	उषा.१ धनु उषा.३ मकर	गुरु १ शनि ३	क्षत्रि १ वैश्य ३	मनुष्य १ चतुष्पद ३	नकुल	सर्प	नर	अन्त्य	शयन
खीखूखेखो	श्रवण मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद	वानर	अज	देव	अन्त्य	नर
गागीगूगे	धनि.२ मकर धनि.२ कुम्भ	शनि	वैश्य २ शूद्र २	चतुष्पद २ द्विपद २	सिंह	गज	राक्षस	मध्य	आढक
गोसासीसु	शतभि. कुम्भ	शनि	शूद्र	द्विपद	अश्व	महिष	राक्षस	आद्य	वृष
सेसोददी	पूभद्र.३ कुम्भ पूभद्र.१ मीन	शनि ३ गुरु १	शूद्र ३ ब्राह्मण १	द्विपद ३ जल १	सिंह	गज	नर	आद्य	भद्रपीठ
दूथझञ	उभद्र. मीन	गुरु	ब्राह्मण	जल	गौ	व्याघ्र	नर	मध्य	भद्रपीठ
देदोचाची	रेवती मीन	गुरु	ब्राह्मण	जल	गज	सिंह	देव	अन्त्य	चक्र

(**जुजेजोखा** अभिजित् मकरराशि)

रोहिण्यार्द्रा-मृगेन्द्राग्नि-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते॥

(नाडीदोष नलाग्ने नक्षत्र– रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुष्य, विशाखा, श्रवण, उत्तरभद्रपद र रेवती)

[अवकहडचक्रादिको विषय पनि मूल वेद-वेदाङ्गग्रन्थमा छैन। तसर्थ वैदिकहरुले **"मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्" (पारस्करगृह्यसूत्र १।८।८)** भन्ने वरको प्रार्थनाको अनुकूल हृदय भएकि कन्या बिया गरे सर्वार्थसिद्धि हुञ्छ। गुणको वास्ता गर्नपर्दैन। इच्छा लागे गुणको विचार गरे पनि हुञ्छ।]

(२३) वरवधूयोगगुणबोधकसारणी

वरको राशि / वधूको राशि	नक्षत्र	मेष			वृष			मिथुन			कर्कट			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन		
		अश्विनी	भरणी	कृ.१	कृ.३	रोहिणी	मृ.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	तिष्य	अश्लेषा	मघा	पूफ.	उफ.१	उफ.३	हस्त	चित्रा २	चित्रा २	स्वाति	विशा.३	विशा.१	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा.॥	पूषा.३॥	उषा.१	उषा.३	श्रव.१॥	श्रव.२॥	धनि.२	धनि.२	शत.	पूभा.३	पूभा.१	उभा.	रेवती
मेष	अश्विनी	२८	३३	२८॥	१८॥	२३॥	२२॥	२६	१७	१९	२४॥	३२॥	२९	२३	२७	१७॥	१०॥	१०॥	१३	२२॥	२८	२२॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२५	२६	२३॥	२६	२७	२६	२१	२०	१५	१६	१५॥	२५॥	२७
	भरणी	३४	२८	२९	१९	२३॥	१५॥	१९	२६	२६॥	३२॥	२४॥	२६॥	२२	२०	२६	२१॥	२०	४	१४	२९॥	२२	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१८	१९	२७	२८॥	२७	२६	११	१०	२०	२४	२३॥	१८॥	२७॥
	कृत्ति.१	२७॥	२९	२८	१८	११	१७	२०	२०	२७	२६॥	२७॥	२४॥	१६॥	२०	२२	१५॥	१५॥	१८	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	२०॥	२६॥	२५	१८	१९	१२॥	१५॥	१२॥	११	२६	२५	२६॥	१८॥	१८॥	२०॥	१२॥
वृष	कृत्ति.३	१९॥	२०	१९	२८	२१	२७॥	१८	१७॥	१८॥	२३	२४	२१	१९	२२	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२२	१४॥	१४॥	८	१४	११	१०	२४॥	२९॥	३१॥	२३॥	२१	२३	१५
	रोहिणी	२३॥	२४	१२	२१	२८	३६	२७	२३॥	२३	२८	२९	१४	१२॥	२६॥	२८	२६	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९॥	२१	१२॥	१७	१९	१७॥	२१	२६	२४॥	३०॥	२८	२७	२०
	मृ.२	२३॥	१५॥	१९॥	२८॥	३६	२८	१९	२४	२३	२८	२१	२३	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२६	१३	१२	२५	१९॥	२५॥	२२॥	२५॥	१५	१०॥	१२	१८	२२॥	२७	२५॥	१४	१९	२७	२९॥	२७	१८	२८
मिथुन	मृ.२	२७	१९	२२॥	२०	२७	२०॥	२८	३३	३२॥	२०	१३	१५	२४	२०	२८॥	३१॥	३४	२१	१४	२७	२०॥	१५	१३	१५	२३	१९	१७॥	२५	२०	२४॥	२६	११॥	१३	२१	२३॥	२५॥	१७	२६॥
	आर्द्रा	१८॥	२७	२१॥	१९	२४	२६॥	३४	२८	२५	१२॥	२०॥	१३	२३	२९	२२	२४॥	२४॥	२८	२३	२७	२१	१५॥	१९	५	१६	२८	२७	२८	२३॥	२३॥	२४॥	१८॥	१९	१२	१८	२०	२६॥	२६॥
	पुन.३	२०	२६	२३	२०॥	२३	२४	३२॥	२४	२८	१५॥	२२॥	१७	२३	२७	२१॥	२३॥	२५॥	२७	२०॥	२८	२२	१६॥	२२॥	८	१४	२८	२६	२७	२२॥	२३॥	२४॥	१८	१९॥	१४	१७	१९	२८	२७॥
कर्कट	पुन.१	२२॥	२९॥	२६॥	२३	२७	२७	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२९॥	१७॥	२१॥	१५॥	१८	१९	२१	२०॥	२८	२२	२०	२६	११॥	८	२२	२२॥	२१॥	२६	२७	२७	२२	१३॥	८	११	१७	२६	२५॥
	तिष्य	३१॥	२२॥	२७॥	२४	२७	२०	१२	१८॥	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१५॥	२४॥	२६	२७	१२	११॥	२६॥	२१	२०	१९	२२	१७	१२	१२॥	२२	२७	२५	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२६	१८	२७
	अश्लेषा	२६	२४॥	२३॥	२०	१३	२१	१३	१२	१५	२८॥	२९	२८	१६	१६॥	१८॥	२१	२१	२६	२५॥	१२॥	१७॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१७॥	८॥	१३	१३	१३	२७	१८॥	१९॥	१२॥	१८॥	२१	१३
सिंह	मघा	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१९॥	२२	२२	२१	१७॥	१९॥	१७	२८	३०	२७॥	१६॥	१६॥	२२	२५	११॥	१७	२४॥	२६॥	३४	२५	१९॥	२१	१०	५॥	५॥	५	१९	२५	२६	१८॥	१८॥	१९॥	१३
	पूर्वफ.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	२०	२८	२७	२३॥	१७॥	१७॥	३०	२८	३५	२४	२२॥	८	११	२५॥	१९	२६॥	२४॥	२६॥	२०	१७॥	१९	२५॥	२१	१९॥	१८॥	५॥	१०॥	१९॥	२४॥	२४॥	१७॥	२५॥
	उफ.१	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१	२१॥	१७॥	२६॥	१९॥	२६॥	३५	२८	१७॥	१६॥	१४	१७	२६	१७	२४॥	३३॥	१९॥	१०	२५॥	२७	२६॥	२२	२१	२०	१२॥	१८	१२	१६	१६॥	२७॥	२५॥
कन्या	उफ.३	१२॥	२२॥	१६॥	२१	२६	२४॥	३१॥	२३॥	२४॥	२०	२८	२२॥	१७॥	२५	१८॥	२८	२७	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	२०	२८	१५	१४	२९॥	२८	३०॥	२५॥	२५	२६	१६	१६॥	१०॥	१४॥	१७॥	२८॥	२७॥
	हस्त	११	२१	१७	२२	२५॥	२६	३३	२२॥	२४॥	२०	२८	२३	१८॥	२२॥	१७	२६	२८	२८	२०	२६॥	१८॥	२१	२८	१५	१५	२७	२६	२८॥	२४	२५	२६	२०॥	२१	१०॥	१५॥	१८॥	२६॥	२७॥
	चित्रा २	१३	५॥	१९	२३॥	२०	१२	१९	२७	२५॥	२१॥	१२	२७	२३	९	१५	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२९	१३	२७	२८	१४	१४	२२	१७	१९	१९	१७॥	१८	२४	१८॥	२१॥	१०॥	२०॥

वैदिकतिथिपत्र

वरको राशि / वधूको राशि	नक्षत्र	मेष			वृष			मिथुन			कर्कट			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन		
वधूको राशि	नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृ.१	कृ.३	रोहिणी	मृ.२	मृ.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पूफ.	उफ.१	उफ.३	हस्त	चित्रा२	चित्रा२	स्वाति	विशा.३	विशा.१	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूषा.।।	पूषा.३।।	उषा.१	उषा.३	श्रव.१।।	श्रव.२।।	धनि.२	धनि.२	शत.	पूभ.३	पूभ.१	उभ.	रेवती
तुला	चित्रा २	२२।।	१५	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२३	२०	१९।।	११।।	२६।।	२६	१२	१८	२७।।	२०	२१	२८	२७	३४।।	२४।।	८	२२।।	२८	१४	१३	२२	२५।।	२७।।	२७	२५।।	२०	२६	२०	१४	३।।	१२।।
	स्वाति	२९	३०।।	१७	१२।।	१५।।	२६	२७	२६	२८	२९	२७।।	१३।।	१३।।	२५।।	२६	२५।।	२७।।	२१	२८	२८	२०	१०	२३।।	१८।।	२३	२७	२६	१९	२२	२३।।	२४।।	२८।।	२३	२२	२७	२१	१९।।	१२।।
	विशा.३	२२।।	२३	२०।।	१५।।	११।।	१८	२१	२१	२१	२२	२१	१७।।	१८	२०	१८	१७।।	१८।।	२७।।	३४।।	१९	२८	१८	१८	२२।।	२८	२२	२१	१४	१७।।	१७।।	१७।।	३२	२६।।	२६	२२	१६	१३	५।।
वृश्चिक	विशा.१	१७।।	१८।।	१५।।	२०।।	१५।।	२३।।	१३।।	१४।।	१४।।	१९	१९	१५।।	२४।।	२५।।	२३।।	१८	१९	२८	२३।।	९	१७	२८	२८	३२।।	२३।।	१७।।	१७।।	९।।	१३	१२	१२	२७	२७	२६।।	२२।।	२१	१९	११।।
	अनुराधा	२५।।	१६।।	२०।।	२५।।	२८।।	२१।।	११	१६	२१।।	२६	१९	२१	२६।।	२२।।	३१।।	२६	२७	१२	७।।	२२।।	१७	२८	२८	३१	१६।।	१४।।	१५।।	२२।।	२६	२७	२६	१४	१३	२२	२६।।	२६	१९	२७
	ज्येष्ठा	१३	१८।।	२५।।	३०।।	२३।।	२३।।	१३	३	५	१०।।	२१	२६	३३	२५।।	१८।।	१३	१३	२५	२०।।	१६।।	२०।।	३१।।	३०	२८	१५	१७।।	१८।।	१७।।	२१	२१	२०	२७	२६	१९	१२	११।।	२२	२१
धनु	मूल	१३	२०	२५।।	१९	१३	१३	२१	१५	१२	८	१७।।	२३।।	२५	१९	१०	१४	१३	२७	२७	२१	२७	२४।।	१६।।	१६	२८	२८	२७	२५।।	१५।।	१५।।	१६।।	२१	२९।।	२१।।	१५।।	१७	२५	२६।।
	पूषा.।।	२६	१८।।	१८	१२।।	१८।।	१०।।	१९	२७	२७	२३	१३	१७	१९।।	१७।।	२५।।	२८।।	२७	१३	१३	२७	२१	१८।।	१६।।	१८।।	२८	२८	२७	३४	२३	२३।।	२४।।	८	१६।।	२३।।	३०।।	३२	२३	३२
	पूषा.३।।	२७	२०	१९	१३।।	२०	१२	१७।।	२६	२६	२४।।	१४।।	१८।।	२१	१९	२७	२८।।	२६	१३	१२	२६	२०	१८।।	१७।।	१९।।	२७	२७	२८	३४	२४	२४।।	२३।।	९।।	१५	२२।।	२९	३३।।	२४।।	३३।।
	उषा.१	२४।।	२७	१२।।	७	११।।	१८	२५	२७	२७	२३।।	२४	९।।	१०	२५।।	२६।।	२९।।	२८।।	२१	२१	१९	१३	१०।।	२४।।	१८।।	२६।।	३६	३४।।	२८	१८	१६।।	१८	१५।।	२३।।	२३।।	२९।।	३१।।	३२	२३।।
मकर	उषा.३	२८	२९।।	१६।।	१४	१७	२३।।	२०	२४।।	२२।।	२८	२९	१४	६।।	२२	२३	२५।।	२५	१७।।	२४।।	२३।।	१६।।	१४	२८	२२	१६	२५।।	२७	१७।।	२८	२८	२६।।	२६।।	१७।।	१७।।	२३।।	३०।।	३१।।	२२।।
	श्रव.१।।	२८	२८	१४।।	१२	१८	२७	२३।।	२१।।	२२।।	२८	२६	१५	७।।	१९।।	२१	२४	२५	२०	२७	२२।।	१७।।	१४	२८	२३	१७।।	२३।।	२४।।	१६	२५	२८	२८	३०	२०।।	१८।।	२३	३०।।	२९।।	२३।।
	श्रव.२।।	२७	२६।।	१३	११	१६।।	२५।।	२५	२२।।	२३।।	२८	२६	१५	७	१८।।	२०	२५	२६	२०	२७	२३।।	१७।।	१४	२७	२२	१८।।	२४।।	२३।।	१६	२४	२७	२८	२९	२२	१९।।	२४।।	२९।।	२९।।	२२।।
	धनि.२	२१	१२	२७	२४।।	२१	१३	९।।	१७।।	१६	२२	१३	२८	२०	५।।	१३।।	१६	१९।।	१७।।	२५।।	२६।।	३०	२८	१४	२८	२१	८	९।।	१६	२६।।	२८	२८	२८	१८।।	२३।।	१९	२६।।	१५।।	२२।।
कुम्भ	धनि.२	२०	११	२६	३०।।	२७	१९	१२	१९	१८।।	१३।।	४।।	१९।।	२६	११।।	१९	१७।।	२१	१९	२०	२२	२६।।	२८	१३	२७	३०।।	१६।।	१५।।	२४।।	१८।।	२०	२१	१९।।	२८	३३	२८।।	१८	७	१४
	शत.	१५	२१	२८	३२।।	२५।।	२७	२०	१२	१३	८	१४।।	२०।।	२७	२१	१३	११।।	९।।	२५	२६	२०	२६	२७।।	२२	२०	२२।।	२४।।	२३	२४।।	१८।।	१८।।	१९	२४।।	३३	२८	२९	८।।	१७	१६
	पूभ.३	१७।।	२५	२०	२४।।	३१।।	३१।।	२४।।	१८	१८	१३	२०	१३।।	१९।।	२५।।	१७	१५।।	१७।।	१९।।	२०।।	२८	२२	२३।।	२८	१३	१६।।	३०।।	२९।।	३०।।	२४।।	२४।।	२४	२०	२७	१९	२८	१७।।	२२।।	२०
मीन	पूभ.१	१५।।	२२।।	१७।।	२०	२७	२७	२५।।	१९	१९	१८	२५	१८।।	१७।।	२४	१५।।	१६।।	१८।।	२०।।	१३।।	२१	१५	२१	२७	११।।	१६	३०	३१।।	३०।।	२९।।	२९।।	२९।।	२५।।	१७	१०	१८।।	२८	३३	३०।।
	उभ.	२५।।	१६।।	१९।।	२२	२६	१८	१७।।	२५।।	२८	२७	१९	२१	१८।।	१६।।	२६।।	२७।।	२६।।	९।।	३।।	१९।।	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२३।।	३१	३०।।	२९।।	२९।।	१४।।	६	१६	२१।।	३३	२८	३४
	रेवती	२६	२५।।	१२।।	१५	१८	२७	२५।।	२४।।	२६।।	२५।।	२७	१४	१४	२४।।	२४।।	२५।।	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	५।।	१२।।	२७	२२	२६।।	२९	३०।।	२१।।	२३।।	२१।।	२२।।	२२।।	१४	१६	१८	२९।।	३४	२८

[वरवधूगुणयोगादिको कुरा पनि मूल वेद-वेदाङ्गग्रन्थमा छैन। त्यो शक-कुषाण-आक्रामकहरुसित भारतवर्षमा आएका पश्चिमा इरानि पारसि मगज्योतिषिहरुले भारतवर्षमा ल्याएको कुरा देखिन्छ। तसर्थ वैदिकहरुले तेसको विचार नगरे पनि हुन्छ। लोकमा तेसको खोजि गरिने हुँदा लोकको खाँचो टार्न यो चक्र याँहाँ सङ्गृहीत गरिएको हो।]

(२४) समयशुद्धिः

वैदिक-सिद्धान्त-अनुसार **तपोमास**देखि (आर्तव माघ महिनादेखि) **शुचिमास**सम्म (आर्तव आषाढ महिनासम्म) अर्थात् **२०७३।८।१५देखि २०७४।३।९सम्म उदगयन (उत्तरायण)** पर्छ। तेसमध्ये ६ ओटा **शुक्लपक्ष**का **दिनहरु** (सबै गरेर **९० दिन**) वैदिक दैव कर्मका निम्ति **शुद्ध समय** मानिञ्छ। [आगामि वर्ष ५०८३औं कलिसंवत्मा **२०७४।९।३ देखि २०७५।२।३० सम्म** उदगयन (उत्तरायण) पर्छ। तपः, तपस्य, मधु, माधव, शुक्र र शुचि मासका ६ ओटा शुक्लपक्षका दिनहरुमा वैदिक दैव कर्मका निम्ति **शुद्ध समय** हुञ्छ।]

वेदाङ्गज्योतिषका सिद्धान्त अनुसार र नेपालमा लिच्छविकाल-मल्लकालमा चलेका पद्धतिअनुसार **एस वर्ष उत्तरायणका अन्तमा ग्रीष्म ऋतुमा (२०७४।२।१२ देखि २०७४।३।९ सम्म) वैदिक अधिकमास द्वितीयशुचिमास (द्वितीय आषाढमास)** परेको छ। *[द्रष्टव्य– अर्वाचीन ज्योतिषका पुस्तकका परिभाषा र गणना अनुसार आगामी वर्ष वि.सं. २०७५ जेठ २ गते देखि ३० गते सम्म पर्ने भनिएको **अधिक ज्येष्ठमास** (मलमास) वैदिक गणनाअनुसार **शुद्ध शुचिमास** (शुद्ध वैदिक आर्तव आषाढमास) हुञ्छ, अधिकमास हुँदैन।]*

(२५) गुरुको र शुक्रको उदयास्त

गुरुको (बृहस्पतिको) अथवा शुक्रको उदय हुँदा मात्र यो कर्म गर्नु, गुरुको (बृहस्पतिको) अथवा शुक्रको अस्त भएका अवस्थामा यो कर्म नगर्नु भन्ने विधि-निषेध वेदमन्त्रसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र इत्यादि मूल वेद-वेदाङ्गग्रन्थमा नभएकाले **यज्ञकालार्थसिद्धि**का निम्ति (**यज्ञकालार्थसिद्धये**—वे.ज्यो.,२श्लो.) लगधमुनिबाट प्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थमा बृहस्पतिको र शुक्रको उदयास्तका विषयमा प्रतिपादन गरिएको छैन। गुरु-शुक्रको उदय-अस्तको विचार अरु मूल वेद-वेदाङ्गग्रन्थमा पनि नभएकाले वैदिकहरुले तेसको विचार नगरे पनि हुञ्छ। इच्छा लागे गुरु-शुक्रको उदय-अस्तको पनि विचार राखेर शुभ कर्म गरे पनि हुञ्छ।

एस वर्ष कलिसंवत् **५०८२ (परिवत्सर)**मा **गुरुको (बृहस्पतिको)** र **शुक्रको** उदय हुने र अस्त हुने कुराको विवरण एस प्रकार छ—

ऊर्जकृष्णसप्तमी	**(२०७४।६।२५ [बुधवार])**	**गुरु पश्चिमतिर अस्त**
सहःकृष्णतृतीया	**(२०७४।७।२० [सोमवार])**	**गुरुको पूर्वतिर उदय**

माधवकृष्णनवमी	**(२०७३।१२।९ [बुधवार])**	**शुक्र पश्चिमतिर अस्त**
माधवकृष्णत्रयोदशी	**(२०७३।१२।१३ [आइतवार])**	**शुक्रको पूर्वतिर उदय**
सहस्यकृष्णचतुर्दशी	**(२०७४।९।१ [शनिवार])**	**शुक्र पूर्वतिर अस्त**

[आगामि वर्ष कलिसंवत् ५०८३ (इदावत्सर) मा **गुरु**को (बृहस्पतिको) **२०७५।७।२६ मा** पश्चिमतिर **अस्त** र **२०७५।८।२१ मा** पूर्वतिर **उदय** तथा **शुक्र**को **२०७४।१०।१९ मा** पश्चिमतिर **उदय २०७५।७।१ मा** पश्चिमतिर **अस्त** र **२०७५।७।१५ मा** पूर्वतिर **उदय** हुने छ।]

(२६) ग्रहण

ग्रहणको उल्लेख वेदमा (शै.शा.ऋग्वेदसंहिता ५।४०।५–९, मा.वा.शतपथब्रा. ५।३।२।२ इत्यादि) पनि पाँइञ्छ। किन्तु ग्रहणका समयमा स्नान-दानादि धार्मिककृत्य गर्न पर्ने विधाान

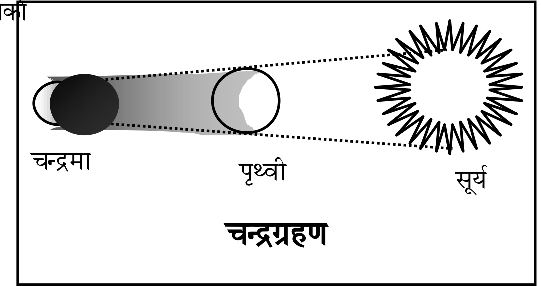
भने वेदमन्त्रसंहिता-ब्राह्मणग्रन्थ-श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्र-धर्मसूत्रहरुमा छैन। महाभारतमा अपशकुनका रूपमा ग्रहणका उल्लेख पाँइञ्छन् (सभापर्व ८०।२९; वनपर्व २००।२५; भीष्मपर्व २।२३, ३।२८,३२-३३; मौसलपर्व २।१९)। लघुस्मृति-पुराणहरुमा ग्रहणका विषयका वचनहरु पाँइञ्छन्। ग्रहणलाइ सूतकजस्तो मानिएकाले अरु काम्यफलको चाहाना नगर्नेले स्पर्शकालको र मध्यकालको स्नान नगरेपनि शुद्धिका लागि मोक्षकालको स्नान गर्न पर्ने कुरा बताइएको देखिञ्छ। याज्ञवल्क्यस्मृतिमा (१।२१८) ग्रहणलाइ श्राद्धकालका रूपमा लिइएको छ। मनुस्मृतिमा (४।११०) राहुसूतकमा वेदको ग्रहण-ग्राहणार्थक अध्ययनाध्यापन तिन दिन छोड्न पर्छ भनिएको छ। ग्रहणका वेला भोजनादि नगर्ने प्रचलन छ।

कलिसंवत् ५०८२ मा (परिवत्सरमा) **नभस्यमासको पूर्णिमामा (२०७४ साउन २३ गते सोमवार राति)** देखिने खण्डग्रास चन्द्रग्रहणको विवरण—

स्पर्श २३:०७ (राति ११:०७) बजे
मध्य २४:०७ (राति १२:०७) बजे
अन्त्य २५:०३ (राति १:०३) बजे

[आगामी वर्ष कलिसंवत् ५०८३ मा (इदावत्सरमा) तपस्यमासको पूर्णिमामा **(२०७४ माघ १७ गते बुधवार साँज)** देखिने खग्रास चन्द्रग्रहणको विवरण—

स्पर्श १७:३३ (५:३३) बजे
मध्य १९:१५ (७:१५) बजे
अन्त्य २०:५६ (८:५६) बजे]



चन्द्रग्रहण

(२७) वैदिकानां नक्षत्रनामकरणरीतिः

नाम राख्ने कार्यलाइ नामकरण (न्वारन/नरन) भन्दछन्। बालक जन्मेका दश दिनमा सुत्केरिलाइ शय्याबाट (ओच्छ्यानबाट) उठाएर स्नान गराइ ब्राह्मणभोजन गराएर पिताले (बाबुले) जातकको नाम राख्ने विधान गृह्यसूत्रमा पाँइञ्छ— **"दशम्यामुत्थाप्य ब्राह्मणान् भोजयित्वा पिता नाम करोति द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा घोषवदाद्यन्तरन्तस्थं दीर्घाभिनिष्ठानं कृतं कुर्यान् न तद्धितमयुजाक्षरमाकारान्तं स्त्रियै तद्धितम् , शर्म ब्राह्मणस्य, वर्म क्षत्रियस्य, गुप्तेति वैश्यस्य"** —(पारस्करगृह्यसूत्र१।१७।१–४)। याज्ञवल्क्यस्मृतिमा चाइँ एघारौँ दिनमा नामकरण गर्न पर्ने बताइएको छ। नेपालमा पनि एघारौँ दिनमा नामकरण (न्वारन) गर्ने चलन छ। माध्यन्दिनीयवाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिहरुले पारस्करगृह्यसूत्रको अनुसरण गर्न पर्छ।

नाम राम्रो र शुद्ध संस्कृत भाषाको हुन पर्ने कुरामा शास्त्रले जोड दिएको छ। आजभोलि कतिपय वैदिक सनातनी हिन्दुहरुले विदेशि भाषाका नाम पनि राख्न थालेको देखिञ्छ। यो अत्यन्तै शोचनीय विषय हो। तेसैले हिन्दुहरुले संस्कृतभाषाको नाम राखेर आँफ्नो मौलिक शास्त्रीय परम्परा जोगाउन आवश्यक देखिञ्छ।

नक्षत्रनाम—नक्षत्रअनुसारको नाम राख्ने वैदिक पद्धति वेदाङ्गज्योतिषमा पाँइञ्छ। यो पद्धति पछिसम्म पनि चल्दै गरेको देखिञ्छ। निर्णयसिन्धुमा एस पद्धतिको उल्लेख नभएपनि १८४७ वैक्रमाब्दमा रचिएको धर्मसिन्धुमा चाइँ छ।१७५६ वैक्रमाब्दमा ॠषिभट्टले रचेको संस्कारभास्करमा पनि यो विषय उल्लिखित छ (१२२-१२४ पत्र)। एस पद्धतिका विषयमा वेदाङ्गज्योतिषको कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानका भूमिकामा विस्तृत प्रतिपादन गरिएको छ। एस पद्धतिमा नक्षत्रका देवताका आधारमा नाम राखिञ्छ। पछि गएर त्यो पद्धति ओजेलमा पर्न गएको देखिञ्छ। वैदिक परम्परामा नक्षत्रअनुसारको नाम 'चुचेचोला अश्विनी' इत्यादिअनुसार राखिँदैन, नक्षत्रका देवताअनुसार राखिञ्छ; जस्तै कृत्तिका नक्षत्रमा

जन्मेका जातकको नाम कृत्तिकाका देवता **अग्नि** भएकाले अग्निगुप्त, अग्निजुष्ट, अग्नित्रात, अग्निदत्त, अग्निदिष्ट, अग्निपात, अग्निरात, अग्निलात, अग्निदयिता, अग्निपालिता, अग्निरक्षिता इत्यादि रूपमा राखिन्छ। द्विजातिले श्रौत-स्मार्तयज्ञ-विवाह-व्रतबन्ध-अन्त्यकर्म-श्राद्धादिका लागि एसै गरि नाम राख्न पर्छ। श्रौत-स्मार्त-यज्ञादि कर्मका लागि तेस प्रकारले नक्षत्रनाम राखेपछि फलितज्योतिषमा विशेष आग्रह हुनेहरुले फलादेशका लागि चुचेचोला इत्यादिअनुसार राशिको नाम समेत राख्तै गरे पनि हुन्छ।

(२८) नक्षत्र, नक्षत्रदेवता तथा नक्षत्रनाम

न.	नक्षत्रम्	नक्षत्रदेवता	नक्षत्रदेवतासम्बद्धानि सम्भावितानि नामानि
कृ	कृत्तिकाः	**अग्निः**	**पुं–** अग्निगुप्तः, अग्निजुष्टः, अग्नित्रातः, अग्निदत्तः, अग्निदिष्टः, अग्निपातः, अग्निरातः, अग्निलातः, **स्त्री–** अग्निदयिता, अग्निपालिता, अग्निरक्षिता इत्यादिकानि
रो	रोहिणी	**प्रजापतिः**	**पुं–**प्रजापतिगुप्तः, प्रजापतिजुष्टः, प्रजापतित्रातः, प्रजापतिदत्तः, प्रजापतिदिष्टः, प्रजापतिपातः, प्रजापतिरातः, प्रजापतिलातः, **स्त्री–** प्रजापतिदयिता, प्रजापतिपालिता, प्रजापतिरक्षिता इत्यादिकानि
मृ	मृगशिरः (मृगशीर्षम्)	**सोमः**	**पुं–**सोमगुप्तः, सोमजुष्टः, सोमत्रातः, सोमदत्तः, सोमदिष्टः, सोमपातः, सोमरातः, सोमलातः, **स्त्री–**सोमदयिता, सोमपालिता, सोमरक्षिता इत्यादिकानि
आ	आर्द्रा	**रुद्रः**	**पुं–**रुद्रगुप्तः, रुद्रजुष्टः, रुद्रत्रातः, रुद्रदत्तः, रुद्रदिष्टः, रुद्रपातः, रुद्ररातः, रुद्रलातः, **स्त्री–**रुद्रदयिता, रुद्रपालिता, रुद्ररक्षिता इ.
पुन	पुनर्वसू	**अदितिः**	**पुं–**अदितिपालितः, अदितिरक्षितः, अदितिसम्पातः, अदितिसुपातः, अदितिप्रदत्तः, अदितिसुलातः, अदितिसुरातः, **स्त्री–**अदितिगुप्ता, अदितिजुष्टा, अदितित्राता, अदितिदत्ता, अदितिदिष्टा, अदितिपाता, अदितिराता, अदितिलाता, इ.
पु	पुष्यः (तिष्यः)	**बृहस्पतिः**	**पुं–**बृहस्पतिगुप्तः, बृहस्पतिजुष्टः, बृहस्पतित्रातः, बृहस्पतिदत्तः, बृहस्पतिदिष्टः, बृहस्पतिपातः, बृहस्पतिरातः, बृहस्पतिलातः, **स्त्री–**बृहस्पतिदयिता, बृहस्पतिपालिता, बृहस्पतिरक्षिता इ.
अ	आश्लेषाः	**सर्पाः**	**पुं–**सर्पगुप्तः, सर्पजुष्टः, सर्पत्रातः, सर्पदत्तः, सर्पदिष्टः, सर्पपातः, सर्परातः, सर्पलातः, **स्त्री–**सर्पदयिता, सर्पपालिता, सर्परक्षिता इ. [**पुं–**नागगुप्तः, नागजुष्टः, नागत्रातः, नागदत्तः, नागदिष्टः, नागपातः, नागरातः, नागलातः, **स्त्री–**नागदयिता, नागपालिता, नागरक्षिता इ.]

वैदिकतिथिपत्र

म	मघाः	**पितरः**	**पुं**–पितृगुप्तः, पितृजुष्टः, पितृत्रातः, पितृदत्तः, पितृदिष्टः, पितृपातः, पितृरातः, पितृलातः, **स्त्री**–पितृदयिता, पितृपालिता, पितृरक्षिता इ.
पूफ	पूर्वफल्गुन्यौ	**भगः**	भगगुप्तः, भगजुष्टः, भगत्रातः, भगदत्तः, भगदिष्टः, भगपातः, भगरातः, भगलातः, **स्त्री**–भगदयिता, भगपालिता, भगरक्षिता इ.
उफ	उत्तरफल्गुन्यौ	**अर्यमा**	**पुं**–अर्यमपालितः, अर्यमरक्षितः, अर्यमसम्पातः, अर्यमसुपातः, अर्यमप्रदत्तः, अर्यमसुलातः, अर्यमसुरातः, **स्त्री**–अर्यमगुप्ता, अर्यमजुष्टा, अर्यमत्राता, अर्यमदत्ता, अर्यमदिष्टा, अर्यमपाता, अर्यमराता, अर्यमलाता, इ.
ह	हस्तः	**सविता**	**पुं**–सवितृपालितः, सवितृरक्षितः, सवितृसम्पातः, सवितृप्रदत्तः, सवितृसुरातः, **स्त्री**–सवितृगुप्ता, सवितृजुष्टा, सवितृत्राता, सवितृदत्ता, सवितृदिष्टा, सवितृपाता, सवितृराता, [**पुं**–सूर्यगुप्तः, सूर्यजुष्टः, सूर्यत्रातः, सूर्यदत्तः, सूर्यदिष्टः, सूर्यपातः, सूर्यरातः, सूर्यलातः, **स्त्री**–सूर्यदयिता, सूर्यपालिता, सूर्य-रक्षिता] इ.
चि	चित्रा	**त्वष्टा**	**पुं**–त्वष्टृगुप्तः, त्वष्टृजुष्टः, त्वष्टृत्रातः, त्वष्टृदत्तः, त्वष्टृदिष्टः, त्वष्टृपातः, त्वष्टृरातः, त्वष्टृलातः, **स्त्री**–त्वष्टृदयिता, त्वष्टृपालिता, त्वष्टृरक्षिता इ.
स्वा	स्वातिः	**वायुः**	**पुं**–वायुगुप्तः, वायुजुष्टः, वायुत्रातः, वायुदत्तः, वायुदिष्टः, वायुपातः, वायुरातः, वायुलातः, **स्त्री**–वायुदयिता, वायुपालिता, वायुरक्षिता इ.
वि	विशाखे	**इन्द्राग्नी**	**पुं**–इन्द्राग्निपालितः, इन्द्राग्निरक्षितः, इन्द्राग्निसम्पातः, इन्द्राग्निप्रदत्तः, इन्द्राग्निसुरातः, **स्त्री**–इन्द्राग्निगुप्ता, इन्द्राग्निजुष्टा, इन्द्राग्नित्राता, इन्द्राग्निदत्ता, इन्द्राग्निदिष्टा, इन्द्राग्निपाता, इन्द्राग्निराता इ.
अ	अनुराधाः	**मित्रः**	**पुं**–मित्रगुप्तः, मित्रजुष्टः, मित्रत्रातः, मित्रदत्तः, मित्रदिष्टः, मित्रपातः, मित्ररातः, मित्रलातः, **स्त्री**–मित्रदयिता, मित्रपालिता, मित्ररक्षिता इ.
ज्ये	ज्येष्ठा	**इन्द्रः**	**पुं**–इन्द्रगुप्तः, इन्द्रजुष्टः, इन्द्रत्रातः, इन्द्रदत्तः, इन्द्रदिष्टः, इन्द्रपातः, इन्द्ररातः, इन्द्रलातः, **स्त्री**–इन्द्रदयिता, इन्द्रपालिता, इन्द्ररक्षिता इ.
मू	मूलबर्हणी (मूलम्)	**निर्ऋतिः**	**पुं**–निर्ऋतिपालितः, निर्ऋतिरक्षितः, निर्ऋतिसम्पातः, निर्ऋतिसुपातः, निर्ऋतिप्रदत्तः, निर्ऋतिसुलातः, निर्ऋतिसुरातः, **स्त्री**–निर्ऋतिगुप्ता, निर्ऋतिजुष्टा, निर्ऋतित्राता, निर्ऋतिदत्ता, निर्ऋतिदिष्टा, निर्ऋतिपाता, निर्ऋतिराता, निर्ऋतिलाता इ.
पूषा	पूर्वाषाढाः	**आपः**	**पुं**–अप्पालितः, अब्रक्षितः, अप्सम्पातः, अप्सुपातः, अप्प्रदत्तः, अप्सुलातः, अप्सुरातः, **स्त्री**–अब्गुप्ता, अब्जुष्टा, अप्त्राता, अब्दत्ता, अब्दिष्टा, अप्पाता, अब्राता, अब्लाता इ.

उषा	उत्तराषाढाः	**विश्वे देवाः**	**पुं**–विश्वदेवगुप्तः, विश्वदेवजुष्टः, विश्वदेवत्रातः, विश्वदेवदत्तः, विश्वदेवदिष्टः, विश्वदेवपातः, विश्वदेवरातः, विश्वदेवलातः, **स्त्री**–विश्वदेवदयिता, विश्वदेवपालिता, विश्वदेवरक्षिता इ.
श्र	श्रवणः (श्रोणा)	**विष्णुः**	**पुं**–विष्णुगुप्तः, विष्णुजुष्टः, विष्णुत्रातः, विष्णुदत्तः, विष्णुदिष्टः, विष्णुपातः, विष्णुरातः, विष्णुलातः, **स्त्री**–विष्णुदयिता, विष्णुपालिता, विष्णुरक्षिता इ.
ध	धनिष्ठाः	**वसवः**	**पुं**–वसुगुप्तः, वसुजुष्टः, वसुत्रातः, वसुदत्तः, वसुदिष्टः, वसुपातः, वसुरातः, वसुलातः, **स्त्री**–वसुदयिता, वसुपालिता, वसुरक्षिता इ.
श	शतभिषक्	**वरुणः**	**पुं**–वरुणपालितः, वरुणरक्षितः, वरुणसम्पातः, वरुणसुपातः, वरुणप्रदत्तः, वरुणसुलातः, वरुणसुरातः, **स्त्री**–वरुणगुप्ता, वरुणजुष्टा, वरुणत्राता, वरुण-दत्ता, वरुणदिष्टा, वरुणपाता, वरुणराता, वरुणलाता, इ.
पूभ	पूर्वभद्रपदे	**अज एकपात्**	**पुं**–अजैकपाद्गुप्तः, अजैकपाज्जुष्टः, अजैकपात्त्रातः, अजैकपाद्दत्तः, अजैकपाद्दिष्टः, अजैकपात्पातः, अजैकपाद्रातः, अजैकपाल्लातः, **स्त्री**–अजैकपाद्दयिता, अजैकपात्पालिता, अजैकपाद्रक्षिता इ.
उभ	उत्तरभद्रपदे	**अहिर्बुध्न्यः**	**पुं**–अहिर्बुध्न्यगुप्तः, अहिर्बुध्न्यजुष्टः, अहिर्बुध्न्यत्रातः, अहिर्बुध्न्यदत्तः, अहिर्बुध्न्यदिष्टः, अहिर्बुध्न्यपातः, अहिर्बुध्न्यरातः, अहिर्बुध्न्यलातः, **स्त्री**–अहिर्बुध्न्यदयिता, अहिर्बुध्न्यपालिता, अहिर्बुध्न्यरक्षिता इ.
रे	रेवती	**पूषा**	**पुं**–पूषगुप्तः, पूषजुष्टः, पूषत्रातः, पूषदत्तः, पूषदिष्टः, पूषपातः, पूषरातः, पूषलातः, **स्त्री**–पूषदयिता, पूषपालिता, पूषरक्षिता इ.
अ	अश्वयुजौ	**अश्विनौ**	**पुं**–अश्विगुप्तः, अश्विजुष्टः, अश्वित्रातः, अश्विदत्तः, अश्विदिष्टः, अश्विपातः, अश्विरातः, अश्विलातः, **स्त्री**–अश्विदयिता, अश्विपालिता, अश्विरक्षिता इ.
भ	भरण्यः/ अपभरण्यः	**यमः**	**पुं**–यमगुप्तः, यमजुष्टः, यमत्रातः, यमदत्तः, यमदिष्टः, यमपातः, यमरातः, यमलातः, **स्त्री**–यमदयिता, यमपालिता, यमरक्षिता इत्यादिकानि

अग्निः प्रजापतिः सोमो रुद्रोऽदितिर् बृहस्पतिः । सर्पाश् च पितरश् चैव भगश् चैवाऽर्यमाऽपि च ॥ सविता त्वष्टाऽथ वायुश् चेन्द्राऽग्नी मित्र एव च । इन्द्रो निर्ऋतिरापो वै विश्वेदेवास् तथैव च ॥ विष्णुर् वसवो वरुणोऽज एकपात् तथैव च । अहिर्बुध्न्यस् तथा पूषा अश्विनौ यम एव च ॥ नक्षत्रदेवता ह्येता एताभिर् यज्ञकर्मणि । यमानस्य शास्त्रज्ञैर् नाम नक्षत्रजं स्मृतम् ॥

—वेदाङ्गज्योतिष, ३२—३६ श्लो.।

(२९) सङ्कल्परचनाप्रकारनिदर्शनम्

ओ३म्। तत् सत्। स्वस्ति। श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्यापरिमित-मायाशक्तिकस्य लीलामयेच्छया सृष्टानां शतकोटियोजनविस्तारकाणामव्यक्तमहदहङ्कारा-ऽऽकाश-वायु-तेजोप्-पृथिवीरूपावरणाऽऽवृत-चतुर्दशभुवनात्मकानामनन्तकोटि-सङ्ख्या-कानां ब्रह्माण्डानामेकतमस्मिन्नेतस्मिन् ब्रह्माण्डे भूर्लोके भूमण्डले जम्बूद्वीपे भारतवर्षे कर्म-भूमौ कुमारिकाखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते .... अमुक-(गण्डकी)**प्रदेशे** ....अमुक-(चुँदिताम्रकूट)-**ग्रामे (........अमुक**(व्यास)-**नगरे) इह पुण्यदेशे वेदोक्तजगत्सृष्टिकारिणो नारायण-नाभिकमलोद्भवस्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे प्रथमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे ब्रह्म-तिथ्यात्मकेषु मत्स्यपुराणाद्युक्तेषु श्वेतवाराहादिषु त्रिंशति कल्पेषु प्रथमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादिषु चतुर्दशसु मन्वन्तरेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे एकसप्ततौ ससन्ध्यासन्ध्यांशासु चतुर्युगीषु अष्टाविंशतितम्यां चतुर्युग्याम्, तत्र च सत्य-त्रेता-द्वापरेषु व्यतीतेषु कलौ युगे प्रवृत्ते तस्य च प्रथमे चरणे पञ्चसु सहस्रेषु ...**एकाशीतौ **च वर्षेषु गतेषु तदुत्तरे वर्षे प्रवृत्ते (वेदोक्त-पञ्चवर्षात्मकयुगानुसारिणां चान्द्राणां प्रभवादीनां षष्टेः संवत्सराणां पञ्चवर्षात्मकेषु वैष्णवादिषु द्वादशसु युगेषु** ..... नवमे ...... सौम्ये ... **युगे तस्य च वेदोक्तेषु संवत्सरपरिवत्सरेदावत्सरेद्-वत्सरवत्सराख्येषु पञ्चसु वर्षेषु** .....कीलका**परनामके** ....**परिवत्सराख्ये** ..... द्वितीये **वर्षे** ...उदग**यने** ... शिशिरे **ऋतौ** ...तपसि **मासे (वैदिके आर्तवे** ... माघे **मासे)** ... शुक्ले **पक्षे** .... प्रतिपदि **तिथौ (**........ कौस्तुभे **करणे)** .... ज्येष्ठायां **नक्षत्रे** *[विष्कम्भादिषु सप्तविंशतौ योगेषु ...अष्टमे धृतौ योगे ...बुधवासरे श्रीसूर्ये ...अनुराधासु नक्षत्रे (...वृश्चिकराशौ) स्थिते देवगुरौ ...हस्ते नक्षत्रे (...कन्याराशौ) स्थिते चन्द्रमसि ....वृश्चिकराशौ स्थिते शेषेषु ग्रहेषु यथायथं नक्षत्रेषु राशिषु च स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगणविशेषेण विशिष्टे]* **शुभे पुण्ये काले अद्य** .... अमुक-**शर्मा** .... अमुक-**गोत्रः** ....अमुक-**प्रवरो माध्यन्दिनीयवाजसनेयिशुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायी कात्यायनश्रौतसूत्र-पारस्करगृह्यसूत्र-कात्या-यनत्रिकण्डिकस्नानसूत्रानुसारी अहम्** सर्वात्मसूर्ययोधि-मन्देहरक्षसामपाहननेन आत्मसंश्लिष्ट-पापावधूननेन च परमात्म-प्रसादस्य सिद्धये प्राणायामपूतो भूत्वा प्रातस्सन्ध्योपासनं (पवित्रजप-यज्ञं च) **करिष्ये।**

[अरुले मान्ने कलिवर्ष (महाभारतयुद्धाब्द वा युधिष्ठिरराज्यारोहणाब्द) मा ३६ घटाउँदा रहने ५०८२ वैदिकहरुको कलिवर्ष (कृष्णको स्वर्गारोहणदेखि गनिने वास्तविक कलिवर्ष) हुन्छ। तेसैको सङ्कल्पमा उल्लेख गर्न पर्छ। ५ वर्षे वैदिक युगका संवत्सर-परिवत्सरादि ५ वर्षमध्ये दोस्रो **परिवत्सर** र कीलकनामक संवत्सर एउटै हुन्। कर्मकालमा तिथि नै मुख्य भएकाले तिथिसम्मको मात्र उल्लेख गर्ने, करण, योग इत्यादिको उल्लेख सङ्कल्पमा नगर्ने गरे पनि हुन्छ। अरु वार, सूर्यको नक्षत्र वा राशि इत्यादिको पनि उल्लेख गर्ने इच्छा भए तिनको पनि उल्लेख गरे पनि हुन्छ। इच्छा नभए वैदिक धर्मकृत्यका सङ्कल्पमा तिनको पनि उल्लेख नगरे पनि हुन्छ। वेदाङ्गज्योतिषअनुसारका पात्रामा बताइएका कलिसंवत्को, वैष्णवादियुगको, संवत्सर-परिवत्सरादि संवत्सरको, प्रभव-विभवादि चान्द्र संवत्सरको, उत्तरायण-दक्षिणायनको, शिशिरादि ऋतुको, तपस्-तपस्यादि मासको वा वैदिक आर्तव चान्द्र माघफाल्गुनादि मासको, अधिकमासको [द्वितीय शुचिमासको (द्वितीय आषाढको) अथवा द्वितीय सहस्यमासको (द्वितीय पौषको)], वैदिक तिथि-नक्षत्रादिको पनि सङ्कल्पादिमा माथि देखाइएअनुसार प्रयोग गर्न पर्छ। सङ्कल्पमा नक्षत्रको वचन र विभक्ति मिलाउँदा **'कृत्तिकासु नक्षत्रे', 'रोहिण्यां नक्षत्रे'** इत्यादि भन्न पर्छ। तसर्थ **कृत्तिकासु, रोहिण्याम्, मृगशिरसि(मृगशीर्षे), आर्द्रायाम्, पुनर्वस्वोः, पुष्ये(तिष्ये), अश्लेषासु, मघासु, पूर्वफल्गुन्योः, उत्तरफल्गुन्योः, हस्ते, चित्रायाम्, स्वातौ(स्वात्याम्), विशाखयोः, अनुराधासु, ज्येष्ठायाम्, मूले (मूलबर्हण्याम्), पूर्वाषाढासु, उत्तराषाढासु, श्रवणे, श्रविष्ठासु (धनिष्ठासु), शतभिषजि, पूर्वभद्र-पदयोः, उत्तरभद्रपदयोः, रेवत्याम्, अश्वयुजोः, अपभरणीषु (भरणीषु)** एस्ता रूपको प्रयोग गर्न पर्छ।]

(३०) अग्निवाससारणी

वैदिक कर्ममा होमका लागि अग्नि जुराउन आवश्यक हुँदैन। तान्त्रिक वा तन्त्रमूलक कर्महरुका होमका लागि अग्नि जुराउने चलन छ। यो मूल वैदिक कर्मका लागि आवश्यक छैन।

सैका तिथिर् वारयुता कृताऽऽप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः। सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणाऽर्थनाशौ दिवि भूतले च॥

अग्निवाससारणी

ति./वार.	शुक्लपक्षे							कृष्णपक्षे								
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	कृ. वारः
आ.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	सो.
सो.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	म.
म.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	बु.
बु.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	बृ.
बृ.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	शु.
शु.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	श.
श.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	०
०	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	स्व.	पा.	भू.	भू.	आ.

भू.=भूमि, स्व.=स्वर्ग, पा.=पाताल। अग्निवासफलम्— स्व.=प्राणनाशः, पा.=धननाशः, भू.=सुखम्।
(तन्त्रको सिद्धान्तअनुसार भू. हुँदा अग्नि जुर्छ, स्व. पा. हुँदा जुर्दैन)

(३१) शिववाससारणी

वैदिकशतरुद्रियमन्त्रजपादि का निम्ति शिववासविचार गर्न आवश्यक पर्दैन।

रुद्री लाउन भने लोकमा शिववासको विचार गर्ने प्रचलन छ। रुद्रीमा वेदका मन्त्रहरुको नै प्रयोग भए पनि त्यो कर्म तान्त्रिक वा तन्त्रमूलक लघुस्मृतिपुराणको कर्म हो। तथापि रुद्री लाउन चाहाने व्यक्तिहरुका उपयोगका र सुविधाका लागि यहाँ शिव-वाससारणी दिय्येको हो।

तिथिन् द्विघ्नां पञ्चयुतां कुर्यात् तष्टां नगैस् ततः। शेषे वेदे रसे खे च नेष्टा रुद्र्यन्यथा शुभा॥

शिववाससारणी

शुक्लपक्षे	शिववासः	फलम्	कृष्णपक्षे
१	श्मशाने	मृत्युः	०
२	गौरीसन्निधौ	शुभम्	१
३	सभायाम्	तापः	२
४	क्रीडायाम्	सन्तानहानिः	३
५	कैलाशे	सुखम्	४
६	वृषे	श्रीप्राप्तिः	५
७	भोजने	भोजनप्राप्तिः	६
८	श्मशाने	मृत्युः	७
९	गौरीसन्निधौ	शुभम्	८,३०
१०	सभायाम्	तापः	९
११	क्रीडायाम्	सन्तानहानिः	१०
१२	कैलाशे	सुखम्	११
१३	वृषे	श्रीप्राप्तिः	१२
१४	भोजने	भोजनप्राप्तिः	१३
१५	श्मशाने	मृत्युः	१४

(३२) नागशिरोदिग्विचारः

भाद्रादिषु शिरः प्राक् स्यादवाङ् मार्गादिषु त्रिषु। फाल्गुनादिषु प्रत्यक् चोदग् ज्येष्ठादिषु भोगिनः॥

अर्थ— भदौ–असोज–कात्तिकमा पूर्वतिर; मुङ्सिर–पुस–माघमा दक्षिणतिर; फागुन–चइत–वैशाखमा पश्चिमतिर तथा जेठ–असार–साउनमा उत्तरतिर नागको शिर हुञ्छ।

(३३) वारवेलाचक्रम्

वारवेलाको कुरा पनि आदित्य-वार-सोमवार इत्यादि वारहरुको उल्लेख नै वेद-वेदाङ्गका मूल ग्रन्थमा नपाँइने हुनाले वैदिकहरुका लागि आवश्यक छैन। वैदिकहरुले त विभिन्न कर्मका लागि आथर्वण-ज्योतिषादि ग्रन्थमा समुचित मानिएका दिनका रौद्र-श्वेतादि मुहूर्तको विचार गर्नु समुचित छ (इ मुहूर्त एसै पात्रामा पनि समाविष्ट छन्)। वारवेलाको वास्ता नगरे पनि हुन्छ।

वारवेलाचक्रम्

	दिवा									रात्रौ							
	घ.प. ३।४५	७।३०	११।१५	१५।०	१८।४५	२२।३०	२६।१५	३०।०		घ.प. ३।४५	७।३०	११।१५	१५।०	१८।४५	२२।३०	२६।१५	३०।०
वारः	घ. मि. १:३० (६:००-७:३०)	३:०० (७:३०-९:००)	४:३० (९:००-१०:३०)	६:०० (१०:३०-१२:००)	७:३० (१२:००-१३:३०)	९:०० (१३:३०-१५:००)	१०:३० (१५:००-१६:३०)	१२:०० (१६:३०-१८:००)	**वारः**	घ. मि. १:३० (१८:००-१९:३०)	३:०० (१९:३०-२१:००)	४:३० (२१:००-२२:३०)	६:०० (२२:३०-२४:००)	७:३० (२४:००-२५:३०)	९:०० (२५:३०-२७:००)	१०:३० (२७:००-२८:३०)	१२:०० (२८:३०-३०:००)
आ	उद्वेगः	चरः	लाभः	अमृतम्	कालः	शुभः	रोगः	उद्वेगः	**आ**	उद्वेगः	शुभः	अमृतम्	चरः	रोगः	कालः	लाभः	उद्वेगः
सो	अमृतम्	कालः	शुभः	रोगः	उद्वेगः	चरः	लाभः	अमृतम्	**सो**	अमृतम्	चरः	रोगः	कालः	लाभः	उद्वेगः	शुभः	अमृतम्
म	रोगः	उद्वेगः	चरः	लाभः	अमृतम्	कालः	शुभः	रोगः	**म**	रोगः	कालः	लाभः	उद्वेगः	शुभः	अमृतम्	चरः	रोगः
बु	लाभः	अमृतम्	कालः	शुभः	रोगः	उद्वेगः	चरः	लाभः	**बु**	लाभः	उद्वेगः	शुभः	अमृतम्	चरः	रोगः	कालः	लाभः
बृ	शुभः	रोगः	उद्वेगः	चरः	लाभः	अमृतम्	कालः	शुभः	**बृ**	शुभः	अमृतम्	चरः	रोगः	कालः	लाभः	उद्वेगः	शुभः
शु	चरः	लाभः	अमृतम्	कालः	शुभः	रोगः	उद्वेगः	चरः	**शु**	चरः	रोगः	कालः	लाभः	उद्वेगः	शुभः	अमृतम्	चरः
श	कालः	शुभः	रोगः	उद्वेगः	चरः	लाभः	अमृतम्	कालः	**श**	कालः	लाभः	उद्वेगः	शुभः	अमृतम्	चरः	रोगः	कालः

(३४) यात्रायां चन्द्रवासविचारः

मेषे सिंहे च धनुषि पूर्वस्यां दिशि चन्द्रमाः। दक्षिणस्यां दिशि वृषे कन्यायां मकरेऽपि च॥
मिथुने च तुलायां च कुम्भे पश्चिमदिश्यथ। कर्कटे वृश्चिके मीने चोत्तरस्यां दिशि स्मृतः॥
सम्मुखे त्वर्थलाभः स्यात् पृष्ठे स्यात् प्राणसंशयः। दक्षिणे सुखसम्पत्तिर् वामे चन्द्रे धनक्षयः॥

अर्थ— मेष, सिंह र धनु राशिमा पूर्व दिशामा चन्द्रमा हुन्छन्। वृष, कन्या र मकर राशिमा दक्षिण दिशामा हुन्छन्। मिथुन, तुला र कुम्भ राशिमा पश्चिम दिशामा हुन्छन्। कर्कट, वृश्चिक र मीन राशिमा उत्तर दिशामा हुन्छन्। चन्द्रमा सम्मुख हुँदा यात्रादि गर्दा अर्थलाभ, पछाडि हुँदा प्राणसंशय, दाइनेतिर हुँदा सुखसम्पत्ति र देउरेतिर हुँदा धनक्षय हुन्छ भन्ने अर्वाचीन ज्योतिषिहरुको मान्यता छ।

चन्द्रवासचक्रम्

मिथुन, तुला, कुम्भ **पश्चिम**	कर्कट, वृश्चिक, मीन **उत्तर**	मेष, सिंह, धनु **पूर्व**
	✷	
	वृष, कन्या, मकर **दक्षिण**	

(३५) यात्रायां योगिनीवासविचारः

योगिनीचक्रम्		
वायव्य ७, १५	२, १० उत्तर	८, ३० ईशान
पश्चिम ६, १४	✷	१,९ पूर्व
४, १२ नैरृत्य	५, १३ दक्षिण	३, ११ आग्नेय

प्रतिपन्-नवमीयुग्मे तृतीयैकादशीयुगे। पञ्चम्यां सत्रयोदश्यां चतुर्थीद्वादशीद्वये॥

षष्ठ्यां च सचतुर्दश्यां सप्तमी-पूर्णिमायुगे। द्वितीयादशमीयुग्मेऽष्टम्यमावास्ययोः क्रमात्॥

पूर्वादौ योगिनी वामे सुखदा पृष्ठतोऽर्थदा। दक्षिणे धनहन्त्री सा सम्मुखे मरणप्रदा॥

अर्थ– प्रतिपदा र नवमीमा पूर्वमा, तृतीया र एकादशीमा आग्नेय दिशामा, पन्चमी र त्रयोदशीमा दक्षिणमा, चतुर्थी र द्वादशीमा नैरृत्य दिशामा, षष्ठी र चतुर्दशीमा पश्चिममा, सप्तमी र पूर्णिमामा वायव्य दिशामा, द्वितीया र दशमीमा उत्तरमा, अष्टमी र अमावास्यामा ईशान दिशामा योगिनी रहने मानिएको छ। योगिनीलाइ देउरे तिर हुँदा सुखदा, पछाडि हुँदा अर्थदा, दाइनेतिर हुँदा धनहन्त्री र सम्मुखमा हुँदा मरणप्रदा मानिएको छ।

(३६) यात्रानक्षत्रविचारः

सर्वदिग्गमने त्वश्वयुजौ च मृगशीर्षकम्। सिद्ध्यो हस्तस् तथा श्रोणा रेवती तारकाः शुभाः॥ ज्येष्ठायां वर्जयेत् पूर्वां पञ्चके दक्षिणां दिशम्। रोहिण्यां पश्चिमां चोत्तरफल्गुन्योस् तथोत्तराम्॥

अर्थ–सबै दिशातिर जाँदा अश्विनी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, श्रोणा (श्रवण) र रेवती इ नक्षत्र शुभ हुञ्छन्। ज्येष्ठामा पूर्वतिर, पञ्चकमा (धनिष्ठा, शतभिषक्, पूर्वभद्रपद, उत्तरभद्रपद र रेवती नक्षत्रमा) दक्षिणतिर, रोहिणीमा पश्चिमतिर र उत्तरफल्गुनीमा उत्तरतिर नजानु।

(३७) यात्रावारविचारः

सोमे शनौ त्यजेत् पूर्वां यात्रायां दक्षिणां गुरौ। सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च उत्तरां तु कुजे बुधे॥ सोमे गुरौ च नाऽऽग्नेयीं रवौ शुक्रे न नैर्ऋतीम्। गच्छेन् न वायवीं भौमे नैशानीं मङ्गले शनौ॥

घृतं रवौ पयः सोमे गुडं भौमे तिलान् बुधे। गुरौ दधि यवान् शुक्रे माषान् भुक्त्वा व्रजेच् छनौ॥ प्राच्यां तु मङ्गले लाभो दक्षिणस्यां शनौ सुखम्। प्रतीच्यां ज्ञे गुरौ सिद्धिः शमुदीच्यां रवौ कवौ॥

अर्थ–सोमवारमा र शनिवारमा पूर्वतिर यात्रा नगर्नु। बिहिवारमा दक्षिणतिर यात्रा नगर्नु। आइतवारमा र शुक्रवारमा पश्चिमतिर यात्रा नगर्नु। मङ्गलवारमा र बुधवारमा उत्तरतिर यात्रा नगर्नु। सोमवारमा र बिहिवारमा आग्नेय दिशातिर यात्रा नगर्नु। आइतवारमा र शुक्रवारमा नैर्ऋत्य दिशातिर यात्रा नगर्नु। मङ्गलवारमा वायव्यदिशातिर यात्रा नगर्नु। मङ्गलवारमा र शनिवारमा ईशान दिशातिर यात्रा नगर्नु। अत्यावश्यक परि वारदिक्शूल पर्दा यात्रा गर्न परेमा आइतवार घिउ, सोमवार दुध, मङ्गलवार गुड, बुधवार तिल, बिहिवार दहि, शुक्रवार जौ र शनिवार मास खाएर जानु (यात्रा गर्नु)। पूर्वतिर मङ्गलवार जाँदा लाभ हुञ्छ। दक्षिणतिर शनिवार जाँदा सुख हुञ्छ। पश्चिमतिर बुध र बिहिवार जाँदा सिद्धि हुञ्छ। उत्तरतिर आइतवार र शुक्रवार जाँदा कल्याण हुञ्छ भन्ने वारवादिहरुको मान्यता छ।

(३८) यात्रासमयविचारः

गर्गः प्रशंसत्युषसं शकुनं च बृहस्पतिः । अङ्गिरा मानसोत्साहं विप्रवाक्यं जनार्दनः ॥

अर्थ– यात्राका निम्ति गर्गले उषःकाल राम्रो हुन्छ भनेका छन्, बृहस्पतिले शकुन राम्रो हुनुपर्छ भनेका छन्। अङ्गिराले यात्रा गर्नेका मनको उत्साहलाइ सिद्धिसूचक मानेका छन्। जनार्दनले ब्राह्मणका अनुमतिले ब्राह्मणलाइ मङ्गलपाठ गर्न लगाएर यात्रा गर्ने कुराको प्रशंसा गरेका छन्।

(४०) नष्टप्राप्तिविचारः

द्युमणिभान् नवभेषु वने स्थितं तदनु षट्सु च कर्णपथे स्थितम्।
अचलभेषु गतं गृहमागतं द्वयगते गतमेव मृतस् त्रिषु॥

अर्थ– सूर्य रहेको नक्षत्रबाट नौओटा नक्षत्रमा हराएको वा गएको भए वनमा रहेको, तेसपछिका छओटा नक्षत्रमा हराएको वा गएको भए सुनिन्छ, तेसपछिका सात नक्षत्रमा हराएको वा गएको भए फर्केर घरमा आउँछ, तेसपछिका दुइ नक्षत्रमा गएको भए गएको गएइ हुन्छ, फर्केर आउँदैन; तेसपछिका तिन नक्षत्रमा हराएको वा गएको भए मोरेको हुन्छ।

मघादिद्यार्यमान्तं च समीपे वस्तु दृश्यते। हस्तादिवसुपर्यन्तमन्यहस्ते च दृश्यते॥
शतताराद् यमान्तं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते। अग्न्यादिसार्पपर्यन्तं न लभेन् न च दृश्यते॥

अर्थ– मघा, पूर्वफल्गुनी उत्तरफल्गुनीमा हराएका वस्तु नजिकै देखिन्छ। हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण र धनिष्ठामा हराएको वस्तु अरुका हातमा देखिन्छ। शतभिषक्, पूर्वघभद्रपद, उत्तरभद्रपद, रेवती, अश्विनी र भरणी नक्षत्रमा हराएको वस्तु आँफ्नै घरमा देखिन्छ। कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य (तिष्य), र अश्लेषा इ नक्षत्रमा हराएको वस्तु देखिँदैन र पाँइँदैन पनि।

(३९) चौरप्रश्नविचारः

चौरप्रश्नचक्रम् (नक्षत्रानुसारि)				प्रश्नलग्नात् चौरज्ञानम्		प्रश्नलग्नअनुसार चोरको उमेर जान्ने रीति	
अन्धलोचन	**मन्दलोचन**	**मध्यलोचन**	**सुलोचन**	प्र.ल.१	ब्राह्मणः	प्रश्न लग्नको स्वामी	चोरको वय (उमेर)
धनिष्ठा	हस्त	आर्द्रा	स्वाति	२	क्षत्रियः	शुक्र	युवक
पुष्य (तिष्य)	उत्तराषाढा	मघा	पुनर्वसु	३	वैश्यः	बुध	बालक
रोहिणी	अनुराधा	पूर्वभद्रपद	श्रवण	४	शूद्रः	बृहस्पति	अधबैँसे
पूर्वाषाढा	शतभिषक्	चित्रा	कृत्तिका	५	स्वजनः	मङ्गल	तरुण
विशाखा	अश्लेषा	ज्येष्ठा	उत्तरभद्रपद	६	कुलाङ्गना (कुलस्त्री)	शनि	बुडो
उत्तरफल्गुनी	अश्विनी	अभिजित्	मूलबर्हणी	७	पुत्रः/भ्राता (भाइ)	सूर्य	प्रौढ
रेवती	मृगशीर्ष	भरणी	पूर्वफल्गुनी	८	भृत्यः (नोकर)	चन्द्रमा	कुमार
शीघ्रं लभ्यते	*बहुयत्नेन लभ्यते*	*दूराच्च श्रूयते*	*न श्रूयते न प्राप्यते*	९	कुलाङ्गना		
(छिटै पाइने)	*(धेरै प्रयत्नले पाइने)*	*(टाढाबाट सुनिने)*	*(नसुनिने, नपाइने)*	१०	शत्रुः		
पूर्व	**दक्षिण**	**पश्चिम**	**उत्तर**	११	मूषकः (मुसो)		
दिन ४	३	६४	०	१२	भूमिगतः (भैँमा पुरिएको)		

(४१) विंशोत्तरीयदशान्तर्दशाचक्रम्

सूर्य (६ वर्ष)				चन्द्र (१० वर्ष)				मङ्गल (७ वर्ष)				राहु (१८वर्ष)				गुरु (१६ वर्ष)			
कृ. उफ. उषा.				रोहि. हस्त श्र.				मृग चित्रा धनि.				आर्द्रा स्वाति शत.				पुन. वि. पूभ.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
सू	०	३	१८	च	०	१०	०	म	०	४	२७	रा	२	८	१२	वृ	२	१	१८
च	०	६	०	म	०	७	०	रा	१	०	१८	वृ	२	४	२४	श	२	६	१२
म	०	४	६	रा	१	६	०	वृ	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६
रा	०	१०	२४	वृ	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८	के	०	११	६
वृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०	सू	०	९	१८
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	सू	०	१०	२४	च	१	४	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	सू	०	४	६	च	१	६	०	म	०	११	६
शु	१	०	०	सू	०	६	०	च	०	७	०	म	१	०	१८	रा	२	४	२४

शनि (१९ वर्ष)				बुध (१७ वर्ष)				केतु (७ वर्ष)				शुक्र (२० वर्ष)			
तिष्य अनु. उभ.				अश्ले. ज्ये. रेव.				मघा मूल अश्वि.				पूफ.पूषा.भर.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
बु	२	८	९	के	०	११	२७	शु	१	२	०	सू	१	०	०
के	१	१	९	शु	२	१०	०	सू	०	४	६	च	१	८	०
शु	३	२	०	सू	०	१०	६	च	०	७	०	म	१	२	०
सू	०	११	१२	च	१	५	०	म	०	४	२७	रा	३	०	०
च	१	७	०	म	०	११	२७	रा	१	०	१८	वृ	२	८	०
म	१	१	९	रा	२	६	१८	वृ	०	११	६	श	३	२	०
रा	२	१०	६	वृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
वृ	२	६	१२	श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

(४२) त्रिभागीयदशान्तर्दशाचक्रम्

सूर्य (४ वर्ष)				चन्द्र (६।८ वर्ष)				मङ्गल (४।८वर्ष)				राहु (१२ वर्ष)				गुरु (१०।८ वर्ष)			
कृ. उफ. उषा.				रो. हस्त श्र.				मृ. चित्रा धनि.				आ. स्वाति शत.				पुन. विशा. पूभ.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
सू	०	२	१२	च	०	६	२०	म	०	३	८	रा	१	९	१८	वृ	१	५	२
च	०	४	०	म	०	४	२०	रा	०	८	१२	वृ	१	७	६	श	१	८	८
म	०	२	२४	रा	१	०	०	वृ	०	७	१४	श	१	१०	२४	बु	१	६	४
रा	०	७	६	वृ	०	१०	२०	श	०	८	२६	बु	१	८	१२	के	०	७	१४
वृ	०	६	१२	श	१	०	२०	बु	०	७	२८	के	०	८	१२	शु	१	९	१०
श	०	७	१८	बु	०	११	१०	के	०	३	८	शु	२	०	०	सू	०	६	१२
बु	०	६	२४	के	०	४	२०	शु	०	९	१०	सू	०	७	६	च	०	१०	२०
के	०	२	२४	शु	१	१	१०	सू	०	२	२४	च	१	०	०	म	०	७	१४
शु	०	८	०	सू	०	४	०	च	०	४	२०	म	०	८	१२	रा	१	७	६

शनि (१२।८ वर्ष)				बुध (११।४ वर्ष)				केतु (४।८ वर्ष)				शुक्र(१३।४ वर्ष)			
तिष्य अनु. उभ.				अश्ले. ज्ये. रेव.				मघा मू. अश्वि.				पूफ.पूषा.भर.			
ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि
श	२	०	२	बु	१	७	८	के	०	३	८	शु	२	२	२०
बु	१	९	१६	के	०	७	२८	शु	०	९	१०	सू	०	८	०
के	०	८	२६	शु	१	१०	२०	सू	०	२	२४	च	१	१	१०
शु	२	१	१०	सू	०	६	२४	च	०	४	२०	म	०	९	१०
सू	०	७	१८	च	०	११	१०	म	०	३	८	रा	२	०	०
च	१	०	२०	म	०	७	२८	रा	०	८	१२	वृ	१	९	१०
म	०	८	२६	रा	१	८	१२	वृ	०	७	१४	श	२	१	१०
रा	१	१०	२४	वृ	१	६	४	श	०	८	२६	बु	१	१०	२०
वृ	१	८	८	श	१	९	१६	बु	०	७	२८	के	०	९	१०

योगिनीनां तान्त्रिकमन्त्राः— म– ॐ ह्रीं मङ्गले मङ्गलायै स्वाहा। पि– ॐ ग्लौं पिङ्गले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा। धा– ॐ धनदे धान्यकायै स्वाहा। भ्रा– ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि भ्रामर्यै क्लीं स्वाहा। भ– ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। उ– ॐ उल्के मम रोगं नाशय जम्भय स्वाहा। सि– ॐ ह्रीं सिद्धे सर्वमानसं साधय स्वाहा। स– ॐ ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

(४३) योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम्

नक्षत्र / स्वामी	योगिनी								
आर्द्रा चित्रा श्रवण **चन्द्र १**	**मङ्गला**	म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
	मास	०	०	१	१	१	२	२	२
	दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०
पुन.स्वाति धनिष्ठा **सूर्य २**	**पिङ्गला**	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	म.
	मास	१	२	२	३	४	४	५	०
	दिन	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०
तिष्य विशा. शत. **बृहस्पति ३**	**धान्या**	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	म.	पि.
	मास	३	४	५	६	७	८	१	२
	दिन	०	०	०	०	०	०	०	०
अश्वि.अश्ले. अनु. पूभ. **मङ्गल ४**	**भ्रामरी**	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	म.	पि.	धा.
	मास	५	६	८	९	१०	१	२	४
	दिन	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०
भरणी मघा ज्येष्ठा उभ. **बुध ५**	**भद्रिका**	भ.	उ.	सि.	सं.	म.	पि.	धा.	भ्रा.
	वर्ष	०	०	०	१	०	०	०	०
	मास	८	१०	११	१	१	३	५	६
	दिन	१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०
कृ. पूफ. मूल रेवती **शनि ६**	**उल्का**	उ.	सि.	सं.	म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.
	वर्ष	१	१	१	०	०	०	०	०
	मास	०	२	४	२	४	६	८	१०
	दिन	०	०	०	०	०	०	०	०
रोहि. उफ. पूषा. **शुक्र ७**	**सिद्धा**	सि.	सं.	म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
	वर्ष	१	१	०	०	०	०	०	१
	मास	४	६	२	४	७	९	११	२
	दिन	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०
मृग हस्त उषा. **राहु केतु ८**	**सङ्कटा**	सं.	म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
	वर्ष	१	०	०	०	०	१	१	१
	मास	९	२	५	८	१०	१	४	६
	दिन	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०

(४४) सूर्यनक्षत्रचारः (लौकिकज्योतिषानुसारी)

नक्षत्र	दिन	घडि (घण्टा [बजे])	नक्षत्र	दिन	घडि (घण्टा [बजे])
			मृगशीर्ष	२०७४।२।२५	१७ (१२:६)
ज्येष्ठा	२०७३।८।१७	५२ (२७:४३)	आर्द्रा	२०७४।३।८	१९ (१३:२)
मूलबर्हणी	२०७३।८।३०	५६ (२९:२४)	पुनर्वसु	२०७४।३।२२	२४ (१४:४३)
पू.अषाढा	२०७३।९।१३	५८ (६:१३)	पुष्य(तिष्य)	२०७४।४।५	२७ (१६:१२)
उ.अषाढा	२०७३।९।२७	५९ (६:४९)	आश्लेषा	२०७४।४।१९	२८ (१६:३६)
श्रवण	२०७३।१०।११	२ (७:५५)	मघा	२०७४।५।१	२४ (१५:१८)
धनिष्ठा	२०७३।१०।२४	८ (१०:६)	पू.फल्गुनी	२०७४।५।१५	१५ (११:४८)
शतभिषक्	२०७३।११।८	१८ (१३:५१)	उ.फल्गुनी	२०७४।५।२८	६० (२९:४३)
पू.भद्रपद	२०७३।११।२१	३३ (१९:३६)	हस्त	२०७४।६।११	३७ (२०:५२)
उ.भद्रपद	२०७३।१२।४	५४ (२७:४२)	चित्रा	२०७४।६।२५	८ (९:१४)
रेवती	२०७३।१२।१८	२१ (१४:२५)	स्वाति	२०७४।७।७	३२ (१८:५२)
अश्विनी	२०७३।१२।३१	५५ (२७:५५)	विशाखा	२०७४।७।२०	४९ (२५:५८)
भरणी	२०७४।१।१४	३७ (२०:१२)	अनुराधा	२०७४।८।४	१ (६:५२)
कृत्तिका	२०७४।१।२८	२५ (१५:१२)	ज्येष्ठा	२०७४।८।१७	८ (९:५३)
रोहिणी	२०७४।२।११	१८ (१२:३८)	मूलबर्हणी	२०७४।९।१	१२ (११:३४)

२०७३।८।१५ प्रात:६:०० बजेको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति		
सू	अनुराधा ६६	९.४
च	ज्येष्ठा १९.२	१११.५
म	श्रवण ७२.५	७
बु	ज्येष्ठा १०७.२	१२.९
बृ	हस्त ८१.८	१.६
शु	पूर्वाषाढा ९३.८	१०.९
श	ज्येष्ठा २९.४	१.१
रा	मघा ९३.७	०.५
के	शतभिषक् ३१.७	०.५

(४५) ग्रहस्थिति-सारणी

वेदमा राशिको कुरा नभएको नक्षत्रको कुरा भएको हुनाले याहाँ निदर्शनका निम्ति वैदिक गणनाअनुसार (एक नक्षत्रमा १२४ अंश मानेर) नक्षत्रमा ग्रहहरुको स्थिति र गति देखाइञ्छ।

बु ९ शु
७
१०म
सू ८ च श
६ बृ
११ के
५ रा
१२
२
४
१
३

(चल्तिअनुसार राशिमा ग्रहको चारलाइ १५-१५ दिनका अन्तरमा पात्राका मूल भागमा दिइएको छ।)

२०७३।८।१५ प्रात:६:०० बजेको ग्रहको स्थिति र दैनिक गति		
सू	७:१३:५३:४०	६०:५०
च	७:१९:१९:१२	७१८:४६
म	९:२१:०५:२८	४५:०१
बु	८:०१:३९:०८	८३:२५
बृ	५:२२:२०:०५	१०:००
शु	८:२६:४७:२३	७०:१५
श	७:२३:१७:१२	७:०३
रा	४:१३:३५:२१	३:११
के	१०:१३:३५:२१	३:११

(४६) नवग्रहमन्त्राः

वैदिकमन्त्राः

सू.– **आ कृष्णेन रजसा** –मा.वा.शु.य.वे.म.सं. ३३।४३।

च.– **इमन् देवाः** ९।४०।

म.– **अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्** ३।१२।

बु.– **उद्‌बुद्ध्यस्वाग्ने** १५।५४।

बृ.– **बृहस्पतेऽ अति** २६।३।

शु.– **अन्नात्‌त् परिस्स्रुतो रसम्** १९।७५।

श.– **शन्नो देवीः** ३६।१२।

रा.– **काण्डात्‌त्काण्डात्‌त् प्ररोहन्ती** १३।२०।

के.– **केतुङ्कृण्णवन्नकेतवे** २९।३७॥

श्रीकामः शान्तिकामो वा ग्रहयज्ञं समाचरेत्।
वृष्ट्यायुःपुष्टिकामो वा तथैवाऽभिचरन्नपि॥

आ कृष्णेन इमन् देवा अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्।
उद्‌बुद्ध्यस्स्वेति च ऋचो यथासङ्ख्यं प्रकीर्तिताः॥

बृहस्प्पतेऽ अति यदर्यस् तथैव अन्नात्‌त् परिस्स्रुतः।
शन्नो देवीस्तथा काण्डात् केतुङ्कृण्णवन्निमाँस्तथा॥

अर्कः पलाशः खदिरः अपामार्गोऽथ पिप्पलः।
उदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात्॥

धेनुः शङ्खस् तथाऽनड्वान् हेम वासो हयः क्रमात्।
कृष्णा गौरायसं छाग एता वै दक्षिणाः स्मृताः॥

—याज्ञवल्क्यस्मृति १।२९५-३०९।

(४७) वैदिक शास्त्र

वेदं समाप्य स्नायात्। .... विधिर् विधेयस् तर्कश् च वेदः। षडङ्गमेके। न कल्पमात्रे। कामं तु याज्ञिकस्य।—पारस्करगृह्यसूत्र २।६।१–८।

वेद

अनादि (नित्य), अपौरुषेय (कुनै पुरुषद्वारा नरचिएको) तथा **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद र अथर्ववेद** गरेर चार प्रकारमा विभक्त, अनेक शाखा भएको, गुरुशिष्यपरम्पराबाट आएको तथा मन्त्रसंहिताका र ब्राह्मणग्रन्थका रूपमा रहेको शब्दराशिलाइ **वेद** भञ्छन्।

यजुर्वेद

यजुर्वेद यज्ञप्रधान वेद हो। एसका कृष्णयजुर्वेद र शुक्लयजुर्वेद गरि दुइ भेद छन्। मन्त्र र ब्राह्मणभाग छ्यासमिस भएको यजुर्वेदलाइ **कृष्णयजुर्वेद** भञ्छन्। एसका तैत्तिरीयशाखा, मैत्रायणीयशाखा, कठशाखा र अपूर्ण कपिष्ठलकठशाखा ग्रन्थ रूपमा पाइँञ्छन्। मन्त्र र ब्राह्मण मुख्य रूपमा छुट्टाछुट्टै भएको यजुर्वेदलाइ **शुक्लयजुर्वेद** भञ्छन्। एसका काण्वशाखा र माध्यन्दिनीयशाखा गरि दुइ प्रमुख शाखा ऐले अध्ययन-अध्यापनमा पाइँञ्छन्। वाजसनेयले (याज्ञवल्क्यले) प्रवचन गरेको वेद पड्ने उनका शिष्यलाइ वाजसनेयि भञ्छन्। वाजसनेयिहरुले पड्ने शाखा हुनाले शुक्लयजुर्वेदका सबै पन्द्रओटै शाखालाइ वाजसनेयिशाखा पनि भञ्छन्।

नेपालका ब्राह्मणहरु प्रायः शुक्लयजुर्वेदको माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शाखाका अध्येता छन्। तेसैले नेपालमा परम्परागत रूपमा एसै वेदशाखाको मात्र पठनपाठन चलेको देखिञ्छ। ४० अध्याय र १९७५ कण्डिका भएको एस शाखाका मन्त्रसंहितामा दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध, सोमयाग इत्यादि वैदिक यज्ञहरुमा (कर्महरुमा) प्रयोग हुने मन्त्रहरु र ईशावास्योपनिषद् छन्।

अधिकांश नेपालिहरुको कर्मकाण्ड एसै शाखाका मन्त्रसंहिता, ब्राह्मणग्रन्थ, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र र परिशिष्ट इत्यादि ग्रन्थबाट निर्दिष्ट हुञ्छ।

ब्राह्मणग्रन्थ

ब्रह्म अर्थात् यज्ञको वा मन्त्रको व्याख्या गर्ने वेदको भागलाइ **ब्राह्मण** वा **ब्राह्मणग्रन्थ** भञ्छन्। एसमा यज्ञको स्वरूप, फल, द्रव्य (हवन गरिने वस्तु), देवता इत्यादि विषय बताइएको हुञ्छ। गर्नपर्ने कामको प्रशंसा र गर्न नहुने कामको निन्दा गरेर माञ्छेलाइ विहित कर्ममा प्रवृत्त र निषिद्ध कर्मबाट निवृत्त गराउनु पनि ब्राह्मणग्रन्थको प्रमुख उद्देश्य हो। एस्ता प्रशंसा र निन्दा गर्ने वाक्यलाइ अर्थवाद भञ्छन्। ऐले **शुक्लयजुर्वेदका माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शतपथब्राह्मण** र **काण्व-वाजसनेयि-शतपथ-ब्राह्मण** प्राप्त छन्।

जीवात्मा र परमात्माको एकता बुजाउने **आरण्यक**लाइ वा आरण्यककै कुनै भागलाइ **उपनिषद्** भन्दछन्। वेदको अन्तिम भाग वा सारभूत भित्रि भाग हुनाले उपनिषद्लाइ **वेदान्त** पनि भन्दछन्। उपनिषद्मध्ये केइ मन्त्रसंहिताभित्र र केइ ब्राह्मणभागभित्र पर्दछन्। ईश, केन, कठ, मुण्डक, प्रश्न, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य र बृहदारण्यक नामका १० उपनिषद्हरु प्रसिद्ध छन्।

वेदाङ्ग

वेदको स्वरूप, प्रयोग, अर्थ र रहस्य बुज्न सहायता पुऱ्याउने ६ ओटा शास्त्र वेदाङ्ग (वेदका अङ्ग) भनिञ्छन्। इनलाइ षट्शास्त्र पनि भञ्छन्। इ छ स्मृतिहरु **महास्मृति** भनिञ्छन् र अरु मनुस्मृति-याज्ञवल्क्यस्मृति-पराशरस्मृति इत्यादि अनुस्मृतिहरुभन्दा प्रबल (बलिया प्रमााण) मानिञ्छन्। इ महास्मृतिहरुको नित्य स्वाध्यायाध्ययनमा पनि अध्ययन हुञ्छ।

१. शिक्षा— वेदको शुद्ध उच्चारण गर्न सिकाउने शास्त्र शिक्षा वा शिक्षाशास्त्र भनिञ्छ। ऋग्वेदप्रातिशाख्य, तैत्तिरीयप्रातिशाख्य, शुक्लयजुर्वेदप्रातिशाख्य, शैशिरीयशिक्षा, शौनकशिक्षा, याज्ञवल्क्यशिक्षा, पाणिनीयशिक्षा, नारदीयशिक्षा, माण्डूकीयशिक्षा, कौण्डिन्न्यायनशिक्क्षा इत्यादि धेरै शिक्षाग्रन्थ छन्। प्रातिशाख्यहरु पाणिनीयव्याकरणभन्दा पनि प्राचीन हुन्। वेदको र संस्कृत भाषाको पनि शुद्ध उच्चारणको ज्ञान र निर्णय एसै शास्त्रबाट हुञ्छ। संस्कृतशिक्षाशास्त्रको अध्ययन गरेपछि तेसैका आधारमा पश्चिमाहरुले आधुनिक ध्वनिविज्ञानको विकास गरेका हुन्।

२. कल्प— वैदिक यज्ञ, संस्कार, श्राद्ध इत्यादिको प्रयोग देखाउने शास्त्र कल्प अथवा कल्पशास्त्र भनिन्छ। एसभित्र श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र र पितृमेधसूत्रहरु पर्दछन्। शुक्लयजुर्वेदसित सम्बद्ध कात्यायनश्रौतसूत्र-पारस्करगृह्यसूत्रअनुसार नै प्रायः सबै नेपालिहरुका कर्मकाण्डपद्धति चल्छन्। सबै वेदका आ-आँफ्ना कल्पशास्त्र छुट्टाछुट्टै छन्।

परिशिष्टहरु— श्रौतकल्पसूत्रले वा गृह्यकल्पसूत्रले वा दुवैले आकाङ्क्षा गरेका विषयका प्रतिपादक ग्रन्थहरु परिशिष्ट भनिन्छन्। श्रौतकर्ममा आवश्यक वेदिका नापोसँग सम्बद्ध विषयका प्रतिपादक तथा ज्यामितिविद्याका भूमण्डलका सबैभन्दा जेठा ग्रन्थ **शुल्बसूत्र**हरु श्रौतसूत्रहरुका परिशिष्टहरु हुन्। परिशिष्टग्रन्थहरुमा **माध्यन्दिनीयशाखाका अष्टादश परिशिष्टहरु र अरु पनि केइ परिशिष्ट ग्रन्थहरु छन्।** आँफ्ना अभीष्ट कुराहरुको प्राप्तिका लागि वेदका विभिन्न मन्त्रहरुले गरिने विशिष्ट अनुष्ठानहरुको प्रतिपादन गरिएका ऋग्विधान, यजुर्विधान, सामविधान, अथर्वविधान इत्यादि अनुष्ठानकल्पहरु पनि परिशिष्ट हुन्।

३. व्याकरण— पदमा प्रकृतिप्रत्ययको कल्पना गरेर पदको स्वरूपको र अर्थको निरूपण, वाक्य-वाक्यार्थको निरूपण इत्यादि कुराको व्याख्या गर्ने शास्त्र व्याकरण भनिन्छ। पाणिनिको व्याकरण (अष्टाध्यायी) संसारभोरिकै सबैभन्दा वैज्ञानिक व्याकरण हो भन्ने कुरा सबैले स्वीकार गरेका छन्। कात्यायनको वार्त्तिकद्वारा र पतञ्जलिको भाष्यद्वारा एसको विस्तृत समालोचनात्मक व्याख्या र पूरण गरिएको छ। पाणिनि शाक्यसिंह बुद्धभन्दा धेरै अगिका हुन्।

व्याकरण भनेको त्यो भाषा बोल्ने लोकले गर्ने उच्चारणको भाषाको वर्णन हो। तेसैले पश्चिमाहरुले मानेको विध्यात्मक वा प्रस्तावित व्याकरणको कुरा अवैज्ञानिक हो। व्याकरण जैले पनि वर्णनात्मक नै हुन्छ भन्ने मान्यतालाइ अँगालेर संस्कृतव्याकरणहरु बनेका छन्।

४. निरुक्त— व्याकरणले व्युत्पत्ति नदेखाएका पदहरुको र देवतालाइ बुजाउने पदहरुको विशेष निर्वचन गर्ने शास्त्र निरुक्त भनिन्छ। निरुक्त निर्वचनविज्ञान, भाषाविज्ञान र शब्दार्थविज्ञानको सबैभन्दा प्राचीन ग्रन्थ हो। पाइएसम्मका शब्दकोषहरुमा संसारकै सर्वप्राचीन शब्दकोष निघण्टुको व्याख्या निरुक्तले गरेको छ। लगभग ६०० ऋचाहरुको एकएक गरि व्याख्या पनि निरुक्तले गरेको छ। एस ग्रन्थका रचयिता यास्क मुनि हुन्। यो ग्रन्थ पाणिनीयव्याकरणभन्दा पनि पुरानो हो।

५. छन्द— गलाको स्वरको परिमाणविशेषलाइ छन्द भन्छन्। गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप् इत्यादि छन्द वैदिक ऋचामा प्रयुक्त देखिन्छन्। इनै छन्दबाटै अनुष्टुप् (श्लोकवृत्त), इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ इत्यादि लौकिक वृत्तको विकास भएको हो। इनै छन्दको र वृत्तहरुको प्रतिपादन गर्ने शास्त्र छन्द वा छन्दश्शास्त्र भनिन्छ। पिङ्गल मुनिबाट रचिएको छन्दस्सूत्र एस विषयको मूल ग्रन्थ हो।

६. ज्योतिष— सूर्यको र चन्द्रको गतिको तथा नक्षत्र, तिथि, पक्ष, मास (महिना), ऋतु, अयन, संवत्सर (वर्ष), युग इत्यादि कालविशेषको निरूपण गर्ने शास्त्र ज्योतिष भनिन्छ। लगधमुनिद्वारा रचना गरिएको अत्यन्त प्राचीन वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ पाँइन्छ। यो नै वैदिकहरुको मूल ज्योतिष ग्रन्थ हो। एसको सोमाकरद्वारा रचिएको प्राचीन प्रामाणिक व्याख्या पाँइन्छ। एसको विस्तृत, श्रुति-स्मृति-पुराण-प्रमाणयुक्त र स्पष्ट कौण्डिन्न्यायनव्याख्या पनि प्रकाशित भएको छ। वेदाङ्गज्योतिषले बताएका कालगणनासिद्धान्तका आधारमा यो वैदिकतिथिपत्र (वैदिक पात्रो) बनाइएको हो।

वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थभन्दा धेरै पछिका आर्यभटीय, ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, खण्डखाद्यक, भास्वती, नवीन सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्त-शिरोमणि इत्यादि ग्रन्थहरुका सिद्धान्तमा र वेदाङ्ग-ज्योतिषका सिद्धान्तमा तिथिका, मासका, अधिमासका, ऋतुका, अयनका र नववर्षारम्भका विषयमा ठुलो अन्तर देखिन्छ। **वैदिकहरुले यज्ञ-विवाह-व्रतबन्धादि वैदिक धर्मकर्मका लागि मूल वेदाङ्गज्योतिषअनुसारकै पात्रो प्रयोग गर्न पर्छ।** ग्रह-ग्रहण-राशि-जन्मपत्री-ग्रहदशाहरुका र मेषमासादि सौरमासहरुका विषयमा उक्त वेदाङ्गज्योतिष-ग्रन्थसित विरोध नपर्ने गरि गरिने निरू-पणमा मात्र आर्यभटीय, पञ्चसिद्धान्तिका, बृहत्संहिता, बृहज्जातक, ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त, खण्ड-खाद्यक, भास्वती, नवीनसूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि, ग्रहलाघव, मुहूर्तमार्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि इत्यादि लौकिक प्रसिद्ध ज्योतिषग्रन्थहरु मान्य हुन सक्छन्।

वेदका उपाङ्गहरुमा **(१) प्रतिपद (२) अनुपद (३) छन्दोभाषा (४) धर्मशास्त्र (५) मीमांसा-न्याय** र **(६) तर्क** पर्छन्। **धर्मशास्त्र** अन्तर्गत धर्मसूत्र, स्मृतिहरु (मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति इत्यादि), पुराणहरु, इतिहास (महाभारत, रामायण) पर्छन्।

(४८) आशौचविचार (जुठो-सूतकको विचार)

कतिपय नेपालि पञ्चाङ्गहरुमा (पात्राहरुमा) जुठो-सुतकको व्यवस्था पनि दिने गरिएको देखिञ्छ। तर त्यो कुन शास्त्रका आधारमा दिइयेको हो खुलाइयेको पाँइदैन। **माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायि र तदनुयायीहरुले जुठो-सुतकका विषयमा मुख्य रूपमा पारस्करगृह्यसूत्रको व्यवस्थाको अनुसरण गर्न पर्छ। तेसपछि याज्ञवल्क्यस्मृतिका विशेष कुरा अँगाल्न पर्छ। अरु स्मृति-पुराणका कुरा पारस्करगृह्यसूत्रका र याज्ञवल्क्यस्मृतिका अनुकूल भएमा मात्र ग्राह्य हुञ्छन्।** एस विषयमा वाराणसीको सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालयको अनुसन्धानपत्रिका सारस्वती सुषमामा (५२ वर्ष, ३–४ अङ्क, २०५४, मार्गशीर्ष-फाल्गुन) प्रकाशित हाम्रा **"पारस्करगृह्यसूत्रोक्ताशौच-निरूपणम्"** भन्ने निबन्धमा, काठमाण्डुको उन्नयन भन्ने त्रैमासिक पत्रिकाका ४१ पूर्णाङ्कमा (२०५८, कात्तिक-मुङ्सिर-पुस) प्रकाशित **"हिन्दुधर्ममा आशौच : एक विवेचनात्मक शास्त्रीय विवरण"** भन्ने हाम्रा निबन्धमा, **'वैदिक धर्म मूल रूपमा'** भन्ने हाम्रा ग्रन्थका द्वितीय संस्करणमा (२०६२) [पृ. ४९४–४९८, पृ. ५९०–६०४], **'वैदिक हिन्दु धर्मसंस्कृति'** भन्ने हाम्रा ग्रन्थमा (२०६५) [पृ. १९०–१९१, पृ. २२९–२३४] र **'गौतमधर्मसूत्र'** (नेपालिव्याख्यायुक्त, २०६९) भन्ने हाम्रा ग्रन्थमा [पृ. १८२–१८५, पृ. १९२–२०१] पनि विशेष विचार उपलब्ध छ। नित्यकर्म-संस्कारकर्म आदिका विषयमा जस्तै आशौचका विषयमा पनि शुक्लयजुर्वेदाध्यायिहरुका निम्ति स्वशाखागृह्यसूत्र पारस्करगृह्यसूत्रमा व्यवस्था भएसम्म पारस्करगृह्यसूत्रको व्यवस्था मान्य हुने र तेसपछि याज्ञवल्क्यस्मृतिको व्यवस्था मान्य हुने हुँदा तेस आधारमा याँहाँ केइ विवरण प्रस्तुत गरिञ्छ।

आशौच — शुचि भनेको शुद्ध भनेको हो। **अशुचि** भनेको **अशुद्ध** भनेको हो। अशुचिको भावलाइ **आशौच** भञ्छन्। आशौचको सामान्य अर्थ देवकार्य, पितृकार्य र ब्रह्मकार्य गर्नमा अयोग्यता हो। एस्तो अयोग्यता अरु कारणले पनि आउन सक्छ तापनि आशौच शब्द कसैका जन्मले वा मृत्युले गर्दा आउने अयोग्यतामा रूढ पनि भएको छ।

जननाशौच — **जननाशौचकाल (सुत्केरो रहने अवधि)– जननाशौच आमा-बाबुलाइ मात्र लाग्ने कुरा शास्त्रका विभिन्न ग्रन्थहरुमा उल्लिखित छ।** गौतमधर्मसूत्रमा जननाशौच सबै सपिण्डलाइ लाग्ने अथवा आमाबाबुलाइ मात्र लाग्ने अथवा आमालाइ मात्र लाग्ने कुरा बताइएको छ[1]। गौतम-धर्मसूत्रका व्याख्याकार हरदत्तले एस कुराका समर्थक व्याघ्रपाद[2], अङ्गिरा[3], शङ्खलिखित[4], पैठिनसि[5] इत्यादि मुनिहरुका वचन पनि मिताक्षरा वृत्तिमा देखाएका छन्।

याज्ञवल्क्यस्मृतिमा पारस्करगृह्यसूत्रको अनुकूल रूपमा यो विषय प्रतिपादित छ[6]। वासिष्ठ-धर्मसूत्रमा[7], मनुस्मृतिमा[8], पराशरस्मृतिमा[9] पनि जननाशौच आमा-बाबुलाइ मात्र अथवा आमालाइ मात्र लाग्ने पक्ष पनि देखाइएको छ। बौधायनधर्मसूत्रमा त ऊहापोह गरिकन दश दिन जननाशौच आमा-बाउलाइ मात्र लाग्ने भन्ने निष्कर्ष दिइएको छ[10]। मनुस्मृतिमा पनि विशेष शुद्धि चाहाने सपिण्ड-हरुले मात्र दश दिनसम्म जननाशौच बार्न पर्ने कुरा उल्लिखित देखिञ्छ[11]। एस्तै कुरा वासिष्ठधर्मसूत्रमा

---

१. **मातापित्रोस् तन् मातुर् वा।**—गौ.ध.सू. २।५।१४।

२. **सूतकं तु सपिण्डानां पित्रोर् वा मातुरेव वा।**—व्याघ्रवचन, मिताक्षरा वृत्ति (गौ.ध.सू.२।५।१४)।

३. **नाऽऽशौचं सूतके प्रोक्तं सपिण्डानां कथंचन।**
मातापित्रोरशौचं स्यात् सूतकं मातुरेव च॥—अङ्गिरोवचन, मिताक्षरा वृत्ति (गौ.ध.सू.२।५।१४)।

४. **जननेऽप्येवम्, तत्र मातापितरावशुची इति, मातेत्येके।**—शङ्खलिखितवचन, मिताक्षरा वृत्ति (२।५।१४)।

५. **जनने सपिण्डाः शुचयो मातापित्रोस् तु सूतकम्।**
सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य पिता शुचिः॥—पैठीनसिवचन, मिताक्षरा वृत्ति (गौ.ध.सू.२।५।१४)।

६. **त्रिरात्रं दशरात्रं वा शावमाशौचमिष्यते। ऊनद्विवर्ष उभयोः सूतकं मातुरेव हि॥**—याज्ञवल्क्यस्मृति ३।१८।

७. **मातापित्रोर् वा, तन्निमित्तत्वान् मातुरित्येके।**—वासिष्ठधर्मसूत्र ४।२१,२२।

८. **सर्वेषां शावमाशौचं मातापित्रोस् तु सूतकम्।**
सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य पिता शुचिः॥—मनुस्मृति५।६२।(द्र.– गरुडपुराण २।३९।९)।

९. **सर्वेषां शावमाशौचं मातापित्रोस् तु सूतकम्। सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य पिता शुचिः॥**
यदि पत्न्यां प्रसूतायां सम्पर्कं कुरुते द्विजः। सूतकं तु भवेत् तस्य यदि विप्रः षडङ्गवित्॥
सम्पर्काज् जायते दोषो नाऽन्यो दोषोऽस्ति वै द्विजे। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सम्पर्कं वर्जयेद् बुधः॥
—पराशरस्मृति ३।२६–२८।

१०.✺ **जनने तावन् मातापित्रोर् दशाहमाशौचम्, मातुरित्येके तत्परिहरणात्, पितुरित्यपरे शुक्रप्राधान्यात्, अयोनिजा ह्यपि पुत्राः श्रूयन्ते, मातापित्रोरेव तु संसर्गसामान्यात्।**—बौधायनध.सू. १।११।१७–२१।
✺ **सपिण्डत्वमविभक्तदायेष्वेव, विभक्तदायेषु सकुल्यत्वमेव।**—बौधायनधर्मसूत्र १।११।७–८।

११. **यथेदं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते। जननेऽप्येवमेव स्यान् निपुणं शुद्धिमिच्छताम्॥**—मनुस्मृति ५।६१।

पनि पाइन्छ[१]। देवीभागवतमा पनि जननाशौच पितामातालाइ मात्र लाग्ने कुरा उल्लिखित छ[२]।

'सुत्केरो परेका घरबाहेक अरु घरका सपिण्डलाइ सुत्केरो नलाग्ने' भन्ने पक्ष माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिहरुको मूलग्रन्थ पारस्करगृह्यसूत्रको सम्मत र धेरै स्मृतिमा बताइएकाले प्रबल छ। सुत्केरालाइ जुठालाइ जस्तो कडा आशौच नमानेर लोकमा काम गर्ने परम्परा पनि रहिआएको पाइन्छ। जननाशौचमा कूष्माण्डीहोम गरेर विवाहादि गर्ने चलन मुहूर्तमार्तण्डग्रन्थमा उल्लिखित छ (विवाहप्रकरण, ५३ श्लो.)।

बितिसकेपछि सुनेको जननाशौच (सुत्केरो) कसैका मतमा पनि सपिण्डलाइ लाग्दैलाग्दैन भन्ने र तेस्तामा पिताले चाहिँ स्नान सम्म गर्न पर्छ भन्ने कुरा पनि शास्त्रमा उल्लिखित छ[३]।

मरणाशौच — दुइ वर्ष नपुगेका बालबालिकाको मृत्युको आशौच— पारस्करगृह्यसूत्रअनुसार दुइ वर्ष नपुगेका बाल-बालिकाको मृत्यु हुँदा **आमा-बाबुलाइ मात्र आशौच लाग्छ**[४], **सपिण्डहरु शुद्धै हुन्छन्**[५]। दुइ वर्ष नपुगेका बालबालिकाको **चूडाकरण नहुँदै मृत्यु भएमा आमाबाबुलाइ १ अहोरात्र (दिन-रात) र चूडाकरण भएपछि मृत्यु भएमा ३ अहोरात्र आशौच लाग्छ**[६]। सुत्केराभित्र जातकको मृत्यु भएमा आमाबाबुलाइ **सुत्केरो चोखिने दिनसम्म** सुत्केराकोजस्तै आशौच रहन्छ[७]।

---

१. **जननेऽप्येवमेव स्यान् निपुणं शुद्धिमिच्छताम्।**—वासिष्ठधर्मसूत्र ४।२०।

२. **पुत्रे जाते दशाहेन कर्मयोग्यो भवेत् पिता।**
मासेन शुध्येज् जननी दम्पती तत्र कारणम्॥—देवीभागवत ७।१५।९।

३. ✵ **निर्दशं ज्ञातिमरणं श्रुत्वा पुत्रस्य जन्म च। सवासा जलमाप्लुत्य शुद्धो भवति मानवः॥**—मनु.५।७७।
✵ **नाऽशुद्धिः प्रसवाशौचे व्यतीतेषु दिनेष्वपि।**—देवलवचन, पाराशरमाधवीय-१, ६०० पृ.।

४. **अद्विवर्षे प्रेते मातापित्रोराशौचम्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।२।

५. **शौचमेवेतरेषाम्।**— पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।३।

६. **एकरात्रं त्रिरात्रं वा।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।४। (मनुस्मृतिमा पनि चूडाकर्म नभएका बालबालिकाको एक अहोरात्र र चूडाकरण भएका उपनयन नभएका बाल-बालिकाको तिन अहोरात्र आशौच लाग्ने कुरा छ— **नृणामकृतचूडानां विशुद्धिर् नैशिकी स्मृता। निर्वृत्तचूडकानां तु त्रिरात्राच् छुद्धिरिष्यते॥**— मनु.५।६७।)

७. **अन्तःसूतके चेदोत्थानादाशौचं सूतकवत्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।६।

दुइ वर्ष पुगेका तर उपनयन नभएका बालबालिकाको मृत्युमा आशौच—याज्ञवल्क्यस्मृतिमा बालमरणमा सपिण्डलाइ एक अहोरात्र आशौच लाग्ने कुरा प्रतिपादित भएकाले[८] दुइ वर्ष पुगेका चूडाकरण भएका वा नभएका जेसुकै भएपनि उपनयन भने नभएका बाल-बालिकाको मृत्यु भएमा माध्यन्दिनीय-वाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेद-शाखाध्यायि सपिण्डहरुलाइ (सातपुस्ताभित्रका दाजुभाइलाइ) एक अहोरात्र वा **सज्योति (दिनभर वा रातभर) मात्र जुठो लाग्छ।** आमा-बाबुलाइ भने मोर्ने बाल-बालिकाको **चूडाकरण नभएको भए एक अहोरात्र** र **चूडाकरण भएको भए तिन अहोरात्र** आशौच लाग्ने कुरा पारस्करका वचनबाट बुजिन्छ[९] (द्र.– मनुस्मृति ५।६७)।

उपनीत सपिण्ड ब्राह्मणको आशौच— उपनयन (व्रतबन्ध) भएका[१०] निरग्नि (गृह्य अग्नि नलिएका) सपिण्ड ब्राह्मण मरेमा सपिण्ड ब्राह्मणलाइ **३ अहोरात्र** (३दिन) आशौचलाग्ने कुरा पारस्कर-गृह्यसूत्रमा मुख्यपक्षका रूपमा विहित छ[११]। (द्र. याज्ञ.स्मृति विज्ञानेश्वरपाठ ३।१८, पराशरस्मृ.३।१)।

नित्यस्वाध्यायाध्ययन (सँधैं वेदपाठ) गर्ने ब्राह्मणहरुलाइ सपिण्ड-ब्राह्मणको मरणाशौच ३ अहोरात्र लाग्ने कुरा औत्सर्गिक (सामान्यतः प्रवृत्त हुने) देखिन्छ। यो कुरा एस वचनबाट स्पष्ट हुन्छ—

एकाहाच् छुध्यते विप्रो योऽग्निवेदसमन्वितः।
त्र्यहात् केवलवेदस् तु द्विहीनो दशभिर् दिनैः॥–पराशरस्मृ.३।५,दक्षस्मृ. ६।६, दाल्भ्यस्मृ.१२०।

पारस्करले सपिण्डलाइ **दस अहोरात्र (१० दिन) आशौच लाग्ने** पक्ष पनि दोस्रो पक्षका रूपमा देखाएका छन्[१२]। यो पक्ष **अग्नि पनि नभएका वेद पनि नभएका ब्राह्मणका लागि** भएको कुरा पराशरस्मृतिका वचनबाट र अरु लघुस्मृति–पुराणका वचनहरुबाट बुझिन्छ[१३]।

---

८. **अहस् त्व(तु?)दत्तकन्यासु बालेषु च विशोधनम्।**—याज्ञवल्क्यस्मृति, विश्वरूप ३।२२, विज्ञानेश्वर ३।२४।

९. **एकरात्रं त्रिरात्रं वा।**— पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।४।

१०. **यद्युपेतो भूमिजोषणादि समानमाहिताग्नेरोदकान्तस्य गमनात्।** —पारस्करगृ.सू. ३।१०।१०।

११. **त्रिरात्रं शावमाशौचम्, दशरात्रमित्येके।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।२९,३०।

१२. **त्रिरात्रं शावमाशौचम्, दशरात्रमित्येके।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।२९,३०।

१३. **दशाहं निर्गुणे प्रोक्तमाशौचं वाऽतिनिर्गुणे।**
एक-द्वि-त्रिगुणैर् युक्तश् चतुस्-त्र्ये-कदिनैः शुचिः॥—कूर्मपुराण २।२३।७।

साधारण ब्राह्मणहरुमा (अग्नि वा वेद केही पनि नभएका ब्राह्मणहरुमा) पनि **चौथो पुस्तासम्मका** व्यक्तिलाइ **दस अहोरात्र** (१० दिन), **पाँचौं पुस्ताका** व्यक्तिलाइ **छ अहोरात्र**, **छैटो पुस्ताका** व्यक्तिलाइ **चार अहोरात्र** र **सातौं पुस्ताका** व्यक्तिलाइ **तिन अहोरात्र** मात्र सपिण्डको मरणको आशौच लाग्ने व्यवस्था पराशरस्मृतिमा छ–

चतुर्थे दशरात्रं स्यात् षण् निशाः पुंसि पञ्चमे।

षष्ठे चतुरहाच् छुद्धिः सप्तमे तु दिनत्रयात्॥–पराशरस्मृति ३।१०[१]।

सोदक, सकुल्य, सगोत्र, असगोत्र ज्ञाति-बन्धुहरुको आशौच (जुठो)– आठौं पुस्तादेखि चौधौं पुस्तासम्मका **सोदक** भनिने भाइबन्धुको र पन्ध्रौं पुस्तादेखि एक्काइस पुस्तासम्मका **सकुल्य** भनिने र बाइसौं पुस्तादेखिका **सगोत्र** भनिने भाइबन्धुहरुको समेत पारस्करका मतमा एउटै गाममा बस्ने भाइ-बन्धुहरुलाइ मूल पुरुष सम्झिँदैछ भने **सज्योति** (दिनभर अथवा रातभर) आशौचलाग्छ भन्ने देखिञ्छ।

आफुलाइ गायत्रीमन्त्र सुनाउने र विधिपूर्वक वेद–वेदाङ्ग पढाउने **गुरुको**, **मातामहको (आमाका बाबुको)**, **मातामहीको (आमाकि आमाको)** र उपनयन भएका तर विवाह नभएका **कन्याहरुको** पनि **अरु सपिण्डहरुको जस्तै उदककर्म गर्न र आशौच बार्न** पर्छ[२]।

प्रवासमा मृत सपिण्डादिको आशौच– प्रवासमा मृत सपिण्ड, आचार्य, मातामह, मातामही, उपनयन भएका अविवाहिता सपिण्डस्त्रीहरुको आशौच **सुनेदेखि जति दिन अवशिष्ट (बाँकि) हुञ्छन् तेति दिन बार्न पर्ने** कुरा पनि पारस्करगृह्यसूत्रमा छ[३]।

अतिक्रान्त (कटिसकेको) आशौच– पारस्करगृह्यसूत्रका अनुयायीहरुमध्ये सपिण्डाशौच तीन दिन बार्न पर्नेहरुले जतिसुकै कालपछि सुनेपनि एक अहोरात्र र दस दिन वा सोभन्दा बढी बार्न पर्नेहरुले जतिसुकै कालपछि सुनेपनि **तिन अहोरात्र (३ दिन) अतिक्रान्त (कटिसकेको) आशौच बार्न पर्ने** देखिञ्छ[४]। अथवा **वर्षदिन नाघेपछि चाहिँ स्नान गरेर पानि दिएपछि शुद्ध हुञ्छ** भन्ने कुरा स्मृति-पुराणहरुमा देखिएकाले पारस्करको व्यवस्था आफ्नाआफ्ना मुख्य आशौचकाल बितेपछि वर्षदिन भने नपुग्दैका कालका लागि हो भन्ने मान्न सकिने देखिञ्छ। याज्ञवल्क्यस्मृतिमा **सपिण्डको अतिक्रान्त आशौच जैलेसुकै सुने पनि स्नान र उदकदान गरेपछि जाने** कुरा पाइञ्छ[५]। दशाहादि पूर्ण आशौच लाग्नेहरुको बाहेक अरु थोरै काल मात्र आशौच लाग्नेहरुको जति काल आशौच लाग्ने हो तेति **काल नाघेपछि सुनिएको आशौच बार्न नपर्ने** व्यवस्था छ[६]।

खापिएको आशौच–पारस्करगृह्यसूत्रको विशेष मननबाट **पछिल्लो जुठो अगिल्लो जुठाले नजाने देखिञ्छ**[७]। बाबु-आमा-पतिको जुठो र क्रिया गर्नेलाइ त जोसुकैको जुठो पनि अगिल्ला जुठाले नजाने कुरा त सर्वसम्मत नै छ।

असगोत्रको आशौच– ऋत्विक्, सासु–ससुरा, मित, सम्बन्धि (बन्धुत्रयमा लिइएका पिताका, माताका र आफ्ना फुपुका छोरा, सानिमा-ठुलिमाका छोरा र मामाका छोरा एति व्यक्ति), मामा, भानिज, विवाह गरेर दिइसकेका चेलिबेटि एतिको मृत्युमा उदकदान र आशौच बार्ने काम **इच्छा लागे गरे पनि हुञ्छ र इच्छा नलागे नगरे पनि हुञ्छ भन्ने व्यवस्था पारस्करगृह्यसूत्रमा**[८] **र याज्ञवल्क्य-स्मृतिमा छ**[९]। एस्तामा समानग्रामवास भएमा वा स्नेह–उपकारत्व इत्यादि भएमा स्वेच्छाले अपस्नान (खल्को) तथा उदकदान (अञ्जलिदान) गर्ने र आशौच बार्ने काम गर्ने, नभएमा नगर्ने गर्न सकिने देखिञ्छ। एस्तामा **छोरिले बाबु-आमाको बाबु-आमा गुरु हुनाले आशौच बार्ने नै पक्ष लिन पर्ने देखिञ्छ** तापनि दिदि-बैनि-फुपुहरुले भने पितृपक्षका दाजु-भाइ-भदाऽहरुको आशौच बार्ने-नबार्ने जुनसुकै पक्ष पनि स्वेच्छाले नै लिन हुने देखिञ्छ। समानग्रामवासादिको विचार गरि उक्त व्यक्तिहरुको **उदकदान र**

---

१. द्र.– दाल्भ्यस्मृति ११९ श्लो., मूल गरुडपुराण १।१०७।१३–१४।

२. **आचार्ये चैवम्, मातामहयोश् च, स्त्रीणां चाऽप्रत्तानाम्।**-पारस्करगृ.सू.३।१०।३९,४०,४१ (द्र.याज्ञ.विश्व.३।४)।

३. **प्रोषितश् चेत् प्रेयाच् छ्रवणप्रभृति कालशेषमासीरन्।**–पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।४४।

४. **अतीतश् चेदेकरात्रं त्रिरात्रं वा।**–पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।४४,४५।

५. **प्रोषिते कालशेषः स्यात् पूर्णे दत्त्वोदकं शुचिः।**–याज्ञवल्क्यस्मृति ३।२१।

६. **मृताशौचेऽपि अनुपनीतमरणादिनिमित्तेषु त्रिरात्रैकरात्रेषु मातुलादिपरगोत्रीयमरणनिमित्तकेषु पक्षिणी-त्रिरात्रादिषु च अतिक्रान्ताशौचं नाऽस्ति।**–धर्मसिन्धु, ३२७ पृ.।

७. **पारस्करमते स्वकालेनाऽनतीतं द्वितीयाशौचं प्रथमाशौचेन नैव गच्छतीति सिद्धान्तस्याऽपि स्वीकर्तुं शक्यत्वस्य सम्भावितत्वात्।**–पारस्करगृह्यसूत्रोक्ताशौचनिरूपणम् (शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, सारस्वती सुषमा, ५२ वर्ष, ३–४ अङ्क, २०५४ वै., सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी)।

८. **अथ कामोदकान्यृत्विक्-श्वशुर-सखि-सम्बन्धि-मातुल-भागिनेयानाम्, प्रत्तानां च।**–पा.गृ.३।१०।४६,४७।

९. **कामोदकं सखि-प्रत्ता-स्वस्रीय-श्वशुरर्त्विजाम्।**–याज्ञवल्क्यस्मृति ३।४।

आशौच बार्ने काम गर्ने पक्षमा याज्ञवल्क्यस्मृतिका वचनबाट एक अहोरात्र आशौच बार्न पर्छ[१]।

असवर्ण (फरक वर्णका) सपिण्डको आशौच— पारस्करगृह्यसूत्रमा असवर्ण सपिण्डको आशौचको छुट्टै स्पष्ट व्यवस्था देखिँदैन। किन्तु अन्यत्र एस विषयमा व्यवस्था पाइन्छन्। तेसअनुसार **द्विज ब्राह्मणलाइ अद्विज सपिण्डको १ दिन आशौच (जुठो) लाग्छ र अद्विजलाइ द्विज ब्राह्मण सपिण्डको १० दिन आशौच (जुठो) लाग्छ**[२]। **असवर्णमा सपिण्डता चार पुस्तासम्म अथवा तिन पुस्तासम्म मात्र रहन्छ** भन्ने कुरा बताइएको छ[३]। अवैध सङ्ग्रहबाट जन्मेर बन्धुजस्ता हुन आएका **असवर्णहरुको त जन्म-मरणनिमित्तक कुनै जुठो-सूतक नलाग्ने** कुरा पारस्करगृह्यसूत्रबाट बुजिन आउँछ।

क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रहरुको आशौच— क्षत्रियलाइ र वैश्यलाइ सपिण्डको मरणाशौच **एक पक्ष (१५ दिन)** र शूद्रलाइ सपिण्डको मरणाशौच **दुइ पक्ष (३० दिन)** लाग्ने कुरा पारस्करगृह्यसूत्रमा सूचित छ[४]।

पारस्करले बताएको आशौचव्यवस्था सदाचारि बन्धुहरुका निमित्त मात्र हो भन्ने कुरा अर्थात् बुजिन्छ। यो कुरा **'सदाचारि बन्धुहरुको मात्र उदककर्म गर्न आवश्यक हुन्छ** र तिनका उपर्युक्त प्रकारका आशौचहरु पनि लाग्छन्; आचारभ्रष्ट, असत्, नास्तिक, पतित, विकर्मि इत्यादि प्रकारका बन्धुको उदककर्म गर्न पनि पर्दैन, आशौच बार्न पनि पर्दैन, नजिकमा भए शवदाह गरेर भस्म पारि स्नान गरेपछि आशौच सिद्दिन्छ, **(नजिकमा नभए केइ पनि गर्न पर्दैन)**'[५] भन्ने समेतका कुरा आङ्गिरस-मनुस्मृत्यादिका वचनले स्पष्ट गरेका छन्।

माता-पिता-पतिको आशौच—पारस्करगृह्यसूत्रको दोस्रो काण्डको एघारौं कण्डिकाको अनध्यायप्रकरणबाट (वेदको अध्ययन गर्न नहुने अवस्थाहरु बताउने प्रकरणबाट) गुरुको आशौच दस दिन लाग्ने कुरा देखिएको छ[६]। त्याँहाँको गुरुशब्दको अर्थ आचार्य भन्ने मात्र नलिएर महागुरु माता-पिता-पतिसमेतका गुरु भन्ने लिनु उचित देखिन्छ। त्याँहाँ अनध्यायका प्रकरणमा पनि उदककर्मको उपदेशसमेत गरिएकाले[७] पनि पारस्करका सम्प्रदायमा समेत **महागुरुको मरणाशौच अग्नि र वेद भएका र नभएका सबै ब्राह्मणलाइ दस दिन नै लाग्ने** कुरा बुजिन्छ[८]। **पडाउँदै गरेका गुरुको आशौच दस दिन नै लाग्ने भएपनि पडाउन छोडेका गुरुको आशौच अरु सपिण्डको जति लाग्छ तेति नै लाग्ने** बुजिन्छ[९]। **परमगुरु पनि सदाचारि भएमा मात्र** पारस्करले उपदेश गरेका उदककर्मादिका सबै व्यवस्था तिनका सम्बन्धमा लागु हुन्छन् भन्ने कुरा अर्थात् बुजिन्छ। मार्कण्डेयस्मृतिमा एस विषयमा विशेष प्रतिपादन गरिएको छ[१०]। तथापि परमगुरु आचारभ्रष्ट पतित भएमा पनि प्रायश्चित्त गरि दाहादि कर्म गर्ने, सपिण्डीकरण भने नगर्ने पक्ष लघुस्मृतिपुराणमा पाइन्छ। पतित परमगुरुको सपिण्डीकरण नगर्ने कुरा श्रौतसूत्रादिको अनुकूल छ॥

---

१. **अहस्तु(त्व)दत्तकन्यासु बालेषु च विशोधनम्। गुर्वन्तेवास्यनूचानमातुलश्रोत्रियेषु च॥**—याज्ञ. ३।२२।

२. **हीनवर्णानामधिकवर्णेषु सपिण्डेषु तदशौचव्यपगमे शुद्धिः, ब्राह्मणस्य क्षत्रविट्शूद्रेषु सपिण्डेषु षड्रात्र-त्रि-रात्रैकरात्रैः, क्षत्रियस्य विट्शूद्रयोः षड्रात्रत्रिरात्राभ्याम्, वैश्यस्य शूद्रे षड्रात्रेण।**-विष्णुधर्मसूत्र २२।२१-२४।

३. ❁ **सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते।**
सजातीयेषु वर्णेषु चतुर्थे भिन्नजातिषु॥—वृद्धपराशरवचन, पाराशरमाधवीय, आचारकाण्ड ५८९ पृ.।
❁ **क्षत्र-विट्-शूद्रजातीनां सापिण्ड्यं तु त्रिपूरुषम्।**
ब्राह्मणैरपि जातानामविभक्तार्थभागिनाम्॥—ब्रह्मपुराणवचन, षडशीतिशुद्धिचन्द्रिका, ६३ श्लो., ७७ पृ.।

४. **पक्षं द्वौ वाऽऽशौचम्।**—पारस्करगृह्यसूत्र ३।१०।३८।

५. **सतामेव हि बन्धूनां कर्म कुर्यात् प्रयत्नतः। भ्रष्टानामपि तुच्छानां पतितानां विकर्मिणाम्॥**
न कुर्वीत क्रियां यत्नादपि स्नानं समाचरेत्। असतां पतितानां च भस्मान्तं सूतकं स्मृतम्॥
—आङ्गिरसस्मृति १३७-१३९ श्लो.।

६. **गुरौ प्रेतेऽपोऽभ्यवेयाद् दशरात्रं चोपरमेत्।**—पारस्करगृ.सू. २।११।७।

७. **अपोऽभ्यवेयात्।**—पारस्करगृ.सू. २।११।७।

८. **पारस्करगृह्यसूत्रोक्ताशौचनिरूपणम्** (शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, सारस्वती सुषमा, ५२ वर्ष, ३-४ अङ्क, २०५३ वै., सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी)।

९. **आचार्ये चैवम्।**—पारस्करगृ.सू. ३।१०।३९।

१०. **पुत्रस्य जननात् पश्चात् पिता दुर्बुद्धितो यदि। चाण्डालो यवनो भिल्लो जायते स्वयमेव वा॥**
परपीडादिना वाऽपि बलाद् वा कामकारतः। पूर्वजातस् तत्तनयो निर्दुष्टः सच्चरित्रकः॥
तेन सद्भिर् वोपनीतो न सङ्कीर्णश् च कैरपि। कृतनित्यक्रियः सम्यक् कृताध्ययनसत्क्रियः॥
ततः परं मृतस् तातस् तादृशो यवनात्मकः। मृतौ तस्याऽस्य पुत्रस्य नाऽऽशौचं नोदकक्रिया॥
—मार्कण्डेयस्मृति, स्मृतिसन्दर्भ, षष्ठभाग, १५६ पृ.।

(४९) दिनमा र रात्रिमा क्रमले हुने १५ मुहूर्त

मुहूर्तक्रमः	तैत्तिरीयब्राह्मणानुसारीणि मुहूर्तनामानि		आथर्वणज्योतिषानुसारीणि मुहूर्तनामानि छायापरिमाणं च		आथर्वणज्योतिषोक्तेषु मुहूर्तेषु कर्तव्यविशेषाः
	शुक्लपक्षे (दिनस्य)	कृष्णपक्षे (दिनस्य)	दिनस्य रात्रेश्च मुहूर्ताः	दिने छाया-परिमाणम्	
१	चित्रः	सविता	**रौद्रः**	९३–६० अङ्गुल	**रौद्रकर्माणि**
२	केतुः	प्रसविता	**श्वेतः**	६०-१२	**स्नानालङ्करणादीनि**
३	प्रभान्	दीप्तः	**मैत्रः**	१२-६	**मित्रकरणम्**
४	आभान्	दीपमानः	**सारभटः**	६-५	**अभिचारकर्माणि**
५	सम्भान्	दीप्यमानः	**सावित्रः**	५-४	**देवकार्यम्, यज्ञ-विवाहादि**
६	ज्योतिष्मान्	ज्वलन्	**वैराजः**	४-३	**पौरुषम्**
७	तेजस्वान्	ज्वलिता	**विश्वावसुः**	३-०	**सर्वार्थारम्भः, स्वाध्यायाध्ययनम्**
८	आतपन्	तपन्	**अभिजित् (मध्याह्ने)**	शङ्कुमूले	**चातुर्वर्ण्ययोगः, सर्वकामार्थ-साधनम्**
९	तपन्	वितपन्	**रौहिणः**	०-३	**वृक्षरोपणम्**
१०	अभितपन्	सन्तपन्	**बलः**	३-४	**सेनायोगः**
११	रोचनः	रोचनः	**विजयः**	४-५	**विजययात्रा, शान्ति-स्वस्तिकर्म**
१२	रोचमानः	रोचमानः	**नैर्ऋतः**	५-६	**आक्रमणम्**
१३	शोभनः	शुम्भूः	**वारुणः**	६-१२	**जलज-धान्य-गोधूम-यवादिरोपणम्**
१४	शोभमानः	शुम्भमानः	**सौम्यः**	१२-६०	**सौम्यकर्म**
१५	कल्याणः	वामः	**भगः**	६०-९३ अङ्गुल	**नारीणां कन्यानां च सौभाग्यकर्म**

(५०) नेपालका प्रमुख स्थानको समयमा हुने अन्तर

याहाँ पैलो स्तम्भमा स्थाननाम, दोस्रो स्तम्भमा नेपालको प्रामाणिक सर्कारि समयसँगको तेस स्थानको समयको अन्तर र तेस्रो स्तम्भमा काठमाण्डुको समयसँगको तेसतेस स्थानको स्थानीय समयको अन्तर मिनेट र सेकेण्ड**मा दिइएको छ।**

स्थाननाम	प्रा.स.अन्तर	काठ.स.अन्तर
कञ्चनपुर	–२४:१६	–२०:३२
दार्चुला	–२२:४८	–१९:०४
कैलालि	–२२:३६	–१८:५२
बाँके नेपालगञ्ज	–१८:२८	–१४:४४
दैलेख	–१८:०८	–१४:२४
जुम्ला	–१६:१६	–१२:३२
दाङ घोराइ	–१४:०४	–१०:२०
कपिलबस्तु तौलिहवा	–१२:४८	–९:०४
गुल्मि तम्घास	–१२:००	–८:१६
पाल्पा तानसेन	–१०:४८	–७:०४
बाग्लुङ	–१०:३६	–६:५२
स्याङ्जा पुतलिबजार	–९:३४	–५:४४
कास्कि पोखरा	–९:०४	–५:२०
मनाङ चामे	–८:००	–४:१६
तनहुँ दमौलि	–७:५२	–४:०८
चितवन भरतपुर	–७:१६	–३:३२

स्थाननाम	प्रा.स.अन्तर	काठ.स.अन्तर
चितवन रत्ननगर	–६:५२	–३:०८
गोर्खा	–६:३६	–२:५२
धादिङ	–५:२४	–१:४०
मकवानपुर हेटौंडा	–४:५२	–१:०८
नुवाकोट विदुर	–४:२८	–०:४४
काठमाण्डु	–३:४४	०:००
काभ्रे धुलिखेल	–२:४४	+१:००
सिन्धुपाल्चोक चौतारा	–२:०८	+१:३६
धनुषा	–१:१६	+२:२८
दोलखा चरिकोट	–०:४८	+२:५६
सिराहा	–०:०८	+३:३६
खोटाङ दिक्तेल	+२:१२	+५:५६
सुनसरि इनरुवा	+३:३६	+७:२०
मोरङ विराटनगर	+४:०८	+७:५२
झापा चन्द्रगडि	+७:१६	+११:००

(४८) दिनविभागचक्रम्

विभागनाम	प्रातःकालः	सङ्गवः	मध्याह्नः	अपराह्णः	सायाह्नः	दिनमानको समान ५ भागको एक भाग समय
मुहूर्ताः	सूर्योदयबाट ३ मुहूर्त	४–६	७–९	१०–१२	१३–१५	
घट्यः	सूर्योदयबाट ६ घडि	७–१२	१३–१८	१९–२४	२५–३०	
घ.मि.	६:००–८:२४	८:२४–१०:४८	१०:४८–१३:१२	१३:१२–१५:३६	१५:३६–१८:००	

मतान्तरे दिनविभागचक्रम्

विभागनाम	प्रातःकालः	मध्याह्नः	अपराह्णः	दिनमानको समान ३ भागको एक भाग समय
मुहूर्ताः	सूर्योदयबाट ५ मुहूर्त	६–१०	११–१५	
घट्यः	सूर्योदयबाट १० घडि	११–२०	२१–३०	
घ.मि.	६:००–१०:००	१०:००–१४:००	१४:००–१८:००	

अरुणोदय भएपछि प्रातःस्नान गर्न पर्ने निर्देश–

प्रातःस्नाय्यरुणकिरणग्रस्तां
प्राचीमवलोक्य स्नायात्।–विष्णुध.सू.६४।९।

मध्याह्नमा स्वाध्यायाध्ययन गर्ने निर्देश–

मध्याह्नो ब्रह्मयज्ञस्य मुख्यकाल उदाहृतः।
प्रातःकालादिकस् सर्वस् तत्समो नैव सर्वदा॥

–लौगाक्षिस्मृति, २३८ पृ.।

(५१) वर्तमान सौम्य (९) युगसँग सम्बद्ध विवरण

वर्षारम्भदिन (उदगयनारम्भ) ⌂		कलिसंवत्	संवत्सर	चान्द्र संवत्सर	दक्षिणायनारम्भदिन ◆		वैदिक अधिकमास ⌘	विशेष ⌛
२०७२।८।२६	शनिवार	**५०८१**	**१ संवत्सर**	**४१ प्लवङ्ग**	२०७३।२।२३	आइतवार	**५०८२–द्वितीय शुचि [आषाढ]** (२०७४।२।१२–२०७४।३।९) **५०८४–द्वितीय सहस्य [पौष]** (२०७६।८।११–२०७६।९।९)	**अर्वाचीनज्योतिषग्रन्थअनुसार पर्ने भनिएका अधिकमासहरु वेदाङ्गज्योतिषअनुसार शुद्ध मास (शुद्ध महिना) नै हुन्छन्।**
२०७३।८।१५	बुधवार	**५०८२**	**२ परिवत्सर**	**४२ कीलक**	२०७४।३।१०	शनिवार		
२०७४।९।३	सोमवार	**५०८३**	**३ इदावत्सर**	**४३ सौम्य**	२०७५।२।३१	बृहस्पतिवार		
२०७५।८।२२	शनिवार	**५०८४**	**४ इद्वत्सर**	**४४ साधारण**	२०७६।२।२१	मङ्गलवार		
२०७६।९।१०	बृहस्पतिवार	**५०८५**	**५ वत्सर**	**४५ विरोधकृत्**	२०७७।३।८	सोमवार		

⌂ इ दिनमा वैदिक **तपोमासको शुक्लपक्षको प्रतिपदा** पर्छ। एस स्तम्भमा दिइएका इ मितिमा वेदाङ्गज्योतिषोक्त **नववर्ष**को आरम्भ हुञ्छ। इ दिनबाटै तिति वर्षमा वैदिक सौरचान्द्र **उदगयन**को (उत्तरायणको) र वैदिक सौरचान्द्र **शिशिरऋतु**को पनि आरम्भ हुञ्छ तेसपछि दुइ-दुइ चान्द्रमैनामा **वसन्त** र **ग्रीष्म ऋतु** क्रमैले आउँछन्।

◆ इ मितिमा **नभोमासको शुक्लपक्षको प्रतिपदा** पर्छ। इ दिनबाटै तिति वर्षमा सौरचान्द्र **दक्षिणायन**को र वैदिक सौरचान्द्र **वर्षा ऋतु**को पनि आरम्भ हुञ्छ, तेसपछि दुइदुइ चान्द्रमैनामा **शरद्** र **हेमन्त ऋतु** क्रमैले आउँछन्।

⌘ इ अधिकमासहरु **वेदाङ्गज्योतिषअनुसारका** हुन्।

⌛ अर्वाचीन ज्योतिषग्रन्थअनुसार **२०७५ जेठ**मा पर्ने भनिएको **अधिकज्येष्ठमास** वेदाङ्गज्योतिषअनुसार **शुद्ध शुचिमास** (शुद्ध आषाढमास) हुञ्छ। **२०७७ असोज**मा पर्ने भनिएको **अधिक आश्विन** मैना **शुद्ध ऊर्जमास** (शुद्ध कार्त्तिकमास) हुञ्छ।

स्वाध्यायशालाकुटुम्बका प्रकाशित वैदिकज्योतिषविषयक प्रमुख निबन्ध (लेख)

नववर्षारम्भ : केही विचारणीय कुरा— कान्तिपुर २०५३।१।१।

वेदाङ्गज्योतिष र नववर्षारम्भ : संक्षिप्त विचार— हिमालय टाइम्स २०५३।१।२२।

स्वाद्ध्यायशाला र वेदाङ्गज्योतिष — कान्तिपुर २०५३।२।२०।

धर्म र वेदाङ्गज्योतिष — हिमालय टाइम्स २०५३।२।२१।

वैदिक कालगणना र प्रचलित पञ्चाङ्गहरु — श्रीसगरमाथा (दैनिक) २०५३।८।२०।

वैदिक कालगणनाको अनुगमन गर्न उद्बोधन— जनमञ्च २०५३।८।२७।

हाम्रा पञ्चाङ्गको सिंहावलोकन— कान्तिपुर २०५४।१।१।

वैदिक कालगणनाको अनुगमन गर्न उद्बोधन (समाचार)— आरती साप्ताहिक २०५४।८।१२।

वेदाङ्गज्योतिषं युगवर्षायनर्तुमासाधिमासादिगणना च (निबन्ध)— सारस्वती सुषमा, ५० वर्ष, ३-४ अङ्क, मार्गशीर्ष-फाल्गुनपूर्णिमा २०५२ वै., सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी।

जैमिनीयधर्ममीमांसाशास्त्रनिर्णीतानां वैदिक-कृत्यकालानां चान्द्रमाननियतत्वम् (निबन्ध)— सारस्वती सुषमा, ५१ वर्ष, १-४ अङ्क, २०५३ वै., सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी।

लगधप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष और नववर्षारम्भ— सन्मार्ग (दैनिक), १९९८ क्रैस्ताब्द, अप्रिल १,२ (२०५४ चइत १९,२०) वाराणसी।

वैदिक कालगणनापद्धतिको संरक्षणमा नेपालको योगदान — गोरखापत्र २०५५।१।१२ (शनिवारीय)।

वैदिक परम्परामा चान्द्र ऋतुहरुको स्थान — गरिमा (मासिक), साझाप्रकाशन, नेपाल, २०५५ पुस।

हाम्रा पञ्चाङ्गहरुको संक्षिप्त परिशीलन — गोरखापत्र २०५५।१२।२७ (शनिवारीय)।

दशमी कार्तिक २ गते नै हो — नेपाल समाचारपत्र २०५६।६।१७।

दशमी कात्तिक २ गते नै — कान्तिपुर २०५६।६।२२।

दशैंको निर्णय कुन शास्त्रअनुसार गर्ने? — नेपाल समाचारपत्र २०५७।६।१५।

पुस एघार गते वैदिक नववर्षारम्भ मनाउन आह्वान (समाचार)— हिमालय टाइम्स २०५७।९।१०।

वैदिक परम्पराका आस्तिक ज्योतिषीहरुले, धर्मशास्त्रीहरुले र अन्य धार्मिक सज्जनहरुले पनि विचार गर्नै पर्ने कुरा — उन्नयन (त्रैमासिक), काठमाण्डु, २०५७ कात्तिक-पुस।

धार्मिक पञ्चाङ्गमा वैदिक कालगणनापद्धति अँगाल्ने आवश्यकता —सङ्गम, काठमाण्डु, २०५८ वैशाख।

वैदिक पञ्चसंवत्सरात्मक युगव्यवस्था र चल्तीका सिद्धान्तज्योतिषग्रन्थ तथा पञ्चाङ्गपत्रहरु — गरिमा (मासिक), साझाप्रकाशन, ललितपुर, नेपाल, २०५८ वैशाख।

हिन्दुराज्य नेपालमा मौलिक वैदिक पञ्चाङ्गको खाँचो — हिमालय टाइम्स २०५८।८।२२।

हाम्रा संवत्हरुको पर्यालोचन — गरिमा (मासिक), साझाप्रकाशन, ललितपुर, नेपाल, २०५९ वैशाख।

वैदिक कालगणनामा संवत्सरको र अयनको सँगसँगै आरम्भ — गरिमा (मासिक), साझाप्रकाशन, ललितपुर, २०५९ पुस।

आजभोलिको चल्तीको सूर्यसिद्धान्तग्रन्थ मूल वैदिक परम्पराको वेदाङ्ग ग्रन्थ हैन— उन्नयन (त्रैमासिक), ४९, काठमाण्डु, २०६० कात्तिक-पुस।

प्रचलित पञ्चाङ्गहरुमा सुधारको आवश्यकता—कान्तिपुर २०६०।९।३।

वैदिक कालगणनासिद्धान्तको पुनर्जागरण—गोरखापत्र २०६०।९।९।

एहि मङ्सिर २७ गते वैदिक नववर्ष मनाउन आह्वान (पत्रक)— स्वाद्ध्यायशाला, २०६१।८।२२।

वैदिक नववर्षारम्भको अवसरमा प्रदर्शनी (समाचार)— अन्नपूर्णपोष्ट २०६१।८।२८।

पञ्चाङ्ग प्रकाशित गर्दा विशेष ध्यान दिन पर्ने कुरा—ज्योतिर्विज्ञान मञ्च, २०६३ भदौ-कात्तिक।

संवत्को वैज्ञानिक कालगणना— कान्तिपुर २०६३।८।२३।

लोसार र वैदिक नववर्ष— कान्तिपुर २०६३।१०।१८।

वैदिक कालगणनासिद्धान्तको ज्ञानको आवश्यकता— ज्योतिर्विज्ञान मञ्च, काठमाण्डु,२०६४ जेठ-साउन।

हाम्रो मौलिक कालगणना— गोर्खापत्र २०६४।४।१२।

नयाँ नेपाल नयाँ पात्रो— कान्तिपुर २०६४।७।२४।

संवत्को वैज्ञानिकता र स्वीकार्यता— कान्तिपुर २०६४।८।१०।

लोसारनिर्णयको आधार— कान्तिपुर २०६४।९।१९।

पात्रोमा संशोधन— गोर्खापत्र २०६४।१०।१४।

नेपाली-पात्रो-सुधार— कान्तिपुर २०६४।१०।१९।

नवरात्र-विचार— ज्योतिर्विज्ञान मञ्च, काठमाण्डु, २०६८ वैशाख।

वैदिक-तिथिपत्रको(५०७६ को वैदिक पत्रोको) समीक्षा—ज्योतिर्विज्ञान मञ्च, काठमाण्डु, २०६८ वैशाख।

नवरात्र नौ दिनकै हुञ्छ—कान्तिपुर २०६८।६।८।

नौ दिनकै नवरात्र—नागरिक २०६८।६।११।

नेपालमा वेदाङ्गज्योतिषको संरक्षण र प्रयोग (२०६९ भदौ ७ गते काठमाण्डुमा सम्पन्न भएको वेदाङ्गज्योतिषविषयक विचारगोष्ठीको समाचार)—मूलधार (साप्ताहिक) २०६९।५।१५ शुक्रवार।

वैदिक परम्परा, वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ र अधिकमास—मूलधार (साप्ताहिक) २०६९।५।२२।

हात्तीगौंडा (ब्रह्मपुरी)मा [खड्काभद्रकाली, काठमाण्डुमा] ५०७८ तपःशुक्लप्रतिपदामा [२०६९।८।२९ मा] मनाइएको वैदिक नववर्षको कार्यक्रमको समाचार— नेपाल समाचारपत्र २०६९।९।१।

वैदिक कालमीमांसाका सन्दर्भमा ज्योतिषशास्त्रको महत्व—मिमिरि ४२।१, २०७० वैशाख-जेठ।

घटस्थापनाको तिथि मिलेन—कान्तिपुर २०७१।६।६।

दसैंको वास्तविक पात्रो—स्वतन्त्र सञ्चारग्राम (साप्ताहिक) २०७१।६।१० शुक्रवार।

महानवमी र विजयादशमी एकै दिन कसरी हुञ्छ—सेतो पाटी (विद्युतीय पत्रिका) २०७१।६।१६।

वैदिक कालगणनापद्धतिअनुसार उपाकर्म र जनैपूर्णिमा पर्व—ज्योतिष म्यागजिन (विद्युतीय पत्रिका) २०७२।५।१०॥

स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब के

प्रकाशित वेदवेदाङ्गादिशास्त्रसम्बद्ध ग्रन्थ

स्वाद्ध्यायशाला

स्वाद्ध्याय स्वशाखावेद को कहते हैं। स्वाद्ध्याय का अध्ययन गुरु-शिष्यपरम्परा से नियमपूर्वक करने का विधान है। वेद चार हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेद के स्वरूप, प्रयोग, अर्थ और रहस्य को अवगत करने के लिए वेदाङ्गों का अध्ययन आवश्यक होता है। वेदाङ्ग छः हैं– शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। वेद और वेदाङ्गों का अध्ययन को ब्राह्मणों के लिए निष्कारण धर्म माना गया है। अध्ययनद्वारा अर्थबोध, तत्पश्चात् तदनुरूप आचरण, तदनन्तर प्रचारण की कर्तव्यता– यह क्रम हमारे यहाँ हजारों वर्षों से मान्य रहआया है। इसी दिशा में स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्ब प्रयत्नशील है। इसी सन्दर्भ में प्रकाशित ग्रन्थों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

१. **कौण्डिन्न्यायनशिक्क्षा** [A Complete and Critical Study of Vedic & Sanskrit Phonetics, 1992] (प्रातिशाख्यादि-सर्ववेदाङ्ग-शिक्षाग्रन्थसारसङ्ग्रहात्मकः समीक्षापूर्णः पुष्कलसर्वाङ्गोऽपूर्वो विपुलकायो वेदाङ्गशिक्षाग्रन्थः, काठमाण्डू, २०४९वै.)– इस ग्रन्थ में प्राप्य सभी प्रातिशाख्यग्रन्थ तथा संस्कृतशिक्षाग्रन्थों का समीक्षापूर्ण सार ११५८ कारिकाओं में प्रतिपादित है और उन कारिकाओं की प्रमाणवचनपूर्ण संस्कृतव्याख्या भी है। भूमिका में वेदाङ्गशिक्षाशास्त्र का इतिहास दिया गया है। इस में शिक्षाशास्त्रों के आलोडन से वेदलोकोभयसाधारण संस्कृत के दीर्घ अवर्ण, अन्य दीर्घ स्वर, ऋकार, लृकार, एकार, ओकार, अनुस्वार, विसर्ग, ञकार, णकार, वकार यमवर्ण, किड्किडाकारवर्ण जैसे अर्वाचीन काल में दुर्विज्ञात वर्णोंका भी यथार्थ रूप को वर्णित किया गया है। आवश्यक स्थलों में संस्कृत-शिक्षाशास्त्र के भारतीय तथा पाश्चात्त्य कुछ अनुसन्धाताओं के मत की खण्डन भी किया गया है। परिशिष्ट में ७ दुर्लभ शिक्षाग्रन्थ शौनक-शिक्षा, शैशिरीयशिक्षा, व्याडिशिक्षा, चारायणीयशिक्षा, कौहलीयशिक्षा, सर्वसम्मतशिक्षा और पारिशिक्षा सङ्गृहीत हैं। यह ग्रन्थ वेदाङ्गशिक्षाशास्त्र के तैत्तिरीयारण्यक में वर्णित वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान (संहिता) इन छहों विषयों का साङ्गोपाङ्ग प्रतिपादन करनेवाला ५००० वर्षों के संस्कृतवाङ्मय के इतिहास में अद्वितीय वेदाङ्गशिक्षाग्रन्थ है और वैदिक तथा लौकिक संस्कृत की प्रचलित अशुद्ध उच्चारणरीति में संशोधन के लिए रचा गया है। यह ग्रन्थ सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालय से वाचस्पति (डी.लिट्.) उपाधि के लिए सन् १९९२ में स्वीकृत ग्रन्थ है।

पृष्ठ 896 / मूल्य : भा.रू. 500.00

२. **पाणिनीयशिक्षा** [Sanskrit Phonetics According to Paninian School, 1998, 2004] (आचार्यकौण्डिन्न्यायनकृतवेदाङ्ग–शिक्षा-विमर्शाख्यव्याख्यासहिता, सन् १९९८, २००४)– छात्रोपयोगी तथा शोधोपलब्धिपूर्ण संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी टीका भी इसमें प्रस्तुत की गई है। भारतवर्षीय वेदाङ्गशिक्षा के ग्रन्थों के परिचय से युक्त भूमिका, वेदाङ्ग-शिक्षाशास्त्रीय पारिभाषिक शब्द–विवरण, श्लोकसूची इत्यादि परिशिष्ट इस ग्रन्थ में जोडे गए हैं। संस्कृत के दुर्विज्ञात कुछ वर्णों के और क्ष, ज्ञ जैसे संयुक्ताक्षर के विषय में विशेष प्रकाश भी डाला गया है। सम्बद्ध विषय में अन्य अनुसन्धाताओं की त्रुटि की ओर भी ध्यानाकर्षण किया गया है। यह ग्रन्थ चौखम्बा–विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

द्वि.सं. पृष्ठ 256 / मूल्य : भा.रू. 125/300

३. **नारदीयशिक्षा** [Theory of Classical Music and Phonetics According to Samavedic School, 2002] (आचार्यकौण्डिन्न्यायन-कृतव्याख्यासहिता, सन् २००२)– इस संस्करण में छात्रोपयोगी तथा शोधोपलब्धिपूर्ण संस्कृत व्याख्या के साथ हिन्दी टीका भी प्रस्तुत की गई है। भारतवर्षीय वेदाङ्गशिक्षा के ग्रन्थों के परिचय से और भारतवर्षीय गान-परम्परा और नारदीय शिक्षा का विशेष परिचय से युक्त भूमिका तथा पारिभाषिक शब्द–विवरण इत्यादि परिशिष्ट इस ग्रन्थ में जोडे गए हैं। यह ग्रन्थ चौखम्बा–विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 288 / मूल्य : भा.रू. 180.00

४. **प्रतिज्ञासूत्रम्** [Theory of Phonetics According to Shukla Yajurvedic School, 2014] (संस्कृतहिन्दीव्याख्यासहिता, सन् २०१४)– इस संस्करण में छात्रोपयोगी तथा शोधोपलब्धिपूर्ण संस्कृत व्याख्या के साथ हिन्दी टीका भी प्रस्तुत की गई है। यह ग्रन्थ चौखम्बा–विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है। व्याख्याकार- आमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन।

५. माद्ध्यन्दिनीयवाजसनेयि–शुक्लयजुर्वेदशाखाद्ध्यायि–निरग्निकद्विज–सदाचारकर्म-संस्कारकर्म-श्राद्धकर्मादि-**वैदिकमन्त्रसङ्ग्रहः** सपरिशिष्टः [A Collection of Mantras for Grihya rituals of Maddhya-ndineeya recension of Shuklayajurveda, 1993] (२०५२ वै.)– इस ग्रन्थ में प्रचलित नित्यकर्मादिपद्धतियों के स्वशाखाविरुद्ध अंशों के संशोधन के लिए सप्रमाण निर्देशन भी हैं। परिशिष्ट में लोक में प्रचलित प्रमुख पौराण कर्मों में आवश्यक प्रमुख मन्त्रों का और स्तोत्रों का भी सङ्ग्रह है। अन्त्य में वैदिक कालगणनासिद्धान्त और प्रचलित ज्योतिष का

सङ्क्षिप्त ज्ञान भी श्लोकों में दिया गया है।

पृष्ठ 156 / मूल्य : भा.रू. 65.00

६. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **ब्रह्मयज्ञपद्धतिः** (विस्तृत–प्रस्ताविका-युता, सन् २००४)– ब्रह्मयज्ञ (दैनिक नित्य वेदपाठ) के विषय में ज्ञातव्य अनेक सप्रमाण विषयों से युक्त इस ग्रन्थ में वैदिक समाज में ब्राह्मण का स्थान, ब्राह्मणों का आचार, ब्राह्मणों का कर्तव्य, वैदिक वाङ्मय के साथ ब्राह्मणों का सम्बन्ध और ब्रह्मयज्ञ की अवश्यकर्तव्यता इत्यादि विषय भी प्रतिपादित हैं। यह ग्रन्थ चौखम्बा–विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 224 / मूल्य : भा.रू. 50.00

७. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनां **सन्ध्योपासनपद्धतिः** (विस्तृतप्रस्ताविका-युता, सन् २०००)– सन्ध्योपासन की महत्ता, ब्राह्मण के लिए सन्ध्योपासन की नित्य कर्तव्यता, सन्ध्योपासन का रहस्य, शुद्ध वैदिक सन्ध्योपासनपद्धति इत्यादि विषय में वेद, स्मृति और पुराणों के प्रमाणवचन सहित प्रभूत प्रकाश डाला गया है। यह ग्रन्थ चौखम्बा–विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 160 / मूल्य : भा.रू. 40.00

८. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनाम् **एकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः** (विस्तृत-भूमिकासहिता, काठमाण्डू, २०५८ वै.)– इस ग्रन्थ की भूमिका में श्राद्ध की परिभाषा, महत्ता, कर्तव्यता इत्यादि के विषय में वेद स्मृति पुराणों के वचन के आधार पर विस्तृत प्रतिपादन नेपाली भाषा में किया गया है। पद्धति के मूल स्वशाखासूत्रोक्त रूप को सप्रमाण स्पष्ट रूप में दिखाया गया है।

पृष्ठ 224 / मूल्य : भा.रू. 40.00

९. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखाध्यायिनाम् **पार्वणश्राद्धपद्धतिः** (विस्तृत-भूमिकासहिता, काठमाण्डू, २०६४वै., द्वि.सं २०७२ वै.)– इस ग्रन्थ की भूमिका में श्राद्धसम्बद्ध शुक्लयजुर्वेदमन्त्र, शतपथब्राह्मणवचन, कात्यायन-श्रौतसूत्रवचन इत्यादि भी हैं। स्मृति पुराणों के वचन के आधार पर विस्तृत प्रतिपादन नेपाली भाषा में किया गया है। पद्धति के मूल स्वशाखासूत्रोक्त रूप को सप्रमाण स्पष्ट रूप में दिखाया गया है।

पृष्ठ 328 / मूल्य : भा.रू. 95.00

१०. मा.वा.शुक्लयजुर्वेदशाखानुसारिणी **अन्त्यकर्मपद्धतिः** (विस्तृत-भूमिकासहिता, काठमाण्डू, २०६५ वै.)– इस ग्रन्थ में शुक्लयजुर्वेदसंहिता, शतपथब्राह्मण, कात्यायनश्रौतसूत्र तथा पारस्करगृह्यसूत्र के आधार पर विस्तृत प्रतिपादन नेपाली भाषा में किया गया है। पद्धति के मूल स्वशाखासूत्रोक्त रूप को सप्रमाण स्पष्ट रूप में दिखाया गया है।

पृष्ठ 624 / मूल्य : भा.रू. 110.00

११. **वेदभाषानिघण्टुः** (कौण्डिन्न्यायनकोषः) [Vedic Concordance, 1993] (भूलोककाण्डान्तर्गत–देववर्ग–ब्रह्मवर्गात्मकः, २०५० वै.)– यह ऋग्वेद से लेकर आज तक की संस्कृत भाषा में प्रचलित सम्पूर्ण प्रमुख संस्कृत शब्दों को सङ्गृहीत करने वाले और अमरकोष की शैली में अनुष्टुप्-श्लोकों में रचे गए बृहत् संस्कृतशब्दकोश का निदर्शन के रूप में प्रस्तुत भूलोककाण्डान्तर्गत देववर्ग–ब्रह्म–वर्गात्मक भाग है। प्रस्तावना और शब्दानुक्रमणिका से युक्त काठमाण्डू में प्रकाशित यह भाग सभी संस्कृतज्ञों के लिए, विशेषतः वैदिकों, मीमांसकों तथा धर्मशास्त्रियों के लिए सङ्ग्राह्य है।

पृष्ठ 72 / मूल्य : भा.रू. 25.00

१२. **वेदाङ्गज्योतिषम्** [Astronomy According to the Veda, 2005] (सोमाकरभाष्येण कौण्डिन्न्यायनव्याख्यानेन च सहितम्, सन् २००५)– दुर्लभ सोमाकरकृत भाष्य के साथ श्रीशिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायनद्वारा रचित अभिनव व्याख्यान से युक्त लगधमुनिप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिष का यह अपूर्व संस्करण । हिन्दी में भी भूमिका और व्याख्या प्रस्तुत किए गए हैं। भूमिका भाग में वेदाङ्गज्योतिष का प्रामाण्य और श्रौत–स्मार्त धर्म कृत्य के काल के निर्धारण में वर्तमान काल में भी वेदाङ्गज्योतिष का अनुसरणीयत्व भली भाँती समझाया गया है। प्रचलित सिद्धान्तज्योतिष के ग्रन्थों के वेदाङ्गज्योतिषप्रतिकूल प्रतिपादन का अग्राह्यत्व भी इस में सिद्ध किया गया है। वेदाङ्गज्योतिष के अनुसन्धाताओं के लिए दुर्बोध मानी गई वेदाङ्गज्योतिषप्रोक्त अधिमासव्यवस्था का प्राचीन ग्रन्थ के अनुसन्धानद्वारा सर्वथा नवीन, युक्तियुक्त, वैज्ञानिक और स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की गई है। वैदिक कालगणनापद्धति का वास्तविक रूप भारतीय–सर्वकारनियुक्त पञ्चाङ्गसुधारसमिति के अध्यक्ष मेघनाद साहा तथा सदस्यसचिव निर्मलचन्द्र लाहिडी से भी यथार्थ आकलन नहीं किया गया था। इस लिए सभी विशिष्ट स्थलों पर शङ्करबालकृष्ण दीक्षित, लाला छोटेलाल बार्हस्पत्य, सुधाकर द्विवेदी, बालगङ्गाधर तिलक, वेङ्कटेश बापूजी केतकर, शामशास्त्री इत्यादि व्याख्याताओं के व्याख्या की भी समीक्षा की गई है। परिशिष्ट में श्लोकसूची, पदसूची, हस्तलिखित महत्त्वपूर्ण दो पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ, वेदाङ्गज्योतिषोक्त वैदिकतिथिपञ्जी इत्यादि महत्त्वपूर्ण सामग्री समाविष्ट है। वेदाङ्गज्योतिष का इतना विस्तृत व्याख्यात्मक प्रकाशन अभीतक किसी भी भाषा में नहीं हुआ है। यह ग्रन्थ चौखम्बाविद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 544 / मूल्य : भा.रू. 250.00/500.00

१३. **भारतवर्षीय ज्योतिष के ज्वलन्त प्रश्न और वेदाङ्गज्योतिष** (सन्२००८)–

इस ग्रन्थ में इन प्रश्नों पर विचार किया गया है— १. प्रचलित ज्योतिषग्रन्थों में वैदिक पञ्चवर्षात्मक युग की उपेक्षा क्यों? २. नववर्षारम्भ माघ में अथवा चैत्र में? ३. संवत्सर-परिवत्सरादि की उपेक्षा क्यों? ४. चान्द्र वर्षों की उपेक्षा और बार्हस्पत्य वर्षों का स्वीकार क्यों? ५. सौरचान्द्र अयन की उपेक्षा क्यों? ६. चान्द्रऋतुओं का अनादर क्यों? ७. चान्द्रमासों की प्रधानता कैसे भुला दी गई? ८. चान्द्रमास की पूर्णिमान्तता क्यों? ९. अयन के अन्त में ही अधिमास मानने की व्यवस्था क्यों भुला दी गई? १०. क्षयमास कैसे स्वीकारा गया? ११. खण्डतिथि क्यों? १२. वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ की उपेक्षा क्यों? १३. वैदिक नक्षत्रक्रम को क्यों छोडा गया? १४. वेदाङ्गज्योतिष में बताई गई नक्षत्र नामकरण की रीति की उपेक्षा क्यों? १५. वेदाङ्ज्योतिष ग्रन्थ के परिष्कार और व्याख्यान में ध्यान क्यों नहीं गया? १६. पञ्चाङ्ग-सुधार-समिति का वेदाङ्गज्योतिष ग्रन्थ में ध्यान क्यों नहीं गया? इन विषयों पर सप्रमाण विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ में लगधमुनिप्रोक्त याजुष-वेदाङ्गज्योतिष की हिन्दी व्याख्या और विवेचनात्मक भूमिका भी संलग्न है। यह ग्रन्थ चौखम्बाविद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 272 / मूल्य : भा.रू. 150.00/300.00

१४. **ब्रह्ममीमांसासूत्रम्** (शाङ्करभाष्यानुकूलया कौण्डिन्न्यायनवृत्त्या सहितम्) (सन् २००२)— इस ग्रन्थ में सूत्रार्थप्रदर्शन के वाद अधिकरणरचना और कारिकाओं में भी अधिकरण का सार दिया गया है। सूत्रार्थ हिन्दी भाषा में भी दिया गया है। व्याख्या मूलतः शाङ्करभाष्य का अनुकूल है। कुछ स्थलों में वेदादिशास्त्र की दृष्टि से शाङ्करभाष्य की भी समीक्षा की गई है। भूमिका में दर्शन-शास्त्रपरिचय, भारतवर्षीय प्रमुखदर्शनविवरण, ब्रह्म-मीमांसा-ग्रन्थपरिचय, ब्रह्ममीमांसासूत्रग्रन्थ के अध्ययन के अधिकारी का निरूपण तथा वेदान्तशास्त्र के ५८ ग्रन्थकारों का परिचय भी समाविष्ट किया गया है। यह ग्रन्थ चौखम्बा-विद्याभवन (वाराणसी) से प्रकाशित है।

पृष्ठ 528 / मूल्य : भा.रू. 300.00

१५. **गरुडपुराणम् (प्रेतकल्पात्मकम्)** (सन् २००४)— नौनिधिरामद्वारा रचित सारोद्धार गरुडपुराण प्रेतकल्प को ही मूल गरुडपुराण मानने के भ्रम का निवारण करनेवाला यह मूल गरुडपुराण का ४९ अध्यायात्मक प्रेतकल्प है। यह हिन्दीभाषाटीकासहित है। भूमिका में पुराणों के और गरुडपुराण के विषय में प्रकाश डालने के साथसाथ अन्त्यकर्मविषयक ज्ञातव्य अनेक बातों का शास्त्रीय परिचय भी सङ्गृहीत किया गया है। प्रकाशक- चौखम्बा-विद्याभवन, वाराणसी।

पृष्ठ 560 / मूल्य : भा.रू. 150.00

१६. **प्रायश्चित्तव्यवस्था** (काठमाण्डू, २०४९ वै.)— इस में काशी के विद्वानों से प्रदत्त भारतवर्षबहिर्गमन-विदेशि-विधर्मि-सहवाससहभोजनादि दुरित का प्रायश्चित्त की धर्मशास्त्रीय व्यवस्था दी गई है, तथा नेपाली भाषा में नेपाल के धार्मिकसांस्कृतिक पक्ष का कुछ इतिवृत्त का वर्णन भी संलग्न है।

पृष्ठ 80 / मूल्य : भा.रू. 25.00

१७. **काव्यप्रकाशः** [Literary Criticism of Sanskrit Literature, 1980] (आचार्यकौण्डिन्न्यायनकृतया हैमवत्या संस्कृतव्याख्यया सहितः, सन् १९८०)— शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायनद्वारा रचित विद्यार्थिहित-कारिणी तथा विद्वज्जनप्रमोदकारिणी नवीन संस्कृतव्याख्या से युक्त। भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से काव्यप्रकाश में व्याख्या प्रस्तुत होनेपर भी नेपाल से कोई व्याख्या प्रस्तुत नहीं थी। इस अभाव को यह विशिष्ट व्याख्या अच्छी तरह मिटा देती है। यह ग्रन्थ मोतीलाल बनारसी दास ने प्रकाशित किया है। (अप्राप्य)

पृष्ठ 602 / मूल्य : भा.रू. 120.00

१८. **व्यावहारिकं संस्कृतम्** [Sanskrit Reader, Book 1, 1991] (सचित्रं प्रथमम् पुस्तकम्, काठमाण्डू, २०५०वै.)— सर्वथा पाणिनीय-व्याकरण-सम्मत संस्कृतभाषा को सरलता से सीखने-सिखाने के लिए उपयोगी संस्कृतवर्णमाला, सरलवाक्य, बाल-कविता, सङ्ख्याशब्दप्रयोग (१-१० पुं., स्त्री, नपुं), गुणनसारणी (१-५), सङ्ख्याशब्द तथा अङ्क इत्यादि विषयों से युक्त अपूर्व क्रमबद्ध सचित्र पाठ्यपुस्तक है।

पृष्ठ 80 / मूल्य : भा.रू. 60.00

१९. **व्यावहारिकं संस्कृतम्** [Sanskrit Reader, Book 2, 1996] (सचित्रं द्वितीयम् पुस्तकम्, काठमाण्डू, २०५३)— सरलवाक्य, बालकविता, सङ्ख्याशब्दप्रयोग (११-२० पुं., स्त्री, नपुं), गुणनसारणी (६-११), वैदिक-शास्त्रपरिचयश्लोक इत्यादि विषयों से युक्त। भूमिका में संस्कृत के शास्त्रीय रूप से शुद्ध उच्चारण कैसे किया जाय इस विषय का निर्देश भी है।

पृष्ठ 88 / मूल्य : भा.रू. 20.00

२०. **व्यावहारिकं संस्कृतम्** [Sanskrit Reader, Book 3, 2001] (सचित्रं बालशिक्षार्थं तृतीयम् पुस्तकम्, काठमाण्डू, २०५८)— यह विभक्तियों का प्रयोग, लकारों का प्रयोग, सन्धि का अभ्यास, समासों का अभ्यास, तव्य-अनीयर्-ण्वुल्-तृच्-शतृ-शानच्-तुमुन्-क्त-क्त्वा-तरप्-तमप् इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोगात्मक ज्ञान, प्रातिपदिकरूपावलि, धातुरूपावलि, पूरण-प्रत्ययान्त प्रमुख सङ्ख्या-शब्द इत्यादि विषयों से युक्त पाठ्यपुस्तक है।

पृष्ठ 124 / मूल्य : भा.रू. 30.00

२१. **कतिपय–नैपाल–संस्कृतग्रन्थकार–परिचयः** [A collecton of Short Biographies of 180 Nepales Sanskrit Writers, 1991] (२०४८ वै.)– इस ग्रन्थ में प्राचीनकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल के नेपालदेशज ज्ञात १८० संस्कृतग्रन्थकारों का सङ्क्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ में नेपाल में संस्कृत शिक्षा का इतिहास और वर्तमान स्थिति का परिचय भी संलग्न है।

२२. **मनुस्मृतिः** (सुपरिमार्जितया कल्लूकभट्टकृतया मन्वर्थमुक्तावल्या हिन्दी-व्याख्यया च समेता), कुल्लूक–भट्टव्याख्यायां ४०४ स्थलेषु विशेषेण शोधिता (चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, २००७ क्रै.)

पृष्ठ 1024 / मूल्य : भा.रू. 550.00/1500.00

२३. **मनुस्मृति** (श्लोकार्धकानुक्रमणीयुक्त, हिन्दीव्याख्यायुक्त, चौखम्बा विद्याभवन, २००८ क्रै.)– इस ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर आधुनिकजनों के द्वारा मनुस्मृति में किए गए आक्षेपों का उत्तर भी दिया गया है।

पृष्ठ 672 / मूल्य : भा.रू. 300.00/600.00

२४. **गौतमधर्मसूत्रम्** (सुपरिमार्जितया हरदत्तकृतया मिताक्षरया व्याख्यया हिन्दीव्याख्यया च समेता, मिताक्षराव्याख्याया अनेकेषु स्थलेषु विशेषेण शोधिता)– विस्तृत समीक्षात्मक भूमिका तथा हिन्दी व्याख्या से युक्त, सम्पादक तथा हिन्दी व्याख्याकार– प्रमोदवर्धन कौण्डिन्न्यायन (चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, २०१५ क्रै.)

पृष्ठ 592 / मूल्य : भा.रू. 450.

नेपाली भाषा में

वृत्तनक्षत्रमाला (An Introduction to Prosody, 1971)

जिम्दो नेपालि भासा, प्रथम खण्ड २०३०, द्वितीय खण्ड २०३७, (Theory of Language, Linguistics, Grammar & Phonetics, part I, 1973, Part II, 1981)

नेपाली वर्णोच्चारणशिक्षा (Nepali Phonetics)—साझा प्रकाशन, काठमाण्डू से प्रकाशित, २०३१ (1974)

वैदिक धर्म मूल रूपमा (An Introduction to the Vedic religion, philosophy and culture, First Edition 1989, Second Edition, 2005)

वैदिक यज्ञिय उपकरण र वृक्षहरु (सचित्र) (A Research-oriented Introduction to the Instruments used in the Vedic Rituals, 2015)

नेपाली आदिकवि भानुभक्त आचार्यको भाषारामायण (मूल हस्तलेख अनुसार संशोधित तथा सम्पादित)

इत्यादि ग्रन्थ भी प्रकाशित हैं।

सम्पर्कसूत्र

स्वाद्ध्यायशाला, ब्रह्मपुरी,

बुढानीलकण्ठनगर–७,

खड्का–भद्रकाली, हात्तिगौँडा,

काठमाण्डू, नेपाल,

email : **svadhyaya@hotmail.com**

मन्तव्य

स्वाद्ध्यायशालाप्रमुख श्री शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन के कार्यों के विषय में भारतीय विद्वानों के मन्तव्य के कुछ अंश—

नेपाल के विशिष्ट विद्वान् शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन के द्वारा बडे परिश्रम से प्रणीत ग्रन्थ कौण्डिन्न्यायनशिक्षा का यत्र तत्र अवलोकन कर मैं ग्रन्थकार के विपुल वैदुष्य का प्रत्यक्षीकरण कर आनन्द से परिप्लुत हो रहा हूँ। नेपाली पण्डित महोदय वेद तथा व्याकरण के महनीय पण्डित हैं।

—पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय

वाराणसी, २५/१/१९९४

विविधशास्त्रपरिशीलनधिषणः स्वनामधन्य आचार्यशिवराजः कौण्डिन्न्यायनः सोहापोहं काव्यप्रकाशव्याख्यायां हैमवत्यां विवृतौ प्रवृत्तो विजयतेतराम्। सकलशास्त्रमन्थनपरिणामभूतेयं तदीया विराजते विवृतिः।

—डा. भागीरथप्रसादत्रिपाठी "वागीशशास्त्री"

वाराणसी, १७/५/१९८५

स्वाद्ध्यायशालिनोऽस्य मनीषिणः "कौण्डिन्न्यायनशिक्षा"–"वेद-भाषानिघण्टु"नामकौ ग्रन्थौ एतदीयां वैदुषीं व्युत्पत्तिञ्च प्रमाणयतः।

—आचार्य डा. जयमन्तमिश्रः

दरभङ्गा, १४/१०/१९९४

सम्पूर्ण संस्कृत–संस्कृति–प्रेमीलाइ हार्दिक आह्वान

वर्तमान कालमा मानिसहरुको जीवन भौतिकतामा मात्र आधारित भएर अशान्त र विविध समस्याहरुले ग्रस्त भैरहेको देखिञ्छ। वास्तविक सुख, शान्ति र उन्नतिका लागि हाम्रा पूर्वज ऋषि–मुनिहरुले प्रयोगमा ल्याएको जीवन–शैलीको अनुसरणको आवश्यकता अनुभव भएको छ। मानव भनेको शरीर–मन–र–आत्माको समष्टि स्वरूप भएकाले उसका निम्ति भौतिक, मानसिक र स्वस्वरूपसुख–शान्तिको आवश्यकता पर्छ भन्ने तथ्य आधुनिक अनुसन्धाताहरुले पनि बुज्न थालेका छन्। **सर्वकल्याणकारी हाम्रा धर्म, दर्शन, आचार, विचार, खान–पान–परिधान इत्यादिका नियमबाट लाभ लिन उक्त सबै विषयको वाहक संस्कृत भाषा–संस्कृतिको अनुशीलनको र अनुपालनको आवश्यकता पर्छ।** एस विषयमा सबै संस्कृत–संस्कृतिप्रेमीहरुले विचार विमर्श गरौं। एस दिशातर्फ अग्रसर स्वाद्ध्यायशालाकुटुम्बका विभिन्न क्रियाकलापलाइ आआफ्ना स्थानबाट जनबल, धनबल र भावनात्मक समर्थन उपलब्ध गराएर सहयोग पुऱ्याउन र भविष्यका सन्ततिहरुले पनि हाम्रा पूर्वज ऋषि–मुनिको सर्वकल्याणकारी ज्ञानज्योति प्राप्त गर्न सहज हुने आधार निर्माण गर्न समेत सम्पूर्ण संस्कृत–संस्कृतिप्रेमीहरुलाइ आह्वान पनि गरिन्छ।

सरल, वैज्ञानिक र प्रभावकारी रूपले छोटो समयमा नै संस्कृत भाषाको तथा वैदिक जीवनशैलीको प्रशिक्षण दिने कक्षाहरुको पनि सञ्चालन हुँदै आएको छ। संस्कृतभाषाका निम्ति पाठ्यसामग्रीका रूपमा **"व्यावहारिकं संस्कृतम्"** नामक क्रमबद्ध तथा सचित्र पाठ्यपुस्तकमालाका ३ भागलाइ उपयोग गरिएको छ। श्रव्यसामग्री (सि.डि.) पनि उपलब्ध छ। कक्षाहरु प्रत्येक शुक्रवार २/२ घण्टा हुने गर्दछन्।

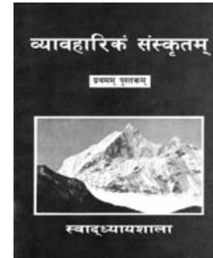
सम्पर्क : ९८४९ ०९१४६७

यो वैदिक तिथिपत्र (वैदिक पात्रो) पाइने स्थानहरु

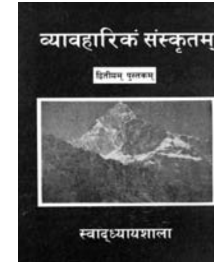
१. रत्नपुस्तक भण्डार, माइतिघर, काठमाण्डु, ०१–४२४०८५०।
२. उन्नति बुक्स एण्ड स्टेशनर्स, प्रदर्शनीमार्ग, काठमाण्डु, ०१–४२१८५६८।
३. नारायणी पुस्तकसदन, पुतलिबजार, नारायणघाट, चितवन, ०५६–५२१२८०।
४. धार्मिक पुस्तक पसल, पुतलिबजार, नारायणघाट, चितवन, ०५६–५३१६१५।
५. सुवेदी पूजासामग्री भण्डार, बकुल्लर चोक, चितवन।
६. छायाक्षेत्र पुस्तक पसल, रत्नचोक, पोखरा, ९८५६०३५०५८।
७. परेश स्टेशनरि स्टोर, छाताचोक, धरान, सुनसरि, ०२५–५२५२४४, ९८४२४५६५९६।

व्यावहारिकं संस्कृतम्

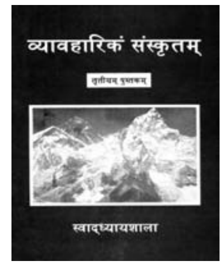
संस्कृतवर्णमालादेखि नै प्रारम्भ गरेर सरल र व्यावहारिक रूपमा संस्कृतभाषा सिकाउने क्रमबद्ध बालपाठ्यपुस्तकहरु–



प्रथम भाग २०५०, २०६७, मू.९०।–



द्वितीय भाग २०५३, मू. ३०।–



तृतीय भाग २०५८, मू.५०।–

प्रकाशन–प्रचारणसहयोगी

१. श्री चेतमणि न्यौपाने, धुस्कुन–६ बारबिसे, सिन्धुपाल्चोक, ९७४१–००५२६९ ।
२. श्री नारायणप्रसाद नेपाल, मानेस्वाँरा–९, घुमाङ, सिन्धुपाल्चोक, ९७४१–०००६५९ ।
३. श्री रामप्रसाद रिमाल, खड्गभञ्ज्याङ–२ मझुवा, नुवाकोट, ९८४१–५७४४२७ ।
४. श्री मोहनप्रसाद ओझा, चारपाने–३ झापा, ९८४१–१४३०५३ ।
५. श्री सीताराम पौडेल, कल्लेरि–३, धादिङ, ९८४१–०७५०५३ ।
६. श्री युवराज नेपाल, शिखरपुर–५, सिन्धुपाल्चोक, ९८४१–६५३४३० ।
७. श्री रामप्रसाद धिताल, लाँगर्चे–६, सिन्धुपाल्चोक, ९८४१–७५५९५१ ।
८. श्री प्रणव काफ्ले, गोङ्गबु–८, ओम्नगर, महादेवटार, काठमाण्डु, ४–३६३३५१ ।
९. श्री तुलसी भारद्वाज (निरौला), बालुवाटार, काठमाण्डु, ९८४१–४०५०७३ ।
१०. श्री बालहरि घिमिरे जामुने–६, सिद्धाश्रम, बतासे, तनहुँ, ९८४६–१३१७५७ ।
११. पं. श्री शान्तप्रसाद खनाल (घृतकौशिक), पिठुवा–८, माधवपुर, चितवन, ९८४५–२२१७७६ ।
१२. पं. श्री वैकुण्ठ अधिकारी (काश्यप), पिठुवा–५, रायमाझिटेल, चितवन, ९८४५–१८३२६३ ।
१३. ज्यो. श्री ईश्वरीप्रसाद अधिकारी (काश्यप), जुटपानि–३, चितवन, ९८४५–१७२१३२ ।
१४. पं. श्री नवराज अधिकारी (काश्यप), काश्यपावत्सारनैध्रुवेतित्रिप्रवर, राप्ति न.पा.–११, पकडिवास, चितवन, ९८४५–०२६१३३ ।

प्रकाशनसहयोगी

१. श्री प्रेमनाथ पराजुली, नवलपुर, हेटौँडा–११, मकवानपुर, ०५७–५२३५७१ ।
२. श्रीमती हरिमाया देवी पौडेल, भरतपुर न.पा.–९, मिलनचोक, चितवन, ९८४५–१८२४६८ ।
३. श्री लक्ष्मीप्रसाद कट्टेल (पराशर), रत्ननगर न.पा.–११, जमुनापुर, चितवन, ०५६–५६०६७५ ।
४. श्री भेषराज दुवाडी (आत्रेय), रत्ननगर न.पा.–८, निपनि, चितवन, ९८५५०–६०९९२ ।
५. श्री सुनील सिटौला, मैतिदेवी, काठमाण्डु, ९८५१०–७२१८८ ।
६. श्री रामचन्द्र पौडेल, कल्याणपुर–१, नुवाकोट, ९८४१–५६०२५५ ।
७. श्री दुर्गाप्रसाद अर्याल विद्यावारिधि, का.म.पा.–६, बौद्ध, शिरोमणिमार्ग, ४८२०५९७ ।
८. श्री लक्ष्मीकान्त पन्थी विद्यावारिधि, का.म.पा.–६, बौद्ध, शिरोमणिमार्ग, ४८२०२२१ ।
९. श्री रामचन्द्र अर्ज्याल, जितपुरफेदि, काठमाण्डु, ६२१९४६३ ।
१०. श्री कृष्णप्रसाद ढकाल, खड्गभञ्ज्याङ गा.वि.स, नुवाकोट ।
११. श्री लक्ष्मीराम दङ्गाल, जोरपाटि–३, काठमाण्डु, ४९१००१३, ९८४१–१८५७४१ ।
१२. पं. श्री बलराम भट्टराई (वासिष्ठ), पिठुवा–७, माधवपुर, चितवन ९८४५–०४९६२१ ।
१३. पं. श्री एकराज न्यौपाने (कौण्डिन्य), खैरहनि न.पा.–८, पर्सा, चितवन, ९८४५–११९८८० ।
१४. श्री दीपकभक्त उपाध्याय पौडेल (आत्रेय), र.न.पा.–८, निपनि, चितवन, ९८४५–०८०४२३ ।
१५. पं. श्री कृष्णप्रसाद अधिकारी (काश्यप), र.न.पा.–८, घेघौलि, चितवन, ९८४५–१४६६२३ ।
१६. पं. श्री खेमराज दवाडी (वासिष्ठ), भरतपुर न.पा.–१०, मिलनचोक, ०५६–५३१४१८ ।
१७. श्री चूडामणि धमला, (धनञ्जय), रत्ननगर न.पा.–१३, जयमङ्गला, चितवन, ०५६–५६३२५३ ।
१८. श्री शिवहरि अर्याल (आत्रेय), रत्ननगर न.पा.–८, बकुल्लर, चितवन, ९८४५–०६३२७१ ।
१९. श्री विष्णु सिलवाल (भारद्वाज), खैरहनी न.पा.–६, पर्सा, चितवन, ९८४५–२४२९३३ ।
२०. श्री भूमीश्वर पौडेल, रत्ननगर न.पा.–८, निपनि, चितवन, ९८४५–२१८०२८ ।
२१. श्री डिल्लीप्रसाद उपाध्याय पौडेल (आत्रेय),रत्ननगर न.पा.–८, निपनि, ०५६–५६१०४३ ।
२२. श्री राजु दुवाडी (आत्रेय), इचङ्गु गाविस, काठमाण्डु, ९८४१–२१२६४९ ।
२३. श्री केशव प्रसाईं (शाण्डिल्य), रत्ननगर न.पा.–८, बकुल्लर, चितवन, ९८४३–२३८६९४ ।
२४. श्री शुकप्रसाद पन्त (भारद्वाज), रत्ननगर न.पा.–८, बकुल्लर, चितवन, ९८४५–०४९२८८ ।
२५. श्री वरुण सुवेदी, रत्ननगर न.पा.–११, जमुनापुर, चितवन, ९८४५–०५५८१५ ।
२६. श्री राजु लामिछाने (गर्ग), जुटपानि–१, कमलचोक, चितवन, ९८४५–१६०३५८ ।
२७. श्री इन्द्र पाण्डे सनातन, रत्ननगर न.पा.–११, अद्वैतटोल, जिरौना, चितवन, ९८४५६८४१११ ।
२८. श्रीमती पवित्रा धमला, कालिका न.पा.–७, खोले सिमल, चितवन, ९८४५०४४३०२ ।
२९. श्री दामोदर खनाल, व्यास न.पा.–७, चापाघाट, तनहुँ, ०६५–५६००३२ ।
३० श्री गोविन्द न्यौपाने (कौण्डिन्य), राप्ति न.पा.–१, वीरेन्द्रनगर, चितवन ।
३१. श्री रामप्रसाद नेपाल (घृतकौशिक), राप्ति न.पा., वीरेन्द्रनगर, चितवन, ९८४५०६४०९७ ।
३२. श्री विष्णुप्रसाद खनाल (घृतकौशिक), रत्ननगर न.पा.–११, जमुनापुर, चितवन, ९८४३४२०१९८ ।
३३. श्री मोहन भट्टराई (वसिष्ठ), नेचरल डिजाइनर, बालाजु चोक, काठमाण्डु, ९८५१००४२५८ ।
३४. श्री योगेश्वर बराल, चन्द्र संस्कृत उ.मा.वि., धरान–१६, सुनसरि, ०२५–५२०२४३ ।

वितरक– ग्लोबल बुक्स डिष्ट्रिव्युटर्स प्रा.लि., बागबजार, काठमाण्डु, फोन ०१–४२४०४९७